मुन्तख़ब

26

छब्बीस सुरतें

मोमिन का हथियार

अल्लाह की पनाह

सिर्फ हिंदी ज़बान में
आसान दुआएं

हज व उमरा
की दुआएं

अरफ़ात के मैदान से
एक अहम वज़ाहती तहरीर

अल्लाह के फ़ज़लो करम से 15 साल पहले मोमिन का हथियार, 26 सूरतें, अल्लाह की पनाह, हज व उमरा की दुआएँ और उर्दू ज़बान में आसान दुआएँ छप गई थीं। और अल्लाह ने अपने फ़ज़लो करम से ख़ूब मक़बूलियत बख़्शी, जनवरी 2019 से ये ख़्याल हुआ कि इस पर मज़ीद काम की ज़रूरत है, बहुत ही ज़्यादा कमज़ोर बातें निकाल देनी चाहिए, काम शुरु हुआ, अप्रैल 2019 में अमेरिका, कनाडा, केलोफ़ोर्निया, वांकोओर, टोरंटो, शिकागो, जर्मनी, हॉलेण्ड का लम्बा सफ़र हुआ, इस सफ़र में हर जगह यह किताब देखी गई, मज़ीद शौक़ पैदा हुआ, हवाई जहाज़ के लम्बे लम्बे सफ़र होते थे और उसी फ़िक्र को ले कर हर वक्त कोशिश करता रहा, फिर श्व्वाल 1440 में हिजाज़े मुक़द्दस का सफ़र हुआ, मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा के क़याम में भी यही फ़िक्र ग़ालिब रही, किताब देखता रहा।

अब अल्हम्दु लिल्लाह! अरफ़ात के मैदान में ये काम मुकम्मल हो गया, और अरफ़ात में ही मोमिन का हथियार, अल्लाह की पनाह पर आख़िरी नज़र डाली और 26 सूरतों पर मुज़दलफ़ा की रात में मुकम्मल नज़र डाली गई, (हज 1440 हिज०)। अल्हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक

यह किताब का मजमूआ 26 सूरतें (जदीद) मअ मोमिन का हथियार (जदीद), अल्लाह की पनाह (जदीद), हज व उमरा की दुआएँ (जदीद) और उर्दू ज़बान में आसान दुआएँ (जदीद) वग़ैरा, सबसे पहले अल्लाह को

इल्मे नबवी इस उम्मत की मुश्तरका मीरास है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

अल्लाह का फ़ज़लो करम है कि उस ने उर्दू ज़बान में क़ुरआन करीम की तर्जुमानी का काम बंदा नाचीज़ से लिया। इस पर अल्लाह तआला का जितना शुक्र अदा किया जाए उतना कम है। जिससे मौजूदा ज़माने की अवाम और स्कूल व कॉलेज में पढ़े हुए हज़रात भी आसानी के साथ क़ुरआन करीम को समझ सकते हैं और अपने रब के कलाम को पढ़ कर रब से क़रीब हो कर उसकी रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी हासिल कर सकते हैं और दुनिया व आख़िरत में सुरख़ुरु हो सकते हैं।

इसी के पेश-ए-नज़र एक अहम वज़ाहत पूरी उम्मत के सामने पेश कर देना मुनासिब समझता हूं कि इल्मे नबवी इस उम्मत की मुश्तरका मीरास है, लिहाज़ा मेरी यह किताब "26 सूरतें मअ तर्जुमा, चेहले रब्बना, चहले दरूद, चेहले इस्तिग़फ़ार और कुनूते नाज़िला" हर ज़बान में बिल-ख़ुसूस और मेरी हर किताब उम्मते मुस्लिमा के हर फ़र्द को बग़ैर किसी कमी ज़्यादती के तबा करने की एजाज़त है, यहां तक कि बंदे की क़यामत तक आने वाली औलाद में से भी कोई इस पर हक़ नहीं रखता है कि वह उसके हुकूक़े तबा का मुतालिबा करे।

अज़कारे मज़कूरा के लिए ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब मजज़ूब रह० के अश्आर "कश्कोल मजज़ूब" में बहुत हैं, जो ज़िक्र में निशात के लिए बहुत मुफ़ीद हैं, मिसाल के तौर पर हर ज़िक्र के मुवाफ़िक़ चंद अश्आर लिखे जाते हैं, जिन को मोहसिनुल उम्मत हज़रत मौलाना शाह मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब फूलपुरी रह० अकसर पढ़ा करते थेः

याद में तेरी सब को भुला दूं कोई न मुझ को याद रहे
तुझ पर सब घर बार लुटा दूं ख़ानए दिल आबाद रहे

सब ख़ुशयों को आग लगा दूं ग़म में तेरे दिल शाद रहे
सब को नज़र से अपनी गिरा दूं तुझ से फ़क़त फ़रियाद रहे

अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्द-ए-ज़बां ऐ मेरे इलाह
ला इलाहा इल्लल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह,

ज़र्बें किसी के नाम की दिल पर यूंही लगाए जा
गो न मिले जवाब कुछ दर यूं ही खटखटाए जा

खोलें या न खोलें दर इस पर हो क्यों तेरी नज़र
तू तो बस अपना काम कर यानी सदा लगाए जा

इल्लल्लाह, इल्लल्लाह, इल्लल्लाह, इल्लल्लाह
कसब में दुनिया के ही रहा मैं दीन की दौलत कुछ न कमाई

वक़्त यूं ही बेकार गुज़रा उम्र यूं ही ग़फ़लत में गंवाई
ख़ल्क़ में सब से मैं ही बुरा हूं मुझ में नहीं है कोई भलाई

मुझ सा कोई बदकार न होगा कौन सी मैंने की न बुराई
शुग्ल मेरा बस अब तो इलाही शाम व सहर हो अल्लाह अल्लाह

लेटे बैठे चलते फिरते आठों पहर हो अल्लाह अल्लाह
लगा रह इसी में जो है इख़्तियारी

न पड़ अम्रे ग़ैर इख़्तियारी के पीछे
इबादत किए जा मज़ा गो न आए न

आधी को भी छोड़ सारी के पीछे
अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

جلّ جلالہ

दवा की तलाश में रहा दुआ को छोड़ कर
मैं चल न सका दुनिया में ख़ताओं को छोड़ कर

हैरान हूं मैं अपनी हसरतों पे इक़बाल
हर चीज़ ख़ुदा से मांग ली मगर ख़ुदा को छोड़ कर

(अ़ल्लामा इक़बाल रह0)

अहम फ़तवा

सवाल नम्बर 1: हालते हैज़ में दुआओं की ऐसी किताब पढ़ना (जिस में कुरआन पाक की आयतें या सूरतें हों) जाइज़ है या नहीं? मसलन मोमिन का हथियार या मुनाजाते मक़बूल या अलहिज़बुल अज़ीम या मंज़िल इन किताबों में आयतुल कुर्सी, सूरह फ़ातिहा, चार कुल वग़ैरा बहुत सी कुरआनी दुआएं होती हैं। क्या इन को औरतें हालते हैज़ में पढ़ सकती हैं?

अल-जवाबः हामिदन व मुसल्लियन व मुस्लिमनः दुआ की नीयत से इन आयात को हालते हैज़ में पढ़ना जायज़ है, किसी क़िस्म की कराहत नहीं है, तिलावते कुरआन की नीयत से इनको पढ़ना जायज़ नहीं है। और ज़ाहिर है कि इन किताबों को वज़ाइफ़ व औराद के तौर पर ही पढ़ा जाता है। तिलावते कुरआन के तौर पर नहीं पढ़ा जाता। हां, छब्बीस सूरतें बतौर तिलावत के पढ़ी जाती हैं इस लिए इन को हालते हैज़ में पढ़ना जायज़ नहीं। (मुस्तफ़ाद अज़ इमदादुल फ़तावा, अहसनुल फ़तावाः 2/71)

सवाल नम्बर 2: दुआओं की इन किताबों को बग़ैर वजशू के या हैज़ की हालत में पकड़ना जायज़ है या नहीं?

जवाबः इन किताबों को बग़ैर वजशू के या हालते हैज़ में पकड़ना जायज़ है। अलबत्ता ख़ास जगह जहां कुरआन की आयत हो, हाथ लगाना जायज़ नहीं है। बाक़ी दूसरे हिस्सों को हाथ लगाना जायज़ है। (इमदादुल फ़तावा 1/93)

फ़क़त वस्सलाम वल्लाहु आलम

(मुफ़्ती)आदम साहब पालनपुरी, 6 शव्वाल 1230 हिज०

नोटः मज़कूरा फ़तवा सहीह है, मैं इसकी तस्दीक़ करता हूँ।

अल्लाह की रज़ा का तालिबः **मुहम्मद यूनुस पालनपुरी।**

एक बहुत बहुत अहम नसीहत

यह याद रखना ज़रूरी है कि इन सूरतों और दुआओं का पढ़ना तिलावते कुरआन पाक से बेनियाज़ नहीं करता, पूरे कुरआन की तिलावत एक मुस्तक़िल अमल है। जो हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है और उसके फ़ज़ाइल बे हद व हिसाब हैं।

नोटः इस किताब में हर सूरत के शुरू में जो सूरतें नाज़िल होने की तरतीब दी गई है वह सारी तफ़सील मैंने **"सफ़वतुल बयान लिल-मआनी अल-कुरआन"** शैख़ हसनैन मुहम्मद मख़्लूफ़ की किताब से ली है।

यह मज़मून ग़ौर से पढ़िए

इल्मे नबवी इस उम्मत की मुश्तरका मीरास है। इसलिए मेरे इस तर्जुमा के सवाब में हर मुसलमान मर्द और औरत शरीक है।

बंदा ने ये नीयत की है कि इन सूरतों के तर्जुमे का सवाब सारे मुसलमान मर्द और औरतों को जो अपनी अपनी क़ब्रों में हैं और जो इस वक्त ज़िन्दा हैं और आइन्दा क़यामत तक जो मुसलमान मर्द और औरतें आएँ उन सब को इसका सवाब पहुंचे। और ईसाले सवाब के मुतअल्लिक़ दो क़ौल हैंः एक यह है कि सब को पूरा पूरा अज्र दिया जाता है और दूसरा यह कि जिन को ईसाले सवाब किया गया है उन पर बराबर बराबर तक़सीम कर दिया जाता है। तो अगर इस उम्मत का एक फ़र्द होने की हैसियत से तक़सीम हो कर एक ज़र्रा भी मेरे हिस्सा में आया तो इनशा अल्लाह उम्मीद है कि वही मेरी मग़फ़िरत के लिए काफ़ी है।

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

यह मज़मून ज़्यादा से ज़्यादा आम कीजिए

कुरआन पाक के अदब में यह दाख़िल है कि इसे जुज़दान में रखा जाए, कुरआन पाक से फ़ायदे का हासिल होना उसकी अज़मत से जुड़ा हुआ है, इसे ऊँची जगह रखा जाए, इसकी तरफ़ पीठ न की जाए, इस से ज़्यादा ऊँची जगह खुद न बैठा जाए वग़ैरा। कितनी ग़ैरत की बात है कि ख़ुद तो कपड़े पहनें और कलामुल्लाह शरीफ़ को बेलिबास के रखें। अपने लिए और अपने बच्चों के लिए नया कपड़ा बाज़ार से लाएं और कलाम पाक का जुज़दान क़मीस शलवार के बचे कपड़े ही से बना दें। ख़ुद के कपड़े हफ़्ता में दो तीन बार धोएं और कलामे इलाही का जुज़दान धोने का नम्बर बरसों में भी न आए अपनी कुर्सी या चारपाई का पाया टूट जाता है तो उसे उलटा करके इस्तेमाल नहीं किया जाता लेकिन कुरआन पाक की कुर्सी (रेहल) का पाया टूट जाए तो उसे उलटा करके उसी पर कुरआन करीम रख लिया जाता है अपना बदन कहीं से कट फट जाए तो फ़ौरन मर्हम पट्टी कराते हैं, कलामुल्लाह शरीफ़ की जिल्द फटे तो उसे भी तो जल्दी दुरुस्त कराना चाहिए अपनी बीवी या दोस्त का ख़त अंजान ज़बान में आ जाए तो पढ़वाने के लिए जानकार को तलाश करते हैं, बेचैन हो जाते हैं, कलामुल्लाह का तर्जुमा और तफ़सीर उलमा से सुनने की भीतो फ़िक्र करनी चाहिए।

अपने रिश्तेदार का इन्तिक़ाल हो जाए तो उसके कफ़नाने दफ़नाने का फ़ूरी इन्तिज़ाम करते हैं, कुरआन पाक के औराक़ जुदा हो जाएं, पढ़ने में न आएं, तो क्या उन्हें अंधे कुएं में या नहर में छोड़ देना या किसी मस्जिद

में डलवा देना मुनासिब है? हरगिज़ नहीं, उसे भी नए कपड़े में लपेट कर ख़ुश्बू लगा कर ऐसी जगह दफ़न करना चाहिए जहां किसी का पाँव न पड़े।

बंदा

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

इब्ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी रह०

वारिदे हाल मदीना मुनव्वरा मस्जिदे नबवी

अला साहिबिहा अल्फ़ अल्फ़ सलात व तहिय्यतन

22 ज़ी क़ायदा 1434 हिज० मुताबिक़ 28/ सितम्बर 2013 ई०

विषय-सूची

3. अल्लाह की पनाह

अर्ज़े मुरत्तिब

"कुरआने करीम" अल्लाह तआला का कलाम है, बंदों के नाम अल्लाह का पैग़ाम है, लिहाज़ा हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि इसको पढ़े, इस पर अमल करे, इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे और इसकी तालीमात को आम करे। लिहाज़ा कुरआने करीम पर अमल भी ज़रूरी है और इसकी तिलावत भी ज़रूरी है, यह एक मुस्तक़िल अमल है, हज़रत नबी करीम ﷺ ने तिलावते कुरआने करीम के फ़ज़ाइल कसरत से बयान फ़रमाए हैं, नीज़ मुन्तख़ब सूरतों और आयात के ख़्वास व फ़ज़ाइल की भी निशानदेही फ़रमाई है। इसी के पेशे नज़र तक़रीबन चार सौ साल पहले से सूरतों का इन्तिख़ाब शाए होता रहा है, यह कोई नई चीज़ नहीं है कि हमारे ज़माने में ही इनकी नश्र व इशाअत होने लगी है, क़दीम ज़माने से मुन्तख़ब सूरतों की नश्र व इशाअत और उनका पढ़ना जारी व सारी है।

जब हमारी दिन भर के मामूलात की मुख़्तलिफ़ किताबें, "अल्लाह की पनाह", "मोमिन का हथियार" छप कर आई और बि-फ़ज़्लिही तआला उसे क़ुबूले आम हासिल हुआ, तो नाशिरीन ने छब्बीस सूरतों को उनके साथ शाए करना शुरू कर दिया, इसी तरह छब्बीस सूरतें और उस में शामिल औराद व वज़ाइफ़ बंदे की तरफ़ मन्सूब होने लगे और ग़ौर करने से पता चला कि इन में बहुत सारी कमज़ोर और रत्ब व यास चीज़ें जमा हैं, महसूस हुआ कि इन पर नज़रे सानी होनी चाहिए ताकि उम्मते मुस्लिमा इन से बचे और बंदे की तरफ़ इनकी निस्बत न हो।

लिहाज़ा इन कमज़ोर बातों को हमने अपने इस नए एडीशन से हजफ़ कर दिया है, और मुस्तनद व मोतबर बातों को बरक़रार रखा है ताकि

कमज़ोर और ग़लत बातों की निस्बत हमारी तरफ़ न हो। अलहम्दु लिल्लाह अरबों में भी "मक़ालीदुस्समावाति वलअर्ज़ि" नामी किताब में भी यह मुन्तख़ब सूरतें शामिल हो कर पढ़ी जा रही है। फ़लिल्लाहिल हम्दु वल-मन्नता

अल्लाह तआला हमारी कोशिशों को दुनिया व आख़िरत में कामयाबी का ज़रिया बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन। ब-जाह सय्यदुल मुरसलीन ﷺ।

नोटः यह याद रहना ज़रूरी है कि इन सूरतों और दुआओं का पढ़ना तिलावते कुरआने करीम से बेनियाज़ नहीं करता, लिहाज़ा हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि कुरआने करीम की तिलावत का बहुत एहतिमाम करे और साथ साथ इन औराद व वज़ाइफ़, सूरतों की तिलावत की भी पाबंदी करने की कोशिश करे।

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

इब्ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी रह०

दुरूद शरीफ़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوۡنَ عَلَى النَّبِىِّ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَيۡهِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِيۡمًا ○

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं नबी (ﷺ) पर। ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا

صَلَّيۡتَ عَلٰۤى اِبۡرَاهِيۡمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبۡرَاهِيۡمَ

اِنَّكَ حَمِيۡدٌ مَّجِيۡدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكۡتَ عَلٰۤى اِبۡرَاهِيۡمَ

وَعَلٰۤى اٰلِ اِبۡرَاهِيۡمَ اِنَّكَ حَمِيۡدٌ مَّجِيۡدٌ .

सूरह फ़ातिहा के फ़ज़ाइल

1. अब्दुल मलिक बिन उमैर रज़ि० हुज़ूर अकरम ﷺ का इरशाद नक़्ल करते हैं कि सूरह फ़ातिहा में हर बीमारी से शिफ़ा है।

2. एक हदीस में आया है कि एक सहाबी नमाज़ पढ़ रहे थे, हुज़ूर ﷺ ने उनको बुलाया, वो नमाज़ की वजह से जवाब न दे सके, जब फ़ारिग़ हो कर हाज़िर हुए, तो हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मेरे पुकारने पर जवाब क्यों नहीं दिया? उन्होंने नमाज़ का उज़्र किया, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि कुरआन शरीफ़ की आयत में नहीं पढ़ा :

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की पुकार का जवाब दो जब भी वह तुम को बुलावें"

फिर हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि तुझे कुरआन शरीफ़ की सब से बड़ी सूरत यानी सब से अफ़ज़ल सूरत बतलाऊँगा, फिर हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि वह "अल्हम्दु लिल्लाह" की सात आयतें हैं।

3. एक दूसरी रिवायत में हुज़ूर ﷺ का इरशाद वारिद हुआ है कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़बज़ा में मेरी जान है कि इस जैसी सूरत नाज़िल नहीं हुई न "तौरात" में, न "इन्जील" में, न "ज़बूर" में, न बक़िया "कुरआन पाक" में।

4. हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० पर हुज़ूर ﷺ ने इस सूरत को दम फ़रमाया और यह सूरत पढ़ कर लुआबे दहन दर्द की जगह लगाया।

5. जो शख़्स सोने के इरादा से लेटे और "सूरह फ़ातिहा" और "क़ुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले, मौत के सिवा हर बला से अमन पाए।

6. एक रिवायत में आया है कि "सूरह फ़ातिहा" सवाब में दो तिहाई कुरआन के बराबर है।

7. एक रिवायत में आया है कि अर्श के ख़ास ख़ज़ाना से मुझ को चार चीज़ें मिली हैं कि और कोई चीज़ उस ख़ज़ाना से किसी को नहीं मिलीः "सूरह फ़ातिहा", "आयतुल कुर्सी" और "सूरह बक़रा" की आख़िरी आयात और "सूरह कौसर"।

8. एक रिवायत में आया है कि हसन बसरी रह० हुज़ूर ﷺ से नक़ल करते हैं कि जिस ने "सूरह फ़ातिहा" को पढ़ा, उस ने गोया "तौरात, इन्जील, ज़बूर," और "कुरआन शरीफ़" को पढ़ा। (मज़कूरा अहादीस फ़ज़ाइल कुरआन से ली गई हैं।)

सूरह फ़ातिहा से दोस्ती कर लीजिए

सूरह फ़ातिहा में अल्लाह ने शिफ़ा रखी है। सूरह फ़ातिहा पूरे कुरआन का खुलासा है। अल्लाह ने नमाज़ की हर रकात में सूरह फ़ातिहा को पढ़ने का हुक्म दिया है। अल्लामा इब्ने तैमिया उठते बैठते सूरह फ़ातिहा पढ़ा करते थे और कहते थे कि मुझे जो कुछ मिला है, सूरह फ़ातिहा से मिला है।

सूरह फ़ातिहा से दोस्ती कैसे करें?

घर की तमाम खाने पीने की चीज़ों पर, बरतनों पर सूरह फ़ातिहा पढ़ कर दम कर दीजिए। अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि तमाम जिस्मानी और रूहानी बीमारियों से बचाव हो जाएगा। जादू, सरकश जिन्नात और शैतानी असरात से हिफ़ाज़त होगी। घरेलू झगड़े और परेशानियाँ दूर होंगी, आपस में मोहब्बत पैदा होगी। खाने में बरकत होगी। खाना खाने वाले को भी हिदायत मिलेगी।

सूरह फ़ातिहा मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई और इस में 7 आयात और 1 रुकूअ है, नाज़िल होने के एतिबार से 5 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 1 नम्बर पर है और सूरह मुद्दस्सिर के बाद नाज़िल हुई।

सूरह फ़ातिहा

(١) سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ (٥)

आयातुहा 7 — रुकूआतुहा 1

इसमें 25 कलिमात हैं — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ — इसमें 122 हुरूफ़ हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿٢﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٣﴾
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿٤﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿٥﴾
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾ ع

तर्जुमा: सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहान का मालिक है। (1) बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला है। (2) इन्साफ़ के दिन का मालिक है। (3) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। (4) हम को सीधा रास्ता दिखा। (5) उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फ़ज़ल किया। (6) उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए। (7)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह फ़ातिहा का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा (ज़ादहल्लाहु तशरीफ़न व ताज़ीमन व तकरीमन) में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से क़ुबूल फ़रमाए। आमीन, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

आयतुल कुर्सी के फ़ज़ाइल

1. हज़रत उबै बिन काब रज़ि० से रसूलुल्लाह ﷺ दरयाफ़्त फ़रमाते हैं कि किताबुल्लाह में सब से ज़्यादा अज़मत वाली आयत कौनसी है? आप जवाब देते हैं, अल्लाह और उसके रसूल ही को इसका सब से ज़्यादा इल्म है, आप फिर यही सवाल करते हैं, बार बार के सवालात पर जवाब देते हैं कि आयतुल कुर्सी।

2. हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं कि अबुल मुंज़िर! अल्लाह तुझे तेरा इल्म मुबारक करे, उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, उसकी ज़बान होगी और होंठ होंगे और यह बादशाहे हक़ीक़ी की तक़दीस बयान करेगी और अर्श के पाया से लगी हुई होगी।
(मुस्नद अहमद, माख़ूज़ अज़ इब्ने कसीर)

3. हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि मैंने इस मिम्बर के सुतूनों पर हुज़ूर ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़े, उसके लिए जन्नत में दाख़िल होने के लिए कोई चीज़ माने नहीं सिवाए मौत के। और जो कोई बिस्तर पर जाकर इसको पढ़े तो अल्लाह तआला उसको उसके घर और पड़ोसियों और इर्द गिर्द के घरों को अमन व हिफ़ाज़त में रखेगा।
(कन्ज़ुल उम्मालः 2/300)

4. एक हदीस में मरवी है कि आयतुल कुर्सी कुरआन की आयतों की सरदार है। (कन्ज़ुल उम्मालः 2/301, और मिश्कातः पेजः 189, दारमीः 2/540)

5. हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स आयतुल कुर्सी हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़े तो उसके और जन्नत के दरमियान सिर्फ़ मौत हाइल होगी (जैसे ही मरेगा जन्नत में दाख़िल होगा)।
(कन्ज़ुल उम्मालः 2/336, अन अली रज़ि०, हिस्ने हसीनः 103 अन अबी उमामा रज़ि०)

आयतुल कुर्सी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۬ۚ لَا تَاۡخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ
لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَہٗۤ
اِلَّا بِاِذۡنِہٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡہِمۡ وَ مَا خَلۡفَہُمۡ ۚ وَ لَا یُحِیۡطُوۡنَ
بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِہٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ کُرۡسِیُّہُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ
وَ لَا یَـُٔوۡدُہٗ حِفۡظُہُمَا ۚ وَ ہُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ﴿۲۵۵﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है और न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह किसी चीज़ को जान नहीं सकते उसके इल्म में से मगर जो वह चाहे, उसकी हुकूमत छाई हुई है आसमानों और ज़मीन पर, और उस पर भारी नहीं है, ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त करना, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मतों वाला। (255)

अलहम्दु लिल्लाह! आयतुल कुर्सी का तर्जुमा मस्जिदे नबवी (सल्ल0) में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़्लो करम से क़ुबूल फ़रमाए। आमीन अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

सूरह बक़रा का पहला रुकूअ

(٢) سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ (٨٧)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى
اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع

तर्जुमा: अलिफ़-लाम-मीम (1) ये अल्लाह की किताब है इस में कोई शक नहीं, राह दिखाती है डर रखने वालों को (2) जो यक़ीन करते हैं बिन देखे, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उस में से ख़र्च करते हैं (3) और जो उस (वह्ई) पर भी ईमान लाते हैं जो आप पर उतारी गई और उस पर भी जो आप से पहले उतारी गई और

आख़िरत पर वह मुकम्मल यक़ीन रखते हैं(4) उन्हीं लोंगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुंचने वाले हैं(5) जिन लोंगों ने इन्कार किया उनके लिए बराबर हैं डराओ या न डराओ, वह मानने वाले नहीं हैं(6) अल्लाह ने उनके दिलों पर, और उनके कानों पर मुहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए बड़ा अज़ाब है(7)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह बक़रा के पहले रुकूअ का तर्जुमा मस्जिदे नबवी में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़लो करम से क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतों के फ़ज़ाइल

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाा कि सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें जो शख़्स रात को पढ़ ले तो यह दोनों उसके लिए काफ़ी होंगी। (मिश्कात शरीफ़ः पेज 185)

"काफ़ी" होने का मतलब यह है कि यह दोनों आयतें हर शर और फ़ित्ना को उस से दूर करेंगी या रात भर औराद व वज़ाइफ़ पढ़ने से काफ़ी होंगी, यानी उसके बराबर सवाब मिलेगा, या मतलब यह है कि जिन्नात व इन्सान के शर से हिफ़ाज़त करेगी। (बुख़ारीः 1/271, हाशिया अलल मिश्कातः पेज 185)

2. एक और हदीस में मरवी है कि सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें जिस घर में पढ़ी जाएं तो तीन दिन तक शैतान उस घर के क़रीब नहीं आता। (हिस्ने हसीनः पेज 213)

3. आप ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं सूरह बक़रा के ख़ातिमा की आयतें अर्श तले के ख़ज़ाना से दिया गया हूं, मुझ से पहले किसी नबी को ये नहीं दिया गया। (मुस्नद अहमद)

4. जब हुज़ूर ﷺ को मेराज कराई गई और आप सिदरतुल मुन्तहा तक पहुंचे जो सातवें आसमान में है। जो चीज़ आसमान तक चढ़ती है वो यहीं तक पहुंचती है और यहाँ से ले ली जाती है और जो चीज़ ऊपर से उतरती है वो भी यहीं तक पहुंचती फिर यहां से ले ली जाती है, उसे सोने की टिडियां ढके हुए थीं, वहां हुज़ूर ﷺ को तीन चीज़ें दी गईं: पांचों वक़्त की नमाज़ें, सूरह बक़रा के ख़ातिमा की आयतें और तौहीद वालों के तमाम गुनाहों की बख़्शिश। (सहीह मुस्लिम)

5. हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० से रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमायाः सूरह बक़रा की उन दोनों आख़िरी आयतों को पढ़ते रहा करो, मैं उन्हें अर्श के नीचे के ख़ज़ानों से दिया गया हूं। (मुसनद अहमद)

6. एक और हदीस में है कि हम हुज़ूर ﷺ के पास बैठे हुए थे, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम भी थे कि अचानक एक वहशत-नाक बहुत बड़े धमाका की आवाज़ आसमान से आई, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने ऊपर को आँखें उठाएं और फ़रमायाः आसमान का यह दरवाज़ा खुला है, जो आज तक कभी नहीं खुला था, उस से एक फ़रिश्ता उतरा, उस ने आंहज़रत ﷺ से कहाः आप ख़ुश हो जाइए, आप को वह दो नूर दिए जाते हैं जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दिए गएः सूरह फ़ातिहा और सूरह बक़रा की आख़िरी आयतें, उन में से एक एक हर्फ़ पर नूर दिया जाएगा। (सहीह मुस्लिम)

7. हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैंः मैं नहीं जानता कि इस्लाम के जानने वालों में से कोई शख़्स आयतुल कुर्सी और सूरह बक़रा की आख़िर की आयतें पढ़े बग़ैर सो जाए, यह वह ख़ज़ाना है जो तुम्हारे नबी ﷺ अर्श तले के ख़ज़ाना से दिए गए हैं। (इब्ने कसीर)

8. अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा करने से दो हज़ार बरस पहले एक किताब लिखी जिस में से दो आयतें उतार कर सूरह बक़रा ख़त्म की, जिस घर में ये तीन रातों तक पढ़ी जाएं, उस घर के क़रीब भी शैतान नहीं जा सकता। (तिर्मिज़ी) (मज़कूरा अहादीस तफ़सीर इब्ने कसीर से ली गई हैं)

9. हदीस शरीफ़ में है कि जब बंदा "रब्बना ला तुआख़िज़ना" से आख़िर आयत तक कहता है तो उसके हर हर जुम्ले पर अल्लाह तआला कहते हैं, जी हाँ! मैंने दिया, मैंने कुबूल किया। (मुस्लिमः 126)

सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ

مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا

وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ

عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا

وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۫ وَاغْفِرْ لَنَا ۫

وَارْحَمْنَا ۫ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

तर्जुमा : रसूल ईमान लाए हैं उस पर जो उनके रब की तरफ़ से उन पर उतरा है और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं, सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और वो कहते हैं कि हम ने सुना और फ़रमां बरदारी की, हम आप की

बख़्शिश चाहते हैं, और ऐ हमारे (प्यारे) रब! लौटना तो आप ही की तरफ़ है﴾285﴿ अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़ ही, उसको मिलेगा वही जो उस ने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उस ने किया, ऐ हमारे (प्यारे) परवरदिगार! हमें न पकड़ें अगर हम भूल जाएं या ग़लती कर जाएं, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डालिए जिस तरह आप ने बोझ डाला था हम से अगले लोगों पर, ऐ हमारे (प्यारे) रब! हम से वो न उठवाइए जिस की ताक़त हम को नहीं है, और दरगुज़र फ़रमाइए हम से, और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं, पस इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए﴾286﴿

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतों का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह आले इमरान की आख़िरी रुकूअ की फ़ज़ीलत

1. हदीसों से ये भी साबित है कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को तहज्जुद के लिए जब उठते तब सूरह आले इमरान की इन दस आख़िरी आयतों की तिलावत फ़रमाते। चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ में है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने अपनी ख़ाला हज़रत मैमूना रज़ि० के घर रात गुज़ारी, यह माई साहिबा हुज़ूर ﷺ की बीवी साहिबा थीं, हुज़ूर ﷺ जब आए तो थोड़ी देर तक तो आप हज़रत मैमूना रज़ि० से बातें करते रहे फिर सो गए, जब आख़िरी तिहाई रात बाक़ी रह गई तो आप ﷺ उठ बैठे और आसमान की तरफ़ निगाह करके "इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति" से सूरत के आख़िर तक की आयतें तिलावत फ़रमाईं। फिर खड़े हुए, मिसवाक करके वज़ू किया और ग्यारह रकात नमाज़ अदा की। हज़रत बिलाल रज़ि० की सुबह की अज़ान सुन कर फिर दो रकातें सुबह की सुन्नतें पढ़ीं फिर मस्जिद में तशरीफ़ ला कर लोगों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई।
(माख़ूज़ अज़ तफ़सीर इब्ने कसीर)

2. हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से मरवी है कि जो शख़्स सूरह आले इमरान की आख़िरी ग्याहर आयतें पढ़ ले तो उसे रात भर नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा। (दारमीः 2/544, मिश्कात शरीफ़ः पेज 189)

3. हज़रत मकहूल रह० से मरवी है कि जो शख़्स जुमा के दिन पूरी सूरह आले इमरान पढ़े तो फ़रिश्ते रात तक उसके लिए मग़फ़िरत तलब करते रहते हैं। (दारमीः 2/544, मिश्कात शरीफ़ पेज 189)

सूरह आले इमरान का आख़िरी रुकूअ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ۝١٩٠
الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ
وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا
مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝١٩١
رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ ۝١٩٢ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِیْ
لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝١٩٣
رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝١٩٤ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّیْ لَآ اُضِيْعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

तर्जुमा : आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन के बारी बारी आने में अक़्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं (190) जो अल्लाह को याद करते हैं खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर, और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं, (वो कह उठते हैं कि) ऐ हमारे रब! आप ने यह सब बिला वजह नहीं बनाया, आप पाक हैं, पस हम को आग के अज़ाब से बचा लजिए (191) ऐ हमारे रब! आप ने जिस को आग में डाला उसको आप ने वाक़ई रुसवा कर दिया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (192) ऐ हमारे प्यारे रब! हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ बुला रहा था कि अपने रब पर ईमान ले आओ, पस हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर दीजिए और हमारा ख़ातिमा नेक लोगों के साथ फ़रमाइए (193) ऐ हमारे रब! आप ने जो वादे अपने रसूलों के ज़रिए हम से किए हैं उनको हमारे साथ पूरा फ़रमाइए और क़ियामत के दिन हमें रुसवाई में न डालिए, बेशक आप वादे के ख़िलाफ़ करने वाले नहीं हैं (194) पस उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई कि मैं तुम में से किसी का अमल ज़ाए करने वाला नहीं हूं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक दूसरे से हो,

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ
وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۫ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا
عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ
يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ
لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वह लड़े और मारे गए, मैं उनकी ख़ताएं ज़रूर उन से दूर कर दूंगा और उनको ऐसे बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे से नहरें बहती होंगी, यह उन का बदला है अल्लाह के यहां, और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है(195) और मुल्क के अंदर मुन्किरों की सरगरमियां तुम को धोके में न डालें(196) ये थोड़ा सा फ़ायदा है, फिर उन का ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है(197) अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए ऐसे बाग़ात होंगे जिन के नीचे से नहरें बहती होंगी, वह उस में हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह की तरफ़ से उनकी मेज़बानी होगी, और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए वही सब से बेहतर है(198) और अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को मानते हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई और उस किताब को भी जो ख़ुद उनकी तरफ़ भेजी गई थी, वह अल्लाह के आगे झुके हुए हैं, और वह अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच नहीं देते, यही वह लोग हैं कि उनका अज्र उनके रब के पास है, और बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है(199) ऐ ईमान वालो! सब्र करो और मुक़ाबला में मज़बूत रहो और लगे रहो, और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे(200)

अल्हम्दु ल्लिाह! सूरह आले इमरान के आख़िरी रुकूअ का तर्जुमा मदीना मुनव्वरा में पूरा हुआ है।

अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन!

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह कहफ़ के फ़ज़ाइल

1. जिस ने सूरह कहफ़ जुमा के दिन पढ़ी, उसके लिए दो जुमा के दरमियान तक नूर की रौशनी रहती है। (मुसतदरक हाकिम)
2. जिस ने सूरह कहफ़ उसी तरह पढ़ी जिस तरह नाज़िल हुई है, उसके लिए क़ियामत के दिन नूर होगा। (बैहक़ी)
3. जो इस सूरह कहफ़ का अव्वल आख़िर पढ़ ले, उसके लिए उसके पाँव से सर तक नूर होगा और जो इस पूरी सूरत को पढ़े उसे ज़मीन से आसमान तक नूर मिलेगा। (माख़ूज़ अज़ मुसनद अहमद, तफ़सीर इब्ने कसीर)

सूरह कहफ़

सूरह कहफ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई है, मगर आयत (28) और आयत नम्बर (83) से 101 तक मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई हैं, इस में 110 आयतें और 12 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 69 नम्बर पर है, लेकिन तिलावत के एतिबार से 18 नम्बर पर है और सूरह ग़ाशिया के बाद नाज़िल हुई है।

(١٨) سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ (٦٩)

اٰیَاتُهَا ١١٠ — رُكُوْعَاتُهَا ١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ
لَّهٗ عِوَجًا ؕٚ ﴿١﴾ قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ
الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾ لا
مَّاكِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ﴿٣﴾ لا وَّیُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ
وَلَدًا ﴿٤﴾ ق مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً
تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ
بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ
اَسَفًا ﴿٦﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ
اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا ﴿٨﴾ ط
اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِیْمِ كَانُوْا مِنْ
اٰیٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْیَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ
اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَیِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾
فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾ لا

तर्जुमा : तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लायक़ हैं जिस ने अपने बंदे पर यह कुरआन उतारा और उस में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी﴾1﴿ बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक सख़्त अज़ाब से आगाह कर दे और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है﴾2﴿ वह उस में हमेशा रहेंगे﴾3﴿ और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है﴾4﴿ उनको इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को, ये बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वह सिर्फ़ झूठ कहते हैं﴾5﴿ शायद आप उनके पीछे ग़म से अपने आप को हलाक कर डालोगे अगर वह इस बात पर ईमान न लाए﴾6﴿ रूए ज़मीन पर जो कुछ है हम ने उसे ज़मीन की रौनक़ का बाइस बनाया है कि हम उनहें आज़मा लें कि उन में से कौन नेक आमाल वाला है﴾7﴿ और (यह भी यक़ीन रखो कि) रूए ज़मीन पर जो कुछ है एक दिन हम उसे एक स्पाट मैदान बना देंगे﴾8﴿ क्या आप ख़्याल करते हो कि "कहफ़" और "रक़ीम" वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे﴾9﴿ जब उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हम को अपने पास से रहमत दीजिए और हमारे लिए हमारे मुआमले को दुरुस्त कर दीजिए﴾10﴿ पस हम ने ग़ार में उनके कानों पर सालहा साल के लिए नींद का पर्दा डाल दिया﴾11﴿

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾ ع
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ
وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ ۖۗ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا
رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ
قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ
لَوْلَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی
عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ؕ ﴿۱۵﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ
فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ
مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ
كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ
فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ ع
وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ
عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

फिर हम ने उनको उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज़्यादा ठीक शुमार करता है(12) हम आप को उनका अस्ल क़िस्सा सुनाते हैं, वह कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हम ने उनकी हिदायत में मज़ीद तरक़्क़ी दी(13) और हम ने उनके दिलों को मज़बूत कर दिया जब कि वह उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद को हरगिज़ न पुकारेंगे, अगर हम ऐसा करें तो हम बहुत बेजा बात करेंगे(14) यह हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरा माबूद बना रखे हैं, यह उनके हक़ में कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते, फिर उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे(15) और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिन की वह अल्लाह की सिवा इबादत करते हैं तो अब चल कर ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा और तुम्हारे काम के लिए सर व सामान मुहैया करेगा(16) और आप सूरज को देखते हो कि जब वह तुलूअ होता है तो उन के ग़ार से दाएं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाता है और वह ग़ार के अंदर एक वसी जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिस को अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिस को अल्लाह बे राह कर दे तो आप उस के लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाओगे(17) और आप उन्हें देख कर यह समझते हो कि वह जाग रहे हैं, हालांकि वह सो रहे थे, हम उन को दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे, और उन का कुत्ता ग़ार के मुंह पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था, अगर आप उनको झांक कर देखते तो उन से पीठ फेर कर भाग खड़े होते और आप के अंदर उनकी दहशत बैठ जाती(18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ
كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ
مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ
اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ
وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ
فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ
بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى
اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ
رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا
بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ
اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ
اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ ع

और इसी तरह हम ने उनको जगाया ताकि वह आपस में पूछ गछ करें, उन में से एक कहने वाले ने कहाः तुम कितनी देर यहां ठहरे? उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे, वह बोले कि तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे, पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का दे कर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीज़ा खाना कहां मिलता है और तुम्हारे लिए उस में से कुछ खाना लाए, और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे(19) अगर वह तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम को पत्थरों से मार डालेंगे या तुम को अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी कामयाबी न पाओगे(20) और इस तरह हम ने उन पर लोगों को मुत्तला कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, जब लोग आपस में उनके मुआमले में झगड़ रहे थे फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो, उन का रब उनको ख़ूब जानता है, जो लोग उनके मुआमले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके ग़ार पर एक इबादत-गाह बनाएंगे(21) कुछ लोग कहेंगे कि वह तीन थे और चैथा उनका कुत्ता था, और कुछ लोग कहेंगे कि वह पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, यह लोग बे तहक़ीक़ बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वह सात थे और आठवां उनका कुत्ता था, कह दीजिए कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वह कितने थे, थोड़े ही लोग उनको जानते हैं, पस आप सरसरी बात से ज़्यादा उनके मुआमले में बहस न करें और न उन के बारे में उन में से किसी से पूछें(22)

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّهْدِيَنِ
رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿۲۴﴾ وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ
ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۫ وَّلَا يُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾
وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ
وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ
اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا
اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ
يَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾

और आप किसी काम के बारे में यूं न कहें कि मैं उस को कल कर दूंगा (23) मगर ये कि अल्लाह चाहे, और जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद करें और कहिए कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझ को भलाई की इस से ज़्यादा क़रीब राह दिखा दे (24) और वह लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे और (कुछ लोग मुद्दत के शुमार में) नौ साल और बढ़ गए (25) कह दीजिए कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज़्यादा जानता है, आसमानों और ज़मीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला, अल्लाह के सिवा उन का कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है (26) और आप के रब की जो किताब आप पर वह्ई की जा रही है उसको सुनाइए, अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और उस के सिवा आप कोई पनाह नहीं पा सकते (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ जमाए रखिए जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वह उसकी रज़ा के तालिब हैं, और आप की आँखें दुनियवी ज़िन्दगी की रौनक़ की ख़ातिर उन से हटने न पाए, और आप ऐसे शख़्स का कहना न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है और उसका मुआमला हद से गुज़र गया है (28) और कह दीजिए कि यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से। पस जो शख़्स चाहे उसे माने और जो शख़्स चाहे न माने, हम ने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिस की क़नातें उनको अपने घेरे में ले लेंगी, और अगर वह पानी के लिए फ़रियाद करेंगे तो उनकी मदद ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा जो चेहरों को भून डालेगा, क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना (29)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ
اَحْسَنَ عَمَلًا ۚ ﴿٣٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ
فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۭ نِعْمَ الثَّوَابُ ۭ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ ع ٤ ٩ ١٦
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ
اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ ۭ كِلْتَا
الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا
خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ ۙ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ
ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ﴿٣٥﴾ ۙ
وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ
خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ ۚ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ
رَجُلًا ﴿٣٧﴾ ۭ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र ज़ाए नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें(30) यह वह लोग हैं जिन के लिए हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, उन के नीचे से नहरें बहती होंगी, उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वह ऊँची मसनदों पर तकिया लगाए हुए बारीक और दबीज़ क़िस्म के सब्ज़ कपड़े पहने होंगे, कितना बेहतरीन अज्र है है और कैसी हसीन अरामगाह है(31) और उन्हें दो शख़्सों की मिसाल भी सुना दीजिए जिन में से एक को हम ने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे और जिन्हें हम ने खजूर के दरख़्तों से घेर रखा था और दोनों के दरमियान खेती लगा रखी थी(32) दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाए और उन में कुछ कमी नहीं की, और दोनों बाग़ों के बीच हम ने नहर जारी कर दी(33) और उस को ख़ूब फल मिला तो उस ने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझ से माल में ज़्यादा हूं और तादाद में भी ज़्यादा ताक़तवर हूं(34) वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ और वह अपने आप पर जुल्म कर रहा था, उस ने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बरबाद हो जाएगा(35) और मैं नहीं समझता कि क़ियामत कभी आएगी, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो ज़रूर इस से ज़्यादा अच्छी जगह मुझ को मिलेगी(36) उसके साथी ने उस से बात करते हुए कहाः क्या तुम उस ज़ात से इन्कार कर रहे हो जिस ने तुम को मिट्टी से बनाया फिर पानी की एक बूंद से फिर तुम को पूरा आदमी बनाया(37) लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता(38)

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ
اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۚ (٣٩) فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ
يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۙ (٤٠) اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ
لَهٗ طَلَبًا (٤١) وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ
اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ
لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا (٤٢) وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۗ (٤٣) هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ
لِلّٰهِ الْحَقِّ ۗ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۧ (٤٤) وَاضْرِبْ لَهُمْ ع ٥ ١٣ ١٧
مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ
الرِّيٰحُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا (٤٥) اَلْمَالُ
وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا (٤٦) وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ
وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۚ (٤٧)

और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुम ने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई कुव्वत नहीं, अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुम से कम हूं(39) तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझको तुम्हारे बाग़ से बेहतर बाग़ दे दे और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे जिस से वह बाग़ साफ़ मैदान हो कर रह जाए(40) या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए फिर तुम उसको किसी तरह न पा सको(41) और उसके (सारे) फल घेर लिए गए, पस वह अपने उस ख़र्च पर हाथ मलने लगा जो उस ने उस में क्या था और वह बाग़ तो औंधा उलटा पड़ा था, और वह शख़्स कह रहा था कि काश! मैं अपने रब के साथ किसी को भी शरीक न करता(42) उसकी हिमायत में कोई जमात न उठी कि अल्लाह से उसका बचाव करती और न वह ख़ुद ही बदला लेने वाला बन सका(43) यहां सारा इख़्तियार सिर्फ़ ख़ुदाए बरहक़ का है, वह बेहतरीन अज्र और बेहतरीन अंजाम वाला है(44) और उनको दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल सुनाइए जैसे कि पानी जिस को हम ने आसमान से उतारा फिर उस से ज़मीन की नबातात ख़ूब घनी हो गईं फिर वह रेज़ा रेज़ा हो गईं जिस को हवाएं उड़ाती फिरती हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है(45) माल और औलाद दुनियवी ज़िन्दगी की रौनक़ हैं, और बाक़ी रहने वाली नेकियां आप के रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से और तवक़्क़ो के एतिबार से बेहतर हैं(46) और जिस दिन हम पहाड़ को चलाएंगे और आप देखोंगे ज़मीन को बिल्कुल खुली हुई और हम उन सब को जमा करेंगे फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे(47)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ
وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً
وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا ع ۲ ۵ ۱۸
لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ
اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ
لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿۵۱﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا ﴿۵۲﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا
وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۳﴾ ع وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ ع ۱۹
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾

और सब लोग आप के रब के सामने सफ़ बांध कर पेश किए जाएंगे, तुम हमारे पास आ गए जिस तरफ़ हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुम ने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे (48) और रजिस्टर रखा जाएगा तो आप मुजरिमों को देखोगे कि उस में जो कुछ है वह उस से डरते होंगे और कहेंगे कि हाय हमारी ख़राबी! कैसी है यह किताब कि इस ने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात, और जो कुछ उन्होंने किया है वह सब सामने पाएंगे, और आप का रब किसी के ऊपर ज़ुल्म न करेगा (49) और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अलैहिस्सलाम) को सजदा करो तो उन्होंने सजदा किया मगर इब्लीस ने न किया, वह जिन्नात में से था पस उस ने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की, अब क्या तुम उसको और उस की औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो? हालांकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं, यह ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है (50) मैं ने उनको न आसमानों और ज़मीन को पैदा करने के वक़्त बुलाया और न ख़ुद उन के पैदा करने के वक़्त बुलाया, और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊँ (51) और जिस दिन अल्लाह कहेगा कि जिन को तुम मेरा शरीक समझते थे उनको पुकारो, पस वह उनको पुकारेंगे मगर वह उनको कोई जवाब न देंगे और हम उन के दरमियान हलाकत का सामान कर देंगे (52) और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं और वह उस से बचने की कोई राह न पाएंगे (53) और हम ने इस कुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर क़िसम की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान सब से ज़्यादा झगड़ालू है (54)

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا
رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا
بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا
اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا
كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ
دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا
ع ٨ ٢٠ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ع وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى
اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ
بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا
جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो अब उन्हें ईमान लाने और अपने रब से मआफ़ी मांगने से इस (मुतालिबे) के सिवा कोई और चीज़ नहीं रोक रही कि उन के साथ भी पिछले लोगों जैसे वाक़िआत पेश आ जाएं या अज़ाब उनके बिल्कुल सामने आ खड़ा हो(55) और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजते हैं और मुन्किर लोग नाहक़ की बातें ले कर झूटा झगड़ा करते हैं ताकि उस के ज़रिए से हक़ को नीचा कर दें, और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उनको मज़ाक़ बना दिया(56) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जिस को उसके रब की आयात के ज़रिए याद दिहानी की जाए तो वह उस से मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को भूल जाए, हम ने उनके दिलों पर पर्दो डाल दिए हैं कि वह उसको न समझें और उनके कानों में बोझ है, और अगर आप उनको हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह कभी राह पर आने वाले नहीं हैं(57) और आप का रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है, अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फ़ौरन उन पर अज़ाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त है (और) वह उस के मुक़ाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे(58) और यह बस्तियां हैं जिन को हम ने हलाक कर दिया जब कि वह ज़ालिम हो गए, और हम ने उनकी हलाकत का एक वक़्त मुक़र्रर किया था(59) और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊँ या इसी तरह बरसों तक चलता रहूं(60) पस जब वह दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वह अपनी मछली को भूल गए, और वह मछली ने दरिया में अपनी राह बना ली(61) फिर जब वह आगे बढ़े तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने शगिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफ़र से हम को कोई बड़ी तकान हो गई है(62)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫
وَمَاۤ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي
الْبَحْرِ ۖۗ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖۗ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا
قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى
اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾
قَالَ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾
قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ٙ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ ع
خَرَقَهَا ۭ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ
لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا ٙ حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

शार्गिद ने कहाः क्या आप ने देखा जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया, और मुझ को शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता, और मछली अजीब तरीक़े से निकल कर दरिया में चली गई (63) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः उसी मोक़ा की तो हमें तलाश थी, पस दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए वापस लौटे (64) तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिस को हम ने अपने पास से रहमत दी थी और जिस को हम ने अपने पास से इल्म सिखाया था (65) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस से कहाः क्या मैं आप के साथ रह सकता हूं, ताकि आप मुझे उस इल्म में सिखा दें जो आप को सिखाया गया है (66) उस ने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते (67) और तुम उस चीज़ पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी जानकारी के दायरे से बाहर है (68) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः इन्शा अल्लाह आप मुझ को सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आप की नाफ़रमानी नहीं करूंगा (69) उस ने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझ से कोई बात न पूछना जब तक कि मैं ख़ुद तुम से उसका ज़िक्र न करूं (70) फिर दोनों चले, यहां तक कि जब वह कश्ती सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में सूराख़ कर दिया, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः क्या आप ने इस कश्ती में इस लिए सूराख़ किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें, यह तो आप ने बड़ी सख़्त चीज़ कर डाली (71) उस ने कहाः मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे (72) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने हाः मेरी भूल पर मुझ को न पकड़िए और मेरे मुआमले में सख़्ती से काम न लीजिए (73) फिर वह दोनों चले, यहां तक कि वह एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसको मार डाला, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः क्या आप ने एक मासूम जान को मार डाला हालांकि उस ने किसी का ख़ून नहीं किया था, बेशक आप ने तो बड़ी नापसंदीदा हरकत की (74)

قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۷۵﴾
قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ عَنۡ شَىۡءٍۢ بَعۡدَهَا فَلَا تُصٰحِبۡنِىۡۚ قَدۡ بَلَغۡتَ
مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ﴿۷۶﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهۡلَ قَرۡيَةِ اۨسۡتَطۡعَمَاۤ
اَهۡلَهَا فَاَبَوۡا اَنۡ يُّضَيِّفُوۡهُمَا فَوَجَدَا فِيۡهَا جِدَارًا يُّرِيۡدُ اَنۡ
يَّنۡقَضَّ فَاَقَامَهٗؕ قَالَ لَوۡ شِئۡتَ لَـتَّخَذۡتَ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ
هٰذَا فِرَاقُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنِكَۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاۡوِيۡلِ مَا لَمۡ تَسۡتَطِعْ عَّلَيۡهِ
صَبۡرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِيۡنَةُ فَكَانَتۡ لِمَسٰكِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ فِى الۡبَحۡرِ
فَاَرَدْتُّ اَنۡ اَعِيۡبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمۡ مَّلِكٌ يَّاۡخُذُ كُلَّ سَفِيۡنَةٍ
غَصۡبًا ﴿۷۹﴾ وَاَمَّا الۡغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤۡمِنَيۡنِ فَخَشِيۡنَاۤ اَنۡ يُّرۡهِقَهُمَا
طُغۡيَانًا وَّكُفۡرًاۚ ﴿۸۰﴾ فَاَرَدۡنَاۤ اَنۡ يُّبۡدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيۡرًا مِّنۡهُ زَكٰوةً
وَّاَقۡرَبَ رُحۡمًا ﴿۸۱﴾ وَاَمَّا الۡجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيۡنِ يَتِيۡمَيۡنِ فِى الۡمَدِيۡنَةِ
وَكَانَ تَحۡتَهٗ كَنۡزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوۡهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ
اَنۡ يَّبۡلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسۡتَخۡرِجَا كَنۡزَهُمَاۖ رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَۚ
وَمَا فَعَلۡتُهٗ عَنۡ اَمۡرِىۡؕ ذٰلِكَ تَاۡوِيۡلُ مَا لَمۡ تَسۡطِعْ عَّلَيۡهِ صَبۡرًا ﴿۸۲﴾ ع ١٠ ١٢ ١
وَيَسۡـئَلُوۡنَكَ عَنۡ ذِى الۡقَرۡنَيۡنِؕ قُلۡ سَاَتۡلُوۡا عَلَيۡكُمۡ مِّنۡهُ ذِكۡرًا ﴿۸۳﴾ ط

उस शख़्स ने कहा कि क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे﴾75﴿ मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः कि इसके बाद अगर मैं आप से किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ पूछूं तो आप मुझ को साथ न रखें, आप मेरी तरफ़ से उज़्र की हद को पहुंच गए﴾76﴿ फिर दोनों चले यहां तक कि वह एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा मगर उन्होंने उनकी मेज़बानी से इन्कार कर दिया, फिर उनको वहां एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी तो उस ने उस (दीवार) को सीधा कर दिया, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत ले लेते﴾77﴿ उस ने कहा कि अब यह मेरे तुम्हारे दरमियान जुदाई (का मोक़ा) है, मैं तुम को उन चीज़ों की हक़ीक़त बताऊँगा जिन पर तुम सब्र न कर सके﴾78﴿ कश्ती का मुआमला यह है कि वह चंद मिस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे, तो मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूं और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को ज़बरदस्ती छीन कर ले लेता था﴾79﴿ और लड़के का मुआमला यह है कि उसके मां बाप ईमानदार थे पस हम को अंदेशा हुआ कि वह बड़ा हो कर अपनी सरकशी और कुफ्र से उनको तंग करेगा﴾80﴿ पस हम ने चाहा कि उनका रब उनको उस की जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी में उस से बेहतर हो और शफ़क़त करने वाली हो﴾81﴿ और दीवार का मुआमला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ़न था और उन का बाप एक नेक आदमी था, पस आप के रब ने चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें, यह आप के रब की रहमत से हुआ और मैंने उसको अपनी राय से नहीं किया, यह है हक़ीक़त उन बातों की जिन पर आप सब्र न कर सके﴾82﴿ और वह आप से ज़ुलक़रनैन का हाल पूछते हैं, कह दीजिए कि मैं उस का कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा﴾83﴿

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۙ ﴿۸۴﴾ فَاَتْبَعَ
سَبَبًا ﴿۸۵﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ
حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ
وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿۸۶﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ
نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿۸۷﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ؕ ﴿۸۸﴾
ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۹﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ
عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۙ ﴿۹۰﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا
بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿۹۱﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۹۲﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ
وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿۹۳﴾ قَالُوْا
يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿۹۴﴾ قَالَ مَا
مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
رَدْمًا ۙ ﴿۹۵﴾ اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ
انْفُخُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ؕ ﴿۹۶﴾

हमने उस को ज़मीन में इक़्तिदार दिया था और हम ने उसको हर चीज़ का सामान दिया था﴾84﴿ जिस के नतीजे में वह एक रास्ते के पीछे चल पड़ा﴾85﴿ यहां तक कि जब वह सूरज के ग़ुरूब होने के मक़ाम तक पहुंच गया तो उस ने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उस को एक क़ौम मिली, हम ने कहा कि ऐ ज़ुलक़र्नैन! तुम चाहो तो इन को सज़ा दो और चाहो तो इन के साथ अच्छा सुलूक करो﴾86﴿ उस ने कहा कि जो इन में से ज़ुल्म करेगा हम उसको सज़ा देंगे फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा फिर वह उसको सख़्त सज़ा देगा﴾87﴿ और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उस के लिए अच्छा बदला है और हम भी उसके साथ आसान मुआमला करेंगे﴾88﴿ फिर वह एक राह पर चला﴾89﴿ यहां तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुंचा तो उस ने सूरज को ऐसी क़ौम पर तुलूअ होते हुए पया जिन के लिए हम ने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी﴾90﴿ यह इसी तरह है, और हम ज़ुल-क़रनैन के अहवाल से बाख़बर हैं﴾90﴿ फिर वह एक राह पर चला﴾92﴿ यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दरमियान पहुंचा तो उनके पास उस ने एक क़ौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी﴾93﴿ उन्होंने कहाः ऐ ज़ुल-क़रनैन! याजूज और माजूज इस ज़मीन में फ़साद फैलाने वाले लोग हैं तो क्या हम आप को कुछ माल की पेशकश कर सकते हैं जिस के बदले आप हमारे और उन के दरमियान कोई दीवार बना दें﴾94﴿ ज़ुल-क़रनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है, तुम मेहनत से मेरी मदद करो मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दूंगा﴾95﴿ तुम मुझे लोहे के तख़्ते ला कर दो, यहां तक कि जब उस ने दोनों के दरमियानी ख़ला को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ, यहां तक कि जब उसको आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं﴾96﴿

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ یَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا
رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّیْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّیْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ
رَبِّیْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ ؕ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ یَوْمَئِذٍ یَّمُوْجُ فِیْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ
فِی الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ ۙ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ یَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِیْنَ
عَرْضَاۨ ﴿١٠٠﴾ ۙ الَّذِیْنَ كَانَتْ اَعْیُنُهُمْ فِیْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِیْ وَكَانُوْا
١١ ع ١٩ ٢ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ ع اَفَحَسِبَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ یَّتَّخِذُوْا
عِبَادِیْ مِنْ دُوْنِیْٓ اَوْلِیَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِیْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِیْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ ؕ اَلَّذِیْنَ ضَلَّ سَعْیُهُمْ
فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَهُمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ یُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فَلَا نُقِیْمُ لَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا
كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰیٰتِیْ وَرُسُلِیْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ ۙ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا
لَا یَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

पस याजूज माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उस में सूराख़ कर सकते थे﴾97﴿ ज़ुल-क़रनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह इसको ढा कर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है﴾98﴿ और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे, वह मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे और सूर फूंका जाएगा पस हम सब को एक साथ जमा करेंगे﴾99﴿ और उस दिन हम जहन्नम को मुन्किरों के सामने लाएंगे﴾100﴿ जिन की आँखों पर हमारी याद दिहानी से पर्दा पड़ा रहा और वह कुछ सुनने के लिए तैयार न थे﴾101﴿ क्या इन्कार करने वाले यह समझते हैं कि वह मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना दोस्त बनाएंगे, हम ने काफ़िरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है﴾102﴿ कह दीजिए कि मैं तुम को बता दूं कि अपने आमाल के एतिबार से सब से ज़्यादा घाटे में कौन लोग हैं﴾103﴿ यह वह लोग हैं कि दुनियवी ज़िन्दगी में उनकी सारी दौड़ धूप सीधे रास्ते से भटकी रही और वह समझते रहे कि वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं﴾104﴿ यह वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उसके सामने पेश होने का इन्कार किया इस लिए उन का सारा किया धरा ग़ारत हो गया, चुनांचे क़ियामत के दिन हम उन का कोई वज़न शुमार रहीं करेंगे﴾105﴿ यह जहन्नम उनका बदला है इस लिए उन्होंने इन्कार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया﴾106﴿ बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन के लिए फ़िरदौस के बाग़ों की मेहमानी है﴾107﴿ उस मे ंवह हमेशा रहेंगे, वहां से कभी निकलना न चाहेंगे﴾108﴿ कह दीजिए कि अगर समुंदर मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रौशनाई हो जाए तो समुंदर ख़त्म हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिन्द और समुंदर मिला दें।﴾109﴿

قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع

कह दीजिए कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं, मुझ पर वह्ई आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, पस जिस को अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसको चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए (110)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह कहफ़ का तर्जुमा मस्जिदे कुबा मदीना मुनव्वरा में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह अलिफ़ लाम-मीम सजदा और सूरह मुल्क के मुश्तरका अजीब व ग़रीब फ़ज़ाइल

1. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने हुज़ूर ﷺ का यह इरशाद नक़्ल किया है कि कुरआन मजीद में एक सूरत 30 आयत की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती है। यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत करा दे, वह "सूरह तबारकल्लज़ी" है।
(रवाहु अहमद, अबूदाऊद, नसई, इब्ने माजा, हाकिम, इब्ने हिब्बान फी सहीह)

2. एक रिवायत में हुज़ूर ﷺ का इरशाद आया है कि मेरा दिल चाहता है कि यह सूरह हर मोमिन के दिल में हो।

3. एक रिवायत में है कि जिस ने सूरह अलिफ़ लाममीम सजदा और सूरह मुल्क को मग़रिब और इशा के दरमियान पढ़ा, गोया उस ने लैलतुल क़द्र में क़याम किया।

4. एक रिवायत में है कि जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा उसके लिए 70 नेकियां लिखी जाती हैं और 70 बुराइयां दूर की जाती हैं।

5. एक रिवायत में है कि जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा उसके लिए इबादते लैलतुल क़द्र के बराबर सवाब लिखा जाता है।
(कज़ा फ़िल-मुज़ाहिर)

6. इमाम तिर्मिज़ी रह० ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया है कि बाज़ सहाबा रज़ि० ने एक जगह ख़ेमा लगाया, उनको इल्म न था कि वहां क़ब्र है, अचानक उन ख़ेमा लगाने वालों ने उस जगह किसी को सूरह तबारकल्लज़ी पढ़ते हुए सुना तो हुज़ूर ﷺ से आ कर अर्ज़ किया, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि यह सूरह अल्लाह के अज़ाब से रोकने वाली है और निजात देने वाली है।

7. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम ﷺ उस वक़्त तक न सोते थे, जब तक सूरह अलिफ़ लाममीम सजदा और सूरह तबारकल्लज़ी न पढ़ लेते थे।

8. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० कहते हैं कि मुझे ये रिवायत पहुंची है कि एक शख़्स बड़ा गुनहगार था और सूरह सजदा पढ़ा करता था, उसके अलावा और कुछ नहीं पढ़ा करता था, इस सूरत ने अपने पर उस शख़्स के ऊपर फैला दिए कि ऐ रब! यह शख़्स मेरी बहुत तिलावत करता था, उसकी शफ़ाअत क़ुबूल की गई और हुक्म हो गया कि हर ख़ता के बदले एक नेकी दी जाए।

9. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० यह भी कहते हैं कि यह सूरत अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से क़ब्र में झगड़ती है और कहती है कि अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो मेरी शफ़ाअत क़ुबूल कर, वर्ना मुझे अपनी किताब से मिटा दे और ब-मंज़िला परिन्दे के बन जाती है और अपने पर मय्यत के ऊपर फैला देती है और उस पर अज़ाबे क़ब्र होने से माने होती है और यही सारा मज़मून वह तबारकल्लज़ी के बारे में भी कहते हैं।

10. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० उस वक़्त तक न सोते थे जब तक दोनों सूरतें न पढ़ लेते।

11. हज़रत ताउस रह० कहते हैं कि यह दोनों सूरतें तमाम कुरआन की हर सूरत पर साठ नेकियां ज़्यादा रखती हैं।

(मज़कूरा तमाम मज़मून फ़ज़ाइले कुरआनः पेज 53,54 से लिया गया है।)

सूरह अलिफ़ लाम-मीम सजदा

सूरह सजदा मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर आयत (16) से आयत (20) तक मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुईं, इस में 30 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 75 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 32 नम्बर पर है और सूरह मोमिनून के बाद नाज़िल हुई है।

آیاتها ٣٠ (٣٢) سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (٧٥) رکوعاتها ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ
اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ
يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾
ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۚ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ
نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ مَّهِيْنٍ ۚ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ
مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا
لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ڛ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

तर्जुमा : अलिफ़ लाम-मीम(1) ये नाज़िल की हुई किताब है, इस में कोई शुबा नहीं, ख़ुदावन्दे आलम की तरफ़ से है(2) क्या वह कहते हैं कि इस श़ख़्स ने इसको खुद घढ़ लिया है, बल्कि यह हक़ है आप के रब की तरफ़ से ताकि आप उन लोगों को डरा दो जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह राह पर आ जाएं(3) अल्लाह ही है जिस ने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो उनके दरमियान है छ दिनों में फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, उसके सिवा न कोई तुम्हारा मददगार है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते(4) वह आसमान से ज़मीन तक तमाम मुआमलात की तदबीर करता है फिर वह उसकी तरफ़ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिस की मिक़दार तुम्हारी गिनती से हज़ार साल के बराबर है(5) वही है पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, ज़बरदस्त है, रहमत वाला है(6) उस ने जो चीज़ भी बनाई ख़ुब बनाई, और उस ने इन्सान की तख़्लीक़ की इब्तिदा मिट्टी से की(7) फिर उसकी नस्ल हक़ीर पानी के ख़ुलासे से चलाई(8) फिर उसके आज़ा दुरुस्त किए और उस में अपनी रूह फूंकी और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो(9) और उन्होंने कहा कि क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किए जाएंगे? बल्कि वह अपने रब की मुलाक़ात के मुन्किर हैं(10)

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ ع وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ
رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾
وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ
لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا
نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا
خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ السجدة ﴿١٥﴾
تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ
اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ
فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ
جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًاۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا
فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا
وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

السجدة ٩ — وقف غفران

कह दीजिए कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है जो तुम पर
मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे(11)
और काश आप देखो जब कि यह मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर
झुकाए होंगे, ऐ हमारे रब! हम ने देख लिया और हम ने सुन लिया पस
आप हम को वापस भेज दीजिए कि हम नेक काम करें, हम यक़ीन करने
वाले बन गए(12) और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत
दे देते, लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नात
और इन्सानों से भर दूंगा(13) तो अब मज़ा चखो इस बात का कि तुम
ने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया, हम ने भी तुम को भुला दिया
और (अब) अपने किए की बदौलत हमेशा का अज़ाब चखो(14) हमारी
आयतों पर वही लोग ईमान लेते हैं कि जब उन को उन के ज़रिए याद
दिहानी की जाती है तो वह सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द
के साथ उसकी तस्बीह करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते(15) उन के
पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, वह अपने रब को पुकारते हैं डर से और
उम्मीद से, और जो कुछ हम ने उनको दिया है उस में से ख़र्च करते हैं(16)
तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उन के आमाल के सिले
में आँखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है(17) तो क्या जो मोमिन है वह
उस शख़्स जैसा होगा जो नाफ़रमान है, दोनों बराबर नहीं हो सकते(18)
जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत
की क़याम गाहें हैं, मेहमान नवाज़ी के तौर पर उन कामों की वजह से जो
वह करते थे(19) और जिन लोगों ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना
आग है, वह लोग जब उस से निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए
जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि आग का अज़ाब चखो जिस को तुम
झुटलाते थे(20)

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ
ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ع ١١ ١٥
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ
لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ ۚ وَجَعَلْنَا
مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ۟ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ
الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ
اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ
لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ع ٨ ١٦

और हम उन को बड़े अज़ाब से पहले क़रीब का अज़ाब ज़रूर चखाएंगे शायद कि वह बाज़ आ जाएं (21) और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिस को उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए फिर वह उन से मुंह मोड़े, हम ऐसे मुजरिमों से ज़रूर बदला लेंगे (22) और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी तो आप उस के मिलने में कुछ शक न करें, और हम ने उसको बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया (23) और हम ने उन में पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे जब कि उन्होंने सब्र किया, और वह हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे (24) बेशक आप का रब क़ियामत के दिन उन के दरमियान उन उमूर में फ़ैसला कर देगा जिन में वह आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे (25) क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत देने वाली न बनी कि उन से पहले हम ने कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया, जिन की बस्तियों में यह लोग आते जाते थे, बेशक इस में निशानियां हैं, क्या यह लोग सुनते नहीं? (26) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटयल ज़मीन की तरफ़ हांक कर ले जाते हैं फिर हम उस से खेती निकालते हैं जिस से उन के चैपाए खाते हैं और वह ख़ुद भी, फिर क्या वह देखते नहीं? (27) और वह कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो (28) कह दीजिए कि फ़ैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इन्कार किया और न उनको मोहलत दी जाएगी (29) तो उन से एराज़ कीजिए और मुंतज़िर रहिए, यह भी मुंतज़िर हैं (30)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह सजदा का तर्जुमा जद्दा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

फ़ज़ाइले सूरह यासीन

1. अता बिन उबै रिबाह रह० कहते हैं कि मुझे हुज़ूर अकरम ﷺ का यह इरशाद पहुंचा है कि जो शख़्स सूरह यासीन शुरू दिन में पढ़े, उसकी तमाम दिन की हवाइज पूरी हो जाएं।

2. एक रिवायत में वारिद हुआ है कि हर चीज़ के लिए एक दिल हुआ करता है, कुरआन शरीफ का दिल "सूरह यासीन" है जो शख़्स सूरह यासीन पढ़ता है, हक़ तआला शानुहू उसके लिए दस कुरआन का सवाब लिखता है।

3. एक रिवायत में आता है कि हक़ तआला शानुहू ने सूरह ता-हा और सूरह यासीन को आसमानों व ज़मीन के पैदा करने से हज़ार बरस पहले पढ़ा। जब फ़रिश्तों ने सुना तो कहने लगे, ख़ुश हाली है, उस उम्मत के लिए, जिन पर यह कुरआन उतारा जाएगा और ख़ुश हाली है, उन दिलों के लिए जो इसको उठायेंगे, यानी याद करेंगे। और ख़ुशहाली है उन ज़बानों के लिए जो इसकी तिलावत करेंगे।

4. एक हदीस में है कि जो शख़्स सूरह यासीन को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के वास्ते पढ़े, उसके पहले सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, पस इस सूरत को अपने मुर्दों पर पढ़ा करो।

5. एक रिवायत में आया है कि सूरह यासीन का नाम तौरात में मुअम्मा है कि अपने पढ़ने वाले के लिए दुनिया व आख़िरत की भलाइयों पर मुश्तमिल है और उस से दुनिया व आख़िरत की मुसीबत को दूर करती है और आख़िरत की होल को दूर करती है, इस सूरत का नाम राफ़िआ ख़ाफ़िज़ा भी है यानी मोमिनों के रुतबे बुलंद करने वाली और काफ़िरों को पस्त करने वाली।

6. एक रिवायत में है कि हुज़ूर अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि सूरह यासीन मेरे हर उम्मती के दिल में हो।

7. एक रिवायत में है कि जिस ने सूरह यासीन को हर रात में पढ़ा, फिर मर गया तो शहीद मरा।

8. एक रिवायत में है कि जो सूरह यासीन को पढ़ता है, उसकी मग़फ़िरत की जाती है और जो भूक की हालत में पढ़ता है वह सैर हो जाता है और जो रास्ता गुम हो जाने की वजह से पढ़ता है, वह रास्ता पा लेता है और जो शख़्स जानवर के गुम हो जाने की वजह से पढ़े वह पा लेता है और जो ऐसी हालत में पढ़े कि खाना कम हो जाने का ख़ौफ़ हो, तो वह खना काफ़ी हो जाता है और जो ऐसे शख़्स के पास पढ़े, जो नज़ा में हो, उस पर नज़ा में आसानी हो जाती है और जो ऐसी औरत पर पढ़े जिस के बच्चा होने में दुश्वारी हो रही हो, उसके लिए बच्चा जनने में सहूलत होती है।

9. एक रिवायत में आता है कि जिस ने सूरह यासीन और "सूरह वस्साफ्फ़ात" जुमा के दिन पढ़ी और फिर अल्लाह से दुआ की, उसकी दुआ पूरी होती है।

(मज़कूरा तमाम अहादीस फ़ज़ाइले कुरआन पेज 51, 54 से ली गई हैं)

10. हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि सूरह यासीन पढ़ा करो, इस लिए कि सूरह यासीन में 10 बरकतें हैं:

(1) भूका शख़्स पढ़े तो सैर हो जाए। (भूक दूर हो जाए।) (2) प्यासा शख़्स पढ़े तो सैराबी नसीब हो जाए। (3) नंगा शख़्स पढ़े तो कपड़ा मयस्सर हो जाए। (4) बेशादी शुदा पढ़े तो शादी हो जाए। (5) ख़ौफ़ ज़दा पढ़े तो अमन मिल जाए। (6) क़ैदी पढ़े तो क़ैद से छुटकारा मिले। (7) मुसाफ़िर पढ़े तो उसके सफ़र में कामयाबी हासिल हो। (8) मदयून पढ़े तो क़र्ज़ अदा हो जाए। (9) ऐसा शख़्स

जिस की कोई शय गुम हो गई हो तो पा ले। (10) मैयत (मरने के क़रीब) के पास पढ़े तो उस से तकलीफ़ में आसानी हो।

(कन्ज़ुल उम्मालः 2/ 307, अन अली रज़ि०)

सूरह यासीन मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर आयत (45) मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में (83) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 41 नमबर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 36 नम्बर पर है और सूरह जिन्न के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह यासीन

رُكُوْعَاتُهَا ٥ (٣٦) سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ (٤١) اٰيَاتُهَا ٨٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ ۚ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ ﴿٣﴾ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؕ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى
الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا
وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾

तर्जुमा : यासीन (1) हिकमत भरे कुरआन की क़सम (2) बेशक आप रसूलों में से हैं (3) निहायत सीधे रास्ते पर (4) यह ख़ुदाए अज़ीज़ व रहीम की तरफ़ से उतारा गया है (5) ताकि आप उन लोगों को डरावें जिन के अगलों को नहीं डराया गया, पस वह बेख़बर हैं (6) उन में से अकसर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वह ईमान नहीं लाएंगे (7) हम ने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं तो वह ठोरियों तक हैं, पस उनके सर ऊँचे हो रहे हैं (8) और हम ने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी, फिर हम ने उनको ढांक दिया तो उनको दिखाई नहीं देता (9)

وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۰﴾
اِنَّمَا تُنۡذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكۡرَ وَخَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ ۚ
فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ الۡمَوۡتٰى
وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ فِىۡۤ
اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۲﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ ۘ اِذۡ
جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۳﴾ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا
فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾ قَالُوۡا
مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَىۡءٍ ۙ
اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿۱۵﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ
لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۷﴾ قَالُوۡۤا اِنَّا
تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ
مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۸﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ ؕ اَئِنۡ
ذُكِّرۡتُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ مِنۡ اَقۡصَا
الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۲۰﴾
اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـَٔلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۲۱﴾

وقف غفران

وقف لازم

और उन के लिए यक्सां है कि आप उनको डराएं या न डराएं, वह ईमान नहीं लाएंगे(10) आप तो सिर्फ़ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और अल्लाह से बिन देखे डरे, तो ऐसे शख़्स को मआफ़ी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत दे दीजिए(11) यक़ीनन हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा, और हर चीज़ हम ने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में(12) और उनको बस्ती वालों की मिसाल सुनाइए, जब कि उस में रसूल आए(13) जब कि हम ने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं(14) लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे इन्सान हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम महज़ झूठ बोलते हो(15) उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं(16) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर पहुंचा देना है(17) बस्ती वालों ने कहाः हम ने तो तुम्हारे अंदर नहूसत महसूस की है, यक़ीन जानो अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम पर पत्थर बरसाएंगे और हमारे हाथों तुम्हें बड़ी दर्दनाक सज़ा मिलेगी(18) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम को नसीहत की गई, बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो(19) और शहर के दूर मक़ाम से ऐ शख़्स दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! रसूलों की पैरवी करो(20) उन लोगों की पैरवी करो जो तुम से कोई बदला नहीं मांगते, और वह ठीक रास्ते पर हैं(21)

وَمَالِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِيۡ فَطَرَنِيۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۲۲﴾
ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغۡنِ عَنِّيۡ
شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿۲۳﴾ اِنِّيۡۤ اِذًا لَّفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۲۴﴾ اِنِّيۡۤ
اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿۲۵﴾ قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِيۡ
يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۶﴾ بِمَا غَفَرَ لِيۡ رَبِّيۡ وَجَعَلَنِيۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ
اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿۲۸﴾
اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿۲۹﴾ يٰحَسۡرَةً عَلَى
الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۳۰﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا
كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ اَنَّهُمۡ اِلَيۡهِمۡ لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۳۱﴾ وَاِنۡ
كُلٌّ لَّمَّا جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿۳۲﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الۡاَرۡضُ الۡمَيۡتَةُ ۖۚ
اَحۡيَيۡنٰهَا وَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبًّا فَمِنۡهُ يَاۡكُلُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا جَنّٰتٍ
مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّاَعۡنَابٍ وَّفَجَّرۡنَا فِيۡهَا مِنَ الۡعُيُوۡنِ ﴿۳۴﴾ لِيَاۡكُلُوۡا مِنۡ
ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتۡهُ اَيۡدِيۡهِمۡ ؕ اَفَلَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾ سُبۡحٰنَ الَّذِيۡ خَلَقَ
الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۡۢبِتُ الۡاَرۡضُ وَمِنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَمِمَّا لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۶﴾
وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۖۚ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ مُّظۡلِمُوۡنَ ﴿۳۷﴾

और मैं क्यों न इबादत करूं उस ज़ात की जिस ने मुझ को पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे(22) क्या मैं उस के सिवा दूसरों को माबूद बनाऊँ, अगर ख़ुदाए रहमान मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहए तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वह मुझ को छुड़ा सकेंगे(23) बेशक उस वक़्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा(24) मैं तुम्हारे रब मपर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो(25) इरशाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ, उस ने कहाः काश! मेरी क़ौम जानती(26) इस बात को कि मेरे रब ने मुझ को बख़्श दिया और मुझको इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया(27) और उसके बाद उसकी क़ौम पर हम ने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम फ़ौज नहीं उतारा करते(28) बस एक धमाका हुआ तो यकायक वह सब बुझ कर रह गए(29) अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उन के पास आया वह उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे(30) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, अब वह उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं(31) और उन में कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा हो कर हमारे पास हाज़िर न किया जाए(32) और एक निशानी उनके लिए मुर्दा ज़मीन है, उसको हम ने ज़िन्दा किया और उस से हम ने ग़ल्ला निकाला, पस वह उस में से खाते हैं(33) और उस में हम ने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए और उस में हम ने चश्मे जारी किए(34) ताकि लोग उसके फल खाएं, और उस को उनके हाथों ने नहीं बनाया, तो क्या वह शुक्र नहीं करते?(35) पाक है वह ज़ात जिस ने सब चीज़ के जोड़े बनाए उन में से भी जिन को ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी, और उन में से भी जिन को वह नहीं जानते(36) और एक निशानी उन के लिए रात है, हम उस से दिन को खींच लेते हैं तो वह अंधेरे में रह जाते हैं(37)

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٣٨ۭ
وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝٣٩ لَا الشَّمْسُ
يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ
يَّسْبَحُوْنَ ۝٤٠ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝٤١ۙ
وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝٤٢ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ
لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝٤٣ۙ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٤٤ وَاِذَا
قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٤٥ وَمَا
تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤٦ وَاِذَا
قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ڰ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٤٧
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٨ مَا يَنْظُرُوْنَ
اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝٤٩ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٠ۧ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ
مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝٥١ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا
مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜسَكْتَةٌ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٢

और सूरज अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है, यह ज़बरदस्त इल्म
वाले (रब) का बांधा हुआ अंदाज़ा है(38) और चाँद के लिए हम ने
मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की
पुरानी शाख़(39) न सूरज के बस में है कि वह चाँद को पकड़ ले और न
रात दिन से पहले आ सकती है और सब एक एक दायरे में तैर रहे हैं(40)
और एक निशानी उन के लिए यह है कि हम ने उनकी नस्ल को भरी हुई
कश्ती में सवार किया(41) और हम ने उनके लिए उसी के मानिन्द और
चीज़ें पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं(42) और अगर हम चाहें तो
उनको ग़र्क़ कर दें, फिर न कोई उन की फ़रियाद सुनने वाला हो और
न वह बचाए जा सकें(43) मगर यह हमारी रहमत है, और उनको एक
मुतय्यन वक़्त तक फ़ायदा देना है(44) और जब उन से कहा जाता है
कि उस से डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुम पर
रहम किया जाए(45) और उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी
भी उन के पास ऐसी नहीं आती जिस से वह एराज़ न करते हों(46) और
जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम को दिया है उस में
से ख़र्च करो, तो जिन लोगों ने इन्कार किया, वह ईमान लाने वालों से
कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन को अल्लाह चाहता तो
वह उनको खिला देता, तुम लोग तो खुली गुमराही में हो(47) और वह
कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो(48) यह लोग बस
एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन को आ पकड़ेगी और वह झगड़ते ही
रह जाएंगे(49) फिर वह न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों
की तरफ़ लौट सकेंगे(50) और सूर फूंका जाएगा तो यकायक वह क़ब्रों
से अपने रब की तरफ़ चल पड़ेंगे(51) वह कहेंगे हाय हमारी बद-बख़्ती!
हमारी क़ब्र से किस ने हम को उठाया? यह वही है जिस का रहमान ने
वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था(52)

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾
فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ إِنَّ
أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ
عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾
سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾
أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿۶۰﴾ وَّأَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ وقف غفران
مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ
كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾ اَلْيَوْمَ
نَخْتِمُ عَلٰٓى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى
يُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۶۷﴾ ع وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ أَفَلَا ع ۴ ۱۷ ۳
يَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ
مُّبِيْنٌ ﴿۶۹﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۰﴾

और कुछ नहीं, एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिस के बाद यह सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे(53) पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई ज़ुल्म न होगा, और तुम को वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे(54) बेशक जन्नत के लोग आज अपने मशग़लों में ख़ुश होंगे(55) वह उन की बीवियां सायों में मस्हरियों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे(56) उन के लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वह मांगेंगे(57) उनको सलाम कहलाया जाएगा मेहरबान रब की तरफ़ से(58) और ऐ मुजरिमो! आज तुम अलग हो जाओ(59) ऐ औलादे आदम! क्या मैंने तुम को ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है(60) और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है(61) और उस ने तुम में से एक बड़े गिरोह को गुमराह कर दिया, तो क्या तुम समझते नहीं थे?(62) यह है जहन्नम जिस का तुम से वादा किया जाता था(63) अब अपे कुफ़्र के बदले में इस में दाख़िल हो जाओ(64) आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उन के हाथ हम से बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे जो कुछ यह लोग करते थे(65) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखों को मिटा देते फिर वह रास्ते की तरफ़ दौड़ते तो उन को कहां नज़र आता(66) और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वह न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते(67) और हम जिस की उम्र ज़्यादा कर देते हैं तो उसको उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं तो क्या वह समझते नहीं?(68) और हम ने उस (नबी ﷺ) को शेर नहीं सिखाया और न यह उसके लायक़ है, यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है और वाज़ेह कुरआन है(69) ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार कर दे जो ज़िन्दा हो और इन्कार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए(70)

اَوَلَمۡ یَرَوۡا اَنَّا خَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّمَّا عَمِلَتۡ اَیۡدِیۡنَاۤ اَنۡعَامًا فَهُمۡ لَهَا مٰلِكُوۡنَ ﴿۷۱﴾
وَذَلَّلۡنٰهَا لَهُمۡ فَمِنۡهَا رَكُوۡبُهُمۡ وَمِنۡهَا یَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۲﴾ وَلَهُمۡ فِیۡهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا یَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۳﴾ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمۡ
یُنۡصَرُوۡنَ ﴿۷۴﴾ ؕ لَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ نَصۡرَهُمۡ وَهُمۡ لَهُمۡ جُنۡدٌ مُّحۡضَرُوۡنَ ﴿۷۵﴾ فَلَا
یَحۡزُنۡكَ قَوۡلُهُمۡ ۘ اِنَّا نَعۡلَمُ مَا یُسِرُّوۡنَ وَمَا یُعۡلِنُوۡنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَمۡ یَرَ الۡاِنۡسَانُ وقف لازم
اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ نُّطۡفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِیۡمٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّ
نَسِیَ خَلۡقَهٗ ؕ قَالَ مَنۡ یُّحۡیِ الۡعِظَامَ وَهِیَ رَمِیۡمٌ ﴿۷۸﴾ قُلۡ یُحۡیِیۡهَا الَّذِیۡۤ
اَنۡشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِیۡمُۨ ﴿۷۹﴾ ۙ الَّذِیۡ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنَ
الشَّجَرِ الۡاَخۡضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنۡتُمۡ مِّنۡهُ تُوۡقِدُوۡنَ ﴿۸۰﴾ اَوَلَیۡسَ الَّذِیۡ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنۡ یَّخۡلُقَ مِثۡلَهُمۡ ؕ بَلٰی ۗ وَهُوَ وقف غفران
الۡخَلّٰقُ الۡعَلِیۡمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَاۤ اَمۡرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَیۡـًٔا اَنۡ یَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَیَكُوۡنُ ﴿۸۲﴾
فَسُبۡحٰنَ الَّذِیۡ بِیَدِهٖ مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَیۡءٍ وَّاِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۳﴾ ع

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से
उनकी लिए मवेशी पैदा किए, तो वह उनके मालिक हैं(71) और हम ने
उन को उन का ताबे बना दिया, तो उन में से कोई उन की सवारी है और
किसी को वह खाते हैं(72) और उनके लिए उन में फ़ायदे हैं और पीने
की चीज़ें भी, तो क्या वह शुक्र नहीं करते?(73) और उन्होंने अल्लाह
के सिवा दूसरे माबूद बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए(74) वह
उन की मदद न कर सकेंगे और वह उनकी फ़ौज हो कर हाज़िर किए
जाएंगे(75) तो उन की बात आप को ग़मगीन न करे, बेशक हम जानते हैं
जो कुछ वह छुपाते हैं और जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं(76) क्या इन्सान
ने नहीं देखा कि हम ने उसको एक बूंद से पैदा किया फिर वह खुल्लम
खुल्ला झगड़ालू बन गया(77) हमारे लिए मिसालें बयान करने लगा
और अपनी पैदाइश को भूल गया, और कहने लगा कि हड्डियां जब चूरा
हो जाएंगी फिर उसे कौन ज़िन्दा कर सकता है?(78) कह दीजिए कि
उनको वही ज़िन्दा करेगा जिस ने उनको पहली मर्तबा पैदा किया, और
वह सब तरह पैदा करना जानता है(79) वही है जिस ने तुम्हारे लिए हरे भरे
दरख़्त से आग पैदा कर दी, फिर तुम उस से आग जलाते हो(80) क्या
जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर क़ादिर नहीं कि
इन जैसों को पैदा कर दे? हां वह क़ादिर है, और वही है अस्ल पैदा करने
वाला, जानने वाला(81) उसका मुआमला तो बस यह है कि जब वह
किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा, तो वह हो जाती
है(82) पस पाक है वह ज़ात जिस के हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है,
और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे(83)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह यासीन का तुर्जमा मस्जिदे नबवी में मिंम्बर शरीफ़ के
क़रीब बैठ कर शब-ए-इतवार इशा की नमाज़ के बाद पूरा हुआ।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह दुख़ान की फ़ज़ीलत

1. तिर्मिज़ी शरीफ़ में है, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं जो शख़्स रात को सूरह हामीम दुख़ान पढ़े, उसके लिए सुबह तक 70 हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।

2. तिर्मिज़ी की एक और हदीस में है कि जिस ने इस सूरत को जुमा की रात में पढ़ा, उस के गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं।

(माख़ूज़ अज़ तफ़सीर इब्ने कसीर)

3. हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरह हामीम दुख़ान को जुमा की रात या जुमा के दिन तिलावत करे तो अल्लाह उस के लिए जन्नत में एक घर बनाएंगे।

(तफ़सीरि मज़हरीः 8/379)

सूरह दुख़ान मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई, इस में 59 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 64 नम्बर पर है, लेकिन तिलावत के एतिबार से 44 नम्बर पर है और सूरह ज़ुख़रुफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह दुख़ान

(٤٤) سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ (٦٤) — اٰيَاتُهَا ٥٩ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝١ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝٣ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝٤

तर्जुमा : हा-मीम (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की (2) हम ने इस को एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे (3) इस रात में हर हिकमत वाला मुआमला तय किया जाता है (4)

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ (٥) رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ إِنَّهٗ
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٦) رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ إِنْ وقف لازم
كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ (٧) لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ
الْأَوَّلِيْنَ (٨) بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ (٩) فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ
بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ (١٠) يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١١) رَبَّنَا اكْشِفْ
عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُوْنَ (١٢) أَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ (١٣) ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ (١٤) إِنَّا وقف لازم
كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا إِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ (١٥) يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ وقف لازم
الْكُبْرٰى ۚ إِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ (١٦) وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ
وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ (١٧) أَنْ أَدُّوْٓا إِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
أَمِيْنٌ (١٨) وَّأَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ؕ إِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ (١٩) وَإِنِّيْ
عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُوْنِ (٢٠) وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ (٢١)
فَدَعَا رَبَّهٗٓ أَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ (٢٢) فَأَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا
إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ (٢٣) وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ (٢٤)
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ (٢٥) وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ (٢٦)

हमारे हुक्म से, बेशक हम थे भेजने वाले(5) आप के रब की रहमत है, वही सुनने वाला, जानने वाला है(6) आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो(7) उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब(8) बल्कि वह शक में पड़े हुए खेल रहे हैं(9) पस इन्तिज़ार कीजिए उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धूएँ के साथ ज़ाहिर होगा(10) वह लोगों को घेर लेगा, यह एक दर्दनाक अज़ाब है(11) ऐ हमारे रब! हम पर से अज़ाब टाल दीजिए, हम ईमान लाते हैं(12) उनके लिए नसीहत कहां और उन के पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनने वाला(13) फिर उन्होंने उस से पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है(14) हम कुछ वक़्त के लिए अज़ाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे(15) जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़, उस दिन हम पूरा बदला लेंगे(16) और उन से पहले हम ने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया, और उन के पास एक मुअज़्ज़ज़ रसूल आया(17) कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे लिए एक मोअतबर रसूल हूं(18) और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे सामने एक वाज़ेह दलील पेश करता हूं(19) और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो(20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझ से अलग रहो(21) पस मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब को पुकारा कि यह लोग मुजरिम हैं(22) तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा(23) और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है(24) उन्होंने कितने ही बाग़ और चश्मे(25) और खेतियां और उमदा मकानात(26)

وَّنَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ وَاَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٢٨﴾
فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ وَمَا كَانُوۡا مُنۡظَرِيۡنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدۡ ع ۱ ۲۹ ۱۳
نَجَّيۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿٣٠﴾ مِنۡ فِرۡعَوۡنَ
اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخۡتَرۡنٰهُمۡ عَلٰى عِلۡمٍ عَلَى
الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنَ الۡاٰيٰتِ مَا فِيۡهِ بَلٰٓـؤٌا مُّبِيۡنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
لَيَقُوۡلُوۡنَ ﴿٣٤﴾ اِنۡ هِىَ اِلَّا مَوۡتَتُنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُنۡشَرِيۡنَ ﴿٣٥﴾
فَاۡتُوۡا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمۡ خَيۡرٌ اَمۡ قَوۡمُ تُبَّعٍ
وَّالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا
خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقۡنٰهُمَاۤ
اِلَّا بِالۡحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوۡمَ الۡفَصۡلِ
مِيۡقَاتُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٤٠﴾ يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ مَوۡلًى عَنۡ مَّوۡلًى شَيۡـًٔا وَّلَا
هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿٤٢﴾ ع ۲ ۱۵
اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ﴿٤٤﴾ كَالۡمُهۡلِ يَغۡلِىۡ معانقة ۱۲
فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلۡىِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ
الۡجَحِيۡمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٨﴾

और आराम के सामान जिन में वह ख़ुश रहते थे सब छोड़ दिए(27) इसी तरह हुआ, और हम ने दूसरी क़ौम को उन का मालिक बना दिया(28) पस न उन पर आसमान रोया और न ज़मीन, और न उन को मोहलत दी गई(29) और हम ने बनी इसराईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से निजात दी(30) यानी फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था(31) और हम ने उन को अपने इल्म की रू से दुनिया वालों पर तरजीह दी(32) और हम ने उनको ऐसी निशानियां दीं जिन में खुला हुआ इन्आम था(33) यक़ीनन यह लोग कहते हैं(34) बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे(35) अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को(36) क्या यह बेहतर हैं या तुब्बा की क़ौम और जो उन से पहले थे, हम ने उनको हलाक कर दिया है, बेशक वह नाफ़रमान थे(37) और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया(38) उन को हम ने हक़ के साथ बनाया है लेकिन उन के अकसर लोग नहीं जानते(39) बेशक फ़ैसले का दिन उन सब का तय शुदा वक़्त है(40) जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न ही उनकी कुछ हिमायत की जाएगी(41) हां मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फ़रमाए, बेशक वह ज़बरदस्त है, रहमत वाला है(42) यक़ीन जानो कि ज़क्कूम का दरख़्त(43) गुनहगार का खाना होगा(44) तील की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा(45) जिस तरह गर्म पानी खौलता है(46) उसको पकड़ो और उस को घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ(47) फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो(48)

ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ
تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ
بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ
فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾
فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

चख इस को, तू बड़ा मुअज़्ज़ज, मुकर्रम है(49) यह वही चीज़ है जिस में तुम शक करते थे(50) बेशक अल्लाह से डरने वाले अमन की जगह में होंगे(51) बाग़ों और चश्मों में(52) बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे(53) उनके साथ यही मुआमला होगा और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों का उन से ब्याह कर देंगे(54) वह उस में तलब करेंगे हर क़िस्म के मेवे निहायत इत्मीनान से(55) वह वहां मौत को न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है, और अल्लाह ने उनको जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया(56) यह आप के रब के फ़ज़्ल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी(57) पस हम ने इस किताब को आप की ज़बान में आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें(58) पस आप भी इन्तिज़ार कीजिए, वह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं(59)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह दुख़ान का तर्जुमा मदीना मुनव्वरा और जद्दा के दरमियान पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से क़ुबूल फ़रमाए। अमीन। अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह फ़तह के फ़ज़ाइल

1. हज़रत उमर रज़ि० से मरवी है कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि आज रात मुझ पर ऐसी सूरत नाज़िल हुई है, जो मुझे उन तमाम चीज़ों से महबूब है, जिन पर सूरज तुलूअ होता है और वह "इन्ना फ़तहना लक......... अख़िर तक है। (तफ़सीर मज़हरीः 9/2, तिर्मिज़ी शरीफ़ः2/162)

2. कन्ज़ुल उम्माल की रिवायत में अल्फ़ाज़ यह है कि मुझे यह सूरत दुनिया और उस में मौजूद तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है।
(कन्ज़ुल उम्मालः पेज 2/308, अन उमर रज़ि०)

3. सूरह फ़तह को रमज़ान शरीफ़ का चाँद देखने के वक़्त तीन बार पढ़ने से पूरे साल रोज़ी में फ़रावानी होगी, नीज़ इस को लिख कर क़िताल व झगड़े के वक़्त पास रखने से अमन में रहे और फ़तह मयस्सर होगी, कश्ती में सवार हो कर पढ़ने से कश्ती के डूब जाने से मामून रहेगा। (आमाले कुरआनीः 82)

सूरह फ़तह

सूरह फ़तह मदनी है, हुदैबिया से वापसी के वक़्त रास्ते में नाज़िल हुई, इस में 29 आयतें और 4 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 111 नम्बर पर है, लेकिन तिलावत के एतिबार से 48 नम्बर पर है और सूरह जुमा के बाद नाज़िल हुई है।

(٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ (١١١)

اٰيَاتُهَا ٢٩ — رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ
وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿٢﴾
وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ
قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا
عَظِيْمًا ۙ﴿٥﴾ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ
وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾
اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

तर्जुमा : बेशक हम ने आप को खुली फ़तह दे दी﴾1﴿ ताकि अल्लाह आप की अगली और पिछली ख़ताएं मुआफ़ कर दे और आप के ऊपर अपनी नेमत की तकमील कर दे, और आप को सीधा रास्ता दिखाए﴾2﴿ और आप को ज़बरदस्त मदद अता करे﴾3﴿ वही है जिस ने मोमिनों के दिलों में इत्मीनान उतारा, ताकि उन के ईमान के साथ उन का ईमान और बढ़ जाए, और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है﴾4﴿ ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और वह उन में हमेशा रहेंगे, और ताकि उनकी बुराइयां उन से दूर कर दे, और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है﴾5﴿ और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते हैं, बुराई की गर्दिश उन ही पर है, और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और उन पर उस ने लानत की और उन के लिए उस ने जहन्नम तैयार कर रखी है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है﴾6﴿ और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह की हैं, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है﴾7﴿ बेशक हम ने आप को गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है﴾8﴿ ताकि तुम लोग ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी मदद करो और उसकी ताज़मी करो, और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम﴾9﴿

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ۚ
فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا یَنْكُثُ عَلٰی نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰی بِمَا عٰهَدَ عَلَیْهُ
اللّٰهَ فَسَیُؤْتِیْهِ اَجْرًا عَظِیْمًا ؑ ﴿١٠﴾ سَیَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ ع ١٠ ٩
الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ یَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَیْسَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ یَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ شَیْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ یَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ
اِلٰۤی اَهْلِیْهِمْ اَبَدًا وَّ زُیِّنَ ذٰلِكَ فِیْ قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ
وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَ مَنْ لَّمْ یُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ
اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ سَعِیْرًا ﴿١٣﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
یَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿١٤﴾
سَیَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰی مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا
ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ
لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَیَقُوْلُوْنَ
بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا یَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿١٥﴾

जो लोग आप से बैअत करते हैं वह दर-हक़ीक़त अल्लाह से बैअत करते हैं, अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है, फिर जो शख़्स उसको तोड़ेगा तो उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा, और जोशख़्स उस अहद को पूरा करेगा जो उस ने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसको बड़ा अज्र अता फ़रमाएगा(10) जो देहाती पीछे रह गए वह अब आप से कहेंगे कि हम को हमारे अमवाल और हमारे बाल बच्चों ने मशगूल कर रखा पस आप हमारे लिए मआफ़ी की दुआ फ़रमाएं, यह अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है, आप कह दीजिए कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो अगर वह तुम को कोई नुक़सान या कोई नफ़ा पहुंचाना चाहे, बल्कि अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम कर रहे हो(11) बल्कि तुम ने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ़ लौट कर न आएंगे, और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नज़र आया और तुम ने बहुत बुरे गुमान किए, और तुम बरबाद होने वाले लोग हो गए(12) और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हम ने ऐसे मुन्किरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है(13) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, वह जिस को चाहे बख़्शे और जिस को चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है(14) जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो, वह चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें, कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते, अल्लाह पहले ही यह फ़रमा चुका है, तो वह कहेंगे, बल्कि तुम लोग हम से हसद करते हो? बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं(15)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ
شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ ع لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ ع٢/٧
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ
فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ لا وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً
يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ
كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ
عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾ لا
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

इन पीछे रह जाने वाले देहातियों से कह देना कि जल्दी तुम्हें ऐसे लोगों के पास (लड़ने के लिए) बुलाया जाएगा जो बड़े सख़्त जंगजू होंगे, कि या तो उन से लड़ते रहो या वह इताअत क़ुबूल कर लें, उस वक़्त अगर तुम (जिहाद के इस हुक्म की) इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम मुंह मोड़ोगे जैसा कि तुम ने पहले मुंह मोड़ा था तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा(16) अंधे आदमी पर (जिहाद न करने का) कोई गुनाह नहीं है, और न लंगड़े आदमी पर कोई गुनाह है और न बीमार आदमी पर गुनाह है, और जो शख़्स भी अल्लाह और उस के रसूल का कहना माने अल्लाह उसको ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और जो कोई मुंह मोड़ेगा उसे दर्दनाक अज़ाब देगा(17) यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया जब कि वह आप से दरख़्त के नीचे बैअत कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उन के दिलों में था, पस उस ने उन पर सकीनत नाज़िल फ़रमाई और उन को इनआम में एक क़रीबी फ़तह दे दी(18) और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन को वह हासिल करेंगे, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है(19) और अल्लाह ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन को तुम लोगे, पस यह उस ने तुम को फ़ौरी तौर पर दे दिया और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, ताकि अहले ईमान के लिए एक निशानी बन जाए और ताकि वह तुम को सीधे रास्ते पर चलाए(20) और एक फ़तह और भी है जिस पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए, अल्लाह ने उसका इहाता कर रखा है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है(21) और अगर यह मुन्किर लोग तुम से लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर कर भागते, फिर वह न कोई हिमायती पाते और न मददगार(22) यह अल्लाह की सुन्नत है जो पहले से चली आ रही है, और आप अल्लाह की सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे(23)

وَهُوَ الَّذِیۡ کَفَّ اَیۡدِیَهُمۡ عَنۡکُمۡ وَاَیۡدِیَکُمۡ عَنۡهُمۡ بِبَطۡنِ مَکَّةَ
مِنۡۢ بَعۡدِ اَنۡ اَظۡفَرَکُمۡ عَلَیۡهِمۡ ؕ وَکَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِیۡرًا ﴿۲۴﴾
هُمُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَصَدُّوۡکُمۡ عَنِ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ وَالۡهَدۡیَ
مَعۡکُوۡفًا اَنۡ یَّبۡلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوۡلَا رِجَالٌ مُّؤۡمِنُوۡنَ وَنِسَآءٌ مُّؤۡمِنٰتٌ
لَّمۡ تَعۡلَمُوۡهُمۡ اَنۡ تَطَـُٔوۡهُمۡ فَتُصِیۡبَکُمۡ مِّنۡهُمۡ مَّعَرَّةٌۢ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ۚ
لِیُدۡخِلَ اللّٰهُ فِیۡ رَحۡمَتِهٖ مَنۡ یَّشَآءُ ۚ لَوۡ تَزَیَّلُوۡا لَعَذَّبۡنَا الَّذِیۡنَ
کَفَرُوۡا مِنۡهُمۡ عَذَابًا اَلِیۡمًا ﴿۲۵﴾ اِذۡ جَعَلَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا فِیۡ
قُلُوۡبِهِمُ الۡحَمِیَّةَ حَمِیَّةَ الۡجَاهِلِیَّةِ فَاَنۡزَلَ اللّٰهُ سَکِیۡنَتَهٗ
عَلٰی رَسُوۡلِهٖ وَعَلَی الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَاَلۡزَمَهُمۡ کَلِمَةَ التَّقۡوٰی
احتیاط =۶۶ وَکَانُوۡۤا اَحَقَّ بِهَا وَاَهۡلَهَا ؕ وَکَانَ اللّٰهُ بِکُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمًا ﴿۲۶﴾ ع
لَقَدۡ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوۡلَهُ الرُّءۡیَا بِالۡحَقِّ ۚ لَتَدۡخُلُنَّ الۡمَسۡجِدَ
الۡحَرَامَ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیۡنَ ۙ مُحَلِّقِیۡنَ رُءُوۡسَکُمۡ وَمُقَصِّرِیۡنَ ۙ
لَا تَخَافُوۡنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمۡ تَعۡلَمُوۡا فَجَعَلَ مِنۡ دُوۡنِ ذٰلِکَ
فَتۡحًا قَرِیۡبًا ﴿۲۷﴾ هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ
الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ؕ وَکَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیۡدًا ﴿۲۸﴾ ط

और वही है जिस ने मक्का की वादी में उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए बाद उसके कि तुम को उन पर क़ाबू दे दिया था, और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा था(24) वही लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम को मस्जिदे हराम से रोका और कुरबानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वह अपनी जगह पर न पहुंचें, और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन को तुम ला इल्मी में पीस डालते फिर उनके बाइस तुम पर बेख़बरी में इल्ज़ाम आता, ताकि अल्लाह जिस को चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे, और अगर वह लोग अलग हो गए होते तो उन में जो मुन्किर थे उन को हम दर्दनाक सज़ा देते(25) जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की ठान ली, वह भी जाहिलियत की ज़िद, तो अल्लाह ने अपनी सकीनत उतारी अपने रसूल पर और ईमान वालों पर और उस ने तक़वे का कलिमा उन से चिपका दिया और वही उसके ज़्यादा मुस्तहिक़ और उस के अहल थे, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है(26) हक़ीक़त यह है कि अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया है जो वाक़िए के बिल्कुल मुताबिक़ है, तुम लोग इनशा अल्लाह ज़रूर मस्जिदे हराम में इस तरह अमन व अमान के साथ दाख़िल होंगे कि तुम (में से कुछ) ने अपने सरों को बेख़ौफ़ व ख़तर मुंडवाया होगा और (कुछ ने) बाल तराशे होंगे, अल्लाह वह बातें जानता है जो तुम्हें मालूम नहीं हैं: चुनांचे उस ने वह ख़्वाब पूरा होने से पहले एक क़रीबी फ़तह तय कर दी है(27) और अल्लाह ही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि वह उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और (उसकी) गवाही देने के लिए अल्लाह काफ़ी है(28)

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ
فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ
وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ
فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾ ع

मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त हैं और आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं, तुम उनहें देखोगे कि कभी रुकूअ में हैं, कभी सजदे में हैं, (ग़र्ज़) अल्लाह के फ़ज़ल और ख़ुशनूदी की तलाश में लगे हुए हैं, उनकी अलामतें सजदे के असर से उनके चेहरों पर नुमायां हैं, यह हैं उन के वह औसाफ़ जो तौरात में मज़कूर हैं, और इन्जील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे एक खेती हो जिस ने अपनी कोंपल निकाली फिर उसको मज़बूत किया फिर वह मोटी हो गई, फिर अपने तने पर इस तरह सीधी खड़ी हो गई कि काश्तकार उस से ख़ुश होते हैं, ताकि अल्लाह उन (की इस तरक़्क़ी) से काफ़िरों का दिल जलाए, यह लोग जो ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक अमल किए हैं, अल्लाह ने उन से मग़फ़िरत और ज़बरदस्त सवाब का वादा कर लिया है﴾29﴿

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह फ़तह का तर्जुमा अरफ़ात के मैदान में और मुज़दलफ़ा की रात में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन। अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह क़ाफ़

सूरह क़ाफ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर आयत 38 मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 45 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 34 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 50 नम्बर पर है और सूरह मुरसलात के बाद नाज़िल हुई है।

(٥٠) سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ (٣٤)

اٰيَاتُهَا ٤٥ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۝١ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝٢ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ
ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ۝٣ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا
كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۝٤ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ۝٥
اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا
مِنْ فُرُوْجٍ ۝٦ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا
فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٧ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٨
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۝٩
وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝١٠ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ
بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ
الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝١٢ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝١٣ وَّاَصْحٰبُ
الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝١٤ اَفَعَيِيْنَا
بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٥ ع

ع ١٥ ١٥

तर्जुमा : क़ाफ़, क़सम है बा-अज़मत कुरआन की﴾1﴿ बल्कि उनको तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुन्किरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज़ है﴾2﴿ क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दोबारा ज़िन्दा होना बहुत बईद है﴾3﴿ हम को मालूम है जितना ज़मीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिस में सब कुछ महफ़ूज़ है﴾4﴿ बल्कि उन्होंने हक़ को झुठलाया है जब कि वाह उनके पास आ चुका है, पस वह उलझन में पड़े हुए हैं﴾5﴿ भला क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हम ने उसे कैसे बनाया और हम ने उसे ख़ूबसूरती बख़्शी है और उस में किसी क़िस्म के रुख़ने नहीं हैं﴾6﴿ और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ डाल दिए और उस में हर क़िस्म की रौनक़ की चीज़ें उगाई﴾7﴿ समझाने को और याद दिलाने को, हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे﴾8﴿ और हम ने आसमान से बरकत वाला पानी और उतारा फिर उस से हम ने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फ़स्लें﴾9﴿ और खजूरों के लिए दरख़्त जिन में तह ब तह ख़ोशे लगते हैं﴾10﴿ बंदों की रोज़ी के लिए और हमने उसके ज़रिए से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह ज़मीन से निकलना होगा﴾11﴿ उन से पहले नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम और असहाबुर्रस और समूद﴾12﴿ और आद और फ़िरऔन और लूत (अलैहिस्सलाम) के भाई﴾13﴿ और ऐका वाले और तुब्बा की क़ौम ने भी झुठलाया, सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया पस मेरा डराना उन पर वाक़े हो कर रहा﴾14﴿ क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज़ रहे, बल्कि यह लोग अज़-सरे नौ पैदा करने की तरफ़ से शुबा में हैं﴾15﴿

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚۖ وَنَحْنُ اَقْرَبُ
اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ
الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾
وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ
فِی الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ
وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِیْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ
فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَیَّ عَتِيْدٌ ؕ ﴿٢٣﴾
اَلْقِيَا فِیْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ۙ ﴿٢٥﴾
الَّذِیْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِی الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾
قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ
لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَیَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ
لَدَیَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۧ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ ع ٢ ١٤ ١٦
وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾
هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۚ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ
وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِۨ ۙ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

और हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो
उसके दिल में आती हैं, और हम रगे गर्दन से भी ज़्यादा उस से क़रीब
हैं(16) जब दो लेने वाल लेते रहते हैं जो कि दाएं बौर बाएं तरफ़ बैठे
हैं(17) वह कोई बात नहीं निकालता मगर उसके सामने एक निगरान
तैयार होता है(18) और मौत की बेहोशी हक़ के साथ आ पहुंची, यह वही
चीज़ है जिस से तू भागता था(19) और सूर फूंका जाएगा, यह डराने
का दिन होगा(20) और हर शख़्स इस तरह आएगा कि उसके साथ एक
हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला(21) तुम उस से ग़फ़लत में
रहे पस हम ने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह
तेज़ है(22) और उस के साथ का फ़रिश्ता कहेगाः यह जो मेरे पास था
हाज़िर है(23) जहन्नम में डाल दो हर एक ना-शुक्रे मुख़ालिफ़ को(24)
नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुब्हा डालने वाला(25) जिस
ने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद बनाए, पस उसको डाल दो सख़्त अज़ाब
में(26) उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैंने उसे सरकश नहीं
बनायाः बल्कि वह ख़ुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था(27) इरशाद होगा,
मेरे सामने झगड़ा न करो, और मैंने पहले ही तुम को अज़ाब से डरा दिया
था(28) मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर ज़ुल्म करने
वाला नहीं हूं(29) जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगेः क्या तू भर गई और
वह कहेगा कि कुछ और भी है(30) और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई
जाएगी, कुछ दूर न रहेगी(31) यह है वह चीज़ जिस का तुम से वादा
किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए(32)
जो शख़्स रहमान से डरा बिन देखे और रुजूअ होने वाला दिल ले कर
आया(33) दाख़िल हो जाओ उस में सलामती के साथ, यह दिन हमेशा
रहेगा(34)

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝٣٥ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ
قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٦
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيْدٌ ۝٣٧ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ۖۗ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝٣٨ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝٣٩ۚ وَمِنَ الَّيْلِ
فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝٤٠ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ
قَرِيْبٍ ۝٤١ۙ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝٤٢
اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝٤٣ۙ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ
سِرَاعًاؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝٤٤ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَاۤ
ع اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝٤٥ ع

वहां उनके लिए वह सब होगा जो वह चाहें, और हमारे पास मज़ीद
है(35) और हम उन से पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं,
वह क़ुव्वत में इन से ज़्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है
कोई पनाह की जगह(36) बेशक इस में याद देहानी है उस शख़्स के
लिए जिस के पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह हो कर(37)
और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है
छ दिन में बनया और हम को कुछ तकान नहीं हुई(38) पस जो कुछ
वह कहते उस पर सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह कीजिए हम्द के
साथ सूरज निकलने से पहले और उसके और उसके डूबने से पहले(39)
और रात के हिस्सों में भी उसकी तस्बीह कीजिए, और सजदों के बाद
भी(40) और ज़रा तवज्जोह से सुनिए जिस दिन एक पुकारने वाला एक
क़रीबी जगह से पुकारेगा(41) उस दिन उस भयानक आवाज़ को बराबर
सुन लेंगे, यह दिन होगा मुर्दों के ज़िन्दा हो कर निकल पड़ने का(42)
बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ़ लौटना
है(43) जिस दिन ज़मीन उन पर से खुल जाएगी, वह सब दौड़ते होंगे, यह
इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है(44) हम जानते हैं जो कुछ यह लोग
कह रहे हैं और आप उन पर जब्र करने वाले नहीं हो, पस आप कुरआन के
ज़रिए उस शख़्स को नसीहत कीजिए जो मेरे डराने से डरे(45)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह क़ाफ़ का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह रहमान की फ़ज़ीलत

1. एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स सूरह हदीद और सूरह वाक़िआ और सूरह रहमान पढ़ता है, वह जन्नतुल फ़िरदौस के रहने वालों में पुकारा जाता है। (फ़ज़ाइले कुरआन)

2. हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि मैंने हुज़ूर ﷺ को फ़रमाते हुए सुना है कि हर चीज़ के लिए एक ज़ीनत होती है और कुरआन की ज़ीनत सूरह रहमान है। (मिश्कात शरीफ़ः पेज 189)

सूरह रहमान मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 78 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 97 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 55 नम्बर पर है और सूरह राद के बाद नाज़िल हुई है।

(٥٥) سُوۡرَةُ الرَّحۡمٰنِ مَدَنِيَّةٌ (٩٧)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلرَّحۡمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الۡبَيَانَ ﴿۴﴾
اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ ۙ﴿۵﴾ وَّالنَّجۡمُ وَالشَّجَرُ يَسۡجُدٰنِ ﴿۶﴾
وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الۡمِيۡزَانَ ۙ﴿۷﴾ اَلَّا تَطۡغَوۡا فِى الۡمِيۡزَانِ ﴿۸﴾
وَاَقِيۡمُوا الۡوَزۡنَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تُخۡسِرُوا الۡمِيۡزَانَ ﴿۹﴾ وَالۡاَرۡضَ
وَضَعَهَا لِلۡاَنَامِ ۙ﴿۱۰﴾ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخۡلُ ذَاتُ الۡاَكۡمَامِ ۖ﴿۱۱﴾
وَالۡحَبُّ ذُو الۡعَصۡفِ وَالرَّيۡحَانُ ۚ﴿۱۲﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾

तर्जुमा : रहमान ने(1) कुरआन की तालीम दी(2) उस ने इन्सान को पैदा किया(3) उसको बोलना सिखाया(4) सूरज और चाँद के लिए एक हिसाब है(5) और सितारे और दरख़्त सजदा करते हैं(6) और उस ने आसमान को ऊँचा किया और उस ने तराज़ू रख दिए(7) कि तुम तौलने में ज़्यादती न करो(8) और इंसाफ़ के साथ सीधी तराज़ू तौलो और तौल में न घटाओ(9) और उसने मख़्लूक़ के लिए ज़मीन बनाई(10) उस में मेवे हैं और खजूर हैं जिन के ऊपर ग़िलाफ़ होता है(11) और भुस वाले अनाज भी हैं, और ख़ुशबूदार फूल भी(12) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(13)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ ﴿۱۴﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ
مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ ﴿۱۵﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَیْنِ
وَرَبُّ الْمَغْرِبَیْنِ ۚ ﴿۱۷﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ
یَلْتَقِیٰنِ ۙ ﴿۱۹﴾ بَیْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا یَبْغِیٰنِ ۚ ﴿۲۰﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾
یَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ ﴿۲۲﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ ﴿۲۴﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾ كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ ۚ ﴿۲۶﴾ وَّیَبْقٰی وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ ع ۲۵
وَالْاِكْرَامِ ۚ ﴿۲۷﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾ یَسْئَلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ۚ ﴿۲۹﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾
سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ ﴿۳۱﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾ یٰمَعْشَرَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ ﴿۳۳﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾ یُرْسَلُ عَلَیْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ۵ وَّنُحَاسٌ فَلَا
تَنْتَصِرٰنِ ۚ ﴿۳۵﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ ﴿۳۷﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾

उसने पैदा किया इन्सान को ठेकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से﴾14﴿ और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया﴾15﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾16﴿ वह मोलिक है दोनों मशरिक़ का और दोनों मग़रिब का﴾17﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾18﴿ उस ने चलाए दो दरिया, मिल कर चलने वाले﴾19﴿ दोनों के दरमियान एक पर्दा है जिस से वह तजाउज़ नहीं करते﴾20﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾21﴿ उन दोनों से मोती और मोंगा निकलता है﴾22﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾23﴿ और उसीके हैं जहाज़ समुन्दर में ऊँचे खड़े हुए जैसे पहाड़﴾24﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾25﴿ जो भी ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है﴾26﴿ और आप के रब की ज़ात बाक़ी रहेगी, अज़मत वाली और इज़्ज़त वाली﴾27﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾28﴿ उसी से मांगते हैं जो आसमानों में और ज़मीन में हैं, हर रोज़ उसका एक काम है﴾29﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾30﴿ हम जल्दी फ़ारिग़ होने वाले हैं तुम्हारी तरफ़ से ऐ दो भारी क़ाफ़लो﴾31﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾32﴿ ऐ जिन्नात और इन्सान के गिरोह! अगर तुम से हो सके कि तुम आसमानों और ज़मीन की हुदूद से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के﴾33﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾34﴿ तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुआँ तो तुम बचाव न कर सकोगे﴾35﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾36﴿ फिर जब आसमान फट कर खाल की मानिन्द सुर्ख़ हो जाएगा﴾37﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾38﴿

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۚ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ
وَالْاَقْدَامِ ۚ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ
بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۘ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۚ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ وقف لازم
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ ۧ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ ع ٢ ٢٠ ١٢
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۚ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۚ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا
مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ
عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ
قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ
وَالْمَرْجَانُ ۚ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ
اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتٰنِ ۚ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ ﴿٦٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ ﴿٦٦﴾

पस उस दिन किसी इन्सान या जिन्न से उसके गुनाह के बारे में पोछ न होगी (39) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (40) मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पाँव से (41) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (42) यह जहन्नम है जिस को मुजरिम लोग झूठ बताते थे (43) वह फिरेंगे उस के दरमियान और खौलते पानी के दरमियान (44) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (45) और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से डरे उस के लिए दो बाग़ हैं (46) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (47) दोनों बहुत शाख़ों वाले (48) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (49) उन के अंदर दो चश्मे जारी होंगे (50) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (51) दोनों बाग़ों में हर फल की दो क़िस्में (52) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (53) वह तकिया लगाए ऐसे बिछौने पर बैठे होंगे जिन के असतर दबीज़ रेशम के होंगे और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा (54) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (55) उन में नीची निगाह वाली औरतें होंगी, जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने (56) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (57) वह ऐसी होंगी जैसे कि याकूत और मरजान (58) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (59) नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है (60) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (61) और उन के सिवा दो बाग़ और हैं (62) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (63) दोनों गहरे सब्ज़ सियाही माइल (64) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (65) उन में दो चश्मे होंगे उबलते हुए (66)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(67) उन में फल और खजूर और अनार होंगे(68) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(69) उन में ख़ूब सीरत, ख़ूब सूरत औरतें होंगी(70) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(71) हूरें ख़ेमों में रहने वालियाँ(72) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(73) उन से पहले उनको न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने(74) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(75) तकिया लगाए सब्ज़ मस्नदों पर और क़ीमती नफ़ीस बिछौने पर(76) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे(77) बड़ा बा-बरकत है आप के रब का नाम, बड़ाई वाला और अज़मत वाला(78)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह रहमान का तर्जुमा जल्द में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन!

फ़ज़ाइल सूरह वाक़िआ

1. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने हुज़ूर ﷺ का यह इरशाद नक़्ल किया है कि जो शख़्स हर रात को सूरह वाक़िआ पढ़े, उसको कभी फ़ाक़ा नहीं होगा, और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० अपनी बेटियों को हुक्म फ़रमाया करते थे कि हर रात में इस सूरत को पढ़ें।

2. एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स "सूरह हदीद" और "सूरह वाक़िआ" और "सूरह रहमान" पढ़ता है, वह जन्नतुल फ़िरदौस के रहने वालों में पुकारा जाता है।

3. एक रिवायत में है कि सूरह वाक़िआ "सूरतुल ग़िना" है, इसको पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ।

4. एक रिवायत में है कि इस को अपनी बीबियों को सिखाओ। हज़रत आयशा रज़ि० से भी इसके पढ़ने की ताकीद मनक़ूल है।

(मज़कूरा तमाम अहादीस फ़ज़ाइले कुरआनः पेज 52, 53 से ली गई हैं)

सूरह वाक़िआ

सूरह वाक़िआ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर दो आयतें 81, 82 मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुईं, इस में 96 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 46 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 56 नम्बर पर है और सूरह ताहा के बाद नाज़िल हुई है।

(٥٦) سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٦)

اٰيَاتُهَا ٩٦ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وقف لازم

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ
رَّافِعَةٌ ۙ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۙ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ﴿٥﴾
فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ
الْمَيْمَنَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ
الْمَشْـَٔمَةِ ؕ﴿٩﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۙ﴿١٠﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ﴿١١﴾
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

तर्जुमा : जब वाक़े हुई वाक़े होने वाली(1) उसके वाक़े होने में कोई झूठ नहीं(2) वह पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी(3) जब कि ज़मीन हिला डाली जाएगी(4) और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे(5) फिर वह परागंदा ग़ुबार बन जाएंगे(6) और तुम लोग तीन क़िस्म के हो जाओगे(7) फिर दाएं वाले, पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले(8) और बाएं वाले, कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले(9) और आगे वाले तो आगे वाले ही हैं(10) वह मुक़र्रब लोग हैं(11) नेमत के बाग़ों में(12) उन की बड़ी तादाद अगलों में से होगी(13) और थोड़े पिछलों में से होंगे(14) जुड़ाव तख़्तों पर(15) तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे(16)

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ
مِّن مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا
يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ
اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا
لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۙ مَا أَصْحَابُ
الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾
وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾
وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾
عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ ع ٣٨ ١٣
مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۙ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِي سَمُومٍ
وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾ وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ
ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوا
يَقُولُونَ ۙ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾ أَوَآبَاؤُنَا
الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوعُونَ ۙ إِلَىٰ
مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾

फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले(17) प्याले और जग
लिए हुए और जाम साफ़ शराब का(18) उस से न दर्दे सर होगा और
न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा(19) और मेवे कि जो चाहें चुन लें(20) और
परिन्दों का गोश्त जो मरग़ूब हो(21) और बड़ी आँखों वाली हूरें(22)
जैसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ़ के अंदर(23) बदला उन कामों का
जो वह करते थे(24) उस में वह कोई लग़्व और गुनाह की बात नहीं
सुनेंगे(25) मगर सिर्फ़ सलाम सलाम का बोल(26) और दाहने वाले,
क्या ख़ूब हैं दाहने वाले(27) बेरी के दरख़्तों में जिन में कांटा नहीं(28)
और केले तह ब-तह(29) और फैले हुए साए(30) और बहता हुआ
पानी(31) और कसरत से मेवे(32) जो न ख़त्म हांगे और न कोई रोक
टोक होगी(33) और ऊँचे बिछौने(34) हम ने उन औरतों को ख़ास
तौर पर बनाया है(35) फिर उनको कंवारी रखा है(36) दिलरुबा और
हम उम्र(37) दाहने वालों के लिए(38) अगलों में से एक बड़ा गिरोह
होगा(39) और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह(40) और बाएं वाले,
कैसे बुरे हैं बाएं वाले(41) आग में और खौलते हुए पानी में(42) और
सियाह धुएं के साए में(43) न ठंडा होगा और न इज़्ज़त का(44) यह
लोग इस से पहले ख़ुश हाल थे(45) और भारी गुनाह पर इसरार करते
रहे(46) और वह कहते थेः क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और
हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे(47) और क्या हमारे
अगले बाप दादा भी(48) कह दीजिए कि अगले और पिछले सब(49)
जमा किए जाएंगे, एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर(50) फिर तुम लोग ऐ
बहके हुए और झुठलाने वालो(51)

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿۵۲﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿۵۳﴾
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿۵۴﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿۵۵﴾
هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۵۶﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾
اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾
نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۶۰﴾ عَلٰٓى اَنْ
نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾
ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾
اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ
الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا
تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿۷۱﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ
شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿۷۲﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً
ع ۲ ۳۶ ۱۵ وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۷۴﴾ فَلَآ
اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿۷۶﴾

ज़क़्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे(52) फिर उस से अपना पेट भरोगे(53)
फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे(54) फिर प्यासे ऊँटों की तरह
पियोगे(55) ये उनकी मेहमानी होगी इन्साफ़ के दिन(56) हम ने तुम
को पैदा किया है, फिर तुम तस्दीक़ क्यों नहीं करते(57) क्या तुम ने ग़ौर
किया उस चीज़ पर जो तुम टपकाते हो(58) क्या तुम उसको बनाते हो
या हम हैं बनाने वाले(59) हम ने तुम्हारे दरमियान मौत मुक़द्दर की है और
हम इस से आजिज़ नहीं(60) कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें
और तुम को ऐसी सूरत में बना दें जिन को तुम नहीं जानते(61) और तुम
पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक़ नहीं लेते(62) क्या तुम
ने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो(63) क्या तुम उसको उगाते
हो या हम हैं उगाने वाले(64) अगर हम चाहें तो उस को रेज़ा रेज़ा कर
दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ(65) हम तो तावान में पड़ गए(66)
बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए(67) क्या तुम ने ग़ौर किया उस पानी
पर जो तुम पीते हो(68) क्या तुम ने उसको बादल से उतारा है या हम
हैं उतारने वाले(69) अगर हम चाहें तो उसको सख़्त खारी बना दें, फिर
तुम शुक्र क्यों नहीं करते(70) क्या तुम ने ग़ौर किया उस आग पर जिस
को तुम जलाते हो(71) क्या तुम ने पैदा किया उसके दरख़्त को या
हम हैं उसके पैदा करने वाले(72) हम ने उसको याद देहानी बनाया है
और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदे की चीज़(73) पस आप अपने अज़ीम
रब के नाम की तस्बीह बयान कीजिए(74) पस नहीं, मैं क़सम खाता
हूं सितारों के मवाक़े की(75) और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी
क़सम है(76)

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۷﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿۷۸﴾ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿۷۹﴾

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿۸۱﴾

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿۸۳﴾

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا

تُبْصِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ فَلَوْلَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿۸۶﴾ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ

وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۰﴾

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۱﴾ وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

الضَّآلِّيْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿۹۴﴾

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۹۶﴾ ع ٣ ٢٢ ١٦

बेशक यह एक इज़्ज़त वाला कुरआन है(77) एक महफ़ूज़ किताब में(78) इसको वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं(79) उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ़ से(80) फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बे-तवज्जोही बरतते हो(81) और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम इसको झुठलाते हो(82) फिर क्यों नहीं, जब कि जान हलक़ में पहुंचती है(83) और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो(84) और हम से ज़्यादा उस शख़्स के क़रीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते(85) फिर क्यों नहीं, अगर तुम किसी के हुक्म में नहीं हो(86) तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो(87) पस अगर वह मुक़र्रिबीन में से हो(88) तो राहत है और उमदा रोज़ी है और नेमत का बाग़ है(89) और अगर वह असहाबे यमीन में से हो(90) तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबे यमीन में से है(91) और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो(92) तो गर्म पानी की मेहमानी है(93) और जहन्नम में दाख़िल होना(94) बेशक यह क़तई हक़ है(95) पस आप अपने अज़ीम रब के नाम की तस्बीह कीजिए(96)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह वाक़िआ का तर्जुमा मस्जिदे नबवी में मिंम्बर शरीफ़ के क़रीब बैठ कर इतवार की शब इशा की नमाज़ के बाद पूरा किया है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से क़ुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह हदीद की फ़ज़ीलत

1. एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स "सूरह हदीद" और "सूरह वाक़िआ" और "सूरह रहमान" पढ़ता है, वह जन्नतुल फ़िरदौस के रहने वालों में पुकारा जाता है। (फ़ज़ाइले कुरआन)

2. हज़रत अरबाज़ रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ सोने से पहले मुसब्बिहात सूरतों को पढ़ा करते थे और फ़रमाते थे कि इन में एक आयत है जो हज़ारों आयत से बेहतर है।
(मिश्कात शरीफ़: पेज 187, तिर्मिज़ी शरीफ़: 2/120, अबूदाऊद 1/189)

इस एक आयत से मुराद अल्लामा इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि वह अफ़ज़ल आयत सूरह हदीद की आयत नम्बर 3 है:

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ③

जिन सूरतों के शुरू में سَبَّحَ या يُسَبِّحُ आया है हदीस में उनको मुसब्बिहात से ताबीर फ़रमाया है और ऐसी 6 सूरतें है। (1) सूरह हदीद, (2) सूरह हश्र, (3) सूरह सफ़, (4) सूरह जुमा, (5) सूरह तग़ाबुन, (6) सूरह आला। (तफ़सीरे मज़हरी: 12/331)

सूरह हदीद मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 29 आयतें और 7 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 94 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 57 नम्बर पर है और सूरह ज़िलज़ाल के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह हदीद

اٰيَاتُهَا ٢٩ (٥٧) سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ (٩٤) رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢
هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٣

तर्जुमा : अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है(1) आसमानों और ज़मीन की सलतनत उसी की है वह ज़िन्दा करता है और मारता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है(2) वही अव्वल भी है और आख़िर भी और ज़ाहिर भी है और बातिन भी, और वह हर चीज़ का जानने वाला है(3)

هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ فِیۡ سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰی عَلَی
الۡعَرۡشِ ؕ یَعۡلَمُ مَا یَلِجُ فِی الۡاَرۡضِ وَمَا یَخۡرُجُ مِنۡہَا وَمَا یَنۡزِلُ
مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعۡرُجُ فِیۡہَا ؕ وَہُوَ مَعَکُمۡ اَیۡنَ مَا کُنۡتُمۡ ؕ وَاللّٰہُ بِمَا
تَعۡمَلُوۡنَ بَصِیۡرٌ ﴿۴﴾ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاِلَی اللّٰہِ تُرۡجَعُ
الۡاُمُوۡرُ ﴿۵﴾ یُوۡلِجُ الَّیۡلَ فِی النَّہَارِ وَیُوۡلِجُ النَّہَارَ فِی الَّیۡلِ ؕ وَہُوَ
عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۶﴾ اٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ وَاَنۡفِقُوۡا مِمَّا
جَعَلَکُمۡ مُّسۡتَخۡلَفِیۡنَ فِیۡہِ ؕ فَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَاَنۡفَقُوۡا
لَہُمۡ اَجۡرٌ کَبِیۡرٌ ﴿۷﴾ وَمَا لَکُمۡ لَا تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ ۚ وَالرَّسُوۡلُ
یَدۡعُوۡکُمۡ لِتُؤۡمِنُوۡا بِرَبِّکُمۡ وَقَدۡ اَخَذَ مِیۡثَاقَکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ
مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۸﴾ ہُوَ الَّذِیۡ یُنَزِّلُ عَلٰی عَبۡدِہٖۤ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ لِّیُخۡرِجَکُمۡ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوۡرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰہَ بِکُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۹﴾
وَمَا لَکُمۡ اَلَّا تُنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَلِلّٰہِ مِیۡرَاثُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ ؕ لَا یَسۡتَوِیۡ مِنۡکُمۡ مَّنۡ اَنۡفَقَ مِنۡ قَبۡلِ الۡفَتۡحِ
وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِکَ اَعۡظَمُ دَرَجَۃً مِّنَ الَّذِیۡنَ اَنۡفَقُوۡا مِنۡۢ بَعۡدُ
وَقٰتَلُوۡا ؕ وَکُلًّا وَّعَدَ اللّٰہُ الۡحُسۡنٰی ؕ وَاللّٰہُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِیۡرٌ ﴿۱۰﴾ ع

वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छ दिनों में फिर वह अर्श पर मुतमक्किन हुआ, वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर जाता है और जो उस से निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उस में चढ़ता है और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो(4) आसमानों और ज़मीन की सलतन उसी की है और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे उमूर(5) वह रात को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन को रात में दाख़िल कर देता है, और वह सीनों में छुपी बातों को ख़ूब जानता है(6) ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उस में से जिस में उस ने तुम को अमीन बनाया है, पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और ख़र्च करें उन के लिए बड़ा अज्र है(7) और तुम को क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल तुम को बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुम से अहद ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो(8) अल्लाह वही तो है जो अपने बंदे पर खुली खुई आयतें नाज़िल फ़रमाता है, ताकि तुम्हें अंधेरियों से निकाल कर रौशनी में लाए, और यक़ीन जानो अल्लाह तुम पर बहुत शफ़ीक़, बहुत मेहरबान है(9) और तुम को क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, हालांकि सब आसमान और ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही का रह जाएगा, तुम में से जो लोग फ़तह के बाद ख़र्च करें और लड़ें वह उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फ़तह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सब से भलाई का वादा किया है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो(10)

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ
كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾ یَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَیْنَ
اَیْدِیْهِمْ وَبِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾ ۚ یَوْمَ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِیْلَ
ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ
بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ ؕ یُنَادُوْنَهُمْ
اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ
وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِیُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْیَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ
مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِیَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ
اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا
یَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَیْهِمُ الْاَمَدُ
فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِیْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یُحْیِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ कि वह उसको लिए बढ़ाए और उसके लिए बा-इज़्ज़त अज्र है(11) जिस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रौशनी उन के आगे और उनके दाएं चल रही होगी, आज के दिन तुम को ख़ुशख़बरी है बाग़ों की जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, तुम उन में हमेशा रहोगे, यह बड़ी कामयाबी है(12) जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रौशनी से कुछ फ़ायदा उठा लें, कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर रौशनी तलाश करो, फिर उनके दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा होगा, उसके अंदर की तरफ़ रहमत होगी और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा(13) वह उनको पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे, वह कहेंगे कि हां, मगर तुम ने अपने आप को फ़ित्ने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम को धोके में रखा यहां तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया, और धोकेबाज़ ने तुम को अल्लाह के मुआमले में धोका दिया(14) पस आज न तुम से कोई फ़िदया क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया, तुम्हारा ठिकाना आग है, वही तुम्हारी रफ़ीक़ है और वह बुरा ठिकाना है(15) क्या ईमान वालों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं और उस हक़ के आगे जो नाज़िल हो चुका है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन को पहले किताब दी गई थी फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए, और उन में से अकसर नाफ़रमान हैं(16) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दगी देता है उसकी मौत के बाद, हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो(17)

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ ع اِعْلَمُوْٓا ع ٢ ٩ ١٨
اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ
فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ
وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾
سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي
الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ ۙ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۨ ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ
النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वह लोग जिन्होंने अल्लाह को क़र्ज़ दिया अच्छा क़र्ज़, वह उन के लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बा-इज़्ज़त अज्र है(18) और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर वही लोग सिद्दीक़ और शहीद हैं, अपने रब के नज़दीक उनके लिए उनका अज्र और उनकी रौशनी है, और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोज़ख़ के लोग हैं(19) ख़ूब समझ लो कि इस दुनिया वाली ज़िन्दगी की हक़ीक़त बस यह है कि वह नाम है खेल कूद का, ज़ाहिरी सजावट का, तुम्हारे लिए एक दूसरे पर फ़ख़्र जताने का और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करने का, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक बारिश जिस से उगने वाली चीज़ें किसानों को बहुत अच्छी लगती है फिर वह अपना ज़ोर दिखाती है फिर तुम उसको देखते हो ज़र्द पड़ गई है फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में (एक तो) सख़्त अज़ाब है और (दूसरे) अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश है और ख़ुशनूदी, और दुनिया वाली ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है(20) दौड़ो अपने रब की मआफ़ी की तरफ़ और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिस की वुसअत आसमान और ज़मीन की वुसअत के बराबर है, वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह उसको देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़ा फ़ज़ल वाला है(21) कोई मुसीबत न ज़मीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इस से पहले कि हम उनको पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है(22) ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुम से खोया गया और न उस चीज़ पर फ़ख़्र करो जो उस ने तुम को दिया, और अल्लाह इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता(23) जो कि बुख़्ल करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हैं, और जो शख़्स एराज़ करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ है, ख़ूबियों वाला है(24)

لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا بِالۡبَيِّنٰتِ وَاَنۡزَلۡنَا مَعَهُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡمِيۡزَانَ
لِيَقُوۡمَ النَّاسُ بِالۡقِسۡطِ ۚ وَاَنۡزَلۡنَا الۡحَدِيۡدَ فِيۡهِ بَاۡسٌ شَدِيۡدٌ
وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعۡلَمَ اللّٰهُ مَنۡ يَّنۡصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالۡغَيۡبِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيۡزٌ ؑ ﴿۲۵﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا وَّاِبۡرٰهِيۡمَ وَجَعَلۡنَا ع ۳ ۲ ۱۹
فِىۡ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالۡكِتٰبَ فَمِنۡهُمۡ مُّهۡتَدٍ ۚ وَكَثِيۡرٌ مِّنۡهُمۡ
فٰسِقُوۡنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ قَفَّيۡنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمۡ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيۡنَا
بِعِيۡسَى ابۡنِ مَرۡيَمَ وَاٰتَيۡنٰهُ الۡاِنۡجِيۡلَ ۙ۬ وَجَعَلۡنَا فِىۡ قُلُوۡبِ
الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُ رَاۡفَةً وَّرَحۡمَةً ؕ وَرَهۡبَانِيَّةَ ۨ ابۡتَدَعُوۡهَا مَا
كَتَبۡنٰهَا عَلَيۡهِمۡ اِلَّا ابۡتِغَآءَ رِضۡوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوۡهَا حَقَّ
رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيۡنَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡهُمۡ اَجۡرَهُمۡ ۚ وَكَثِيۡرٌ
مِّنۡهُمۡ فٰسِقُوۡنَ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوۡا
بِرَسُوۡلِهٖ يُؤۡتِكُمۡ كِفۡلَيۡنِ مِنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَيَجۡعَلۡ لَّكُمۡ نُوۡرًا
تَمۡشُوۡنَ بِهٖ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۲۸﴾ ۙ لِّئَلَّا يَعۡلَمَ
اَهۡلُ الۡكِتٰبِ اَلَّا يَقۡدِرُوۡنَ عَلٰى شَىۡءٍ مِّنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الۡفَضۡلَ
بِيَدِ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ؑ ﴿۲۹﴾ ع ۳ ۳ ۲۰

हक़ीक़त यह है कि हम ने अपने पैग़म्बरों को खुली हुई निशानियां दे कर भेजा और उनके साथ किताब भी उतारी और तराज़ू भी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें, और हमने लोहा उतारा जिस में जंगी ताक़त भी है और लोगों के लिए दूसरे फ़ायदे भी और यह इस लिए ताकि अल्लाह जान ले कि कौन है जो उसको देखे बग़ैर उस (के दीन) की और उस के पैग़म्बरों की मदद करता है, यक़ीन रखो कि अल्लाह बड़ी कुव्वत का, बड़े इक़्तिदार का मालिक है(25) और हम ने नूह को और इब्राहीम (अलैहिमस्सलाम) को भेजा और उन की औलाद में हम ने पैग़म्बरी और किताब रख दी, फिर उन में से कोई राह पर है और उन में से बहुत से नाफ़रमान हैं(26) फिर उन्हीं के नक़्शे क़दम पर हमने रसूल भेजे और उन्हीं के नक़्शे क़दम पर ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) को भेजा और हमने उसको इन्जील दी, और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हम ने उन के दिलों में शफ़क़त और रहमत रख दी, और रहबानियत को उन्होंने ख़ुद ईजाद किया है हमने उसको उन पर नहीं लिखा था, मगर उन्होंने अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए उसको इख़्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रियाअत न की, पस उन में से जो लोग ईमान लाए उनको हम ने उन का अज्र दिया, और उन में से अकसर नाफ़रमान हैं(27) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम को अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा और तुम को रौशनी अता करेगा जिस को तुम ले कर चलोगे और तुम को बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला है, मेहरबान है(28) ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहता है अता फ़रमाता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है(29)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह हदीद का तर्जुमा मस्जिदे कुबा में ज़ुहर की नमाज़ के बाद पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह हश्र की फ़ज़ीलत

हज़रत अरबाज़ रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ सोने से पहले मुसब्बिहात सूरतों को पढ़ा करते थे और फ़रमाते थे कि इन में एक आयत है जो हज़ारों आयत से बेहतर है।

(मिश्कात शरीफ़ः पेज 187, तिर्मिज़ी शरीफ़ः 2/120, अबू दाऊदः 1/189)

इस आयत से मुराद अल्लामा इब्ने कसीर रह० फ़रमाते हैं कि वह अफ़ज़ल आयत सूरह हदीद की आयत नम्बर 3 है :

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾

जिन सूरतों के शुरु में سَبَّحَ या يُسَبِّحُ आया है हदीस में उनको मुसब्बिहात से ताबीर फ़रमाया है और ऐसी 6 सूरतें है। (1) सूरह हदीद (2) सूरह हश्र (3) सूरह सफ़ (4) सूरह जुमा (5) सूरह तग़ाबुन (6) सूरह आला। (तफ़्सीरि मज़हरीः 11/331)

सूरह हश्र

सूरह हश्र मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 24 आयतें और 3 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 101 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 59 नम्बर पर है और सूरह बैयना के बाद नाज़िल हुई है।

رُكُوْعَاتُهَا ٣ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠١) اٰيَاتُهَا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝١
هُوَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ
الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ یَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَیْثُ لَمْ یَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ
الرُّعْبَ یُخْرِبُوْنَ بُیُوْتَهُمْ بِاَیْدِیْهِمْ وَاَیْدِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۗ
فَاعْتَبِرُوْا یٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ ۝٢ وَلَوْلَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمُ
الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِی الدُّنْیَا ؕ وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣

तर्जुमा : अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (1) वही है जिस ने अहले किताब काफ़िरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान न था कि वह निकलेंगे और वह ख़्याल करते थे कि उन के क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उनको ख़्याल भी न था और उनके दिलों में रोब डाल दिया, वह अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी, ऐ आँख वालो! इबरत हासिल करो (2) और अगर अल्लाह ने उन पर जिला वतनी न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उनको अज़ाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अज़ाब है (3)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى
اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۵﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ
اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۶﴾
مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي
الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ
دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا
نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۷﴾ وقف لازم
لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۸﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ
قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ
خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۹﴾ ۚ

यह इस लिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की, और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सख़्त अज़ाब वाला है(4) खजूरों के जो दरख़्त तुम ने काट डाले या उनको उन की जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से और ताकि वह नाफ़रमानों को रुसवा करे(5) और अल्लाह ने उन से जो कुछ अपने रसूल की तरफ़ लौटाया तो तुम ने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊँट, और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत देता है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है(6) जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ़ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दरमियान गर्दिश न करता रहे, और रसूल तुम को जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज़ से तुम को रोके उस से रुक जाओ और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है(7) उन मुफ़लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं, वह अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ामन्दी चाहते हैं और वह अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं(8) और जो लोग पहले से दारुल इस्लाम (मदीना) में क़रार पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, जो उन के पास हिजरत करके आता है उस से वह मोहब्बत करते हैं और वह अपने दिलों में उस से तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है और वह उनको अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं अगरचे उनके ऊपर फ़ाक़ा हो, और जो शख़्स अपने जी के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं(9)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ع ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ع
يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ
لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا
لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ
لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ
صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾
لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ
جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ
شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ ۚ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ ۚ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا
كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

और जो लोग उनके बाद आए वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम को बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ हमारे रब! बेशक तू बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है(10) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक़ में मुबतला हैं, वह अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ़्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे मुआमले में हम किसी की बात न मानेंगे, और अग तुम से लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वह झूठे हैं(11) अगर वह निकाले गए तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उनकी मदद करेंगे तो ज़रूर वह पीठ फेर कर भागेंगे फिर वह कहीं मदद न पाएंगे(12) बेशक तुम लोगों का डर उन के दिलों में अल्लाह से ज़्यादा है, यह इस लिए कि वह लोग समझ नहीं रखते(13) यह लोग सब मिल कर तुम से कभी नहीं लड़ेंगी मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या दीवारां की आड़ में, उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है, तुम उनको मुत्तहिद ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा जुदा हो रहे हैं, यह इस लिए कि वह लोग अक़्ल नहीं रखते(14) यह उन लोगों की मानिन्द हैं जो उन से कुछ ही पहले अपने किए का मज़ा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है(15) जैसे शैतान जो इन्सान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुन्किर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुम से बरी हूं, मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है(16)

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ
جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ ع٢٧ ٥
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ
اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ
النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾
لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا
مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۲۲﴾
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ احتیاط
الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾ ع ع٢٨ ٦

फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में गए जहां वह हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों की सज़ा यही है﴾17﴿ ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और हर शख़्स देखे कि उस ने कल के लिए क्या भेजा है, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो﴾18﴿ और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन को ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं﴾19﴿ दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते, जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं﴾20﴿ अगर हम इस कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो आप देखते कि वह अल्लाह के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह सोचें﴾21﴿ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है﴾22﴿ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोर आवर, अज़मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं﴾23﴿ वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वजूद में लाने वाला, सूरत बनाने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम, हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसी की तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है﴾24﴿

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह हश्र का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह सफ़ की फ़ज़ीलत

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम की एक जमात आपस में बैठ कर यह मुज़ाकिरा कर रही थी कि काश हमें मालूम होता कि अल्लाह तआला को कौन सा अमल सब से ज़्यादा महबूब होता है, ताकि हम उस पर अमल करें। चुनांचे अल्लाह तआला ने यह सूरह सफ़ "सब्बहा लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति" आख़िर तक नाज़िल फ़रमाई, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमारे सामने यह पूरी सूरत तिलावत फ़रमाई। (रूहुल मआनीः 28/83)

2. सूहर हदीद में इस सूरत की फ़ज़ीलत मज़कूर हुई है।

सूरह सफ़ मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 14 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 109 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 61 नम्बर पर है और सूरह तग़ाबुन के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह सफ़

(٦١) سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا
عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤

तर्जुमा : अल्लाह की तस्बीह बयान करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब है, हिकमत वाला है(1) ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बात क्यों करते हो जो तुम करते नहीं(2) अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं(3) अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिल कर लड़ते हैं गोया वह एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं(4)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّىْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝۵ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ
بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۶ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ
يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۷ ۚ يُرِيْدُوْنَ
لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝۸
هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝۹ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ ع ۹ ۱
تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝۱۰ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝۱۱ ۙ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۲ ۙ
وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۳

और (याद करो) जब कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों सता रहे हो, हालांकि तुम्हें (बख़ूबी) मालूम है कि मैं तुम्हारी जानिब अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, पस जब वह लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को (और) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआला नाफ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं देता(5) और जब ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि ऐ बनी इसराईल! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक़ करने वाला हूं उस तौरात का जो मुझ से पहले से मौजूद है और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा (और) उसका नाम अहमद होगा, फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां ले कर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है(6) और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे, हालांकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता(7) वह चाहते हैं कि अल्लाह की रौशनी को अपने मुंह बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रौशनी को पूरा करके रहेगा ख़्वाह काफ़िरों को यह कितना ही नागवार हो(8) वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ, ताकि उसको सब दीनों पर ग़ालिब कर दे ख़्वाह मुशरिकों को यह कितना ही नागवार हो(9) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम को एक ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुम को एक दर्दनाक अज़ाब से बचा ले(10) तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो(11) अल्लाह तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और तुम को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिस के नीचे नहरें जारी होंगी और उमदा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी(12) और एक और चीज़ भी है जिस की तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फ़तह जल्दी, और मोमिनों को बशारत दे दीजिए(13)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ
اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ
فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह (के दीन) के मददगार बन जाओ, उसी तरह जिस तरह ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) ने हवारियों से कहा था कि वह कौन हैं जो अल्लाह के वास्ते मेरे मददगार बनें? हवारियों ने कहाः हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं, फिर बनी इसराईल का एक गिरोह ईमान ले आया और एक गिरोह ने कुफ्र इख़्तियार किया, चुनांचे जो लोग ईमान लाए थे हम ने उनके दुश्मनों के ख़िलाफ़ उनकी मदद की, नतीजा यह हुआ कि वह ग़ालिब आए (14)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह सफ़ का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह जुमुआ की फ़ज़ीलत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ जुमा के दिन सूरह जुमुआ पढ़ा करते थे। (रूहुल मआनीः28/92)

सूरह जुमुआ

सूरह जुमुआ मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 11 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 110 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 62 नम्बर पर है और सूरह सफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

(٦٢) سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٠)

اٰيَاتُهَا ١١ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ
وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ
فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ
الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ
بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ
لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾
قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؑ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا ع ۸
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى

तर्जुमा : अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है, जो बादशाह है, पाक है, ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है(1) वही है जिस ने उम्मी लोगों में उन्हीं में से एक रसूल को भेजा जो उनके सामने उसकी आयतों की तिलावत करे और उनके पाकीज़ा बनाए और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे, जब कि वह उस से पहले खुली गुमराही में पड़े हुए थे(2) और दूसरों के लिए भी उन में से जो अभी उन में शामिल नहीं हुए, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है(3) यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह देता है जिस को चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है(4) जिन लोगों को तौरात का हामिल बनाया गया फिर उन्होंने उसको न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो, क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता(5) कह दीजिए कि ऐ यहूद! अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुक़ाबिल में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो(6) और वह कभी इस की तमन्ना न करेंगे इन कामों की वजह से जिन को उनके हाथ आगे भेज चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है(7) कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आ कर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे फिर वह तुम को बता देगा जो तुम करते रहे हो(8) ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ़ चल पड़ो

ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ

اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً

اَوْ لَهْوَا ِۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ ع

और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो (9) फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत से याद करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ (10) और जब वह कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ते हैं और आप को खड़ा छोड़ देते हैं कह दीजिए कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है (11)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह जुमुआ का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह तग़ाबुन की फ़ज़ीलत

1. इस सूरत की फ़ज़ीलत सूरह हदीद में आ चुकी है, इस सूरत का शुमार भी "मुसब्बिहात" सूरतों में से है।

2. सूरह तग़ाबुन पढ़ कर किसी ज़ालिम के पास चला जाए तो उसके शर से महफ़ूज़ रहे। (आमाले कुरआनीः पेज 48)

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से मनक़ूल है कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः जो भी बच्चा पैदा होता है, उस के सर के शिकनों और पेचों में सूरह तग़ाबुन की शुरू वाली पांच आयतें लिखी हुई होती हैं। (दुर्रे मनसूरः 8/182)

सूरह तग़ाबुन

सूरह तग़ाबुन मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई, इस में 18 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 108 नम्बर पर है, लेकिन तिलावत के तएतिबार से 64 नम्बर पर है और सूरह तहरीम के बाद नाज़िल हुई है।

آیاتها ١٨ (٦٤) سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٨) رکوعاتها ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ
اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا
وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ
لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

तर्जुमा : अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज़ जो आसमानों में है और हर चीज़ जो ज़मीन में है, उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है(1) वही है जिस ने तुम को पैदा किया फिर तुम में से कोई काफ़िर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो(2) उस ने आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उस ने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ़ लौटना है(3) वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है(4) क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इस से पहले इन्कार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है(5) ये इस लिए कि उनके पास उसके रसूल खुली दलीलों के साथ आए तो उन्होंने कहा कि क्या इन्सान हमारी रहनुमाई करेंगे? पस उन्होंने इनकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उन से बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज़ है, तारीफ़ वाला है(6) इंकार करने वालों ने दावा किया कि वह हरगिज़ दोबारा उठाए न जाएंगे, कह दीजिए कि हां, मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम को बताया जाएगा जो कुछ तुम ने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है(7) पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर पर जो हम ने उतारा है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो(8)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۹﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۰﴾ ع مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ ع ۱۰ ۱۵
يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۲﴾
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۳﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ
وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَآ
اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ
وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنْ
تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ لا عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾ ع ع ۲ ۸ ۱۶

जिस दिन वह तुम सब को एक जगह जमा होने के दिन जमा करेगा, यही हार जीत का दिन होगा, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उस ने नेक अमल किया होगा अल्लाह उसके गुनाह उस से दूर कर देगा और उसको बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, वह हमेशा उन में रहेंगे, यही है बड़ी कामयाबी(9) और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है(10) जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के हुक्म से आती है, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है(11) और तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम एराज़ करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पहुंचा देना है(12) अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और वह ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए(13) ऐ ईमान वालो! तुम्हारी बाज़ बीवियां और बाज़ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं पस तुम उन से होशियार रहो, और अगर तुम मुआफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है(14) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश की चीज़ हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है(15) लिहाज़ा जहां तक हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनो और मानो, और (अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़) ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है, और जो लोग अपने दिल की लालच से महफ़ूज़ हो जाएं वही फ़लाह पाने वाले हैं(16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगो तो वह उसको तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम को बख़्श देगा, और अल्लाह क़दरदान है, बुर्दबार है(17) ग़ाइब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम है(18)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह तग़ाबुन का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह तहरीम

सूरह तहरीम मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई और इस में 12 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 107 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 66 नम्बर पर है और सूरह हुजुरात के बाद नाज़िल हुई है।

اٰيَاتُهَا ١٢ (٦٦) سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٧) رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ
اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١) قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ
اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (٢) وَاِذْ اَسَرَّ
النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ
اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ
قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ (٣) اِنْ تَتُوْبَاۤ
اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ (٤) عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا
مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ
ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا (٥) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ
نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (٦)

तर्जुमा : ऐ (प्यारे) नबी! आप क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जो अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है अपनी बीवियों की रज़ामन्दी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है(1) अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला, हिक्मत वाला है(2) और जब (प्यारे) नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही तो जब उस ने उसको बता दिया और अल्लाह ने नबी को उस से आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसको यह बात बताई तो उस ने कहा कि आप को किस ने उसकी ख़बर दी, नबी ने कहा कि मुझ को बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने(3) अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं और अगर तुम दोनों नबी के मुक़ाबले में कारवाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक़ अल्लाह है और जिबरईल और सालेह अहले ईमान और उनके अलावा फ़रिश्ते उसके मददगार हैं(4) अगर वह (पैग़म्बर) तुम्हें तलाक़ दे दें तो बहुत जल्द उनहें उनका रब तुम्हारे बदले तुम से बेहतर बीवियां इनायत फ़रमाएगा जो इस्लाम वालियां, ईमान वालियां, अल्लाह के हुज़ूर झुकने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत बजा लाने वालियां, रोज़े रखने वालियां होंगी, बेवा और कुंवारियां(5) ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान हैं और पत्थर, जिस पर सख़्त दिल मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जिन्हें जो हुक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते, बल्कि जो हुक्म दिया जाए बजा लाते हैं(6)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ
عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ
نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا
نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ
وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ ۙ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ع

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज्र और बहाना मत करो, तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे करतूत का बदला दिया जा रहा है(7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दे और तुम को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा, उन की रौशनी उनके आगे और उनके दाएं तरफ़ दौड़ रही होगी, वह कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारी रौशनी को कामिल कर दीजिए और हमारी मग़फ़िरत फ़रमाइए, बेशक आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं(8) ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरा ठिकाना है(9) अल्लाह काफ़िरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह (अलैहिस्सलाम) की बीवी की और लूत (अलैहिस्सलाम) की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़यानत की तो वह दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ(10) और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फ़िरऔन की बीवी की, जब कि उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दीजिए और मुझको फ़िरऔन और उसके अमल से बचा लीजिए और मुझ को ज़ालिम क़ौम से निजात दीजिए(11) और इमरान की बेटी मरयम (अलैहस्सलाम) जिस ने अपनी इस्मत की हिफ़ाज़त की फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और उस ने अपने रब के कलिमात की और उस की किताबों की तस्दीक़ की और वह फ़रमां बरदारों में से थी(12)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह तहरीम का तर्जुमा मक्कतुल मुकर्रमा में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह मुल्क और सूरह अलिफ़ लाममीम सजदा के मुश्तरका अजीब व ग़रीब फ़ज़ाइल

1. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने हुज़ूर ﷺ का यह इरशाद नक़्ल किया है कि कुरआन मजीद में एक सूरत 30 आयत की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती है। यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत करा दे, वह सूरह तबारकल्लज़ी है।
(रवाहु अहमद, अबूदाऊद, नसई, इब्ने माजा, हाकिम, इब्ने हिब्बान)

2. एक रिवायत में हुज़ूर ﷺ का इरशाद आया है कि मेरा दिल चाहता है कि यह सूरह हर मोमिन के दिल में हो।

3. एक रिवायत में है कि जिस ने सूरह अलिफ़ लाममीम सजदा और सूरह मुल्क को मग़रिब और इशा के दरमियान पढ़ा गोया उस ने लैलतुल क़द्र में क़याम किया।

4. एक रिवायत में है कि जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा उसके लिए 70 नेकियां लिखी जाती हैं और 70 बुराइयां दूर की जाती हैं।

5. एक रिवायत में है कि जिस ने इन दोनों सूरतों को पढ़ा उसके लिए इबादते लैलतुल क़द्र के बराबर सवाब लिखा जाता है।
(कज़ा फ़िल-मज़ाहिर)

6. इमाम तिर्मिज़ी रह० ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया है कि बाज़ सहाबा रज़ि० ने एक जगह ख़ेमा लगाया, उनको इल्म न था कि वहां क़ब्र है, अचानक उन ख़ेमा लगाने वालों ने उस जगह किसी को सूरह तबारकल्लज़ी पढ़ते हुए सुना तो हुज़ूर ﷺ से आ कर अर्ज़ किया, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि यह सूरह अल्लाह के अज़ाब से रोकने वाली है और निजात देने वाली है।

7. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम ﷺ उस वक़्त तक

न सोते थे, जब तक सूरह अलिफ़ लाममीम सजदा और सूरह तबारकल्लज़ी न पढ़ लेते थे।

8. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० कहते हैं कि मुझे ये रिवायत पहुंची है कि एक शख़्स बड़ा गुनहगार था और सूरह सजदा पढ़ा करता था, उसके अलावा और कुछ नहीं पढ़ा करता था, इस सूरत ने अपने पर उस शख़्स के ऊपर फैला दिए कि ऐ रब! यह शख़्स मेरी बहुत तिलावत करता था, उसकी शफ़ाअत क़ुबूल की गई और हुक्म हो गया कि हर ख़ता के बदले एक नेकी दी जाए।

9. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० यह भी कहते हैं कि यह सूरत अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से क़ब्र में झगड़ती है और कहती है कि अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो मेरी शफ़ाअत क़ुबूल कर, वर्ना मुझे अपनी किताब से मिटा दे और ब-मंज़िला परिन्दे के बन जाती है और अपने पर मय्यत के ऊपर फैला देती है और उस पर अज़ाबे क़ब्र होने से माने होती है और यही सारा मज़मून वह तबारकल्लज़ी के बारे में भी कहते हैं।

10. हज़रत ख़ालिद बिन मादान रज़ि० उस वक़्त तक न सोते थे जब दोनों सूरतें न पढ़ लेते।

11. हज़रत ताउस रह० कहते हैं कि यह दोनों सूरतें तमाम कुरआन की हर सूरत पर साठ नेकियां ज़्यादा रखती हैं।

(मज़कूरा तमाम मज़मून फ़ज़ाइले कुरआनः पेज 53,54 से लिया गया है।)

सूरह मुल्क

सूरह मुल्क मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई, इस में 30 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 77 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 67 नम्बर पर है और सूरह तूर के बाद नाज़िल हुई है।

اٰیَاتُهَا ٣٠ (٦٧) سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّیَّةٌ (٧٧) رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ ۙ ۝١
الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ
وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ۝٢ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ
مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ
تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِیْرٌ ۝٤ وَلَقَدْ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا
بِمَصَابِیْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّیٰطِیْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ
السَّعِیْرِ ۝٥ وَلِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِیْرُ ۝٦ اِذَآ اُلْقُوْا فِیْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِیْقًا وَّهِیَ تَفُوْرُ ۙ ۝٧
تَكَادُ تَمَیَّزُ مِنَ الْغَیْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِیَ فِیْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ
اَلَمْ یَاْتِكُمْ نَذِیْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰی قَدْ جَآءَنَا نَذِیْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۚۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ كَبِیْرٍ ۝٩
وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِیْۤ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ۝١٠

तर्जुमा : बाबरकत है वह ज़ात जिस के हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है(1) जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा कीः ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अच्छे अमल वाला है, और वह ज़बरदस्त है, बहु ज़्यादा बख़्शने वाला है(2) जिस ने बनाए सात आसमान ऊपर तले, आप रहमान के बनाने में कोई ख़लल नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लीजिए कहीं आप को कोई ख़लल नज़र आता है(3) फिर बार बार निगाह डाल कर देखिए, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ़ वापस आ जाएगी(4) और हम ने क़रीब के आसमानों को चराग़ों से सजाया है और हम ने उनको शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया है और हम ने उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब तैयार कर रखा है(5) और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है(6) जब वह उस में डाले लाएंगे तो जहन्नम का शोर सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी(7) मालूम होगा वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी, जब कभी उस में कोई जमात डाली जाएगी तो जहन्नम के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था(8) वह कहेंगे कि हां! हमारे पास डराने वाला आया था फिर हम ने उसको झुठला दिया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो(9) और वह कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते(10)

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۲﴾ وَاَسِرُّوْا
قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا
يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۴﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ
وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ
الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ
يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا
اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا
الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ
جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ
اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ
رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى
وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۲﴾

पस वह अपने गुनाहों का इक़रार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर
(11) जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं उनके लिए मग़फ़िरत और
बड़ा अज्र है(12) और तुम अपनी बात छुपा कर कहो या पुकार कर कहो,
वह दिलों तक की बातों को ख़ूब जानता है(13) क्या वह न जानेगा
जिस ने पैदा किया है, और वह बारीक बीं है, ख़बर रखने वाला है(14)
वही अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को चलने के क़ाबिल बना दिया
फिर तुम उसके रास्तों में चलो और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ, और
उसी की तरफ़ ज़िन्दा हो कर उठना है(15) क्या तुम उस से बेख़ौफ़ हो
गए जो आसमान में है कि वह तुम को ज़मीन में धंसा दे फिर वह लरज़ने
लगे(16) या क्या तुम आसमान वाले की इस बात से बेख़ौफ़ हो बैठे कि
वह तुम पर पत्थरों की बारिश बरसा दे? फिर तुम्हें पता चलेगा कि मेरा
डराना कैसा था(17) और उन से पहले जो लोग थे उन्होंने भी (पैग़ाम्बरों
को) झुठलाया था, फिर (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा था?(18) क्या
वह परिन्दों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वह उनको
समेट भी लेते हैं, रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन को थामे हुए हो?
बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है(19) भला ऐसा कौन है जो तुम्हारे
लश्कर बने (और) जो तुम्हारी मदद करे रहमान के सिवा? काफ़िर तो सिर्फ़
धोके में हैं(20) आख़िर कौन है जो तुम को रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी
रोज़ी रोक ले, बल्कि वह सरकशी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं(21)
क्या जो शख़्स औंधे मुंह चल रहा है वह ज़्यादा सहीह राह पाने वाला है
या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है(22)

قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ
وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ
فِی الْاَرْضِ وَ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَاۤ
اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ
اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ
مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَیْهِ
تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ
ع ۲ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾ ع

कह दीजिए कि वही है जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए, तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो(23) कह दीजिए कि वही है जिस ने तुम को ज़मीन में फैलाया और तुम उस की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे(24) और वह कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो(25) कह दीजिए कि यह इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, और मैं सिर्फ़ एक खुला हुआ डराने वाला हूं(26) पस जब वह उसको क़रीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज़ जिस को तुम मांगा करते थे(27) (ऐ प्यारे नबी! उन से) कह दीजिए कि ज़रा यह बताओ कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमा दे तो (दोनों सूरतों में) काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा?(28) कह दीजिए कि वह रहमान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हम ने भरोसा किया, पस बहुत जल्द तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है(29) कह दें कि बताओ अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ़ पानी ले आए(30)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह मुल्क का तर्जुमा मस्जिदे नबवी में पूरा किया है।
अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह नूह

सूरह नूह मक्की है और इस में 28 आयतें और 2 रुकूअ हैं। नाज़िल होने के एतिबार से 71 नम्बर पर है और तिलावत के एतिबार से भी 71 नम्बर पर है और सूरह नहल के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह नूह

اٰيَاتُهَا ٢٨ (٧١) سُوْرَةُ نُوْحٍ مَّكِّيَّةٌ (٧١) رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

तर्जुमा : बेशक हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ रसूल बना कर भेजा था कि एक दर्दनाक अज़ाब के आने से पहले अपनी क़ौम को इत्तिला कर दो﴾1﴿ नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम को एक साफ़ इत्तिला देने आया हूं﴾2﴿

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ
اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وقف لازم
دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۙ ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا
فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ
فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ۚ ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ
لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۗ
اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ ﴿١١﴾
وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ
وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ؕ ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ ﴿١٣﴾
وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ
سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا
وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
نَبَاتًا ۙ ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

यह कि सिर्फ़ एक अल्लाह की बंदगी करो, उसकी नाफ़रमानी से बचो और मेरा कहा मान जाओ﴾3﴿ तब वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और एक मुक़र्रर वक़्त की तुमको मोहलत देगा, बेशक अल्लाह की तरफ़ से जब मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो फिर ढील नहीं मिलती काश तुम यह बात समझ लेते﴾4﴿ नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया: ऐ मेरे रब! मैं अपनी क़ौम को रात और दिन बराबर दावत देता रहा﴾5﴿ मगर यह लोग तो मेरी दावत से बिदक कर और ज़्यादा भागने लगे﴾6﴿ और मैंने जब कभी उन को दावत दी उनके भले के लिए कि आप उनकी मग़फ़िरत फ़रमा दें लेकिन उन्होंने अपने कानों में उंगलियां ठूंस लीं और कपड़ों से अपने बदन को ढांक लिया और अपनी ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा तकब्बुर लिए अकड़ बैठे﴾7﴿ फिर भी मैंने उन को और ज़्यादा खुल कर दावत पेश की﴾8﴿ फिर उसके बाद मैंने खुल्लम खुल्ला उनके सामने अपनी दावत का एलान कर दिया और अकेले में चुपके से भी समझाने की कोशिश की﴾9﴿ चुनांचे मैंने कहा कि अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत मांगो, यक़ीन जानो कि वह बहुत बख़्शने वाला है﴾10﴿ वह तुम पर आसमान से पानी की मूसलाधार बारिश बरसाएगा﴾11﴿ और तुम्हारी इमदाद करेगा मालों और बेटों के ज़रीए और तुम्हारे लिए बाग़ात बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा﴾12﴿ तुम को क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार और अज़मत का एतेक़ाद नहीं रखते﴾13﴿ और उस ने तुम को पैदा फ़रमाया तरह तरह से﴾14﴿ क्या तुम ने यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने कैसे बना दिए ऊपर तले सात आसमान﴾15﴿ और चाँद को उन में नूर फैलाने वाला और सूरज को चराग़ बना दिया﴾16﴿ और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से बेहतरीन तरीक़े पर उगाया है﴾17﴿ फिर ज़मीन के अंदर तुम्हें लौटा देगा और फिर तुम को एक ख़ास अंदाज़ से बाहर निकालेगा﴾18﴿

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ﴿۱۹﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا
فِجَاجًا ﴿۲۰﴾ؑ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ ع ١ ٢٠ ٩
يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ﴿۲۱﴾ۚ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿۲۲﴾ۚ
وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ۬
وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿۲۳﴾ۚ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۬ۚ وَلَا
تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۴﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا
نَارًا ۙ۬ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۵﴾
وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿۲۶﴾
اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ﴿۲۷﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ
مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا
تَبَارًا ﴿۲۸﴾ؑ ع ٢ ٨ ١٠

और अल्लाह ने ही तुम्हारे लिए ज़मीन को एक फ़र्श बना दिया है(19) ताकि तुम उसके कुशादा और खुले रास्तों में चल फिर सको(20) नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! इन्होंने मेरी बात नहीं मानी और ऐसों के कहने में आए कि उनके माल और औलाद में नुक़सान के सिवा उनके कुछ हाथ न आएगा(21) और उन्होंने बड़े फ़रेब और साज़िश का जाल बिछा दिया(22) और (अपने आदमियों से) कहा है कि अपने माबूदों को हरगिज़ मत छोड़ना, न वद्द को और न सुवाअ़ को किसी सूरत में छोड़ना, और न यग़ूस व यऊक़ और नस्र को छोड़ना(23) और उन्होंने बहुत से लोगों को बहका दिया, और आप इन गुमराहों की गुमराही में ही इज़ाफ़ा कीजिए(24) यह लोग अपनी ख़ताओं और गुनाहों के सबब पानी में डुबा डुबा कर मारे गए, फिर आग में दाख़िल कर दिए गए और अब अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को भी अपना मददगार नहीं पा रहे हैं(25) और नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि ऐ रब! आप ज़मीन पर काफ़िरों से बसा हुआ एक घर भी बाक़ी न रहने दें(26) अगर आप उनको यहां रहने देंगे तो यह आप के बंदों को फिर गुमराह करेंगे और उन से जो औलाद होगी वह भी बदकार और पक्की काफ़िर ही होगी(27) ऐ मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइए और मेरे मां बाप की मग़फ़िरत फ़रमाइए और जो मेरे घर में ईमान ला कर दाख़िल हुआ ऐसे सब ईमान वाले मर्दों की और ईमान वाली औरतों की मग़फ़िरत फ़रमाइए, और ज़ालिमों की तबाही और बरबादी को ज़्यादा बढ़ा दीजिए(28)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह नूह का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

سُورَةُ الجِنِّ

सूरह जिन्न

सूरह जिन्न मक्की है और इस में 28 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 40 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 72 नम्बर पर है और सूरह आराफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह जिन्न

رُكُوعَاتُهَا ٢ (٧٢) سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (٤٠) اٰيَاتُهَا ٢٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾

तर्जुमा : कह दीजिए कि मुझे वह्ई की गई है कि जिन्नात की एक जमात ने ग़ौर से कुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हम ने एक अजीब कुरआन सुना है ﴾1﴿

يَّهْدِيْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ۲
وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ۳ وَّاَنَّهٗ
كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ۴ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ
لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ۵ وَّاَنَّهٗ كَانَ
رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ
رَهَقًا ۙ۶ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ۷
وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا
وَّشُهُبًا ۙ۸ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ
يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ۹ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ
اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ۱۰ وَّاَنَّا
مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ۱۱
وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ
هَرَبًا ۙ۱۲ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ۱۳ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ
وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۱۴

जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए, और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे(2) और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलंद है, उस ने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद(3) और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े हक़ बातें कहता था(4) और हम ने गुमान किया था कि इन्सान और जिन्न अल्लाह की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे(5) और यह कि इन्सानों में से कुछ लोग जिन्नात के कुछ लोगों की पनाह लिया करते थे, इस तरह उन लोगों ने जिन्नात को और सर चढ़ा दिया था(6) और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा(7) और हमने आसमान का जायज़ा लिया तो हम ने पाया कि वह सख़्त पहरे दारों और शोलों से भरा हुआ है(8) और हम उस के बाज़ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे, पस अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है(9) और हम नहीं जानते कि यह ज़मीन वालों के लिए बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है(10) और यह कि हम में से बाज़ नेक हैं और बाज़ और तरह के, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं(11) और यह कि हम ने समझ लिया कि हम ज़मीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते और न भाग कर उसको हरा सकते हैं(12) और यह कि हम ने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उस को न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज़्यादती का(13) और यह कि हम में से कुछ मुसलमान हो गए हैं और हम में से (अब भी) कुछ ज़ालिम हैं, चुनांचे जो इस्लाम ला चुके हैं उन्होंने हिदायत का रास्ता ढूंढ लिया है(14)

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿۱۵﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا
عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ﴿۱۶﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ
وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ﴿۱۷﴾
وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ﴿۱۸﴾ وَّاَنَّهٗ
لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕع﴿۱۹﴾ ع ۱۹
قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿۲۰﴾ قُلْ اِنِّيْ
لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿۲۱﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ
مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ۵ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۙ﴿۲۲﴾ اِلَّا
بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ﴿۲۳﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا
مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ
عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ
يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى
غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۙ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ
يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۙ﴿۲۷﴾

और रहे वह लोग जो ज़ालिम हैं तो वह जहन्नम का ईंधन हैं(15) और (मुझे वह्ई की गई है कि) यह लोग अगर रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उनको ख़ूब पानी से सैराब करते(16) ताकि उस में उन को आज़माएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा तो वह उसको सख़्त अज़ाब में मुबतला करेगा(17) और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो(18) और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसको पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए(19) कह दीजिए कि मैं सिर्फ़ अपने रब को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता(20) कह दीजिए कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूं और न किसी भलाई का(21) कह दीजिए कि मुझ को अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं(22) बस अल्लाह ही की तरफ़ से पहुंचा देना और उसके पैग़ामों की अदाएगी है, और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिस में वह हमेशा रहेंगे(23) यहां तक कि जब वह देखेंगे उस चीज़ को जिस का उन से वादा किया जार हा है तो वह जान लेंगे कि किस के मददगार कमज़ोर हैं और कौन तादाद में कम हैं(24) कह दीजिए कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है(25) ग़ैब का जानने वाला वही है, वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता(26) सिवाए उस रसूल के जिस को उस ने पसंद किया हो तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफ़िज़ लगा देता है(27)

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ
وَاَحْصٰى كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता किए हुए है और उसने हर चीज़ को गिन रखा है﴿28﴾

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह जिन्न का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह मुज़म्मिल

सूरह मुज़म्मिल मक्की है, लेकिन आयात 10,11,20 मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई और इस में 20 आयतें और 2 रुकूअ हैं, नाज़िल होने के एतिबार से 3 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 73 नम्बर पर है और सूरह क़लम के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह मुज़म्मिल

(٧٣) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ (٣)
اٰيَاتُهَا ٢٠ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ ۝١ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ۝٢ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ
مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ ۝٣ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ ۝٤ اِنَّا
سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝٥ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ
وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ؕ ۝٦ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ ۝٧
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ ۝٨ رَبُّ الْمَشْرِقِ
وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝٩ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا
يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝١٠ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ
اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝١١ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ ۝١٢
وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۗ ۝١٣ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ
وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝١٤ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ
رَسُوْلًا ۙ۬ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ؕ ۝١٥

तर्जुमा : ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले﴾1﴿ रात को क़याम किया करें मगर थोड़ी सी रात﴾2﴿ यानी निस्फ़ रात या उस से कुछ कम﴾3﴿ या उस से कुछ ज़्यादा और कुरआन को ठहर ठहर कर पढ़ा करें﴾4﴿ हम जल्द ही आप पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे﴾5﴿ यक़ीनन रात के वक़्त उठना ही ऐसा अमल है जिस से नफ़्स अच्छी तरह कुचला जाता है और बात भी बेहतर तरीक़े पर कही जाती है﴾6﴿ बेशक दिन में आप को और बहुत से काम होते हैं﴾7﴿ तो अपने रब के नामों का ज़िक्र किया कीजिए और हर तरफ़ से बेतअल्लुक़ हो कर उसी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए﴾8﴿ वही मशरिक़ व मग़रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपना वकील बना लीजिए﴾9﴿ और जो-जो दिल तोड़ने वाली बातें वह कहते हैं उन को हौसले से बरदाश्त करते रहिए और उन से अच्छे अंदाज़ के साथ अलग हो जाइए﴾10﴿ और मुझ पर छोड़ दीजिए उन झुठलाने वाले मालदारों को और उन को थोड़ी सी मोहलत दे दीजिए﴾11﴿ बेशक हमारे पास बेड़ियां हैं और भड़कती आग है﴾12﴿ और गले में अटकने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है﴾13﴿ जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ उठेंगे और पहाड़ फिसलती हुई रेत का टीला बन जाएंगे﴾14﴿ (ऐ म्कका वालो!) हम ने तुम्हारे पास एक रसूल तुम पर गवाह बना कर भेजा जिस तरह हम ने एक रसूल (मूसा को) फ़िरऔन की तरफ़ भेजा था﴾15﴿

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿۱۶﴾
فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ
شِيْبًا ﴿۱۷﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿۱۸﴾
اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۱۹﴾
اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ
وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ
يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ
سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ
يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖۗ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا
وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾

पस फ़िरऔन ने (हमारे) रसूल का कहा न माना तो हम ने उसको एक बड़े वबाल में पकड़ लिया﴾16﴿ अगर तुम कुफ्र करोगे तो तुम किस तरह उस दिन से बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा﴾17﴿ जिस में आसमान फट जाएगा, अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहेगा﴾18﴿ यह कुरआन तो एक नसीहत है, तो यह जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार करे﴾19﴿ बेशक आप का रब ख़ूब जानता है कि आप और आप के साथ के लोग (कभी तो) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) एक तिहाई रात क़याम करते हैं, और अल्लाह तो रात और दिन का अंदाज़ा रखता है, उस ने मालूम कर लिया कि तुम उसाके निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की पस जितना आसानी से हो सके उतना कुरआन पढ़ लिया करो, उस ने जान लिया कि तुम में बाज़ बीमार हैं और बाज़ रोज़ी की तलाश में मुल्क में सफ़र करते हैं और बाज़ अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो, और नमाज़ की पाबंदी रखो, और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना देते रहो, और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेज दोगे तो उसके सिला में अल्लाह के हां बेहतर और बड़ा बदला पाओगे, और अल्लाह से बख़्शिश मांगते रहो (और) अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है﴾20﴿

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह मुज़्ज़म्मिल का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह क़ियामह मक्की है और इस में 40 आयतें और 2 रुकूअ हैं। नाज़िल होने के एतिबार से 31 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 75 नम्बर पर है और सूरह क़ारिआ के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह क़ियामह

(٧٥) سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ﴿۱﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿۲﴾
اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ؕ﴿۳﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ
عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿۴﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ
اَمَامَهٗ ۚ﴿۵﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا بَرِقَ
الْبَصَرُ ۙ﴿۷﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ﴿۸﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ﴿۹﴾
يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿۱۱﴾ اِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ٍۨ الْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿۱۲﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ
بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿۱۳﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿۱۴﴾

तर्जुमा : मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की﴾1﴿ और क़सम खाता हूं मलामत करने वाले नफ़्स की﴾2﴿ क्या इन्सान समझता है कि हम उसकी हड्डियां हरगिज़ जमा नहीं कर पाएंगे﴾3﴿ क्यों नहीं! जब कि हमें इस पर भी कुदरत है कि उसकी उंगलियों के पोर पोर को ठीक बना दें﴾4﴿ बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आइन्दा भी फ़िस्क़ व फ़ुजूर के काम करे﴾5﴿ वह पूछता है कि क़ियामत का दिन कब है﴾6﴿ फिर जब आँखें फटी की फटी रह जाएंगी﴾7﴿ और चाँद बेनूर हो जाएगा﴾8﴿ और जमा कर दिए जाएंगे सूरज और चाँद﴾9﴿ इन्सान उस दिन कहेगा कि किधर भागूं﴾10﴿ हरगिज़ नहीं (वहां) कोई पनाह गाह नहीं﴾11﴿ उस दिन आप के रब के सामने जा ठहरना होगा﴾12﴿ उस दिन इन्सान को बता दिया जाएगा जो उस ने आगे भेजा और पीछे छोड़ा﴾13﴿ बल्कि इन्सान ख़ुद अपने नफ़्स पर ख़ूब शाहिद है﴾14﴿

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ
بِهٖ ؕ ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۚۖ ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ
قُرْاٰنَهٗ ۚ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ؕ ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ ۙ ﴿۲۰﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ ﴿۲۲﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ ﴿۲۳﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ۙ ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ
اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ ﴿۲۵﴾ كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ ﴿۲۶﴾
وَقِيْلَ مَنْ ۫ رَاقٍ ۙ ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ ﴿۲۸﴾ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۣالْمَسَاقُ ؕ ﴿۳۰﴾ ع
فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ ﴿۳۱﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ ﴿۳۲﴾
ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ؕ ﴿۳۳﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۙ ﴿۳۴﴾
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ؕ ﴿۳۵﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ
يُّتْرَكَ سُدًى ؕ ﴿۳۶﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ ﴿۳۷﴾
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۙ ﴿۳۸﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ؕ ﴿۳۹﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى
اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ﴿۴۰﴾ ع

अगरचे वह अपनी (कितनी ही) माज़रतें पेश करे﴾15﴿ ऐ नबी! आप इस (कुरआन) को याद करने के लिए अपनी ज़बान को हरकत न दें﴾16﴿ यक़ीनन इस का जमा करना और (आप से) इसका पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है﴾17﴿ फिर पब हम उसे पढ़वा चुकें तो आप उसके पढ़ने का इत्तिबा करें﴾18﴿ फिर यक़ीनन उसकी वज़ाहत हमारे ज़िम्मे है﴾19﴿ हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम दुनिया को पसंद करते हो﴾20﴿ और तुम आख़िरत को छोड़ देते हो﴾21﴿ उस दिन कई चेहरे तरो ताज़ा होंगे﴾22﴿ अपने रब की तरफ़ देखते होंगे﴾23﴿ और उस दिन कई चेहरे उदास होंगे﴾24﴿ वह समझेंगे कि उन से कमर तोड़ मुआमला किया जाएगा﴾25﴿ हरगिज़ नहीं! जब जान हलक़ तक आ पहुंचेगी﴾26﴿ और कहा जाएगा कौन है झाड़ फूंक करने वाला﴾27﴿ और वह समझेगा कि यह जुदाई का वक़्त है﴾28﴿ और पिंडली पिंडली से लिपट जाएगी﴾29﴿ उस दिन आप के रब की तरफ़ चलना होगा﴾30﴿ न तो उस ने तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी﴾31﴿ बल्कि उस ने (हक़ को) झुठलाया और मुंह मोड़ा﴾32﴿ फिर गया अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ﴾33﴿ तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है﴾34﴿ फिर तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है﴾35﴿ क्या इन्सान समझता है कि उसे यूं ही बेकार (बिला हिसाब व किताब) छोड़ दिया जाएगा﴾36﴿ क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा नहीं था जो (रिहम में) टपकाया जाता है﴾37﴿ फिर जमा हुआ ख़ून था, फिर अल्लाह ने (उसे) बनाया फिर दुरुस्त किया﴾38﴿ फिर उस से नर और मादा का जोड़ा बनाया﴾39﴿ क्या वह (अल्लाह) इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे﴾40﴿

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह क़ियामह का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह दहर

सूरह दहर मक्की है और इस में 31 आयतें और 2 रुकूअ हैं। नाज़िल होने के एतिबार से 98 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 76 नम्बर पर है और सूरह रहमान के बाद नाज़िल हुई है।

آياتها ٣١ — (٧٦) سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ (٩٨) — ركوعاتها ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾
اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖۗ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ
سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾
اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ
يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا
عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ
يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ
مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ
مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا
عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ
نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا
زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

तर्जुमा : यक़ीनन गुज़रा है इन्सान पर एक वक़्त ज़माने में जब कि यह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था(1) बेशक हमने इन्सान को मिले जुले नुत्फ़े से इम्तिहान के लिए पैदा किया और उसको सुनता देखता बनाया(2) हम ने उसे राह दिखाई अब चाहे वह शुक्र गुज़ार बने या चाहे नाशुक्रा(3) यक़ीनन हम ने काफ़िरों के लिए जंजीरें और तौक़ और शोलों वाली आग तैयार कर रखी है(4) बेशक नेक लोग ऐसे जाम से पिएंगे जिस में काफ़ूर मिला हुआ होगा(5) जो एक चश्मा है जिस से अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे (जिधर चाहें)(6) जो नज़्र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बड़ाई चारों तरफ़ फैल जाने वाली है(7) और अल्लाह की मोहब्बत में खाना खिलाते हैं मिसकीन और यतीम और क़ैदी को(8) हम तो तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए खिलाते हैं न तुम से बदला चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते है(9) बेशक हम अपने परवरदिगार से उस दिन का ख़ौफ़ करते हैं जो उदासी और सख़्ती वाला होगा(10) पस उन्हें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी पहुंचाई(11) और उन्हें उनके सब्र के बदले जन्नत और रेशमी लिबास अता फ़रमाए(12) वह वहां तख़्तों पर तकिए लगाए हुए बैठेंगे न वहां सूरज की गर्मी देखेंगे और न जाड़े की सख़्ती(13) उन जन्नतियों के साए उन पर झुके हुए होंगे और उनके (मेवे और) गुच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे(14)

وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ﴿١٥﴾
قَوَارِيرَا مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا
كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿١٨﴾
وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ
لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾
عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ
مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هَٰذَا كَانَ
لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا
أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ
فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَّحْنُ خَلَقْنَاهُمْ
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾
إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾

और उन पर चाँदी के बरतों और उन जामों को दौर कराया जाएगा जो शीशे के होंगे(15) शीशे भी चाँदी के जिन को (साक़ी ने) अंदाज़े से नाप रखा होगा(16) और उन्हें वहां वह जाम पिलाए जाएंगे जिन में अदरक मिली हुई होगी(17) जन्नत की एक नहर से जिस का नाम सलसबील है(18) और उन पर लड़के चक्कर लगाएंगे जो लड़के ही रहेंगे, जब आप उन को देखोगे तो आप उन्हें बिखरे मोती गुमान करोगे(19) और तुम वहां जहां कहीं भी नज़र डालोगे तो सरासर नेमतें और अज़ीमुश्शान सलतनत ही देखोगे(20) उन के जिस्मों पर सब्ज़ बारीक और मोटे रेशमी कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंगनों का ज़ेवर पहनाया जाएगा और उन्हें उन का रब पाक साफ़ शराब पिलाएगा(21) (कहा जाएगा कि) यह है तुम्हारे आमाल का बदला और तम्हारी कोशिश की क़दर की गई(22) (ऐ नबी!) हम ने ही आप पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया है(23) पस आप अपने रब के हुक्म पर क़ायम रहिए और उन में से किसी गुनहगार या नाशुक्रे का कहा न मानें(24) और अपने रब के नाम का सुबह व शाम ज़िक्र किया करें(25) और रात के कुछ वक़्त उस के सामने सजदे करें और बहुत रात तक उसकी तस्बीह किया करें(26) बेशक यह लोग जल्दी मिलने वाली (दुनिया) को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं(27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उनके जोड़ा और बंधन मज़बूत किए और हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे औरों को बदल लाएं(28) यक़ीनन ये तो एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की राह ले ले(29) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह ही चाहे, बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है(30)

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले, और ज़ालिमों के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (31)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह दहर का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह नबा

सूरह नबा मक्की है इस में 40 आयतें और 2 रुकूअ हैं। नाज़िल होने के एतिबार से 80 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 78 नम्बर पर है और सूरह मआरिज के बाद नाज़िल हुई है।

(٧٨) سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ (٨٠)
اٰيَاتُهَا ٤٠ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ ﴿٢﴾ الَّذِيْ هُمْ
فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ۗ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾
اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ ﴿٦﴾ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۙ ﴿٧﴾ وَّخَلَقْنٰكُمْ
اَزْوَاجًا ۙ ﴿٨﴾ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ ﴿٩﴾ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ ﴿١٠﴾
وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۚ ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ ﴿١٢﴾
وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۙ ﴿١٣﴾ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً
ثَجَّاجًا ۙ ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ ﴿١٥﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۗ ﴿١٦﴾
اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ ﴿١٧﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ
فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ ﴿١٨﴾ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ ﴿١٩﴾
وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۗ ﴿٢٠﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ
مِرْصَادًا ۙ ﴿٢١﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۙ ﴿٢٢﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۚ ﴿٢٣﴾
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۙ ﴿٢٤﴾ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۙ ﴿٢٥﴾
جَزَآءً وِّفَاقًا ۗ ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ۙ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : किस बात की पूछताछ और सवाल कर रहे हैं(1) उस बड़ी ज़बदरस्त ख़बर के बारे में(2) जिस के बारे में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं(3) ख़बरदार उन्हें जल्द पता लग जाएगा(4) दोबारा ख़बरदार! उन्हें जल्द पता लग जाएगा(5) क्या हम ने ज़मीन को एक बिछौना नहीं बनाया(6) और (ज़मीन में) हम ने पहाड़ों के लंगर डाल दिए(7) और हम ने तुम को जोड़े जोड़े बनाया(8) और हम ने तुम्हारे लिए नींद को आराम का सबब बनाया(9) और हम ने रात को लिबास बनाया(10) और तुम्हारे लिए दिन को रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया(11) और हम ने तुम पर सात मज़बूत आसमान बना दिए(12) और तुम्हारे लिए हम ने भरपूर रौशनी वाला चराग़ बना दिया(13) और हम ने ही भरे हुए बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया(14) ताकि उस से ग़ल्ला और दूसरी सब्ज़ियां भी उगाएं(15) और घने बाग़ात भी(16) बेशक फ़ैसले के दिन का वक़्त तय हो चुका है(17) यह वह दिन होगा कि सूर में फूंक मारी जाएगी और तुम फ़ौज की फ़ौज निकल आओगे(18) और आसमान खोल दिया जाएगा तो उसके दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे(19) और चलाए जाएंगे पहाड़ तो वह हो जाएंगे चमकती रेत(20) बेशक दोज़ख़ ताक में है(21) शर फैलाने वालों का वही ठिकाना है(22) जहन्नम में यह लोग बेमुद्दत पड़े ही रहेंगे(23) उनको ठंडी चीज़ का ज़ाएक़ा और प्यास बुझाने को कोई चीज़ कभी नहीं मिलेगी(24) हां मगर गर्म पानी और बहती पीप (जितनी चाहें पी लें)(25) उनको यह बदला पूरा पूरा मिलेगा(26) उन को अपने हिसाब की उम्मीद नहीं थी(27)

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ۙ
فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ؑ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ۙ
حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ۙ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ۙ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ؕ
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ۚ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً
حِسَابًا ﴿٣٦﴾ۙ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ۚ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
صَفًّا ۙۗ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾
ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ
اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ
وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ؑ

और हमारी आयात को झूठ साबित करने में बड़ा ज़ोर लगाते थे (28) और हम ने हर चीज़ को घेर कर शुमार करके किताब में लिख दिया था (29) बस अब चखते रहो हम इस अज़ाब को बढ़ाते ही रहेंगे (30) बेशक परहेज़गार ही कामयाब होंगे (31) घने फलदार दरख़्त और अंगूर (32) और नौजवान हम उम्र औरतें (33) और लबालब भरे जाम हैं (34) वहां ख़िलाफ़े अदब और झूठी बात कभी नहीं सुनेंगे (35) आप के रब की तरफ़ से पूरे हिसाब से जज़ा अता की जाएगी (36) आसमानों और ज़मीन का और उन के दरमियान की सब चीज़ों का वही रब है, रहमान आली शान ऐसा कि किसी को उस से बात करने की जुरअत नहीं हो सकती (37) जिस दिन जिबरईल और तमाम फ़रिश्ते सफ़ बांधे खड़े होंगे कोई बोल न सकेगा मगर जिस को रहमान एजाज़त अता फ़रमाए और वह बात भी ठीक कहे (38) उस दिन का आना सच है, अब जो चाहे अपने रब के यहां अपना ठिकाना बना ले (39) बेशक हम ने तुम को क़रीब आने वाले अज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था और काफ़िर कहेगा कि हाय मेरी कमबख़्ती! काश मैं मिट्टी हो गया होता (40)

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह नबा का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है।
अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन।
अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

सूरह अ़ाला मक्कतुल मुकर्रमा में नाज़िल हुई और इस में 19 आयतें हैं और 1 रुकूअ है। नाज़िल होने के एतिबार से 8 नम्बर पर है लेकिन तिलावत के एतिबार से 87 नम्बर पर है और सूरह तकवीर के बाद नाज़िल हुई है।

सूरह अ़ाला

آیاتها ١٩ (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ (٨) رکوعاتها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ ① الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ ② وَالَّذِىْ قَدَّرَ
فَهَدٰى ۙ ③ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ ④ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ؕ ⑤
سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ ⑥ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا
يَخْفٰى ؕ ⑦ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ ۖ ⑧ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ ⑨ سَيَذَّكَّرُ
مَنْ يَّخْشٰى ۙ ⑩ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ ⑪ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ⑫
ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ؕ ⑬ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ ⑭ وَذَكَرَ اسْمَ
رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ ⑮ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ ⑯ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ
اَبْقٰى ؕ ⑰ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ ⑱ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ⑲ ع ١٩/١٢

तर्जुमा : अपने रब के नाम की पाकी बयान करते रहिए जो बहुत आली शान है﴾1﴿ जिस ने बनाया फिर दुरुस्त किया﴾2﴿ और जिस ने तजवीज़ किया फिर राह बता दी﴾3﴿ और जिस ने (ज़मीन से) चारा उगाया﴾4﴿ फिर उसको सियाह (रंग का) कूड़ा कर दिया﴾5﴿ हम आप को पढ़ा देंगे फिर आप न भूलेंगे﴾6﴿ मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है हर खुले और छुपे को﴾7﴿ और हम आप के लिए आसानी का सामान कर देंगे﴾8﴿ तो आप नसीहत करते रहिए अगर नसीहत करना मुफ़ीद हो﴾9﴿ जल्द ही नसीहत मानेगा जो अल्लाह से डरता है﴾10﴿ और जो बदनसीब होगा वह उस से मुंह मोड़ता रहेगा﴾11﴿ जो बड़ी आग में दाख़िल होगा﴾12﴿ फिर वह उस में न तो मरेगा और न ही जिएगा﴾13﴿ बा मुराद हुआ वह शख़्स जो पाक हुआ﴾14﴿ और वह अपने रब का नाम लेता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा﴾15﴿ (ऐ मुन्किरो!) तुम तो दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो﴾16﴿ हालांकि आख़िरत कहीं बेहतर और पायदार है﴾17﴿ यही बात पहले सहीफ़ों में लिखी गई है﴾18﴿ (यानी) इब्राहीम और मूसा (अलैहिमस्सलाम) के सहीफ़ों में﴾19﴿

अल्हम्दु लिल्लाह सूरह आला का तर्जुमा देहली मरकज़ में पूरा हुआ है। अल्लाह अपने फ़ज़ल व करम से कुबूल फ़रमाए। अमीन। अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

फ़ज़ाइले सूरह आलाः हुज़ूर ﷺ इस सूरत को पसंद फ़रमाते थे।
(कन्ज़ुल उम्मालः 2/310 अन अलीः दुर्रे मन्सूरः 8/480)

इस सूरत की फ़ज़ीलत सूरह हदीद में भी गुज़र चुकी है।

بسم الله الرحمن الرحيم

चार अज़ीम फ़ायदे

بِسْــــمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया कि जो शख़्स रोज़ाना 100 मर्तबाः

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

पढ़े (तो यह कलिमात) उसके लिए फ़क़्र व फ़ाक़ा से हिफ़ाज़त का ज़रिया और क़ब्र की वहशत व तनहाई में उन्सियत का ज़रिया होंगे और इन कलिमात (की बरकत) से पढ़ने वाला ग़िना (ज़ाहिरी और बातिनी) हासिल कर लेगा और (क़यामत के दिन) इन कलिमात की बरकत से वह जन्नत के दरवाज़े पर दस्तक देगा।

तश्रीहः इस हदीस से मालूम हुआ कि **"ला इलाहा इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन"** रोज़ाना 100 बार पढ़ने वाले को चार बड़े बड़े फ़ायदे हासिल होंगे। उन में से हर फ़ायदा ऐसा है जिस का हर शख़्स मोहताज है, लिहाज़ा हर शख़्स को हर रोज़ उसकी एक तस्बीह पढ़ लेनी चाहिए, वह फ़वायद यह हैः

(1) फ़क़्रो फ़ाक़ा, मआशी तंगी दूर होना।

(2) क़ब्र की वहशत दूर हो कर राहत व उन्सियत हासिल होना।

(3) ग़िना (ज़ाहिरी व बातिनी) नसीब होना।

(4) जन्नत के दरवाज़े पर दस्तक देने और जन्नत में दाख़िल होने की सआदत मिलना। (अबू नईम फ़िल हुलियाः बिखरे मोतीः जिल्द-9)

दुआए क़ुनूते नाज़िला

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِىْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ
وَتَوَلَّنِىْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِىْ فِيْمَآ اَعْطَيْتَ وَقِنِىْ
شَرَّمَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِىْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ اِنَّهٗ
لَايَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَايَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا
وَتَعَالَيْتَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ
بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى
عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ، اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ
يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَيُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ
اَوْلِيَآءَكَ۔ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ
وَشَتِّتْ شَمْلَهُمْ وَفَرِّقْ جَمْعَهُمْ وَخَرِّبْ بُيُوْتَهُمْ
وَدَمِّرْ دِيَارَهُمْ وَكَسِّرْ اَعْمَارَهُمْ وَقَرِّبْ اٰجَالَهُمْ وَاَنْزِلْ

بِهِمْ بَأْسَكَ الَّذِیْ لَاتَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ، اَللّٰهُمَّ لَاتُسَلِّطْ عَلَیْنَا مَنْ لَّمْ یَرْحَمْنَآ، اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ انْصُرِ الْاِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ انْصُرْ عَسَاكِرَ الْمُسْلِمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ انْصُرْ جَمَاعَةَ الْمُوَحِّدِیْنَ وَاخْذُلِ الْكُفَّارَ وَالْمُشْرِكِیْنَ وَاَهْلِكِ الْكُفَّارَ وَالْمُشْرِكِیْنَ، وَصَلِّ عَلَی النَّبِیِّ.

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! हम को भी हिदायत अता फ़रमा उन लोगों की तरह जिन को तूने हिदायत अता फ़रमाई और आफ़ियत नसीब फ़रमा उन की तरह जिन को तूने आफ़ियत दी और हमारा वली बन जा उनकी तरह जिन का तू वली बना और बरकत अता फ़रमा उन चीज़ों में जो तूने मुझे अता कीं और बचा मुझ को तेरे फ़ैसला किए हुए शर से, क्योंकि तू फ़ैसला करता है और तेरे ऊपर फ़ैसला नहीं किया जा सकता। बेशक वह ज़लील नहीं होता जिस का तू वली हो और वह इज़्ज़त नहीं पाता जिस से तू दुश्मनी करे, ऐ हमारे रब! तू पाक है और बुलन्द है। और हम इस्तिग़फ़ार करते हैं और तुझ से तौबा करते हैं, ऐ अल्लाह! हमारी और मोमिन मर्दों और औरतों की और मुसलमान मर्दों और औरतों की मग़फ़िरत फ़रमा, और उनके क़ुलूब आपस में जोड़ दे और उन के आपस के तअल्लुक़ात व

मुआमलात को दुरुस्त फ़रमा और उन की मदद फ़रमा तेरे अपने दुश्मनों पर और उनके दुश्मनों पर उनकी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! उन नाफ़रमानों को ग़ारत फ़रमा जो तेरे रास्ता से रोकते हैं और तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरे दोस्तों से क़त्ल-ओ-क़िताल करते हैं। ऐ अल्लाह! उन के आपस के इत्तिहाद में फूट डाल दे। और उनके क़दमों को उखाड़ दे और उन की इजतिमाइयत को टुकड़े टुकड़े कर दे और आपस में इख़्तिलाफ़ डाल दे और उन के घरों को वीरान कर दे और उन की आबादियों को तहस नहस कर दे और उनकी जड़ों को काट दे और उनकी कमर तोड़ दे और उन की मौत को क़रीब कर दे। और उन पर ऐसा अज़ाब नाज़िल फ़रमा जो तू मुजरिमों पर से नहीं हटाता। ऐ अल्लाह! हम आप को उन के मुक़ाबले में ढाल बनाते हैं और उन के शर से आप की पनाह चाहते हैं। ऐ अल्लाह! हम पर ऐसे को मुसल्लत न फ़रमा जो हम पर रहम न करता हो। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को इज़्ज़त अता फ़रमा, ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों की मदद फ़रमा, ऐ अल्लाह! मुसलमानों के लश्करों की मदद फ़रमा, ऐ अल्लाह! तौहीद परस्तों की जमात की मदद फ़रमा, और नाफ़रमानों और मुशरिकों को ज़लील व पस्त फ़रमा, और उनको नेस्त व नाबूद फ़रमा, ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फ़रमा नबी ﷺ पर।

नोटः तमाम मुसलमानों से दरख़्वास्त है कि सख़्त मुसीबत के वक़्त फ़जर की फ़र्ज़ नमाज़ की आख़िरी रकात के रुकूअ के बाद इस दुआ को पढ़ें और नमाज़ के अलावा भी इस का विर्द करते रहें। अल्लाह तआला फ़तह व नुसरत अता फ़रमाएगा।

दरूद शरीफ़ "तुन्जीना"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

صَلٰوةً تُنْجِيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ

لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا جَمِيْعَ السَّيِّئٰاتِ

وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى

الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاتِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ

اِنَّكَ مُجِيْبُ الدَّعْوَاتِ وَرَافِعُ الدَّرَجَاتِ يَاقَاضِىَ

الْحَاجَاتِ وَيَاكَافِىَ الْمُهِمَّاتِ وَيَادَافِعَ الْبَلِيَّاتِ وَيَاحَلَّ

الْمُشْكِلَاتِ اَغِثْنِىْ اَغِثْنِىْ اَغِثْنِىْ يَآ اِلٰهِىْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ

شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर दरूद नाज़िल फ़रमा जो हमें तमाम डर, ख़ौफ़ और आफ़ात से निजात दिलाने वाला हो और जिस की बरकत से हमारी तमाम हाजतें पूरी हो जाएं और जिस की बदौलत हम तमाम गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाएं और जिस के वसीले से हमें तेरी

बारगाह में आला दरजात मिलें और जिस के ज़रिए से हम ज़िन्दगी में तमाम नेकियों और मरने के बाद की तमाम अच्छाइयों से मुकम्मल तौर पर फ़ायदा हासिल करें, यक़ीनन तू ही हक़ीक़त में हमारी दुआओं को क़ुबूल करने वाला है और हमारे दरजात को बुलन्द करने वाला है, और ऐ हमारी ज़रूरतों को पूरा करने वाले, और ऐ हमारे अहम कामों को पूरा करने वाले और ऐ हमारी बलाओं को दफ़ा करने वाले और ऐ हमारी मुश्किलात को हल करने वाले! या इलाही! मेरी फ़रियाद को सुन ले, मेरी फ़रियाद को सुन ले, मेरी फ़रियाद को सुन ले, यक़ीनन तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है।

चहले रब्बना मअ चहले दुरूद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَعَلٰی اٰلِہٖ
وَبَارِكْ وَسَلِّمْ.

﴿۱﴾ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ○
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ، اِنَّكَ
حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ . اَللّٰھُمَّ بَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ
سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ
اِبْرَاھِیْمَ، اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ .

तर्जुमाः (1) ऐ हमारे परवरदिगार! तू हम से क़ुबूल फ़रमा तू ही सुनने जानने वाला है। ऐ अल्लाह! दरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आले सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर जैसा कि तूने दुरूद नाज़िल फ़रमाया सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) और आले सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) पर, बेशक तू तमाम ख़ूबियों का मालिक बड़ा बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आले सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) और आले सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) पर,

बेशक तू तमाम ख़ूबियों का मालिक बड़ा बुज़ुर्ग है।

﴿٢﴾ رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً
مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ
النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ
بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

(2) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को अपना फ़रमां बरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फ़रमां बरदार उम्मत उठा, और हम को हमारे इबादत के तरीक़े बता, और हम को मुआफ़ फ़रमा, तू ही मुआफ़ करने वाला रहम करने वाला है। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आप की अज़वाजे मुतह्हरात जो सारे मुसलमानों की माएं हैं। और आप की ज़ुर्रियात और आप के अहले बैत पर जैसा कि तूने दुरूद नाज़िल फ़रमाया सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) पर, बेशक तू तमाम ख़ूबियों का मालिक, बड़ा बुज़ुर्ग है।

﴿٣﴾ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ
قِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْحِلِّ وَالْحَرَامِ وَرَبَّ
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ
وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ لِرُوْحِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدٍ مِّنَّا السَّلَامَ.

(3) तर्जुमाः ऐ हमारे (प्यारे) रब! हम को दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हम को आग से बचा। ऐ अल्लाह! ऐ हलाल व हराम के रब! ऐ मशअरे हराम के रब! ऐ मुहतरम घर के रब! ऐ रुक्ने यमानी और मक़ामे इब्राहीम के रब! हमारी तरफ़ से सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मद (सल्ल0) की रूह पर सलाम पहुंचा दीजिए।

﴿۴﴾ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ.

(4) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम पर सब्र डाल दे और हमारे क़दमों को जमा दे और उन काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाइए नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आप की आल व औलाद पर और आप के सहाबा पर।

﴿۵﴾ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَنْزِلَ الْمُقَرَّبَ مِنْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

(5)तर्जुमाः ऐ हमारे परवरदिगार! हमें न पकडें अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएं। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और उन्हें अपना मक़ामे कुर्ब अता फ़रमाइए क़यामत के दिन।

﴿٦﴾ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى
الْاَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِى الْاَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ فِى الْقُبُوْرِ ۔

(6) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डालिए जिस तरह आप ने डाला था हम से अगले लोगों पर। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमाइए रूहों में ख़ास तौर पर सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की पाकीज़ा रूह पर और जिस्मों में सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) के जिस्मे मुबारक पर और क़बरों में सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की क़ब्रे अतहर पर।

﴿٧﴾ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَ
اغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَفِى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى
اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۔

(7)तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम से वह न उठवाइए जिस की ताक़त हम को नहीं है और दरगुज़र फ़रमाइए हम से और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं, पस इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा क़यामत तक सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर अव्वलीन व आख़िरीन में और फ़रिश्तों में।

﴿٨﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ
لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَاءً
وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْمَقَامَ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ .

(8) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को फेरिए जब कि आप हम को हिदायत दे चुके, और हम को अपने पास से रहमत दीजिए, बेशक आप ही सब कुछ देने वाले हैं। ऐ अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आले सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर ऐसा दुरूद नाज़िल फ़रमा जो तेरी रज़ा का ज़रिया हो और जिस से आप (सल्ल0) के हक़ की अदाएगी हो और आप (सल्ल0) को वसीला और मक़ामे महमूद अता फ़रमा जिस को तूने आप (सल्ल0) को वादा किया है।

﴿٩﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ.

(9) तर्जुमाः ऐ हमारे परवरदिगार! आप जमा करने वाले हैं लोगों को एक दिन जिस में कोई शुबा नहीं, बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करते। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा तेरे बरगुज़ीदा बंदे और तेरे रसूल सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन

औरतों पर और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर।

﴿١٠﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ.

(10) तर्जुमाः ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आए, पस आप हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिए और हमें आग के अज़ाब से बचाइए। ऐ अल्लाह! दुरूद सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आप की आल व औलाद पर।

﴿١١﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ.

(11) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए उस पर जो आप ने उतारा और हमने रसूल की पैरवी की, पस आप हमें लिख दें गवाही देने वालों में है। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा तेरे बरगुज़ीदा बंदे और तेरे नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर।

﴿١٢﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ.

(12) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारे

काम में हम से जो ज़्यादती हुई उसको मुआफ़ फ़रमा दीजिए और हमें साबित क़दम रखिए और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमाइए। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आले सय्यिदिना मु हम्मद (सल्ल0) पर और आप (सल्ल0) के घर वालों पर।

﴿١٣﴾ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاٰخِرِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى النَّبِيّٖنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمُرْسَلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

(13) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! आप ने यह सब बिला वजह नहीं बनाया, आप पाक हैं, पस हम को आग के अज़ाब से बचा लीजिए। ऐ अल्लाह! क़यामत तक दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर अगलों में सब से पहले और दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर पिछलों में सब पहले और दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर नबियों में सब से पहले और दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर रसू लों में सब से पहले और दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर फ़रिश्तों में सब से पहले।

﴿١٤﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيّٰتِهٖ وَسَلِّمْ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَاءَ نَفْسِكَ وَزِنَةَ عَرْشِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ.

(14) तर्जुमाः ऐ हमारे परवरदिगार! आप ने जिस को आग में डाला उसको आप ने वाक़ई रुसवा कर दिया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर जो तेरे बरगुज़ीदा बंदे और तेरे नबी और तेरे रसूल नबीए उम्मी हैं और आप (सल्ल0) की आल व औलाद पर और आप (सल्ल0) की अज़वाज़े मुत्तहरात पर और आप (सल्ल0) की ज़ुर्रियात पर, आप की मख़्लूक़ात की तादाद के बराबर और आप की रज़ामन्दी के बक़द्र और आप के अर्श के वज़न के बराबर और आप के कलिमात लिखे जाएं इतनी रोशनाई के बक़दर।

﴿١٥﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَ بِالصَّلٰوةِ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ اَنْ يُّصَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تَنْبَغِي الصَّلٰوةُ عَلَيْهِ.

(15) तर्जुमाः ऐ हमारे (प्यारे) रब! हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ बुला रहा था कि अपने रब पर ईमान ले आओ, पस हम ईमान ले आए। ऐ अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर दुरूद भेजने वालों की तादाद के बराबर दुरूद नाज़िल फ़रमा और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर दुरूद न भेजने वालों की तादाद के बराबर दुरूद नाज़िल फ़रमा और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर ऐसा दुरूद नाज़िल फ़रमा जैसा कि तूने दुरूद भेजने का हुक्म फ़रमाया है और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर ऐसा दुरूद नाज़िल फ़रमा जैसा दुरूद तू उन पर नाज़िल किया जाना पसंद करता है, और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर उनकी शान के मुनासिब दुरूद नाज़िल फ़रमा।

﴿١٦﴾ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ عَدَدَ مَاعَلِمْتَ وَزِنَةَ مَاعَلِمْتَ وَمِلْاَ مَا عَلِمْتَ.

(16) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर दीजिए और हमारा ख़ातिमा नेक लोगों के साथ फ़रमाइए। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आप की आल व औलाद पर और आप के सहाबा पर तेरी मालूमात की तादाद के बराबर और तेरी मालूमात के वज़न के बराबर और तेरी मालूमात से पुर।

﴿١٧﴾ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ﹰالنُّوْرَ الذَّاتِیِّ
وَالسِّرِّالسَّارِیِّ فِیْ سَآئِرِالْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ.

(17) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! आप ने जो वादे अपने रसूलों के ज़रिए हम से किए हैं उनको हमारे साथ पूरा फ़रमाइए और क़यामत के दिन हमें रुसवाई में न डलिए, बेशक आप अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाले नहीं हैं। ऐ अल्लाह! दु रूद व सलाम और बरकात नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर कि जिन पर अल्लाह तआला के ज़ाती नूर की तजल्ली हुई और जिन पर अल्लाह तआला के असमा व सिफ़ात के राज़ खोले गए।

﴿١٨﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰدَمَ وَ نُوْحٍ
وَّاِبْرَاهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَا بَيْنَهُمْ مِّنَ النَّبِيِّيْنَ
وَالْمُرْسَلِيْنَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ.

(18) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस आप हम को गवाही देने वालों में लिख दीजिए। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना आदम (अलै0) पर और सय्यिदिना नूह (अलै0) पर और सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) पर और सय्यिदिना मूसा (अलै0) पर और सय्यिदिना ईसा (अलै0) पर और उन हज़रात के दरमियान जितने अंबिया आए उन तमाम पर अल्लाह

तआला का दुरूद व सलाम नाज़िल हो।

﴿١٩﴾ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَافِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلٰوةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ.

(19) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! आप आसमान से हम पर एक दस्तरख़्वान उतारिए जो हमारे लिए एक ईद बन जाए हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और आप की तरफ़ से एक निशानी हो और हमें अता करिए, आप ही बेहतरीन अता फ़रमाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर अपने इल्म में जितने दुरूद हैं उनके बराबर ऐसा दुरूद नाज़िल फ़रमा जो तेरी हुकूमत व सलतनत की तरह दाइमी हो।

﴿٢٠﴾ رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٜ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهٖ.

(20) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और अगर आप हम को मुआफ़ न करें और हम पर रहम न करें तो हम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाएंगे। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और

बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आप की आल व औलाद पर तेरे अपने कमालात के बक़द्र और ऐसा दुरूद व सलाम और बरकत जो तेरे कमाल के मुनासिब हो।

﴿۲۱﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ.

(21) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को शामिल न कीजिए इन ज़ालिम लोगों के साथ। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आप की आल व औलाद पर तेरे ही इनआमात और तेरे ही फ़ज़ल के बक़द्र।

﴿۲۲﴾ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ.

(22) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए, आप ही बेहतरीन फ़ैसला करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम और बरकत नाज़िल फ़रमा अपने आली क़द्र व आली मरतबत महबूब नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आप की आल व औलाद पर और आप के सहाबा पर।

﴿۲۳﴾ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ صَلٰوةً اَنْتَ لَهَا
اَهْلٌ وَّهُوَ لَهَا اَهْلٌ.

(23) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दीजिए और हम को इस्लाम पर वफ़ात दीजिए। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आप की आल व औलाद पर ऐसा दुरूद जैसा दुरूद नाज़िल करना तेरी शायाने शान है और ऐसा दुरूद जिस के वह यानी आप (सल्ल0) अहल हैं।

﴿۲۴﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ
لِلنَّجَاةِ وَسِيْلَةً وَّلِعُلُوِّ الدَّرَجَاتِ كَفِيْلَةً.

(24) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ित्ना न बनाइए। और अपनी रहमत से हम को काफ़िरों से निजात दीजिए। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर ऐसा दुरूद जो निजात का ज़रिया हो और दरजात की बुलंदी का कफ़ील हो।

﴿۲۵﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى
عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ

صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُفَرَّجُ بِهَا الْكُرَبُ وَتُحَلُّ بِهَا الْعُقَدُ.

(25) तर्जुमाः ऐ हमारे प्यारे रब! आप जानते हैं जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं और अल्लाह से कोई चीज़ छुपी नहीं है, न ज़मीन में और न आसमान में। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर ऐसा दुरूद जिस से परेशानियां दूर हो जाती हैं और मुश्किलात हल हो जाती हैं।

﴿٢٦﴾ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَآءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً.

(26) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! और मेरी दुआ कुबूल फ़रमाइए। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर ऐसा दुरूद जो आप की रज़ामन्दी का सबब हो और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) के हक़ की अदाएगी का ज़रिया हो।

﴿٢٧﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً دَآئِمَةً مَّقْبُوْلَةً تُؤَدِّيْ بِهَا عَنَّا

حَقَّهُ الْعَظِيْمَ.

(27) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को उस रोज़ जब कि हिसाब क़ायम होगा। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर ऐसा दाइमी और मक़बूल दुरूद जिस से आप (सल्ल0) का अज़ीम हक़ हम से अदा हो जाए।

﴿٢٨﴾ رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ.

(28) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को अपने पास से रहमत दीजिए और हमारे लिए हमारे मुआमले को दुरुस्त कर दीजिए। अल्लाह तआला नबीए उम्मी पर दुरूद नाज़िल फ़रमाते हैं।

﴿٢٩﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةَ الرِّضٰى وَارْضَ عَنْ اَصْحَابِهٖ رِضَآءَ الرِّضٰى.

(29) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को अंदेशा है कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करने लगे। ऐ अल्लाह! रज़ामन्दी वाला दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आप (सल्ल0) के सहाबा से कामिल व मुकम्मल राज़ी हो जा।

﴿٣٠﴾ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعلُوْمٍ لَّكَ.

(30) तर्जुमाः हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उसकी सूरत अता की फिर रहनुमाई फ़रमाई। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आले सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर हर घड़ी और हर सांस पर आप की मालूमात के बराबर।

﴿٣١﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَاهُ لَهٗ.

(31) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए पस आप हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए और आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर जैसा दुरूद आप चाहते हैं और जैसा दुरूद आप उन के लिए पसंद करते हैं।

﴿٣٢﴾ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ الْاَبْرَارِ وَزَيْنِ الْمُرْسَلِيْنَ الْاَخْيَارِ وَاَكْرَمِ مَنْ اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ.

(32) तर्जुमाः ऐ हमारे प्यारे रब! जहन्नम के अज़ाब को हम से दूर रखिए, बेशक उस का अज़ाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरी जगह है। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा नेकोकारों के सरदार पर और मुअज़्ज़ज़ रसूलों की ज़ीनत पर और जिन चीज़ों पर रात तारी होती है और सूरज तुलूअ होता है इन में सब से मुकर्रम ज़ात पर।

﴿٣٣﴾ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

(33) तर्जुमाः ऐ हमारे प्यारे रब! हम को हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अता फ़रमाइए और हम को परहेज़गारों का इमाम बनाइए। ऐ अल्लाह! सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) और आले सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर जैसा कि तूने सलाम नाज़िल फ़रमाया सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) पर और सय्यिदिना इब्राहीम (अलै0) की आल व औलाद पर, बेशक तू तमाम ख़ूबियों का मालिक बड़ा बुज़ुर्ग है।

﴿٣٤﴾ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَللّٰهُمَّ اَبْلِغْهُ مِنَّا السَّلَامَ كُلَّمَا ذُكِرَ السَّلَامُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔

(34) तर्जुमाः हमारा रब मुआफ़ करने वाला, क़द्र करने वाला है। ऐ

अल्लाह! सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) को सलाम पहुंचा दीजिए हमारी तरफ़ से जब भी सलाम का तज़किरा हो, नबी जी पर सलाम नाज़िल फ़रमा और अल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकतें नाज़िल हों।

﴿٣٥﴾ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ .

(35) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! आप की रहमत और आप का इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए हैं पस आप मुआफ़ फ़रमा दीजिए। उन लोगों को जो तौबा करें और आप के रास्ते की पैरवी करें और उनको जहन्नम के अज़ाब से बचाइए। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा आप के बंदे और आप के नबी और आप के रसूल नबीए उम्मी (सल्ल0) पर और आप (सल्ल0) की आल व औलाद पर और आप के सहाबा पर।

﴿٣٦﴾ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ وَ قِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَ مَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ عَلَيْهِ

وَاجْزِهٖ عَنَّا مَاهُوَا اَهْلُهٗ حَبِيْبُكَ.

(36) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! और आप उन को हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कीजिए जिन का आप ने उन से वादा किया है, और उन को भी जो सालेह हों उन के वालिदैन और उन की बीवियों और उन की औलाद में से, बेशक आप ज़बरदस्त हैं, हिकमत वाले हैं। और उन को बुराइयों से बचाइए और जिस को आप ने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर आप ने रहम किया और यही बड़ी कामयाबी है। ऐ अल्लाह! दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और आप अपने हबीब को हमारी तरफ़ से बेहतरीन बदला अता फ़रमाइए जिस के वह अहल हैं।

﴿٣٧﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ.

(37) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ हमारे रब! बेशक तू बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) की आल व औलाद पर।

﴿٣٨﴾ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ

الْمَصِيْرُ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ۣالصَّلٰوةَ
التَّآمَّةَ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ۣالْبَرْكَةَ التَّآمَّةَ وَسَلِّمْ
عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ۣالسَّلَامَ التَّآمَّ.

(38) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और हम तेरी तरफ़ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है। ऐ अल्लाह! कामिल व मुकम्मल दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और कामिल व मुकम्मल बरकत नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर और कामिल व मुकम्मल सलाम नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर।

﴿٣٩﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا
رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ مَاشَآءَ
اللّٰهُ لَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

(39) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को काफ़िरों के लिए फ़ित्ना न बना और ऐ हमारे रब! हम को बख़्श दे बेशक तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर क़यामत तक, फ़रिश्तों की जमात में, अल्लाह जो चाहता है वही होता है, नेकी करने की ताक़त अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर ही की तरफ़ से अता होती है।

﴿٤٠﴾ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ

شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ
وَرَسُوْلِكَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْٓ اٰمَنَ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَاَعْطِهٖ
اَفْضَلَ رَحْمَتِكَ وَاٰتِهٖ الشَّرَفَ عَلٰی خَلْقِكَ یَوْمَ
الْقِیَامَةِ وَاجْزِهٖ خَیْرَ الْجَزَآءِ وَالسَّلَامُ عَلَیْهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهٗ . سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ○ وَ
سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○

(40) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारी रौशनी को कामिल कर दीजिए और हमारी मग़फ़िरत फ़रमाइए, बेशक आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं। ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा तेरे बंदे और तेरे रसूल नबीए उम्मी सय्यिदिना मुहम्मद (सल्ल0) पर जो तुझ पर ईमा न लाए और तेरी किताब पर ईमान लाए और उन्हें तेरी बेहतरीन रहमत से नवाज़ दे और क़यामत के दिन तेरी मख़लूक़ पर शर्फ़ व एज़ाज़ से नवाज़ दे और उन्हें बेहतरीन बदला अता फ़रमा और सलाम हो उन पर और अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह की बरकतें हों। पाक है आप का रब, इज़्ज़त का मालिक, उन बातों से जो यह लोग बयान करते हैं। और सलाम हो पैग़म्बरों पर। और सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है सारे जहानों का।

चह्ले (40) इस्तिग़फ़ार

सुबह व शाम एक एक बार पढ़िए

﴿۱﴾ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَیْہِ.

(1) तर्जुमाः मैं अपने रवरदिगार अल्लाह से हर गुनाह से मआफ़ी मांगता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं।

﴿۲﴾ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ.

(2) तर्जुमाः मैं अज़मत वाले अल्लाह से मआफ़ी मांगता हूं कि उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं जो हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, पूरी कायनात संभालने वाला है और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं।

﴿۳﴾ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَآ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ.

(3) तर्जुमाः हमारे लिए हमारी रौशनी को कामिल कर दीजिए और हमारी मग़फ़िरत फ़रमाइए।

﴿۴﴾ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ.

(4) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए,

आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं।

(٥) رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ .

(5) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है पस आप मुझ को बख़्श दीजिए।

(٦) رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ اِنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ.

(6) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए, यक़ीनन अल्लाह आप सब से ज़्यादा इज़्ज़त देने वाले, सब से ज़्यादा सख़ी हैं।

(٧) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطَایَایَ وَذُنُوْبِیْ كُلَّهَا.

(7) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरी भूल चूक और तमाम गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिए।

(٨) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ.

(8) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दीजिए और मेरी तौबा कुबूल कर लीजिए। बेशक आप ही मुआफ़ करने वाले बड़े रहम वाले हैं।

(٩) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَ اهْدِنِیْ.

(9) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मुझ पर रहम फ़रमाइए। ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दीजिए और मुझे हिदायत अता फ़रमाइए।

﴿١٠﴾ رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ.

(10) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और अगर आप हम को मुआफ़ न करें और हम पर रहम न करें तो हम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।

﴿١١﴾ اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ.

(11) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप की मग़फ़िरत मेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा वसीअ है और आप की रहमत मुझे मेरे आमाल से ज़्यादा उम्मीद बख़्श है।

﴿١٢﴾ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

(12) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है और तमाम तारीफ़ तेरे लिए है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तुझ ही से मआफ़ी मांगता हूं और तेरी ही तरफ़ हर मुआमले में रुजूअ करता हूं।

﴿١٣﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِيْ صَغِيْرًا.

(13) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे और मेरे वालिदैन को बख़्श दीजिए और उन दोनों पर रहम फ़रमाइए, जैसा कि उन्होंने मेरे बचपन में मुझ पर रहम व करम का मुआमला किया।

﴿١٤﴾ رَبَّنَا اِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

(14) तर्जुमाः ऐ हमारे परवरदिगार! हम यक़ीनन ईमान ले आए, पस आप हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिए और हमें आग के अज़ाब से बचा लीजिए।

﴿١٥﴾ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ.

(15) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारे काम में हम से जो ज़्यादती हुई उसको मुआफ़ फ़रमा दीजिए और हमें साबित क़दम रखिए और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमाइए।

﴿١٦﴾ رَبَّنَا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْعَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ.

(16) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर दीजिए और हमारा ख़ातमा नेक लोगों के साथ फ़रमाइए।

﴿١٧﴾ رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ

الْحِسَابُ.

(17) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को उस रोज़ जब कि हिसाब क़ायम होगा।

﴿۱۸﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ.

(18) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए पस आप हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए और आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं।

﴿۱۹﴾ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ.

(19) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! आप की रहमत और आप का इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए है पस आप मुआफ़ फ़रमा दीजिए उन लोगों को जो तौबा करें और आप के रास्ते की पैरवी करें और उन को जहन्नम के अज़ाब से बचाइए।

﴿۲۰﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

(20) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमाइए। बेशक आप ही तौबा क़ुबूल करने वाले और बहुत ही ज़्यादा रहम करने वाले हैं।

﴿۲۱﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا

بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ
اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ.

(21) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ हमारे रब! बेशक तू बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है।

﴿۲۲﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا،
رَبَّنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ.

(22) तर्जुमाः ऐ हमारे रब! हम को काफ़िरों के लिए फ़ित्ना न बना और ऐ हमारे रब! हम को बख़्श दे, बेशक तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿۲۳﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا
وَّلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ.

(23) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइए और मेरे मां बाप की मग़फ़िरत फ़रमाइए और जो मेरे घर में ईमान ला कर दाख़िल हुआ ऐसे सब ईमान वाले मर्दों की और ईमान वाली औरतों की मग़फ़िरत फ़रमाइए।

﴿۲۴﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطِیْٓئَتِیْ وَ جَهْلِیْ وَ اِسْرَافِیْ فِیْٓ
اَمْرِیْ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ.

(24) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरी ग़लती मेरी जिहालत और मेरे मुआमले में

मेरी हद तजावुज़ी को मुआफ़ फ़रमाइए। और उन तमाम बातों को मुआफ़ फ़रमाइए जिसे मुझ से ज़्यादा आप जानते हैं।

﴿٢٥﴾ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ عَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَ مُنْجِيَاتِ اَمْرِكَ وَ السَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّ الْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّ الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَ النَّجَاةَ مِنَ النَّارِ.

(25) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी कामिल मग़फ़िरत और निजात दिलाने वाली चीज़ों का तुझ से सवाल करता हूं और हर गुनाह से सलामती और हर नेकी की रग़बत और जन्नत की कामयाबी और दोज़ख़ से निजात का सवाल करता हूं।

﴿٢٦﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ خَطَئِيْ وَ عَمَدِيْ.

(26) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जान बूझ कर किए हुए और अंजाने में किए हुए मेरे तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमाइए।

﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اهْدِنِيْ السَّبِيْلَ الْاَقْوَمَ.

(27) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मग़फ़िरत फ़रमाइए और रहम फ़रमाइए और सीधे रास्ते की रहनुमाई फ़रमाइए।

﴿٢٨﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَ ارْحَمْنِيْ وَ عَافِنِيْ وَ ارْزُقْنِيْ وَ اهْدِنِيْ.

(28) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमाइए और मुझे आफ़ियत बख़्शइए और मुझे रोज़ी अता फ़रमाइए और मेरी रहनुमाई

फ़रमाइए।

﴿٢٩﴾ رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِيْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِيْ وَاَجِبْ دَعْوَتِيْ.

(29) तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मेरी तौबा कुबूल फ़रमा, मेरी हक़ तलफ़ियों को धो दे और मेरी दुआ को क़ुबूल फ़रमा।

﴿٣٠﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّا وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَاَصْلِحْ لَنَا شَاْنَنَا كُلَّهٗ.

(30) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा और हम से राज़ी हो जा और हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमा और दोज़ख़ से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा और हमारे तमाम हालात को दुरुस्त फ़रमा।

﴿٣١﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَ اَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.

(31) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरे इल्म में जितनी ख़ैर है वह सारी ख़ैर चाहता हूं और तेरे इल्म में मेरे जितने गुनाह हैं उन से बख़्शिश चाहता हूं, तू ही ग़ैब की तमाम बातों को जानने वाला है।

﴿٣٢﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ.

(32) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे अगले, पिछले गुनाह और छुप कर किए हुए और खुल्लम खुल्ला किए हुए गुनाहोंको मुआफ़ फ़रमा और उन गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा जिन्हें मुझ से ज़्यादा तू जानता है।

﴿٣٣﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَیْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِیْنِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ وَتَرْحَمَنِیْ.

(33) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक कामों की तौफ़ीक़ और गुनाहों से दूरी का सवाल करता हूं और मसाकीन से मोहब्बत का जज़्बा मांगता हूं और दरख़्वास्त करता हूं कि तू मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा।

﴿٣٤﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَ بَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ.

(34) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दीजिए और मेरे घर में वुसअ़त अता फ़रमाइए और मेरी रोज़ी में बरकत अता फ़रमाइए।

﴿٣٥﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاهْدِنِیْ وَ ارْزُقْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَارْفَعْنِیْ.

(35) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए और मुझे आफ़ियत अता फ़रमाइए और मेरी रहनुमाई फ़रमाइए और मेरी कमज़ोरियों को दूर कीजिए और मेरे मक़ाम को बुलन्द फ़रमाइए।

﴿٣٦﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ.

(36) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ से मेरे दीन व दुनिया और मेरे अहल-ओ माल में होने वाली कोताहियों से अफ़्व व दर-गुज़र और मआफ़ी का

सवाल करता हूं।

(٣٧) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْۢبِيْ وَ اخْسَأْ شَيْطَانِيْ وَ فُكَّ رِهَانِيْ وَ ثَقِّلْ مِيْزَانِيْ وَ اجْعَلْنِيْ فِي النَّدِيِّ الْاَعْلٰى.

(37) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दीजिए और मेरे शैतान को मुझ से दूर कीजिए और मेरी गर्दन को अज़ाब से रिहाई अता फ़रमाइए और मेरे नामए आमाल को वज़नी फ़रमाइए, मुझे बुलन्द मक़ाम लोगों में बनाइए।

(٣٨) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَ اجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

(38) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से बनाइए और पाक बाज़ लोगों में से बनाइए।

(٣٩) سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ، اِغْفِرْ لِيْ ذَنْۢبِيْ وَ اَصْلِحْ لِيْ عَمَلِيْ اِنَّكَ تَغْفِرُ الذُّنُوْبَ لِمَنْ تَشَاءُ وَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ، يَا غَفَّارُ! اِغْفِرْ لِيْ، يَا تَوَّابُ! تُبْ عَلَيَّ، يَا رَحْمٰنُ! اِرْحَمْنِيْ، يَا عَفُوُّ! اُعْفُ عَنِّيْ، يَا رَءُوْفُ! اُرْؤُفْ بِيْ، يَا رَبِّ! اَوْزِعْنِيْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ.

(39) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है तेरे अलावा कोई माबूद नहीं,

मेरा गुनाह मुआफ़ कर दे, मेरे अमल की इस्लाह फ़रमा दे, तू जिस के गुनाह मुआफ़ करना चाहता है मुआफ़ कर देता है और तू बड़ा बख़्शने वाला रहम करने वाला है। ऐ बहुत ज़्यादा बख़्शने वाले! मुझे बख़्श दे, ऐ तौबा क़ुबूल करने वाले! मेरी तौबा क़ुबूल कर ले। ऐ रहमान! मुझ पर रहम फ़रमा। ऐ बहुत मुआफ़ करने वाले! मुझे मुआफ़ कर दे, ऐ बहुत ज़्यादा शफ़क़त करने वाले! मुझ पर शफ़क़त फ़रमा, ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमाइए कि मैं आप की अता कर्दा नेमतों का शुक्रिया अदा करूं।

﴿٤٠﴾ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ، اَلْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

(40) तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तमाम ज़िन्दा और मुर्दा मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की अपने रहम व करम से मग़फ़िरत फ़रमा। ऐ रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम करने वाले।

इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल0) ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स पाबंदी से इस्तिग़फ़ार करता रहता है, अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते हैं, हर ग़म से उसे निजात अता फ़रमाते हैं और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अता फ़रमाते हैं, जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। (अबू दाऊद)

मुरत्तिबः अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी इब्ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी रह०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ [سورۂ ہود]

तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी, उसी पर मैंने भरोसा किया है
और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं।

मोमिन का हथियार

-इज़ाफ़ा शुदा-

सुबह और शाम की आसान मसनून दुआएं

मुनजियात, आयाते सकीना, आयाते हिफ़ाज़त,
आयाते शिफ़ा, आयाते सलाम, आयाते तौहीद, मंज़िल मअ तर्जुमा

रसूलुल्लाह ﷺ के 99 नाम मअ तर्जुमा और असमाए बदरीईन रज़ि०

محمد یونس
ابن حضرت مولانا
محمد عمر صاحب
پالنپوری

اداره امپیکس
इदारा
idara impex
Publishers | Distributors | Exporters
www.idara.com

- हर दुआ यक़ीन और इस्तिहज़ार के साथ पढ़ें।
- दुआओं का फ़ायदा फ़राइज़ के एहतिमाम पर मौक़ूफ़ है, कोई भी नफ़ल अमल फ़राइज़ का बदल नहीं हो सकता, इस लिए तमाम फ़राइज़ का एहतिमाम निहायत ही ज़रूरी है।

ऐ अल्लाह! इस किताब की इशाअत में जिन लोगों ने जिस एतिबार से भी हिस्सा लिया हो, उन सब को कुबूल फ़रमा, और उनकी जायज़ मुरादें पूरी फ़रमा। आमीन!

एक अहम नसीहत

रोज़ाना इस दुआ को पढ़ने का एहतिमाम कीजिए। तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों की तादाद के बराबर नेकियां मिलेंगी इन्शा अल्लाह यह हदीस सहीह है। इस दुआ का प्रिंट निकाल कर अपने पास रख लीजिए और मुसलमानों में इसे तक़सीम भी कर दीजिए। हमें नेकियां मिलेंगी और मां बाप के लिए दुआ भी हो जाएगी।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ

الْحِسَابُ ۔ اٰمِيْن

ऐ हमारे परवर्दिगार! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और

मूमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा।

अर्ज़े मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

जो लोग अरबी अल्फ़ाज़ में मसनून दुआएं न पढ़ सकते हों, ऐसे लोगों के लिए मसनून दुआओं का तुर्जुमा पढ़ कर दुआ मांगना यक़ीनन अल्लाह तआला के कुर्ब का सबब होगा और उनको इन्शा अल्लाह अज्र व सवाब ज़रूर मिलेगा। इस लिए कि वह अल्लाह तआला के हुक्म "उदऊनी" (यानी मुझसे मांगो) पर अमल कर रहे हैं, नीज़ हदीस "अद्दुआउ हुवल इबादतु" (दुआ ही बड़ी इबादत है) पर भी अमल कर रहे हैं और दुआ का मज़मून रसूलुल्लाह ﷺ से साबित होने की वजह से जामे भी है और बे अदबी से पाक भी है, इस लिए जो लोग अरबी पढ़ सकते हों, लेकिन मआनी न जानते हों उनको भी तर्जुमा कभी कभी ज़रूर पढ़ लेना चाहिए ताकि उनको मालूम हो जाए कि वह क्या मांग रहे हैं? फिर यह दुआ हक़ीक़ी दुआ बनेगी।

वल्लाहु तआला आलमु बिस्सवाब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

अज़कारुस्सबाह

सुबह के अज़कार

अफ़ज़ल यह है कि सुबह के अज़कार सुबह सादिक़ से सूरज तुलूअ होने तक पूरे कर लिए जाएं।

नोटः गुंजाइश यह है कि सुबह सादिक़ से दो पहर तक किसी भी वक़्त पूरे कर लें।

(1) हर चीज़ से किफ़ायत का नबवी नुसख़ा

सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास तीन मर्तबा पढ़ लीजिए।

सूरह इख़्लास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है ﴾1﴿ वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है ﴾2﴿ न किसी का बाप है और न किसी का बेटा ﴾3﴿ और न उसके बराबर कोई है ﴾4﴿

सूरह फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿۲﴾ وَمِنْ

شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۝

وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं﴾1﴿ उस की मख़्लूक़ के शर से﴾2﴿ और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए﴾3﴿ और गिरहों में दम करने वालियों के शर से﴾4﴿ और हसद करने वाले के शर से जब हसद करे﴾5﴿

सूरह नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ

النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِیْ

یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۝

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की﴾1﴿ लोगों के बादशाह की﴾2﴿ लोगों के माबूद की﴾3﴿ उसके शर से जो वस्वसा डाले और छुप जाए﴾4﴿ जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है﴾5﴿ जिन्नात में से और इन्सान में से﴾6﴿

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास सुबह के वक़्त तीन मर्तबा पढ़ ले, उसकी हर चीज़ से क़िफ़ायत हो जाएगी।

(सहीह तिर्मिज़ीः 3/182, अबू दाऊदः 4/508)

2. दुनिया व आख़िरत के कामों पर किफ़ायत का नबवी नुस्ख़ा

(सात मर्तबा पढ़ लीजिए)

नीचे वाली दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी। इन्शा अल्लाह।

حَسْبِيَ اللهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۔

तर्जुमाः अल्लाह तआला ही मुझे काफ़ी है, उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम अर्श का मालिक है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ सात मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला उसके दुनिया व आख़िरत के कामों में किफ़ायत करेगा।

मज़कूरा दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी।

(हयातुस्सहाबाः 3/342, अख़रजहू इब्नुस्सुन्नी फ़ी अमलिल यौमि वल्लैलति ब-रक़म 72, 37, अबू दाऊदः 4/321 व इस्नादुन जय्यदुन)

3. जहन्नम से बरात [बरी होने] का नबवी नुस्ख़ा

(चार मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا

اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ

وَرَسُوْلُكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैंने इस हालत में सुबह की है कि मैं आप को गवाह बनाता हूं और मैं गवाह बनाता हूं आप के अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को और आप के तमाम फ़रिश्तों को और आप की तमाम मख़लूक़ को कि यक़ीनन आप ही हैं, आप के सिवा कोई माबूद नहीं है, आप तन्हा हैं, आप का कोई साझी (शरीक) नहीं और यह बात यक़ीनी है कि मुहम्मद (सल्ल0) आप के बंदे और रसूल हैं।

फ़ज़ीलतः जो श़ख्स सुबह के वक़्त चार मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला जहन्नम से उसको आज़ाद फ़रमा देते हैं।

(अख़रजहू अबू दाऊदः 4/318, बुख़ारी फ़िल अदबिल मुफ़रद रक़मः 1201)

4. अपने लिए अल्लाह की नेमतों को मुकम्मल फ़रमाने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ مِنْكَ فِيْ نِعْمَةٍ وَّعَافِيَةٍ وَّسِتْرٍ

فَاَتِمَّ عَلَيَّ نِعْمَتَكَ وَعَافِيَتَكَ وَسِتْرَكَ فِي الدُّنْيَا

وَالْاٰخِرَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैंने आप की तरफ़ से नेमत, आफ़ियत और पर्दा पोशी (गुनाहों के छुपा हुआ होने) की हालत में सुबह की, लिहाज़ा

आप मुझ पर अपने इनआम और अपनी आफ़ियत और अपनी पर्दा पोशी (सत्तारी) दुनिया और आख़िरत में मुकम्मल फ़रमाइए।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस पर अपनी नेमत मुकम्मल कर देते हैं।
(अख़्रजहू इब्नुस्सुन्नी फ़ी अमलिल यौमि वल्लैलति रक़मः 55)

(5) दिन और रात की नेमतों का शुक्र अदा करने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो भी नेमत मेरे साथ या आप की मख़्लूक़ में से किसी के साथ सुबह के वक़्त हासिल है, वह तन्हा आप ही की तरफ़ से है, उन में आप का कोई शरीक नहीं है, लिहाज़ा तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं और शुक्र गुज़ारी आप ही के लिए है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त एक मर्तबा पढ़ ले तो उस ने उस दिन की नेमतों का शुक्र अदा कर लिया। (अख़्रजहू अबू दाऊदः 4/318)

(6) रज़ाए इलाही हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ

के नबी होने पर ख़ुश हूं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) उस को राज़ी कर देंगे।

(रवाहु तिर्मिज़ीः 3/141, अहमदः 4338)

(7) दुनिया व आख़िरत की भलाइयां मांग लेने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ، اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

तर्जुमाः ऐ हमेशा-हमेश ज़िन्दा रहने वाले! ऐ मख़्लूक़ात को क़ायम रखने वाले! मैं आप से आप की रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करता हूं, आप मेरे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक बार आँख झपकने के बराबर मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स इसको एक मर्तबा पढ़ ले तो गोया उस ने दुनिया व आख़िरत की भलाइयां मांग ली।

(अख़्रजहुल हाकिम व सह्हहू व वाफ़िक़हुज़्ज़हबी, उन्ज़ुर सहीह अत्तरग़ीब वत्तरहीबः 1/283)

नोटः आप ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ताकीद और वसीयत की थी कि बेटी यह दुआ हमेशा पढ़ती रहना। (बैहक़ी, अन अनस रज़ि०)

(8) अचानक की मुसीबत से बचाव का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ

وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

तर्जुमाः अल्लाह के नाम के साथ मैंने सुबह की जिस के नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती ज़मीन में और न आसमान में और वही ख़ूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स इस दुआ को तीन बरतबा पढ़ ले तो कोई चीज़ उसको नुक़सान नहीं पहुंचाएगी और अबू दाऊद की रिवायत में है कि उसको अचानक की मुसीबत नहीं पहुंचेगी।

(अख़्रजहू अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व क़ाल हदीसुन हसनुन सहीहुन)

(9) जब किसी ख़बर का इन्तिज़ार हो

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فُجَاءَةِ الْخَيْرِ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فُجَاءَةِ الشَّرِّ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से अचानक की भलाई का सवाल करता हूं और अचानक की बुराई से आप की पनाह मांगता हूं।

फ़ज़ीलतः जब किसी मुआमले में कोई ख़बर मिलने वाली हो या कोई नया वाक़िआ पेश आने वाला हो तो यह दुआ करे जो मज़कूर है। हदीस में हैं कि हुज़ूर ﷺ सुबह के वक़्त यह दुआ किया करते थे।

(किताबुल अज़कारः पेज 104)

(10) ताजुत्तस्बीह (तस्बीह का सरदार)

अल्लाह की पाकी और हम्द बयान करने के नबवी कलिमात (तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَ رِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह कीपाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब और मैं अल्लाह की हम्द बयान करता हूं उस की की हुई हम्द के साथ, उसकी मख़्लूक़ की गिनती के बराबर और उसकी अपनी ख़ुशी के बराबर और उसके अर्श के वज़न के बराबर और उस के कलिमात के बराबर।

(अख़्रजहू मुस्लिमः 4/2090)

फज़ीलतः यह तस्बीह हुज़ूर सल्ल0 ने हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा को सिखाई थी। इस तस्बीह कोताजुत्तस्बीह (तस्बीह का सरदार) कहा जाता है।

(11) बदन की आफ़ियत का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَدَنِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ سَمْعِىْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ بَصَرِىْ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे बदन को दुरुस्त रखिए, ऐ अल्लाह! मेरे कान आफ़ियत से रखिए, ऐ अल्लाह! मेरी आँख आफ़ियत से रखिए, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, ऐ अल्लाह! मैं कुफ्र और मोहताजगी से आप की पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से मैं आप की पनाह मागंता हूं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

(अबू दाऊद, व उन्ज़ुर सहीह इब्ने माजाः 3/142)

फ़ायदाः अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि मज़कूरा दुआ जो पढ़ेगा, अल्लाह उसे हर लायन की आफ़ियत में रखेगा। हदीस की दुआ का तर्जुमा बहुत ग़ौर से पढ़िए।

(12) वसाविसे शैतान से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ شِرْكِهٖ وَ اَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءًا اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले, हर चीज़ के परवरदिगार और हक़ीक़ी मालिक, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, मैं आप के ज़रिए मेरे नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से पनाह मांगता हूं और इस से पनाह मांगता हूं कि कोई बुराई करुं जिस का वबाल मेरे नफ़्स पर पड़े, या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचाऊँ।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त इस दुआ को पढ़ ले वसाविसे शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है। अबू दाऊदः सहीह तिर्मिज़ीः 3/142)

(13) जन्नत में दाख़िल होने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ اَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! अप ही मेरे पालनहार हैं। आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, आप ही ने मुझे पैदा किया और मैं आप का हक़ीक़ी ग़ुलाम हूं, और जहां तक मेरे बस में है, मैं आप से किए हुए अहद और वादे पर क़ायम हूं, आप की पनाह चाहता हूं उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं, मैं आप के सामने आप की उन नेमतों का इक़रार करता हूं जो मुझ पर हैं, और मुझे एतेराफ़ है अपने गुनाहों का, इस लिए मेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए क्योंकि आप के सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्शता।

नोटः बाज़ रिवायत में "अबूउ बिज़ंबी" भी आया है, मगर बंदे ने सहीह बुख़ारी की रिवायत नक़्ल की है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यक़ीन के साथ यह दुआ सुबह के वक़्त पढ़ ले और उसी दिन उसका इन्तिक़ाल हो जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा।
(बुख़ारीः 11/97, 98)

(14) हर क़िस्म की आफ़ियत का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَ اٰمِنْ رَوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَّمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ وَ اَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप सेआफ़ियत मांगता हूं दुनिया और आख़िरत में, ऐ अल्लाह! मैं आप से मआफ़ी और सलामती मांगता हूं मेरे दीन में और मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में। ऐ अल्लाह! ढांप ले मेरे ऐब, और ख़ौफ़ की चीज़ों से मुझे बेफ़िक्र कर दे। ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से, और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूं उस से कि हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

नोटः दुआ का तर्जुमा ख़ूब ग़ौर से पढ़िए।

फ़ज़ीलतः हुज़ूर ﷺ ने ज़िन्दगी भर यह दुआ कभी भी नहीं छोड़ी है।

(अख़्रजहू अबू दाऊद, व उन्ज़ुर सहीह इब्ने माजाः 2/332)

(15) ज़वाले ग़म और अदाएगी क़र्ज़ का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحَزَنِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ، وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ، وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَ قَهْرِ الرِّجَالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं फ़िक्र और रंज से और मैं आप की पनाह मांगता हूं कम हिम्मती और सुस्ती से और मैं आप की पनाह मांगता हूं बुज़दिली और बख़ीली से और मैं आप की पनाह मांगता हूं क़र्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ ले तो उसका ग़म ख़त्म हो जाएगा और उसका क़र्ज़ अदा हो जाएगा।

नोटः लफ़्ज 'अल-हज़नि' और 'अल-हुज़नि' दोनों ही दुरुस्त हैं।

(अबू दाऊद)

(16) इल्मे नाफ़े और रिज़्क़े हलाल मिलने का नबवी नुस्ख़ा

(नमाज़े फ़ज़र का सलाम फेरने के बाद एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّ رِزْقًا طَيِّبًا وَّ عَمَلًا مُّتَقَبَّلًا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से नफ़ा देने वाला इल्म और पाक रोज़ी और कुबूल होने वाला अमल मांगता हूं।

फ़ज़ीलतः हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ नमाज़े फ़जर का सलाम फेरने के बाद यह कलिमात पढ़ा करते थे।

(सहीह इब्ने माजाः 1/152, सहीह अज्ज़वाइदः 10/111)

(17) जहन्नम से बचने का नबवी नुस्ख़ा

(फ़जर की नमाज़ के बाद सात मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप मुझे जहन्नम की आग से बचा लीजिए।

फ़ज़ीलतः जब सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा यह पढ़ ले, अगर उसी दिन वफ़ात पा गया तो जहन्नम से छुटकारा नसीब होगा।

नोटः यह दुआ हुज़ूर ﷺ ने हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तैमी रज़ि० को कान में सिखाई थी।

(व क़ाल अश्शौकानी फ़ी तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन अख़रजहू अबू दाऊद व नसइ व सहहहू इब्ने हिब्बान)

(18) अल्लाह से उसकी शान के मुताबिक़ अज्र लेने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

يَارَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِىْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِكَ .

तर्जुमाः ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ीक़ी तारीफ़ आप ही के लिए है, ऐसी तारीफ़ जो आप की ज़ात की बुज़ुर्गी और आप की अज़ीम सलतनत के लायक़ हो।

फ़ज़ीलतः जब कोई शख़्स यह दुआ पढ़ता है तो अल्लाह तआला अपनी शान के मुताबिक़ पढ़ने वाले को अज्र देगा।

(रवाहू अहमद व इब्ने माजा व रिजालुहू सिक़ातुन)

(19) मुसीबतों से निजात हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

नोटः हज़रत मुहम्मद ﷺ ने ये दुआ अपनी बेटियों को सिखाई थी।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ، عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ اَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही मेरे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, आप ही पर मैंने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहोंसे बचने और नेक कामों के

करने की ताक़त अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला अज़मत वाला है, मैं यक़ीन करता हूं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह कि अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को मुहीत है। ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं मेरे नफ़्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज़े में है। बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स दिन के शुरू में इस दुआ को पढ़ ले तो उसको शाम तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी।

(रवाहू इब्नुस्सुन्नी व अबू दाऊद अन बाज़ बनातुन्नबी ﷺ)

(20) बेहतरीन रिज़्क़ पाने का और बुराइयों से महफ़ूज़ रहने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

तर्जुमाः जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ, गुनाह से बचने और नेकी करने की ताक़त अल्लाह की मदद ही से मिलती है। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त ये दुआ पढ़ ले तो उस दिन बेहतरीन रिज़्क़ से नवाज़ा जाएगा और बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

(इब्नुस्सुन्नी, कन्ज़ुल उम्मालः 2/106)

(21) हुज़ूर ﷺ के हाथों जन्नत में दाख़िला

(एक बार पढ़ लीजिए)

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर ख़ुश हूं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त एक मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो हुज़ूर ﷺ उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कराएंगे।

(रवाहु तबरानी पेज 312, बिखरे मोतीः जिल्द 4 पेज 35)

(22) ज़िक्र के मामूलात की कमी की तलाफ़ी का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ें)

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ [سورهٔ روم]

तर्जुमाः पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और

जब तुम सुबह करते हो﴿17﴾ और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए हम्द है और शाम के पहर में और जब तुम ज़ुहर करते हो﴿18﴾ वह ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है और वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे﴿19﴾

फ़ज़ीलतः एक मर्तबा सुबह पढ़ने से ज़िक्र के मामूल में कमी की तलाफ़ी हो जाती है।(अबू दाऊद) मुसनद की हदीस में है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम ख़लील वफ़ादार क्यों रखा? इस लिए कि वह सुबह व शाम इन कलिमात को "तुज़हिरून" तक पढ़ा करते थे।

(इब्ने कसीरः जिल्द 4 पेज 166)

(23) हर बला से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

आयतुल कुर्सी पढ़ कर फिर सूरह मोमिन की नीचे वाली तीन आयतें सुबह के वक़्त पढ़ लीजिए।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا
نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे, उस की हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है, वह थकता नहीं है उनके थामने से, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला﴿255﴾

सूरह मोमिन की इब्तिदाई तीन आयतें (एक बार पढ़ लीजिए)

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾
غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِی
الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

तर्जुमाः हा-मीम﴿1﴾ यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से, जो ज़बरदस्त है, जानने वाला है﴿2﴾ गुनाहों को मुआफ़ करने वाला और तोबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है, बड़ी कुदरत वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौटना है﴿3﴾

फ़ज़ीलतः जो शख़्स "आयतुल कुर्सी" पढ़ कर फिर "सूरह मोमिन" की मज़कूरा तीन आयतें सुबह के वक़्त पढ़ ले वह उस दिन हर बुराई और तकलीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा। (मुस्नद बज्जार अन अबी हुरैरा रज़ि० व रवाहु तिर्मिज़ी)

(24) 70 हज़ार फ़रिश्तों की दुआओं के मुस्तहिक़ बनने का और मौत पर शहादत का अज्र मिलने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो ख़ूब सुनने वाला है, बड़ा जानने वाला है मर्द और शैतान से।

सूरह हश्र (एक मर्तबा पढ़ लीजिए) :

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ
اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ
يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

तर्जुमाः वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है (22) वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, सब ऐबों से

पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोर आवर, अज़मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं﴾23﴿ वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वजूद में लाने वाला, सूरत बनाने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम, हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसी की तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है﴾24﴿

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह को "अऊज़ु बिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम" तीन मर्तबा पढ़ कर मज़कूरा आयतें एक मर्तबा पढ़ ले तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआए रहमत करते हैं और उस दिन मरने पर शहादत का अज्र मिलता है। (तिर्मिज़ी)

(25) सारे मुतालिबों के पूरा होने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنْتَ تَهْدِيْنِىْ وَاَنْتَ تُطْعِمُنِىْ
وَاَنْتَ تَسْقِيْنِىْ وَاَنْتَ تُمِيْتُنِىْ وَاَنْتَ تُحْيِيْنِىْ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं और आप ही मुझे खिलाते हैं और आप ही मुझे पिलाते हैं और आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे।

फ़ज़ीलतः हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊँ जो मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि० से भी कई मर्तबा सुनी है? मैंने अर्ज़ कियाः ज़रूर सुनाएं। हज़रत समरा रज़ि० ने फ़रमायाः जो शख़्स सुबह और शाम इन कलिमात को पढ़े तो अल्लाह तआला से जो मांगेगा अल्लाह तआला ज़रूर उसको अता फ़रमाएंगे। हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० ने उसके

बाद फ़रमाया कि मैं ने एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० के सामने इस दुआ का तज़किरा किया तो उन्होंने फ़रमायाः कि मेरे मां बाप अल्लाह के रसूल पर कुरबान हों, यही कलिमात अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाए थे। चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दिन भर में सात मर्तबा यह कलिमात पढ़ कर दुआ मांगते थे तो अल्लाह तआला उन की मुराद को पूरी फ़रमाते थे। (बिखरे मोतीः जिल्द 1, पेज 144, 0145)

(26) जिन्नात की शरारत से बचने के लिए नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَاَ فِي الْاَرْضِ وَشَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की करीम ज़ात की और अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं जिन कलिमात से आगे नहीं बढ़ता कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान से उतरती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान में

चढ़ती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन में फैली हैं, और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं, और रात और दिन के फ़ित्नों से और रात और दिन में खटखटाने वालों से, मगर वह खटखटाने वाला जो ख़ैर के साथ खटखटाता हो, ऐ बेहद मेहरबान!।

फ़ज़ीलतः इस दुआ को पढ़ने की वजह से रसूलुल्लाह ﷺ को तकलीफ़ पहुंचाने की नीयत से आने वाला जिन्न मुंह के बल गिर पड़ा।

(मुअत्ता इमाम मालिक)

(27) आसेब व सेहर वग़ैरा से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ.

तर्जुमाः अल्लाह के लिए हम ने सुबह की और पूरी सलतनत ने सुबह की, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, पनाह लेता हूं अल्लाह की जिस ने आसमान को रोके रखा कि वह ज़मीन पर गिरे मगर उसकी एजाज़त से, मख़्लूक़ की बुराई से और जो फैली है और शैतान के शर और उसके शिर्क से।

फ़ज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ि० से आप ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम ने इस (मज़कूरा) दुआ को तीन मर्तबा सुबह के वक़्त पढ़ लिया तो शाम तक शैतान, काहिन और जादूगर के ज़रर और नुक़सान से महफ़ूज़ रहोगे। (अद्दुआः 954, इब्नुस्सुन्नीः 66, मजमउज़्ज़वाइदः 1/119)

(28) जादू से हिफ़ाज़त का अहम नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَیْءٌ اَعْظَمَ
مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ اللّٰتِىْ لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ
لَافَاجِرٌ وَّ بِاَسْمَاءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَاعَلِمْتُ مِنْهَا
وَمَالَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह मांगता हूं कि जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है, (और पनाह मांगता हूं) अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स, (और मैं पनाह मांगता हूं) अल्लाह के तमाम अच्छे नामों की जो मुझे मालूम हैं और जो मुझे मालूम नहीं हैं उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फैलाई।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह के वक़्त एक मर्तबा दुआ पढ़ ले इन्शा अल्लाह जादू से हिफ़ाज़त में रहेगा। हज़रत काब अहबार रह० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद मुझे जादू के ज़ोर से गधा बना देते। (मुअत्ता इमाम मालिक रह०)

(29) गुनाहों को मुआफ़ करवाने और नेकियां हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा (सौ मर्तबा पढ़ लीजिए)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लायक़ और

उसकी तारीफ़ करता हूं उसकी बयान की हुई तारीफ़ के साथ।

फ़ज़ीलतः इन कलिमात को सौ मर्तबा पढ़ लीजिए। समुंदर के झाग के बराबर भी गुनाह होंगे तो अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमा देंगे।

(सहीह मुस्लिमः 4/ 2081)

और एक लाख चैबीस हज़ार नेकियां मिलेंगी। (तिर्मिज़ी)

(30) तीन बड़ी बीमारियों से बचने का आसान नबवी नुस्ख़ा

(बाद नमाज़े फ़जर तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ.

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए) :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِمَّا عِنْدَكَ وَاَفِضْ عَلَیَّ مِنْ فَضْلِكَ

وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِن بَرَكَاتِكَ.

तर्जुमाः मैं बड़ी अज़मत वाले अल्लाह की पाकी बयान करता हूं, उसकी शान के मुनासिब और उसकी तारीफ़ करता हूं, उसी की बयान कर्दा तारीफ़ के साथ, ऐ अल्लाह! उन नेमतों में से मांगता हूं जो तेरे पास हैं और अपने फ़ज़ल की मुझ पर बारिश कर और अपनी रहमत मुझ पर फैला दे और अपनी बरकत मुझ पर नाज़िल कर दे।

फ़ज़ीलतः हज़रत क़बीसा बिन मख़ारिक़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हुज़ूर ﷺ ने पूछाः क्यों आए हो? मैंने अर्ज़ कियाः मेरी उमर ज़्यादा हो गई है, मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गईं हैं यानी मैं बूढ़ा हो गया हूं। मैं आप ﷺ की ख़िदमत में इस लिए हाज़िर हुआ हूं ताकि आप मुझे वह चीज़ सिखाएं जिस से अल्लाह तआला

मुझे नफ़ा दे। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः तुम जिस पत्थर, दरख़्त और ढेले के पास से गुज़रे हो, उस ने तुम्हारे लिए दुआए मग़फ़िरत की है। ऐ क़बीसा! सुबह की नमाज़ के बाद तीन मर्तबा मज़कूरा दुआ पढ़ो इस से तुम अंधे पन, कोढ़े पन और फ़ालिज से महफ़ूज़ रहोगे, ऐ क़बीसा! यह दुआ भी पढ़ा करो। (बिखरे मोतीः 1/95, हयातुस्सहाबाः 3/179)

(31) जिन्नात की शरारत से बचने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا
تُرْجَعُوْنَ ۝١١٥ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۝١١٦ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ
لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا
يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝١١٧ وَ قُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ
خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١١٨

तर्जुमाः पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हम ने तुम को बेमक़सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे ﴾115﴿ पस बहुत बरतर है अल्लाह जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मालिक है अर्शे अज़ीम का ﴾116﴿ और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे जिस के हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं तो उस का हिसाब उसके रब के पास है, बेशक मुंकिरों को कामयाबी नहीं

मिलेगी (117) और कह दीजिए कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए, आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं।

फ़ज़ीलतः इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के पास आया तो आप रज़ि० ने मज़कूरा आयत पढ़ कर उस के कान में दम किया, वह अच्छा हो गया, जब नबी करीम ﷺ से इसका ज़िक्र किया, तो आप ﷺ ने फ़रमायाः ऐ अब्दुल्लाह! तुम ने उसके कान में क्या पढ़ा था? आप रज़ि० ने बतला दिया तो हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः तुम ने ये आयतें उसके कान में पढ़ कर उसे जला दिया, अल्लाह की क़सम इन आयतों को अगर कोई बा ईमान शख़्स बिलयक़ीन किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाए।

अबू नईम ने रिवायत नक़ल की है कि हमें रसूल करीम ﷺ ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुबह व शाम मज़कूरा आयतें तिलावत फ़रमाते रहें, तो हम ने बराबर इस की तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी। अल्हम्दु लिल्लाह! हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लोटे। (तफ़सीर इब्ने कसीरः 3/474, बिखरे मोतीः 1/150)

(32) सुबह व शाम का शुक्रिया अदा करने वाले नबवी कलिमात

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमें आप ही की तौफ़ीक़ से सुबह नसीब हुई और आप ही की तौफ़ीक़ से शाम मिली। आप ही की कुदरत से हम जीते हैं, और

आप ही की कुदरत से हम मरेंगे। और आप ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (तिर्मिज़ी)

(33) दिन की ख़ैर व भलाई लेने का और दिन के शर से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَصْبَحْنَا وَ اَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ فَتْحَهٗ وَنَصْرَهٗ وَنُوْرَهٗ وَبَرَكَتَهٗ وَهُدَاهُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ.

तर्जुमाः हमारी सुबह हो गई और अल्लाह रब्बुल आलमीन के मुल्क की सुबह हो गई। ऐ अल्लाह! मैं आप से इस दिन की भलाई और इस की फ़तह और कामयाबी और नूर और उसकी बरकत और इसकी हिदायत मांगता हूं और इस दिन और इसके बाद के शर से आप की पनाह मांगता हूं। (हिस्ने हसीन, पुरनूर दुआ़, पेज: 2)

(34) दिन की नेकी और कामयाबी हासिल करने का नबवी वज़ीफ़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوَّلَ هٰذَا النَّهَارِ صَلَاحًا وَّ اَوْسَطَهٗ فَلَاحًا وَّ اٰخِرَهٗ نَجَاحًا. اَسْئَلُكَ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

तर्जुमाः या अल्लाह! इस दिन के अव्वल हिस्सा को नेकी बनाइए, दरमियानी हिस्सा को फ़लाह का ज़रिया और आख़िरी हिस्सा को कामयाबी, या अरहमुर्राहिमीन! मैं दुनिया व आख़िरत की भलाई आप से मांगता हूं। (हिस्ने हसीनः पेज 75)

(35) दीने इस्लाम का शुक्र अदा करने वाले कलिमात

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَ كَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

तर्जुमाः हम ने सुबह की फ़ितरते इस्लाम पर, कलिम-ए-इख़्लास पर और अपने महबूब नबी ﷺ के दीन पर और अपने जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत पर जो मु वह्हिद और मुसलमान थे और मुश्रिकों में से न थे। (हिस्ने हसीनः पेज 70)

(36) पांच जुम्ले दुनिया के लिए पांच जुम्ले आख़िरत के लिए

दुनिया के लिए (एक बार पढ़ लीजिए) :

حَسْبِىَ اللّٰهُ لِدِيْنِىْ .

(1) तर्जुमाः काफ़ी है अल्लाह मुझ को मेरे दीन के लिए।

حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِيْ.

(2) तर्जुमाः काफ़ी है मुझ को अल्लाह मेरी कुल फ़िक्र के लिए।

حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَن بَغٰى عَلَيَّ.

(3) तर्जुमाः काफ़ी है मुझ को अल्लाह, उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ज़्यादती करे।

حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِيْ.

(4) काफ़ी है मुझ को अल्लाह, उस शख़्स के लिए जो मुझ पर हसद करे।

حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ كَادَنِيْ بِسُوْءٍ.

(5) तर्जुमाः काफ़ी है मुझ को अल्लाह, उस शख़्स के लिए जो बुराई के साथ मुझे धोका और फ़रेब दे।

आख़िरत के लिए (एक बार पढ़ लीजिए) :

حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ.

(1) काफ़ी है मुझ को अल्लाह, मौत के वक़्त।

حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِى الْقَبْرِ.

(2) तर्जुमाः काफ़ी है मुझको अल्लाह क़ब्र में सवाल के वक़्त।

حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ.

(3) तर्जुमाः काफ़ी है मुझ को अल्लाह, मीज़ान के पास। (यानी उस तराज़ू के पास जिस में नामा-ए-आमाल वज़न होगा)

حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ.

(4) तर्जुमाः काफ़ी है मुझको अल्लाह, पुल सिरात के पास।

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ.

(5) तर्जुमाः काफ़ी है मुझको अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैंने उसी पर तवक्कुल किया और मैं उसी की तरफ़ रुजूअ होता हूं।

फ़ज़ीलतः हज़रत बुरीदा रज़ि० से मरवी है जिस का मफ़हूम ये है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जो शख़्स मज़कूरा दस कलिमात को सुबह के वक़्त पढ़ ले तो वह शख़्स उन कलिमात को पढ़ते ही अल्लाह तआला को उसके हक़ में काफ़ी और कलिमात पढ़ने पर अज्र व सवाब देते हुए पाएगा। (दुर्रे मन्सूरः जिल्द 2 पेज 103)

(37) सौ मर्तबा तीसरा कलिमा पढ़ लीजिए

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

तर्जुमाः अल्लाह की ज़ात पाक है और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है,

और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, और नेक काम करने की क़ुदरत और गुनाहों से बचने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ़ से अता हुई हे, जो बहुत बुलन्द बड़ा अज़मत वाला है।

फ़ज़ीलतः हुज़ूर अक़्दस ﷺ का इरशाद है कि शबे मेराज में जब मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई तो उन्होंने फ़रमाया कि अपनी उम्मत को मेरा सलाम कह देना और यह कहना कि जन्नत की निहायत उमदा पाकीज़ा मिट्टी है और बेहतरीन पानी है, लेकिन वह बिल्कुल चटयल मैदान है और उसके पौदे तो *"सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर"* हैं।

(38) सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ लीजिए

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह तआला से गुनाहों की बख़्शिश चाहता हूं, जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, जो हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और ख़ूब थामने वाला है। और उसी से तौबा करता हूं।

फ़ज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स पाबंदी से इस्तिग़फ़ार करता रहता है। अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से रास्ता बना देते हैं, हर ग़म से उसे निजात अता फ़रमाते हैं, और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अता फ़रमाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। एक दूसरी हदीस में है कि ख़ुशख़बरी है उस शख़्स के लिए जो अपने आमाल नामे में (क़ियामत के दिन) ज़्यादा इस्तिग़फ़ार पाए।

या اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ عَدَدَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ भी पढ़ सकते हैं।

(39) सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए

बेहतर यह है कि पढ़ा जाने वाला दुरूद "दुरूदे इब्राहीमी" हो, जो नमाज़ में पढ़ा जाता है लेकिन अगर मुख़्तसर दुरूद पढ़ना है तो मुंन्दरजा ज़ेल दुरूद पढ़ लीजिए, वह यह है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ﹰالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُومٍ لَّكَ، عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! दुरूद ना ज़िल फ़रमा नबी उम्मी सय्यदना मुहम्मद (सल्ल0) पर अपनी मालूमात की तादाद के बराबर और मौजूदात के बराबर।

(40) सौ मर्तबा पढ़ लीजिए :

يَا اَللّٰهُ يَا حَفِيْظُ، عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ.

(41) तीन मर्तबा पढ़ लीजिए :

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ.

तर्जुमाः अल्लाह बेहतर मुहाफ़िज़ है और वह तमाम रहम करने वालों में ज़्यादा रहम करने वाला है।

पांच सौ मर्तबा या सौ मर्तबा पढ़ लीजिए :

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ

इन्शा अल्लाह बहुत बहुत फ़ायदा होगा।

(42) एक मर्तबा सूरह यासीन पढ़ लीजिए।

(43) एक मर्तबा सूरह मुज़्ज़म्मिल पढ़ लीजिए

फ़ज़ीलतः उलमा फ़रमाते हैं कि इस को कसरत से पढ़ने से जिन्नात व जादू से हिफ़ाज़त होगी और अल्लाह तआला माल व दौलत से नवाज़ेंगे।

(44) एक मर्तबा अल्लाह के निन्नानवे नाम पढ़ लीजिए

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

तर्जुमाः और अल्लाह के लिए अच्छे नाम हैं, सो तुम (हमेशा) इसको अच्छे नामों से पुकारो।

पढ़ने का तरीक़ाः अल्लाह तआला के निनानवे नामों के पढ़ने का तरीक़ा यह है कि अल्लाह के हर नाम के आगे "जल्ला जलालुहू" पढ़िएः मसलन اَللّٰهُ جَلَّ جَلَالُهٗ . اَلرَّحْمٰنُ جَلَّ جَلَالُهٗ वग़ैरा तो इन्शा-अल्लाह बहुत फ़ायदा होगा।

नोटः अगर कोई अरबी असमा-ए-हुस्ना पढ़ने से आजिज़ हो तो उन का तर्जुमा समझ कर पढ़ लिया करे, और अल्लाह तआला को उन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ जाने और माने, इन्शा अल्लाह उसको भी असमाए हुसना के फ़वायद व बरकात हासिल होंगे।

अल्लाह तआला के 99 नाम मअ तर्जुमा

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

वही अल्लाह यानी हक़ीक़ी माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं।

1. बड़ा मेहरबान है।	اَلرَّحْمٰنُ
2. निहायत रहम वाला है।	اَلرَّحِيْمُ
3. तमाम जहानों का बादशाह है।	اَلْمَلِكُ
4. निहायत पाक।	اَلْقُدُّوْسُ
5. और तमाम कमज़ोरियों व उयूब से सालिम है।	اَلسَّلَامُ
6. अमन व अमान देने वाला है।	اَلْمُؤْمِنُ
7. तमाम मख़्लूक़ की निगहबानी करने वाला है।	اَلْمُهَيْمِنُ
8. कामिल ग़लबा वाला है, कभी किसी से मग़लूब नहीं होता।	اَلْعَزِيْزُ
9. बिगड़े हुए कामों और हालात को दुरुस्त करने वाला है।	اَلْجَبَّارُ
10. बड़ी अज़मत वाला है।	اَلْمُتَكَبِّرُ
11. जान डालने वाला है।	اَلْخَالِقُ
12. पैदा करने वाला है।	اَلْبَارِئُ
13. सूरत बनाने वाला है।	اَلْمُصَوِّرُ
14. बहुत मुआफ़ करने वाला है।	اَلْغَفَّارُ
15. सब को क़ाबू में रखने वाला है।	اَلْقَهَّارُ
16. बहुत देने वाला है।	اَلْوَهَّابُ
17. ख़ूब रिज़्क़ पहुंचाने वाला है।	اَلرَّزَّاقُ
18. फ़तह बख़्श और रिज़्क़ व रहमत के दरवाज़े खोलने वाला है।	اَلْفَتَّاحُ
19. ख़ूब जानने वाला है।	اَلْعَلِيْمُ

20. रोज़ी तंग करने वाला है।	اَلْقَابِضُ
21. रोज़ी कुशादा करने वाला है।	اَلْبَاسِطُ
22. (नाफ़रमानों को) पस्त करने वाला।	اَلْخَافِضُ
23. (और नेकोकारों को) बुलन्द करने वाला।	اَلرَّافِعُ
24. (मुसलमानों को) इज़्ज़त देने वाला।	اَلْمُعِزُّ
25. (और काफ़िरों को) ज़लील व रुसवा करने वाला।	اَلْمُذِلُّ
26. ख़ूब सुनने वाला।	اَلسَّمِيْعُ
27. सब को देखने वाला।	اَلْبَصِيْرُ
28. और सब का हाकिम है।	اَلْحَكَمُ
29. निहायत इन्साफ़ परवर।	اَلْعَدْلُ
30. बड़ा बारीक बीं और बंदों पर नरमी करने वाला है।	اَللَّطِيْفُ
31. बड़ा बाख़बर।	اَلْخَبِيْرُ
32. बड़ा बुर्दबार।	اَلْحَلِيْمُ
33. और अज़मत वाला है।	اَلْعَظِيْمُ
34. बहुत बख़्शने वाला।	اَلْغَفُوْرُ
35. और बड़ा क़दरदां यानी थोड़े अमल पर बहुत ज़्यादा देने वाला है।	اَلشَّكُوْرُ
36. बहुत बुलन्द।	اَلْعَلِيُّ
37. बहुत बड़ा है।	اَلْكَبِيْرُ
38. सब की हिफ़ाज़त करने वाला।	اَلْحَفِيْظُ
39. ग़िज़ा बख़्श है।	اَلْمُقِيْتُ
40. हिसाब लेने वाला।	اَلْحَسِيْبُ
41. बड़ी शान वाला।	اَلْجَلِيْلُ
42. बड़ा सख़ी।	اَلْكَرِيْمُ
43. ख़ूब निगहबानी करने वाला।	اَلرَّقِيْبُ

44.सब की दुआएं सुनने वाला और कुबूल करने वाला है।	اَلْمُجِيْبُ
45. बड़ी वुसअत वाला है।	اَلْوَاسِعُ
46. बड़ी हिकमत वाला है।	اَلْحَكِيْمُ
47. (नेक बंदों से) बेहद मोहब्बत करने वाला।	اَلْوَدُوْدُ
48. बड़ा बुज़ुर्ग।	اَلْمَجِيْدُ
49. और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है।	اَلْبَاعِثُ
50. हाज़िर व नाज़िर।	اَلشَّهِيْدُ
51. और साबित व बरहक़ है।	اَلْحَقُّ
52. बड़ा कारसाज़।	اَلْوَكِيْلُ
53. बड़ी कुव्वत वाला।	اَلْقَوِيُّ
54. मज़बूत इक़्तिदार वाला है।	اَلْمَتِيْنُ
55. (नेकोकारों का) मददगार।	اَلْوَلِيُّ
56. तमाम ख़ूबियों का मालिक।	اَلْحَمِيْدُ
57. ख़ूब शुमार करने वाला और घेरने वाला है।	اَلْمُحْصِيْ
58. पहली बार पैदा करने वाला।	اَلْمُبْدِئُ
59. दोबारा ज़िन्दा करने वाला है।	اَلْمُعِيْدُ
60. ज़िन्दगी बख़्शने वाला है।	اَلْمُحْيِيْ
61. मौत देने वाला है।	اَلْمُمِيْتُ
62. हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है।	اَلْحَيُّ
63. ख़ूब थामने वाला है।	اَلْقَيُّوْمُ
64. ऐसा ग़नी व बेनियाज़ है कि किसी चीज़ का मोहताज नहीं।	اَلْوَاجِدُ
65. बुज़ुर्गी वाला।	اَلْمَاجِدُ
66. अपनी ज़ात व सिफ़ात में यक्ता।	اَلْوَاحِدُ
67. एक अकेला अपनी ज़ात व सिफ़ात में यक्ता।	اَلْأَحَدُ

68. बड़ा बेनियाज़।	اَلصَّمَدُ
69. बड़ी कुदरत वाला।	اَلْقَادِرُ
70. कुदरते कामिला रखने वाला।	اَلْمُقْتَدِرُ
71. (नेकोकारों को) आगे करने वाला।	اَلْمُقَدِّمُ
72. (और बदकारों को) पीछे करने वाला।	اَلْمُؤَخِّرُ
73. सब से पहला।	اَلْأَوَّلُ
74. सब से पिछला।	اَلْاٰخِرُ
75. ख़ूब नुमायां।	اَلظَّاهِرُ
76. निहायत पोशीदा।	اَلْبَاطِنُ
77. सब पर हुकूमत करने वाला।	اَلْوَالِيْ
78. बहुत बुलन्द व बरतर।	اَلْمُتَعَالِيْ
79. नेक सुलूक करने वाला।	اَلْبَرُّ
80. तौबा कुबूल करने वाला।	اَلتَّوَّابُ
81. बदला लेने वाला।	اَلْمُنْتَقِمُ
82. बहुत मुआफ़ करने वाला।	اَلْعَفُوُّ
83. ख़ूब शफ़क़त करने वाला।	اَلرَّءُوْفُ
84. सारे जहां का मालिक।	مَالِكُ الْمُلْكِ
85. अज़मत व जलाल और इन्आम व इकराम वाला।	ذُوالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ
86. अदल व इन्साफ़ करने वाला।	اَلْمُقْسِطُ
87. (क़ियामत के दिन) सब को जमा करने वाला है।	اَلْجَامِعُ
88. बड़ा बेनियाज़।	اَلْغَنِيُّ
89. (और बंदों को) बेनियाज़ करने वाला है।	اَلْمُغْنِيْ
90. (हलाकत के असबाब को) रोकने वाला।	اَلْمَانِعُ
91. नुक़सान पहुचाने वाला।	اَلضَّارُّ

92. नफ़ा पहुंचाने वाला।	اَلنَّافِعُ
93. निहायत रौशन और सारे जहां को रौशन करने वाला।	اَلنُّوْرُ
94. हिदायत देने वाला।	اَلْهَادِيْ
95. बग़ैर नमूना के पैदा करने वाला।	اَلْبَدِيْعُ
96. हमेशा बाक़ी रहने वाला है।	اَلْبَاقِيْ
97. तमाम चीज़ों का वारिस व मालिक है।	اَلْوَارِثُ
98. सब का राहनुमा और सब को राहे-रास्त दिखाने वाला है।	اَلرَّشِيْدُ
99. बहुत बरदाश्त करने वाला और बड़ा बुर्दबार है।	اَلصَّبُوْرُ

(तिर्मिज़ी शरीफ़ः अबवाबुद्दावातः 2/189)

फ़ज़ीलतः बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से मनक़ूल है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः बेशक अल्लाह तआला के निनानवे यानी एक कम सौ नाम हैं जिस ने उनको महफ़ूज़ कर लिया (यानी इन को याद किया और उन पर ईमान लाया) वह जन्नत में पहुंच गया।

असमाए हुसना की मुकम्मल तफ़सील उनके फ़वायद व मआनी व ख़्वास के साथ बंदा की किताब "बिखरे मोती" जिल्द 3 से पेज 93 पर मौजूद है, मुलाहिज़ा फ़रमा लें।

(45) मौजूदा और आइन्दा दज्जाली फ़ित्नों से बचने का नबवी नुस्ख़ा

1. इमाम मुस्लिम रह० ने रिवायत किया है कि "सूरह कहफ़" की इब्तिदाई दस आयतें जो याद कर लेगा और पढ़ेगा, वह दज्जाल के फ़ित्ना से महफ़ूज़ रहेगा।
2. सहीह मुस्लिम की एक और रिवायत में यूं है कि तुम में से जो शख़्स दज्जाल को पा ले तो उस पर सूरह कहफ़ की शुरू की आयात पढ़ दे (इस की वजह से) वह दज्जाल के शर से महफ़ूज़ रहेगा।
3. बाज़ रिवायात में है कि सूरह कहफ़ की आख़िरी आयात याद करने से और पढ़ने से दज्जाल के शर से हिफ़ाज़त रहेगी।

सूरह कहफ़ की इब्तिदाई दस आयात मअ तर्जुमा

(एक बार पढ़ लीजिए)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ
عِوَجًا ۟ؕ ۱ قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَ یُبَشِّرَ
الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۲ۙ
مَّا كِثِیْنَ فِیْهِ اَبَدًا ۳ۙ وَّ یُنْذِرَ الَّذِیْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۴ۗ
مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّ لَا لِاٰبَآىِٕهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ

اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ یَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا۝۵ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى
اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ یُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِیْثِ اَسَفًا۝۶ اِنَّا جَعَلْنَا مَا
عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا۝۷ وَ اِنَّا
لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا۝۸ؕ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ
الْكَهْفِ وَ الرَّقِیْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰیٰتِنَا عَجَبًا۝۹ اِذْ اَوَى الْفِتْیَةُ اِلَى
الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَیِّئْ لَنَا مِنْ
اَمْرِنَا رَشَدًا۝۱۰

तर्जुमाः तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लायक़ हैं जिस ने अपने बंदे पर यह कुरआन उतारा और उस में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी﴾1﴿ बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक सख़्त अज़ाब से आगाह कर दे और ईमान वालों को खुश ख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है﴾2﴿ वह उस में हमेशा रहेंगे﴾3﴿ और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है﴾4﴿ उनको इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को, ये बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वह सिर्फ़ झूठ कहते हैं﴾5﴿ शायद आप उनके पीछे ग़म से अपने आप को हलाक कर डालोगे अगर वह इस बात पर ईमान न लाए﴾6﴿ रूए ज़मीन पर जो कुछ है हम ने उसे ज़मीन की रौनक़ का बाइस बनाया है कि हम उनहें आज़मा लें कि उन में से कौन नेक आमाल वाला है﴾7﴿ और (यह भी यक़ीन रखो कि)

रूए ज़मीन पर जो कुछ है एक दिन हम उसे एक स्पाट मैदान बना देंगे ﴿8﴾ आप ख़्याल करते हो कि कहफ़ और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे﴿9﴾ जब उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हम को अपने पास से रहमत दीजिए और हमारे लिए हमारे मुआमले को दुरुस्त कर दीजिए﴿10﴾

सूरह कहफ़ की आख़िरी आयात मअ तर्जुमा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَفَحَسِبَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اَنۡ یَّتَّخِذُوۡا عِبَادِیۡ مِنۡ دُوۡنِیۡۤ اَوۡلِیَآءَ ؕ
اِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا جَہَنَّمَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلۡ ہَلۡ نُنَبِّئُکُمۡ
بِالۡاَخۡسَرِیۡنَ اَعۡمَالًا ﴿۱۰۳﴾ؕ اَلَّذِیۡنَ ضَلَّ سَعۡیُہُمۡ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا
وَ ہُمۡ یَحۡسَبُوۡنَ اَنَّہُمۡ یُحۡسِنُوۡنَ صُنۡعًا ﴿۱۰۴﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ
کَفَرُوۡا بِاٰیٰتِ رَبِّہِمۡ وَ لِقَآئِہٖ فَحَبِطَتۡ اَعۡمَالُہُمۡ فَلَا نُقِیۡمُ لَہُمۡ
یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ وَزۡنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِکَ جَزَآؤُہُمۡ جَہَنَّمُ بِمَا کَفَرُوۡا وَ
اتَّخَذُوۡۤا اٰیٰتِیۡ وَ رُسُلِیۡ ہُزُوًا ﴿۱۰۶﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ کَانَتۡ لَہُمۡ جَنّٰتُ الۡفِرۡدَوۡسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ۙ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا لَا

يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝١٠٨ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝١٠٩
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝١١٠

तर्जुमाः क्या इन्कार करने वाले यह समझते हैं कि वह मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना दोस्त बनाएंगे, हम ने काफ़िरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है﴾1﴿ कह दीजिए कि में तुम को बता दूं कि अपने आमाल के एतिबार से सब से ज़्यादा घाटे में कौन लोग हैं﴾2﴿यह वह लोग हैं कि दुनियवी ज़िन्दगी में उनकी सारी दौड़ धूप सीधे रास्ते से भटकी रही और वह समझते रहे कि वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं﴾3﴿ यह वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का और उसके सामने पेश होने का इन्कार किया इस लिए उन का सारा किया धरा ग़ारत हो गया, चुनांचे क़ियामत के दिन हम उन का कोई वज़न शुमान रहीं करेंगे ﴾4﴿ यह जहन्नम उनका बदला है इस लिए उन्होंने इन्कार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया﴾5﴿ बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन के लिए फ़िरदौस के बाग़ों की मेहमानी है﴾6﴿ उस में वह हमेशा रहेंगे, वहां से कभी निकलना न चाहेंगे﴾7﴿ तर्जुमाः कह दीजिए कि अगर समुंदर मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रौशनाई हो जाए तो समुंदर ख़त्म हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके

साथ उसी के मानिन्द और समुंदर मिला दें﴾8﴿ कह दीजिए कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं, मुझ पर वह्ई आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, पस जिस को अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसको चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए﴾9﴿

नोट : आख़िरी आयात अल्लामा नववी रह० ने शरह मुस्लिम में اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا से बताई है।

तश्रीहः इसकी तौज़ीह में शारिहीने हदीस ने लिखा है कि सूरह कहफ़ के इब्तिदाई हिस्सा में जो तमहीदी मज़मून है और इसी के साथ असहाबे कहफ़ का जो वाक़िआ बयान फ़रमाया गया है उस में हर दज्जाली फ़ित्ना का पूरा तोड़ मौजूद है और जिस दिल को उन हक़ाइक़ और मज़ामीन का यक़ीन नसीब हो जाए जो सूरह कहफ़ की उन इब्तिदाई आयतों में बयान किए गए हैं वह दिल किसी दज्जाली फ़ित्ना से कभी मुतास्सिर न होगा। इसी तरह अल्लाह के जो बंदे इन आयतों की इस ख़ासियत और बरकत पर यक़ीन रखते हुए इनको अपने दिल व दिमाग़ में महफ़ूज़ करेंगे और उनकी तिलावत करेंगे अल्लाह तआला उनको भी दज्जाली फ़ित्नों से महफ़ूज़ रखेगा।

(अनवारुल बयानः जिल्द 5 पेज 454, मआरिफ़ुल हदीसः जिल्द 5 पेज 94,95, मुस्लिम शरीफ़, जिल्द 1 पेज 271, मकतबा रशीदिया)

(46) दुआओं की क़ुबूलियत और ग़मों से निजात के लिए नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ.

तर्जुमाः आप के सिवा कोई माबूद नहीं, आप पाक हैं, बेशक मैं क़ुसूरवार

हूं।

फ़ायदाः दुआएं क़ुबूल होंगी, और ग़मों से निजात मिलेगी। इन्शा अल्लाह।

(47) हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सुबह में तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त हो जाती है और अगर जानवर डस भी ले तो उस से नुक़सान नहीं पहुंचता। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने माजाः 2/232)

(48) सारी परेशानियां दूर करने का मुजर्रब इलाज मुन्जियात

(एक बार पढ़ लीजिए)

﴿١﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰنَا ۚ وَ
عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ [سورۃ توبہ]

1. तर्जुमाः कह दीजिए कि हमें सिर्फ़ वही चीज़ पहूंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है, वह हमारा सारसाज़ है और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

﴿٢﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَ

اِنْ یُّرِدْكَ بِخَیْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ یُصِیْبُ بِهٖ مَنْ
یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۰۷﴾ [سورۂ یونس]

2. तर्जुमाः और अगर अल्लाह तुम को किसी तकलीफ़ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसको दूर कर सके, और अगर वह तुम को कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उस के फ़ज़ल को कोई रोकने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़ल अपने बंदों में से जिस को चाहता है देता है, और वह बख़्शने वाला, मेहरबान है।

﴿۳﴾ وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ رِزْقُهَا وَ
یَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶﴾
[سورۂ ھود]

3. तर्जुमाः और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो, और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सोंपा जाता है, सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है।

﴿۴﴾ اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَی اللّٰهِ رَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا
هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِیَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۵۶﴾
[سورۂ ھود]

4. तर्जुमाः मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा भी रहब है और तुम्हारा भी रब है, कोई जानदार ऐसा नहीं जिस की पेशानी उसके हाथ में न हो, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है।

﴿٥﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَ
اِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ [سورۂ عنکبوت]

5. तर्जुमाः और कितने जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते, अल्लाह उन को रिज़्क़ देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला, जानने वाला है।

﴿٦﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ
وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾ [سورۂ فاطر]

6. तर्जुमाः अल्लाह कोई रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उस का रोकने वाला नहीं, और जिस को वह रोक ले तो कोई उस को खोलने वाला नहीं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿٧﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۗ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۗ

عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ [سورۂ زمر]

7. तर्जुमाः और अगर आप उन से पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किस ने पैदा किया तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने, कह दीजिएः तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन को पुकारते हो अगर अल्लाह मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या यह उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं? कह दीजिए कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

(49) आयाते तौहीद

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

तौहीद ही दीन की बुनियाद और जड़ है, इस लिए जितना उस में दिल लगी और वाबस्तगी होगी दीन में मज़बूती पैदा होगी, इसी लिए अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में तौहीद के मज़मून को बार बार मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ज़िक्र फ़रमाया है, लिहाज़ा उन आयात को और उनके तर्जुमे को बहुत ध्यान से पढ़िए कि तौहीद लिद की गहराइयों में उतर जाए और अंदुरूने दिल में पुख़्ता हो जाए और दिल में अल्लाह के सिवा कोई जगह बाक़ी न रहे। आयाते करीमा में जहां अल्लाह तआला की तौहीद का बयान है, उस हिस्से पर लकीर के ज़रीए निशानदेही की गई है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

﴿١﴾ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ

الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ [سورۂ بقرہ]

1. तर्जुमाः और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

﴿٢﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ
لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا
الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ
اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ
عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ
وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿٢٥٥﴾ [سورۂ بقرہ]

2. तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे, उसकी हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है, वह थकता नहीं है उनके थामने से, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला।

﴿٣﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ؕ﴿۲﴾ [سورۂ آلِ عمران]

3. तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा और सब का थामने वाला है।

﴿٤﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَ اُولُوا
الْعِلْمِ قَآىِٕمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُ ؕ﴿۱۸﴾ [سورۂ آلِ عمران]

4. तर्जुमाः अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले इल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह क़ायम रखने वाला है इन्साफ़ का, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿٥﴾ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ
الْحَكِیْمُ ﴿۶۲﴾ [سورۂ آلِ عمران]

5. तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿٦﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَیْنَنَا وَ
بَیْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَیْـًٔا وَّ لَا

يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا

فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ [سورۂ آلِ عمران]

6. तर्जुमाः (ए नबी) कह दीजिए कि अहले किताब! आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है, (वह यह) कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं, और हम में से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए, फिर अगर वह इस से मुंह मोड़ लें तो कह दें कि तुम गवाह रहो हम फ़रमां बरदार हैं।

﴿۷﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا

رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿۸۷﴾ [سورۂ نساء]

7. तर्जुमाः अल्लाह वह (माबूद) है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़रूर तुम सब को क़ियामत के दिन जमा करेगा जिस के आने में कोई शुबा नहीं और अल्लाह की बात से बढ़ कर सच्ची बात और किस की हो सकती है।

﴿۸﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾

[سورۂ مائدہ]

8. तर्जुमाः यक़ीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में का तीसरा है, हालांकि कोई माबूद नहीं सिवाए एक माबूद के, और अगर वह बाज़ न आए इस से जो वह कहते हें तो उन में से कुफ्र पर क़ायम रहने वालों को एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ेगा।

﴿٩﴾ قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ۫ وَ اُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ [سورۂ انعام]

9. तर्जुमाः पूछिए कि सब से बड़ा गवाह कौन है? कह दीजिए कि अल्लाह है, जो मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है और मुझ पर कुरआन उतारा गया है ताकि मैं तुम को उसके ज़रिए ख़बरदार करता रहूं और उस को जिस तक यह पहुंचे, क्या तुम उस की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कुछ और माबूद भी हैं? कह दें कि मैं उस की गवाही नहीं देता, नीज़ कह दें कि वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूं तुम्हारे शिर्क से।

﴿١٠﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَ اَبْصَارَكُمْ وَ خَتَمَ عَلٰی قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَیْفَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ ثُمَّ هُمْ یَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

[سورۂ انعام]

10. तर्जुमाः आप कह दीजिए कि यह बताओ कि अगर अल्लाह छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है, जो उन को वापस लाए, देखो कि हम क्यों कर तरह तरह की निशानियां बयान करते हैं, फिर भी वह मुंह मोड़ लेते हैं।

﴿١١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ [سورۂ انعام]

11. तर्जुमाः यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है पस तुम उसी की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ है।

﴿١٢﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَ

اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ [سورۂ انعام]

12. तर्जुमाः आप बस उस चीज़ की पैरवी करें जो आप के रब की तरफ़ से आप की जानिब वह्ई की जा रही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिकों से एराज़ कीजिए।

﴿١٣﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ [سورۂ اعراف]

13. तर्जुमा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहाः क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तलाश करूं हालांकि उस ने तुम को तमाम जहानों पर फ़ज़ीलत दी है।

﴿١٤﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا
اِلَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ
وَ يُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

[سورۂ اعراف]

14. तर्जुमाः (ऐ नबी) कह दीजिए कि ऐ लोगो! बेशक मैं उस अल्लाह का रसूल हूं तुम सब की तरफ़ जिस की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दगी देता है और वही मारता है पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उस के कलिमात पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ।

﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَ مَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا
اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

[سورۂ توبہ]

15. तर्जुमाः उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा और मशाइख़ को रब बना डाला और मसीह इब्ने मरयम को भी, हालांकि उनको सिर्फ़ यह हुक्म था कि वह एक माबूद की इबादत करें, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह पाक है उस शिर्क से जो वह करते हैं।

﴿١٦﴾ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيۡهِ
تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿١٢٩﴾ [سورۃ التوبہ]

16. तर्जुमाः फिर भी अगर वह मुंह फेर लें तो कह दीजिए कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही अर्शे अज़ीम का मालिक है।

﴿١٧﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ
فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ ؕ
مَا مِنۡ شَفِيۡعٍ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ اِذۡنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمۡ
فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٣﴾ [سورۃ یونس]

17. तर्जुमाः बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने आसमान व ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, वही मुआमलात का इन्तिज़ाम करता है, उस की एजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं, वही अल्लाह तुम्हारा रब है, पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं!

﴿١٨﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ
اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ [سورۂ یونس]

18. तर्जुमाः पस वही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी परवरदिगार है, हक़ के बाद भटकने के सिवा और क्या है? तुम किधर फिरे जाते हो।

﴿١٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَ جُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّ عَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ
الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ
بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ [سورۂ یونس]

19. तर्जुमाः और हम ने बनी इसराईल को समुंदर पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसके लश्कर ने उन का पीछा किया सरकशी और ज़्यादती की ग़र्ज़ से, यहां तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उस ने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद नहीं मगर वह जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं फ़रमां बरदारों में से हूं।

﴿٢٠﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ
فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۚۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ [سورۂ یونس]

20. तर्जुमाः कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन के मुतअल्लिक़ शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिन की इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा, बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम को वफ़ात देता है और मुझ को हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से रहूं।

﴿٢١﴾ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ [سورۂ ھود]

21. तर्जुमाः पस अगर वह तुम्हारा कहा पूरा न कर सके तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम हुक्म को मानते हो।

﴿٢٢﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ [سورۂ ھود]

22. तर्जुमाः यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तुम पर एक दर्दनाक अज़ाब के दिन का अंदेशा रखता हूं।

﴿٢٣﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾
[سورۂ ھود]

23. तर्जुमाः और आद की तरफ़ हम ने उन के भाइ हूद (अलैहिस्सलाम) को भेजा, उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम ने महज़ झूठ घढ़ रखे हैं।

﴿۲۴﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ
اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ [سورۂ یوسف]

24. तर्जुमाः ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं, या अकेला ज़बरदस्त अल्लाह?

﴿۲۵﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ
اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ
الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾
[سورۂ یوسف]

25. तर्जुमाः तुम उसके सिवा नहीं पूजते मगर कुछ नामों को जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उस की कोई सनद नहीं उतारी , इक़्तिदार सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है, उस ने हुक्म दिया है कि

उसके सिवा किसी की इबादत न करो यही सीधा दीन है, मगर बहुत से लोग नहीं जानते।

﴿٢٦﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِیْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِیْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَ هُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾ [سورۂ یوسف]

26. तर्जुमाः इसी तरह हम ने आप को भेजा है एक उम्मत में जिस से पहले भी बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि आप लोगों को वह पैग़ाम सुना दें जो हम ने आप की तरफ़ भेजा है, और वह मेरहबान अल्लाह का इन्कार कर रहे हैं, कह दीजिए कि वही मेरा रब है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ लौटना है।

﴿٢٧﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾ [سورۂ ابراهيم]

27. तर्जुमाः यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि उसके ज़रिए वह डरा दिए जाएं और ताकि वह जान लें कि वही एक माबूद है और ताकि अक़्लमन्द लोग नसीहत हासिल करें।

﴿٢٨﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا

فَاتَّقُوْنِ ② [سورۂ نحل]

28. तर्जुमाः वह फ़रिश्तों को अपने हुक्म से रूह के साथ उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, पस तुम मुझ से डरो।

﴿٢٩﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ㉒

[سورۂ نحل]

29. तर्जुमाः तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, मगर वह लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुंकिर हैं और वह तकब्बुर करते हैं।

﴿٣٠﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ

اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ۵۱ [سورۂ نحل]

30. तर्जुमाः और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो माबूद मत बनाओ, वह एक ही माबूद है, तो मुझ ही से डरो।

﴿٣١﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا

مَّخْذُوْلًا ㉒ [سورۂ بنی اسرائیل]

31. तर्जुमाः आप अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न बनाइए, वर्ना आप बदहाल और बेकस हो कर रह जाएंगे।

﴿٣٢﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا
اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ [سورۂ بنی اسرائیل]

32. तर्जुमाः कह दीजिए कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद होते जैसा कि यह लोग कहते हैं तो वह अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर रास्ता निकालते।

﴿٣٣﴾ وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ
قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ [سورۂ کهف]

33. तर्जुमाः और हम ने उनके दिलों को मज़बूत कर दिया जब कि वह उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद को न पुकारेंगे, अगर हम ऐसा करें तो हम बहुत बेजा बात करेंगे।

﴿٣٤﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا
يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ [سورۂ کهف]

34. तर्जुमाः यह हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं, यह उनके हक़ में कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते, फिर उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे।

﴿٣٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ
فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ
اَحَدًا ﴿١١٠﴾ [سورۂ کھف]

35. तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं तुम्हारी तरह एक आदमी हूं मुझ पर वह्ई आती है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, पस जिस को अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसको चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए।

﴿٣٦﴾ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ [سورۂ مریم]

36. तर्जुमाः और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है, पस तुम उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

﴿٣٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾
[سورۂ طٰهٰ]

37. तर्जुमाः वह अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, तमाम अच्छे नाम उसी के हैं।

﴿٣٨﴾ اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿١٤﴾ [سورۂ طٰهٰ]

38. तर्जुमाः मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।

﴿٣٩﴾ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾ [سورۂ طٰهٰ]

39. तर्जुमाः तुम्हारा माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर चीज़ पर हावी है।

﴿٤٠﴾ لَوْ كَانَ فِیْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ [سورۂ انبیاء]

40. तर्जुमाः अगर उन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम बरहम हो जाते, पस अल्लाह अर्श का मालिक उन बातों से पाक है जो यह लोग बयान करते हैं।

अज़कारुल मसाइ

शाम के अज़कार

अफ़ज़ल यह है कि शाम के अज़कार असर से लेकर इशा तक पूरे कर लिए जाएं।

नोटः गुंजाइश यह है कि शाम के अज़कार असर के बाद से सुबह सादिक़ से पहले पूरे कर लें।

(1) अल्लाह की हिफ़ाज़त में आने और शैतान के दूर होने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَىُّ الۡقَيُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ
يَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا
خَلۡفَهُمۡ ۚ وَلَا يُحِيۡطُوۡنَ بِشَىۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ وَلَا يَـــُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ
وَهُوَ الۡعَلِىُّ الۡعَظِيۡمُ ﴿۲۵۵﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब

का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे, उस की हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है, वह थकता नहीं है उनके थामने से, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला﴿255﴾

फ़ज़ीलतः जो शख़्स रात के वक़्त "आयतुल कुर्सी" पढ़ ले, वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाता है, और शैतान सुबह तक उस के क़रीब भी नहीं होता। (बुख़ारी मअ अलफ़तहः 4/487)

(2) अपनी किफ़ायत का नबवी नुस्ख़ा

(सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें) एक बार पढ़ लीजिए

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا
وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٢٨٥ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ
نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا
طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ
مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

तर्जुमाः रसूल ईमान लाए हैं उस पर जो उनके रब की तरफ़ से उन पर उतरा है और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं, सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और वो कहते हैं कि हम ने सुना और माना, हम आप की बख़्शिश चाहते हैं, और ऐ हमारे रब! लौटना तो आप ही की तरफ़ है﴾285﴿ अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़ ही, उसको मिलेगा वही जो उस ने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उस ने किया, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें न पकड़ें अगर हम भूल जाएं या ग़लती कर जाएं, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डालिए जिस तरह आप ने बोझ डाला था हम से अगले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से वो न उठवाइए जिस की ताक़त हम को नहीं है, और दरगुज़र फ़रमाइए हम से, और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं, पस इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए﴾286﴿

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सूरह बक़रा की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ ले तो उसकी किफ़ायत हो जाएगी। (बुख़ारी मअलफ़त्ह: 9/94, मुस्लिम:1/554)

(3) हर मूज़ी के शर से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास तीन मर्तबा पढ़ लीजिए।

सूरह इख़्लास

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है ﴿1﴾ वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है﴿2﴾ न किसी का बाप है और न किसी का बेटा﴿3﴾ और न उसके बराबर कोई है﴿4﴾

सूरह फ़लक़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं﴿1﴾ उस की मख़्लूक़ के शर से﴿2﴾ और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए﴿3﴾ और गिरहों में दम करने वालियों के शर से﴿4﴾ और हसद करने वाले के शर से जब हसद करे﴿5﴾

सूरह नास

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِۙ ۝١ مَلِكِ النَّاسِۙ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِۙ ۝٣ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِ ۙ ۝٤ الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِۙ ۝٥ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۝٦

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की (1) लोगों के बादशाह की (2) लोगों के माबूद की (3) उसके शर से जो वस्वसा डाले और छुप जाए (4) जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है (5) जिन्नात में से और इन्सान में से (6)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास शाम के वक़्त तीन मर्तबा पढ़ ले, उसकी हर चीज़ से क़िफ़ायत हो जाएगी। (सहीह तिर्मिज़ीः 3/183, अबू दाऊदः 4/508)

(4) दुनिया व आख़िरत के कामों पर किफ़ायत का नबवी नुस्ख़ा

(सात मर्तबा पढ़ लीजिए)

नीचे वाली दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी। इन्शा अल्लाह।

حَسۡبِىَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ .

तर्जुमाः अल्लाह तआला ही मुझे काफ़ी है, उसके अलावा कोई इबादत के

लायक़ नहीं है, उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम अर्श का मालिक है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त यह दुआ सात मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के दुनिया व आख़िरत के कामों में किफ़ायत करेगा।

मज़कुरा दुआ चाहे सच्चे दिल से पढ़िए या झूठे दिल से पढ़िए परेशानी दूर होगी।

(हयातुस्सहाबाः 3/342, इब्नुस्सुन्नी, बरक़म 72, 37, अबू दाऊदः 4/321, इस्नादुन जय्यदुन)

(5) जहन्नम से आज़ादी पाने का नबवी नुस्ख़ा

(चार मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَمْسَيْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैंने इस हालत में शाम की है कि मैं आप को गवाह बनाता हूं और मैं गवाह बनाता हूं आप के अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को और आप के तमाम फ़रिश्तों को और आप के तमाम मख़्लूक़ को कि यक़ीनन आप ही अल्लाह हैं, आप के सिवा कोई कोई माबूद नहीं है, आप तन्हा हैं, आप का कोई साझी (शरीक) नहीं और यह बात यक़ीनी है कि मुहम्मद (ﷺ) आप के बंदे और रसूल हैं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त चार मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला जहन्नम से उस को आज़ाद फ़रमा देते हैं।
(अबू दाऊदः4/318, बुख़ारी रक़म 1201)

(6) अपने लिए अल्लाह की नेमतों को मुकम्मल करवाने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَمْسَیْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِیَةٍ وَّ سِتْرٍ فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَكَ وَ عَافِیَتَكَ وَسِتْرَكَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ.

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! बेशक मैंने आप की तरफ़ से नेमत, आफ़ियत और पर्दा पोशी (गुनाहों से छुपा हुआ होने) की हालत में शाम की, लिहाज़ा आप मुझ पर अपने इन्आमऔर अपनी आफ़ियत और अपनी पर्दा पोशी (सत्तारी) दुनिया और आख़िरत में मुकम्मल फ़रमाइए।

फज़ीलत: जो शख़्स शाम के वक़्त तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस पर अपनी नेमत मुकम्मत कर देते हैं।
(अख़्रजहू इब्नुस्सुन्नी: 55)

(7) नेमतों की अदाएगीए शुक्र का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ مَا اَمْسٰی بِیْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो भी नेमत मेरे साथ या आप की मख़्लूक़ में से किसी के साथ शाम के वक़्त हासिल है, वह तन्हा आप ही की तरफ़ से है, उन में आप का कोई शरीक नहीं है, लिहाज़ा तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं और शुक्रगुज़ारी आप ही के लिए है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त एक मर्तबा पढ़ ले तो उस ने उस रात की नेमतों का शुक्र अदा कर लिया। (अबू दाऊदः4/318)

(8) क़ियामत के दिन बंदा को राज़ी किए जाने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर ख़ुश हूं।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यह दुआ शाम के वक़्त तीन मर्तबा पढ़ ले तो अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) उस को राज़ी कर देंगे।

(रवाहु तिर्मिज़ीः 3/141, अहमदः 4338)

(9) दुनिया व आख़िरत की भलाइयों का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ، اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

तर्जुमाः ऐ हमेशा हमेश ज़िन्दा रहने वाले! ऐ मख़्लूक़ात को क़ायम रखने

वाले! मैं आप से आप की रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करता हूं, आप मेरे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक बार आँख झपकने के बराबर मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यह दुआ एक मर्तबा पढ़ ले तो गोया उस ने दुनिया व आख़िरत की भलाइयां मांग ली।

(अख़्रजहुल हाकिम व सह्हहू व वाफ़िक़हुज़्ज़हबी, उन्ज़ुर सहीह अत्तरग़ीब वत्तरहीबः 1/283)

नोटः आप ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ताकीद और वसीयत की थी कि बेटी यह दुआ हमेशा पढ़ती रहना। (बैहक़ी, अन अनस रज़ि०)

(10) अचानक की आफ़तों से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ.

तर्जुमाः अल्लाह के नाम के साथ मैंने शाम की जिस के नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती ज़मीन में और न आसमान में औरवही ख़ूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को यह दुआ तीन बरतबा पढ़ ले तो उस की अचानक की आफ़तों से हिफ़ाज़त हो जाती है।

(अख़्रजहू अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व क़ाल हदीसुन हसनुन सहीहुन)

(11) बदन की आफ़ियत का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَدَنِیْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ فِیْ سَمْعِیْ،

اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَصَرِیْ، لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْـكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे बदन को दुरुस्त रखिए, ऐ अल्लाह! मेरे कान आफ़ियत से रखिए, ऐ अल्लाह! मेरी आँख आफ़ियत से रखिए, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, ऐ अल्लाह! मैं कुफ्र और मोहताजगी से आप की पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से मैं आप की पनाह मागंता हूं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

(अबू दाऊद, व उन्ज़ुर सहीह इब्ने माजाः 3/142)

फ़ायदाः अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि मज़कूरा दुआ जो पढ़ेगा, अल्लाह उसे हर लायन की आफ़ियत में रखेगा। हदीस की दुआ का तर्जुमा बहुत ग़ौर से पढ़िए।

(12) वसाविसे शैतान से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّ مَلِیْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَ مِنْ شَرِّ الشَّیْطَانِ وَ شِرْكِهٖ وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِیْ سُوْءًا اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले, हर चीज़ के परवरदिगार और हक़ीक़ी मालिक, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, मैं आप के ज़रिए मेरे नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से पनाह मांगता हूं और इस से पनाह मांगता हूं कि कोई बुराई करूं जिस का वबाल मेरे नफ़्स पर पड़े, या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचाऊँ।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त इस दुआ को पढ़ले वसाविसे शैतान से उसकी हिफ़ाज़त हो जाती है। (अबू दाऊदः सहीह तिर्मिज़ीः 3/142)

(13) जन्नत में दाख़िल होने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

नोटः बाज़ रिवायत में "अबूउ बिज़ंबी" भी आया है, मगर बंदे ने सहीह बुख़ारी की रिवायत नक़ल की है। (मुहम्मद यूनुस पालनपुरी)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُلَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَ اَبُوْءُلَكَ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही मेरे पालनहार हैं। आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, आप ही ने मुझे पैदा किया और मैं आप का हक़ीक़ी ग़ुलाम हूं, और जहां तक मेरे बस में है, मैं आप से किए हुए अहद और वादे

पर क़ायम हूं, आप की पनाह चाहता हूं उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं, मैं आप के सामने आप की उन नेमतों का इक़रार करता हूं जो मुझ पर हैं, और मुझे एतेराफ़ है अपने गुनाहों का, इस लिए मेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए क्योंकि आप के सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्शता।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स यक़ीन के साथ यह दुआ शाम के वक़्त पढ़ ले और उसी रात उसका इन्तिक़ाल हो जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा।
(बुख़ारीः 11/97, 98)

(14) हर क़िस्म की आफ़ियत का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

हुज़ूर ﷺ ने ज़िन्दगी भर यह दुआ कभी नहीं छोड़ी है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِىْ دِيْنِىْ وَدُنْيَاىَ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِىْ وَ اٰمِنْ رَوْعَاتِىْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِىْ مِنْ بَيْنِ يَدَىَّ وَمِنْ خَلْفِىْ وَعَنْ يَّمِيْنِىْ وَعَنْ شِمَالِىْ وَمِنْ فَوْقِىْ وَ اَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِىْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से आफ़ियत मांगता हूं दुनिया और आख़िरत में, ऐ अल्लाह! मैं आप से मआफ़ी और सलामती मांगता हूं मेरे दीन में

और मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में। ऐ अल्लाह! ढांप ले मेरे ऐब, और ख़ौफ़ की चीज़ों से मुझे बेफ़िक्र कर दे। ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से, और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूं उस से कि हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

नोटः दुआ का तर्जुमा ख़ूब ग़ौर से पढ़िए।

फ़ज़ीलतः हुज़ूर ﷺ ने ज़िन्दगी भर यह दुआ कभी भी नहीं छोड़ी है।

((अख़्रजहू अबू दाऊद, व उन्ज़ुर सहीह इब्ने माजाः 2/332)

(15) ज़वाले ग़म और अदाएगी क़र्ज़ का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ، وَ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं फ़िक्र और रंज से और मैं आप की पनाह मांगता हूं कम हिम्मती और सुस्ती से और मैं आप की पनाह मांगता हूं बुज़दिली और बख़ीली से और मैं आप की पनाह मांगता हूं क़र्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त यह दुआ पढ़ ले तो उसका ग़म दूर हो जाएगा और उसका क़र्ज़ अदा हो जाएगा।

नोटः लफ़्ज़ 'अल-हज़नि' और 'अल-हुज़नि' दोनों ही दुरुस्त हैं।

(अबू दाऊद)

(16) जहन्नम से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(मग़रिब की नमाज़ के बाद सात मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप मुझे जहन्नम की आग से बचा लीजिए।

फ़ज़ीलतः मग़रिब की नमाज़ के बाद किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा यह दुआ पढ़ ले, तो जहन्नम से महफ़ूज़ हो जाता है।

नोटः यह दुआ हुज़ूर ﷺ ने हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी रज़ि० को कान में सिखाई थी।

(व क़ाल अश्शौकानी फ़ी तोहफ़तुज़्ज़ाकिरीन अख़्रजहू अबू दाऊद व नसई व सह्हहू इब्ने हिब्बान)

(17) अल्लाह से उसकी शान के मुताबिक़ अज्र लेने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

يَا رَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْۢبَغِىْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِكَ.

तर्जुमाः ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ीक़ी तारीफ़ आप ही के लिए है, ऐसी तारीफ़ जो आप की ज़ात की बुज़ुर्गी और आप की अज़ीम सलतनत के लायक़ हो।

फ़ज़ीलतः जब कोई शख़्स यह दुआ पढ़ता है तो अल्लाह तआला अपनी शान के मुताबिक़ पढ़ने वाले को अज्र देगा।

(रवाहू अहमद व इब्ने माजा व रिजालुहू सिक़ातुन)

(18) हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं तमाम मख़लूक़ात की बुराई से।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले तो हर मूज़ी जानवर से हिफ़ाज़त हो जाती है और अगर जानवर डस भी ले तो उस से नुक़सान नहीं पहुंचता। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने माजाः 2/232)

(19) मुसीबतों से निजात हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

नोटः हज़रत मुहम्मद ﷺ ने ये दुआ अपनी बेटियों को सिखाई थी।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ
اَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ
يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ
الْعَظِيْمِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَّاَنَّ اللّٰهَ
قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا

اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही मेरे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, आप ही पर मैंने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताक़त अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला अज़मत वाला है, मैं यक़ीन करता हूं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह कि अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को मुहीत है। ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं मेरे नफ़्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज़े में है। बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को इस दुआ को पढ़ ले तो उसको सुबह तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी। (रवाहू इब्नुस्सुन्नी व अबू दाऊद अन बाज़ बनातुन्नबी ﷺ)

(20) अल्लाह से बख़्शिश तलब करने का नबवी नुस्ख़ा

(नीचे दी हुई दुआ मग़रिब की अज़ान के वक़्त एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِىْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! यह आप की रात के आने और दिन के जाने और आप की तरफ़ बुलाने वालों की आवाज़ों का वक़्त है, इस लिए मुझे बख़्श दीजिए। (अबू दाऊदः 1/199)

(21) यह दुआ एक बार ख़ुद भी पढ़िए, अपने बीवी बच्चों और अहले ख़ाना से भी पढ़वाइए

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَاخَلَقَ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْاَ مَاخَلَقَ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا فِي الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْاَ مَافِي الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰى كِتَابُهٗ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْاَ مَا اَحْصٰى كِتَابُهٗ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْاَ كُلِّ شَيْءٍ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْاَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِي الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْاَ مَا فِي الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰى كِتَابُهٗ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مَلْاَ مَا اَحْصٰى كِتَابُهٗ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْاَ كُلِّ شَيْءٍ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लायक़ उस की तमाम मख़्लूक़ की गिनती के बराबर। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लायक़ तमाम मख़्लूक़ात को भरने के बराबर, मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब उन तमाम

चीज़ों के बराबर जो ज़मीन व आसमान में हैं। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब उन तमाम चीज़ों को भर कर जो ज़मीन व आसमान में हैं। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उन की गिनती के बराबर जिन को अल्लाह की किताब ने घेरा है। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के लायक़ हर चीज़ की गिनती के बराबर। मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूं उसकी शान के मुनासिब हर चीज़ को भर कर हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए ख़ास है उसकी मख़्लूक़ात की गिनती के बराबर और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए मख़्सूस है उसकी मख़्लूक़ात को भर कर और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए मुख़्तस है उन तमाम चीज़ों को भर कर जो ज़मीन व आसमान में हैं और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए ख़ास है उन की गिनती के बराबर जिन को अल्लाह की किताब ने घेरा है और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए मख़्सूस है इन चीज़ों को भर कर जिन को अल्लाह की किताब ने घेरा है, और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए ख़ास है हर चीज़ की गिनती के बराबर, और हक़ीक़ी तारीफ़ अल्लाह के लिए मुख़्तस है हर चीज़ को भर कर।

फ़ज़ीलतः हज़रत अबू उमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर ﷺ ने देखा कि मैं अपने होंठों को हिला रहा हूं, आप ﷺ ने पूछाः ऐ अबू उमामा! तुम होंठ हिला कर क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहाः या रसूलुल्लाह! मैं अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूं। हुज़ूर अक़दस ﷺ ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें ऐसा ज़िक्र न बताऊँ जो तुम्हारे दिन रात ज़िक्र करने से ज़्यादा भी है और अफ़ज़ल भी है, मैंने अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! ज़रूर बताएं, फ़रमायाः तुम यह मज़कूरा कलिमात कहा करो।

"तबरानी" की रिवायत में है कि हुज़ूर अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः इन कलिमात को सीख लो और अपने बाद अपनी औलाद को सिखाओ। (बिखरे मोतीः जिल्द 2 पेज 78, पेज 79)

(22) ज़िक्र के मामूलात की कमी की तलाफ़ी का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ
تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَ كَذٰلِكَ
تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ [سورۂ روم]

तर्जुमाः पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो﴾17﴿ और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए हम्द है और शाम के पहर में और जब तुम ज़ुहर करते हो﴾18﴿ वह ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है और वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे﴾19﴿

फ़ज़ीलतः एक मर्तबा शाम में पढ़ने से ज़िक्र के मामूल में कमी की तलाफ़ी हो जाती है। (अबू दाऊद)

मुसनद की हदीस में है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम ख़लील वफ़ादार क्यों रखा? इस लिए कि वह सुबह व शाम इन कलिमात को "तुज़हिरून" तक पढ़ा करते थे। (इब्ने कसीरः जिल्द 4 पेज 166)

(23) 70 हज़ार फ़रिश्तों की दुआओं के मुस्तहिक़ बनने का और वफ़ात पर शहादत का अज्र मिलने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो ख़ूब सुनने वाला है, बड़ा जानने वाला है मरदूद शैतान से।

सूरह हश्र (एक मर्तबा पढ़ लीजिए) :

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۗ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

तर्जुमाः वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है ﴿22﴾ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोर आवर, अज़मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं ﴿23﴾

वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वजूद में लाने वाला, सूरत बनाने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम, हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसी की तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (24)

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम को "अऊज़ु बिल्लाहिस्समीइल अ़लीम मिनश्शैतानिर्रजीम" तीन मर्तबा पढ़ कर मज़कूरा आयतें एक मर्तबा पढ़ ले तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआए रहमत करते हैं और उस दिन मरने पर शहादत का अज्र मिलता है। (तिर्मिज़ी)

(24) सारे मुतालिबों के पूरा होने का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنْتَ تَهْدِيْنِىْ وَاَنْتَ تُطْعِمُنِىْ
وَاَنْتَ تَسْقِيْنِىْ وَاَنْتَ تُمِيْتُنِىْ وَاَنْتَ تُحْيِيْنِىْ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं और आप ही मुझे खिलाते हैं और आप ही मुझे पिलाते हैं और आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे।

फ़ज़ीलतः हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत समुरा बिन जुंदुब रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊँ जो मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि० से भी कई मर्तबा सुनी है? मैंने अर्ज़ किया: ज़रूर सुनाएं। हज़रत समुरा रज़ि० ने फ़रमायाः जो शख़्स सुबह और शाम इन कलिमात को पढ़े तो अल्लाह तआला से जो मांगेगा अल्लाह तआला ज़रूर उसको अता फ़रमाएंगे। (बिखरे मोतीः जिल्द 1, पेज 144, 145)

(25) जिन्नात की शरारत से बचने के लिए नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَاَ فِي الْاَرْضِ وَشَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّارَحْمٰنُ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की करीम ज़ात की और अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं जिन कलिमात से आगे नहीं बढ़ता कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान से उतरती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान में चढ़ती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन में फैली हैं, और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं, और रात और दिन के फ़ित्नों से और रात और दिन में खटखटाने वालों से, मगर वह खटखटाने वाला जो ख़ैर के साथ खटखटाता हो, ऐ बेहद मेहरबान!।

फ़ज़ीलतः इस दुआ को पढ़ने की वजह से रसूलुल्लाह ﷺ को तकलीफ़ पहुंचाने की नीयत से आने वाला जिन्न मुंह के बल गिर पड़ा। (मुअत्ता इमाम मालिक)

(26) आसेब व सेहर वग़ैरा से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ.

तर्जुमाः अल्लाह के लिए हम ने शाम की और पूरी सलतनत ने शाम की, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए है, पनाह लेता हूं अल्लाह की जिस ने आसमान को रोके रखा कि वह ज़मीन पर गिरे मगर उसकी एजाज़त से मख़्लूक़ की बुराई से और जो फैली है और शैतान के शर और उसके शिर्क से।

फ़ज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ि० से आप ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम ने इस (मज़कूरा) दुआ को तीन मर्तबा शाम के वक़्त पढ़ लिया तो सुबह तक शैतान, काहिन और जादूगर के ज़रर और नुक़्सान से महफ़ूज़ रहोगे। (अद्दुआः 954, इब्नुस्सुन्नीः 66, मजमउज़्ज़वाइदः 1/119)

(27) जादू से हिफ़ाज़त का अहम नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ وَّ بِاَسْمَاءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا

وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह मांगता हूं कि जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है, (और पनाह मांगता हूं) अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स, (और मैं पनाह मांगता हूं) अल्लाह के तमाम अच्छे नामों की जो मुझे मालूम हैं और जो मुझे मालूम नहीं हैं उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फैलाई।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स शाम के वक़्त एक मर्तबा दुआ पढ़ ले इन्शा अल्लाह जादू से हिफ़ाज़त में रहेगा। हज़रत काब अहबार रह० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद मुझे जादू के ज़ोर से गधा बना देते। (मुअत्ता इमाम मालिक रह०)

(28) हर बला से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

आयतुल कुर्सी पढ़ कर फिर सूरह मोमिन की नीचे वाली तीन आयतें शाम के वक़्त पढ़ लीजिए।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे, उस की हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है, वह थकता नहीं है उनके थामने से, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला﴾255﴿

सूरह मोमिन की इब्तिदाई तीन आयतें

(एक बार पढ़ लीजिए)

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِى

الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

तर्जुमाः हा-मीम﴾1﴿ यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से, जो ज़बरदस्त है, जानने वाला है﴾2﴿ गुनाहों को मुआफ़ करने वाला और तोबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है, बड़ी कुदरत वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौटना है﴾3﴿

फ़ज़ीलतः जो शख़्स "आयतुल कुर्सी" पढ़ कर फिर "सूरह मोमिन" की

मज़कूरा तीन आयतें शाम के वक़्त पढ़ ले वह उस रात हर बुराई और तकलीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा। (मुस्नद बज्जार अन अबी हुरैरा रज़ि० व रवाहू तिर्मिज़ी)

(29) जिन्नात की शरारत से बचने का एक और नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

(सूरह मोमिनून आयत 115 से 118)

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا
تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ
لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا
يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ
خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

तर्जुमाः पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हम ने तुम को बेमक़सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे (115) पस बहुत बरतर है अल्लाह जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मालिक है अर्शे अज़ीम का (116) और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे जिस के हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं तो उस का हिसाब उसके रब के पास है, बेशक मुंकिरों को कामयाबी नहीं मिलेगी (117) और कह दीजिए कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए, आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं (118)

फ़ज़ीलतः इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के पास आया तो आप रज़ि० ने मज़कूरा आयत पढ़ कर उस के कान में दम किया, वह अच्छा हो गया, जब नबी करीम ﷺ से इसका ज़िक्र किया, तो आप ﷺ ने फ़रमायाः ऐ अब्दुल्लाह! तुम ने उसके कान में क्या पढ़ा था? आप रज़ि० ने बतला दिया तो हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः तुम ने ये आयतें उसके कान में पढ़ कर उसे जला दिया, अल्लाह की क़सम इन आयतों को अगर कोई बा ईमान शख़्स बिलयक़ीन किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाए।

अबू नईम ने रिवायत नक़ल की है कि हमें रसूल करीम ﷺ ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुबह व शाम मज़कूरा आयतें तिलावत फ़रमाते रहें, तो हम ने बराबर इस की तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी। अल्हम्दु लिल्लाह! हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे। (तफ़सीर इब्ने कसीरः 3/474, बिखरे मोतीः 1/150)

(30) जब किसी ख़बर का इन्तिज़ार हो

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فُجَاءَةِ الْخَيْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فُجَاءَةِ الشَّرِّ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से अचानक की भलाई का सवाल करता हूं और अचानक की बुराई से आप की पनाह मांगता हूं।

फ़ज़ीलतः हदीस में है कि हुज़ूर ﷺ शाम के वक़्त यह दुआ किया करते थे। लिहाज़ा जब किसी मुआमले में कोई ख़बर मिलने वाली हो या

कोई नया वाक़िआ पेश आने वाला हो तो यही दुआ पढ़े।
(किताबुल अज़कार, पेज: 104)

(31) रात की ख़ैर की तलब और शर से हिफ़ाज़त का नबवी नुस्ख़ा

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَتْحَهَا وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا.

तर्जुमाः हमारी शाम हो गई और अल्लाह रब्बुल आलमीन के मुल्क की शाम हो गई, ऐ अल्लाह! मैं आप से इस रात की भलाई और उसकी फ़तह और कामयाबी और नूर और उसकी बरकत और उसकी हिदायत मांगता हूं और उस के बाद के शर से आप की पनाह मांगता हूं।
(हिस्ने हसीनः पुर नूर दुआ पेजः 32)

(32) दीने इस्लाम पर अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले कलिमात

(एक बार पढ़ लीजिए)

اَمْسَيْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَ كَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَ عَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

तर्जुमाः हम ने शाम की फ़ितरत इस्लाम पर और अपने महबूब नबी ﷺ के दीन पर और अपने जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत पर जो मुवह्हिद और मुसलमान थे और मुश्रिकों में से न थे।
(हिस्ने हसीनः पेज 70)

(33) मंज़िल के ख़्वास

मंज़िल आसेब, सेहर और बाज़ दूसरे ख़तरात से हिफ़ाज़त के लिए एक मुजर्रब [तजुर्बा वाला] अमल है।

अल-क़ौलुल जमील में हज़रत शाह वलिउल्लाह क़ुद्दिस सिर्रहू तहरीर फ़रमाते है। कि यह 33 आयात हैं, जो जादू के असर को दफ़ा करती हैं और शयातीन, चोरों और दरिन्दे जानवरों से पनाह हो जाती है।

बहिश्ती ज़ेवर में हज़रत थानवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू तहरीर फ़रमाते हैं, अगर किसी पर आसेब का शुबा हो तो आयाते ज़ैल लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिड़क दें और अगर घर में असर हो तो पानी पर इन आयात (मंज़िल) को पढ़ कर घर के चारों गोशों में छिड़क दें।

हिस्ने हसीन में है कि जो शख़्स सूरह काफ़िरून, सूरह नस्र, सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास बिस्मिल्लाह से शुरु करे और बिस्मिल्लाह पर ख़त्म करे। यानी सूरह नास के बाद बिस्मिल्लाह पढ़े तो उस शख़्स के कारोबार और सफ़र में आसानियां पैदा होती हैं और वह ख़ुशहाल हो जाता है। (अबू याला, अन ज़ुबैर, ब-हवाला हिस्ने हसीन)

मंज़िल

(सुबह शाम एक एक मर्तबा मंज़िल पढ़ लीजिए)

मंज़िल का तर्जुमा रियाज़ुल कुरआन से लिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝۲
مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝۳ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ۝۴
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۝۵ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَیْهِمْ ۙ۬ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ۝۷

तर्जुमाः सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहान का मालिक है﴾1﴿ बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला है﴾2﴿ इन्साफ़ के दिन का मालिक है﴾3﴿ हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं﴾4﴿ हम को सीधा रास्ता दिखा﴾5﴿ उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फ़ज़ल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए﴾7﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الٓمّٓ ۝۱ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛۚ فِیْهِ ۚ هُدًی لِّلْمُتَّقِیْنَ ۝۲

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳ وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ
يُوْقِنُوْنَ ۝۴ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۵

तर्जुमाः अलिफ़ लाम मीम (1) ये अल्लाह की किताब है इस में कोई शक नहीं, राह दिखाती है डर रखने वालों को (2) जो यक़ीन करते हैं बिन देखे, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उस में से ख़र्च करते हैं (3) और जो उस (वह्ई) पर भी ईमान लाते हैं जो आप पर उतारी गई और उस पर भी जो आप से पहले उतारी गई और आख़िरत पर वह मुकम्मल यक़ीन रखते हैं (4) उन्हें लोंगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहंुचने वाले हैं (5)

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝۱۶۳

तर्जुमाः और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है (163)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا
نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ

يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ
وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۲۵۵﴾ لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ۫ قَدْ تَّبَيَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ
لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ۬ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا
اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى
الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते, मगर वह जो चाहे, उस की हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छाई

हुई है, वह थकता नहीं है उनके थामने से, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला,
अज़मत वाला ﴿255﴾ दीन के मुआमले में कोई ज़बरदस्ती नहीं, हिदायत
गुमराही से अलग हो चुकी है, पस जो शख़्स शैतान का इंकार करे और
अल्लाह पर ईमान लाए उस ने मज़बूत हलक़ा पकड़ लिया जो टूटने वाला
नहीं, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है ﴿256﴾ अल्लाह काम
बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन को अंधेरों से निकाल कर उजाले
की तरफ़ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं,
वह उन को उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं, यह आग में
जाने वाले लोग हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे ﴿257﴾

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ
اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝۲۸۴ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۫
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝۲۸۵ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ
نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا
اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ

رَبَّنَا وَ لَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَاۤ اِصۡرًا كَمَا حَمَلۡتَهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ
مِنۡ قَبۡلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ
اعۡفُ عَنَّا ٚ وَ اغۡفِرۡ لَنَا ٚ وَ ارۡحَمۡنَا ٚ اَنۡتَ مَوۡلٰنَا
فَانۡصُرۡنَا عَلَى الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲۸۶﴾

तर्जुमाः अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है,तुम अपने दिल की बातों को ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा, फिर जिस को चाहेगा बख़्शेगा और जिस को चाहेगा सज़ा देगा और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है (284) रसूल ईमान लाए हैं उस पर जो उनके रब की तरफ़ से उन पर उतरा है और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं, सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और वो कहते हैं कि हम ने सुना और माना, हम आप की बख़्शिश चाहते हैं, ऐ हमारे रब! और आप ही की तरफ़ लौटना है (285) अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़ ही, उसको मिलेगा वही जो उस ने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उस ने किया, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें न पकडें अगर हम भूल जाएं या ग़लती कर जाएं, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डालिए जिस तरह आप ने बोझ डाला था हम से अगले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से वो न उठवाइए जिस की ताक़त हम को नहीं है, और दरगुज़र फ़रमाइए हम से, और हम को बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं, पस इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए (286)

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ
قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

तर्जुमाः अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले इल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह क़ायम रखने वाला है इन्साफ़ का, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है﴿18﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ
تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ
مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ
وَ تُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ
وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

तर्जुमाः (ऐ नबी!) आप कहिए कि ऐ अल्लाह! आप सलतनत के मालिक हैं, आप जिसे चाहें सलतन से नवाज़ें और जिस से चाहें सलतनत छीन लें और आप जिसे चाहें इज़्ज़त दें और जिसे चाहें ज़लील कर दें, आप ही के हाथ में हैं सब ख़ूबी, बेशक आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं﴿26﴾ आप ही रात को दिन में दाख़िल करते हैं और दिन को रात में दाखिल करते हैं, और आप ही बेजान से जानदार को पैदा करते हैं और जानदार से बेजान को

निकालते हैं, और आप जिसे चाहते हैं बेहिसाब रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं﴿27﴾

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرٰتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبٰرَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۗ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

तर्जुमाः बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, वह ओढ़ाता है रात को दिन पर इस तरह कि दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ, और (उस ने पैदा किए) सूरज और चाँद और सितारे जो ताबे दार हैं उसके हुक्म के, याद रखो उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहानों का﴿54﴾ अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता﴿55﴾ और ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह

के बाद और उसी को पुकारो ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ, यक़ीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से क़रीब है﴿56﴾

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ
الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ
بِهَا وَ ابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

तर्जुमाः कहिए कि चाहे अल्लाह कह कर पुकारो या फिर रहमान कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो उस के लिए सब अच्छे नाम हैं, और आप अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ें और न बिल्कुल चुपके चुपके पढ़ें और दोनों के दरमियान का तरीक़ा इख़्तियार करें﴿110﴾ और कहिए कि तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है और आप उसकी ख़ूब बड़ाई बयान कीजिए﴿111﴾

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا
تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ

لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا
يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ
خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

तर्जुमाः पस क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि हम ने तुम को बेमक़सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे﴾115﴿ पस बहुत बरतर है अल्लाह जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मालिक है अर्शे अज़ीम का﴾116﴿ और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे जिस के हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं तो उसका हिसाब उस के रब के पास है, बेशक मुंकिरों को कामयाबी नहीं मिलेगी﴾117﴿ और कह दीजिए कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए, और आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं﴾118﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَ الصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالتّٰلِيٰتِ
ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
وَ مَا بَيْنَهُمَا وَ رَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ
الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۣالْكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَ حِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ
مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَ يُقْذَفُوْنَ مِنْ

كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُوْرًا وَّ لَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾ اِلَّا مَنْ
خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ
اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ
طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾

तर्जुमाः क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बांधने वाले फ़रिश्तों की﴾1﴿ फिर डांटने वालों की झिड़क कर﴾2﴿ फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं ﴾3﴿ कि तुम्हारा माबूद एक ही है﴾4﴿ आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है और सारे मशरिक़ों का रब﴾5﴿ हम ने आसमाने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से सजाया है﴾6﴿ और हर सरकश शैतान से उस को महफ़ूज़ किया है﴾7﴿ वह मल-ए-आला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते और वह हर तरफ़ से मारे जाते हैं﴾8﴿ भगाने के लिए, और उन के लिए एक दाइमी अज़ाब है﴾9﴿ मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है﴾10﴿ पस उन से पूछिए कि उन की पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या उन चीज़ों की जो हम ने पैदा की हैं? हम ने उनको चिपकती मिट्टी से पैदा किया है﴾11﴿

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا
مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ
اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ
عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٦ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝٣٧ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝٣٨ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّ لَا
جَآنٌّ ۝٣٩ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٠

तर्जुमाः ऐ जिन्नात और इन्सान के गिरोह ! अगर तुम से हो सके कि तुम आसमानों और ज़मीन की हुदूद से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के﴾33﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾34﴿ तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुआँ तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे। फिर जब आसमान फट कर खाल की मानिन्द सुर्ख़ हो जाएगा ﴾35﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे ﴾36﴿ पस उस दिन किसी इन्सान या जिन्न से उसके गुनाह के बारे में पूछ न होगी﴾37﴿ फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे﴾38﴿

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا
مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝٢٢

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ
اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ
لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾

तर्जुमाः अगर हम इस कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो आप देखते कि वह अल्लाह के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह सोचें﴾21﴿ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है﴾22﴿ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोर आवर, अज़मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं﴾23﴿ वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वजूद में लाने वाला, सूरत बनाने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम, हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसी की तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है﴾24﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْۤا اِنَّا
سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿۱﴾ یَّهْدِیْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ

لَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّ اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا
اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّ اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا
عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝

तर्जुमाः कह दीजिए कि मुझे वह्ई की गई है कि जिन्नात की एक जमात ने ग़ौर से कुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हम ने एक अजीब कुरआन सुना है{1} जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए, और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे{2} और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलंद है, उस ने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद{3} और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े हक़ बातें कहता था{4}

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا
عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ
دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

तर्जुमाः आप कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो!{1} न मैं इबादत करता हूं उस की जिस की तुम इबादत करते हो{2} और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूं{3} और न मैं इबादत करूंगा

(उसकी) जिस की तुम इबादत करते हो﴿4﴾ और न तुम उस की इबादत करने वाले हो जिस की मैं इबादत कर रहा हूं﴿5﴾ तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन﴿6﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

तर्जुमाः (ऐ प्यारे नबी) जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह आ जाएगी﴿1﴾ और आप लोगों को देखेंगे कि वह अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो रहे हैं﴿2﴾ तो आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और उस से बख़्शिश मांगिए, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है﴿3﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ۬ وَ لَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है ﴿1﴾ वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है﴿2﴾ न किसी का बाप है और न किसी का बेटा﴿3﴾ और न उसके बराबर कोई है﴿4﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنْ
شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾
وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

तर्जुमा: कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं﴾1﴿ उस की मख़्लूक़ के शर से﴾2﴿ और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए﴾3﴿ और गिरहों में दम करने वालियों के शर से﴾4﴿ और हसद करने वाले के शर से जब हसद करे﴾5﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ
النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ
يُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

तर्जुमा: कह दीजिए कि मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की﴾1﴿ लोगों के बादशाह की﴾2﴿ लोगों के माबूद की﴾3﴿ उसके शर से जो वस्वसा डाले और छुप जाए﴾4﴿ जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है﴾5﴿ जिन्नात में से और इन्सान में से﴾6﴿

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है﴾0﴿

(34) सौ मर्तबा तीसरा कलिमा पढ़ लीजिए

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

तर्जुमाः अल्लाह की ज़ात पाक है और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, और नेक काम करने की क़ुदरत और गुनाहों से बचने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ़ से अता हुई हे, जो बहुत बुलन्द बड़ा अज़मत वाला है।

फ़ज़ीलतः हुज़ूर अक़्दस ﷺ का इरशाद है कि शबे मेराज में जब मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई तो उन्होंने फ़रमाया कि अपनी उम्मत को मेरा सलाम कह देना और यह कहना कि जन्नत की निहायत उमदा पाकीज़ा मिट्टी है और बेहतरीन पानी है, लेकिन वह बिल्कुल चटयल मैदान है और उसके पौदे तो सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर हैं।

(35) सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ लीजिए

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَ

اَتُوْبُ اِلَيْهِ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह तआला से गुनाहों की बख़्शिश चाहता हूं, जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, जो हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और ख़ूब थामने वाला है। और उसी से तौबा करता हूं।

फ़ज़ीलतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि

रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स पाबंदी से इस्तिग़फ़ार करता रहता है। अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से रास्ता बना देते हैं, हर ग़म से उसे निजात अता फ़रमाते हैं, और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अता फ़रमाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। एक दूसरी हदीस में है कि ख़ुशख़बरी है उस शख़्स के लिए जो अपने आमाल नामे में (क़ियामत के दिन) ज़्यादा इस्तिग़फ़ार पाए।

या اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ भी पढ़ सकते हैं।

(36) सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए

बेहतर यह है कि पढ़ा जाने वाला दुरूद "दुरूदे इब्राहीमी" हो, जो नमाज़ में पढ़ा जाता है लेकिन अगर मुख़्तसर दुरूद पढ़ना है तो मुंन्दरजा ज़ेल दुरूद पढ़ लीजिए, वह यह है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۣالنَّبِیِّ الْاُمِّیِّ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُومٍ لَّكَ، عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! दुरूद नाज़िल फ़रमा नबी उम्मी सय्यदना मुहम्मद (ﷺ) पर अपनी मालूमात की तादाद के बराबर और मौजूदात के बराबर।

(37) सारी परेशानियां दूर करने का मुजर्रब इलाज

मुन्जियात (एक बार पढ़ लीजिए)

﴿۱﴾ قُلْ لَّنْ یُّصِیْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ [سورۂ توبہ]

1. तर्जुमाः कह दीजिए कि हमें सिर्फ़ वही चीज़ पहूंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है, वह हमारा सारसाज़ है और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

﴿٢﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَ
اِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ [سورۂ یونس]

2. तर्जुमाः और अगर अल्लाह तुम को किसी तकलीफ़ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसको दूर कर सके, और अगर वह तुम को कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उस के फ़ज़ल को कोई रोकने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़ल अपने बंदों में से जिस को चाहता है देता है, और वह बख़्शने वाला, मेहरबान है।

﴿٣﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَ
يَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾
[سورۂ ھود]

3. तर्जुमाः और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो, और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सोंपा जाता है, सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है।

﴿٤﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا

هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۶﴾

[سورۂ ہود]

4. तर्जुमाः मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा भी रहब है और तुम्हारा भी रब है, कोई जानदार ऐसा नहीं जिस की पेशानी उसके हाथ में न हो, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है।

﴿۵﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَ

اِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۰﴾ [سورۂ عنکبوت]

5. तर्जुमाः और कितने जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते, अल्लाह उन को रिज़्क़ देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला, जानने वाला है।

﴿۶﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ

وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ [سورۂ فاطر]

6. तर्जुमाः अल्लाह कोई रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उस का रोकने वाला नहीं, और जिस को वह रोक ले तो कोई उस को खोलने वाला नहीं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿۷﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ [سورۂ زمر]

7. तर्जुमाः और अगर आप उन से पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किस ने पैदा किया तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने, कह दीजिएः तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन को पुकारते हो अगर अल्लाह मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या यह उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं? कह दीजिए कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

(38) आयाते सकीना

दिल व दिमाग़ के सुकून के लिए एक मर्तबा पढ़ कर दम करें।

﴿١﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ
مُوْسٰى وَ اٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ [سورۂ بقرہ]

1. तर्जुमाः और उन के नबी ने उन से कहाः उस (तालूत) के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे लिए तसकीन (का सामान) है और आले मूसा और आले हारून की छोड़ी हुई यादगारें हैं, उस (सन्दूक़) को फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे, इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो।

﴿٢﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ [سورۂ توبہ]

2. तर्जुमाः उस के बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन को तुम ने नहीं देखा और अल्लाह ने काफ़िरों को सज़ा दी और यही काफ़िरों का बदला है।

﴿٣﴾ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَ اَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَ جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَ كَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾ [سورۂ توبہ]

3. तर्जुमाः पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम को नज़र न आते थे और अल्लाह ने काफ़िरों की बात नीची कर दी, और अल्लाह की बात तो ऊँची है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

﴿٤﴾ هُوَالَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ

لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٤

4. तर्जुमाः वही है जिस ने मोमिनून के दिलों में इतमीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उन का ईमान और बढ़ जाए, और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है।

﴿٥﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ
تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ
السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝١٨ [سورۂ فتح]

5. तर्जुमाः यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया जब कि वह आप से दरख़्त के नीचे बैअत कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उन के दिलों में था, पस उस ने उन पर सकीनत नाज़िल फ़रमाई और उनको इन्आम में एक क़रीबी फ़तह दे दी।

﴿٦﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ
حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ
بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٢٦ [سورۂ فتح]

6. तर्जुमाः जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की ठान ली, वह भी जाहिलियत की ज़िद, तो अल्लाह ने अपनी सकीनत उतारी अपने रसूल पर और ईमान वालों पर और उस ने तक़्वे का कलिमा उन से चिपका दिया और वही उसके ज़्यादा मुस्तहिक़ और उस के अहल थे और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है।

(39) हर क़िस्म की बीमारी, मुसीबत, तिजारती क़र्ज़, दुश्मनों से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

हर क़िस्म की बीमारी, मुसीबत, तिजारती क़र्ज़, दुश्मनों से बचाव और हिफ़ाज़त के लिए यह आयात शाम में पढ़ी जाएं, तो अल्लाह तआला के चाहने से कभी कभी सुबह तक नतीजा सामने आ जाता है और कभी अल्लाह के चाहने से थोड़ा इन्तिज़ार करना पड़ सकता है, लेकिन यह आयात अल्हम्दु लिल्लाह अपने वक़्त पर असर दिखा कर रहती हैं।

नोटः दुआ के वक़्त सिर्फ़ आयात ही पढ़ें, तर्जुमा इस लिए लिखा गया है कि पढ़ने वाला यह समझ सके कि क्या कुछ पढ़ रहा है।

आयाते हिफ़ाज़त :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

﴿١﴾ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ [سورۂ بقرہ]

1. तर्जुमाः और इस पर भारी नहीं है ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त करना, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मतों वाला।

﴿٢﴾ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾
[سورۂ یوسف]

2. तर्जुमाः पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

﴿٣﴾ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿٧﴾ [سورۂ صٰفّٰت]

3. तर्जुमाः और हर सरकश शैतान से महफ़ूज़ किया है।

﴿٤﴾ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾
[سورۂ حمٓ سجدہ]

4. तर्जुमाः और इसको महफ़ूज़ कर दिया यह अज़ीज़ व अलीम की मनसूबा बंदी है।

﴿٥﴾ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ [سورۂ حجر]

5. तर्जुमाः और हम ने इस को हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ किया।

﴿٦﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ [سورۂ طارق]

6. तर्जुमाः कोई जान ऐसी नहीं कि जिस के ऊपर निगहबान न हो।

﴿٧﴾ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾
[سورۂ بروج]

7. तर्जुमाः बल्कि यह तो वह कुरआन है जो बड़ी शान वाला है जैसा लौहे महफ़ूज़ में था वैसा ही यहां आया है।

﴿٨﴾ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ط [سورۂ انعام:٦١]

8. तर्जुमाः और वह तुम्हारे ऊपर निगरां भेजता है।

﴿٩﴾ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾ [سورۂ هود]

9. तर्जुमाः बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है।

﴿١٠﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ط [سورۂ رعد:١١]

10. तर्जुमाः हर शख़्स के आगे और पीछे उसके निगरां हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देख भाल कर रहे हैं।

﴿١١﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾ [سورۂ حجر]

11. तर्जुमाः हम ने इस कुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इस के लिए मुहाफ़िज़ हैं।

﴿١٢﴾ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ [سورۂ انبياء]

12. तर्जुमाः और हम उनको संभालने वाले थे।

﴾١٣﴿ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ [سورۂ سبا]

13. तर्जुमाः और आप का रब हर चीज़ पर निगरान है।

﴾١٤﴿ اَللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦﴾

[سورۂ شوریٰ]

14. तर्जुमाः अल्लाह उन के ऊपर निगहबान है, और आप उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं।

﴾١٥﴿ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ [سورۂ ق]

15. तर्जुमाः हमारे पास कताब है जिस में सब कुछ महफ़ूज़ है।

﴾١٦﴿ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ [سورۂ انفطار]

16. तर्जुमाः हालांकि तुम पर निगरान (फ़रिश्ते) मुक़र्रर हैं।

(40) आयाते शिफ़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

आयाते शिफ़ा पानी पर दम करके पीजिए पिलाइए और अपने पर दम भी कीजिए मुकम्मल सूरह फ़ातिहा "बिस्मिल्लाह" के साथ पढ़ें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ مٰلِكِ

يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ
عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

तर्जुमाः सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहान का मालिक है {1} बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला है {2} इन्साफ़ के दिन का मालिक है {3} हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं {4} हम को सीधा रास्ता दिखा {5} उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फ़ज़्ल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए {7}

﴿١﴾ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ [سورۃ توبہ]

1. तर्जुमाः और मुसलमान लोगों के सीनों को ठंडा करेगा।

﴿٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ
شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾
[سورۃ یونس]

2. तर्जुमाः ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उस के लिए शिफ़ा जो सीनों में होती है और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत।

(٣) يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ [سورۂ نحل:٦٩]

3. तर्जुमाः उस (शहद की मक्खी) के पेट से पीने की चीज़ निकलती है उसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इस में लोगों के लिए शिफ़ा है।

(٤) وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ. [سورۂ بنی اسرائیل:٨٢]

4. तर्जुमाः और हम कुरआन में से उतारते हैं जिस में शिफ़ा और रहमत है ईमान वालों के लिए।

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿۸۰﴾ [سورۂ شعراء]

5. तर्जुमाः और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझ को शिफ़ा देता है।

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ ؕ [سورۂ حم سجدہ: ٤٤]

6. तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफ़ा है।

(41) आयाते सलाम

सलामती के लिए यह आयात पढ़ना बहुत ही मुजर्रब है।

तमाम ज़मीनी व आसमानी आफतों से बचने के लिए पांचों नमाज़ों के बाद इन आयाते सलाम को एक बार पढ़ कर दम कर लिया करें :

سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ [سورۂ نمل:۵۹]

1. तर्जुमाः सलाम उसके उन बंदों पर जिन को उस ने चुन लिया।

سَلٰمٌ ۟ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾ [سورۂ یٰس]

2. तर्जुमाः उन को सलाम कहलाया जाएगा मेहरबान रब की तरफ़ से।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۹﴾ [سورۂ صٰفٰت]

3. तर्जुमाः सलाम है नूह (अलैहिस्सलाम) पर तमाम दुनिया वालोंमें।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾ [سورۂ صٰفٰت]

4. तर्जुमाः सलामती हो इब्राहीम (अलैहिस्सालम) पर।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ [سورۂ صٰفٰت]

5. तर्जुमाः सलामती हो मूसा और हारून (अलैहस्सलाम) पर।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ [سورۂ صٰفٰت]

6. तर्जुमाः सलामती हो इलयास (अलैहिस्सालम) पर।

سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ طِبۡتُمۡ فَادۡخُلُوۡهَا خٰلِدِيۡنَ ﴿٧٣﴾ [سورۂ زمر]

7. तर्जुमाः सलाम हो तुम पर, ख़ुश हाल रहो, पस इस में दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए।

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ﴿٥﴾ [سورۂ قدر]

8. तर्जुमाः यह रात सरासर सलामती की होती है और फ़जर के तुलूअ होने तक (रहती है)।

(42) आयते तौहीद

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

तौहीद ही दीन की बुनियाद और जड़ है, इसलिए जितना इस में दिल लगी और वाबस्तगी होगी दीन में मज़बूती पैदा होगी, इसी लिए अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में तौहीद के मज़मून को बार बार मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ज़िक्र फ़रमाया है, लिहाज़ा इन आयात को और इन के तर्जुमे को बहुत ध्यान से पढ़िए कि तौहीद दिल की गहराइयों में उतर जाए और अंदुरूने दिल में पुख़्ता होजाए और दिल में अल्लाह के सिवा कोई जगह बाक़ी न रहे। आयाते करीमा में जहां अल्लाह तआला की तौहीद का बयान है, उस हिस्से पर लकीर के ज़रीए निशानदेही की गई है।

नोटः एक से चालीस आयाते तौहीद सुबह के अज़कार में मज़कूर हैं।

﴿٤١﴾ اَمِ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ قُلۡ هَاتُوۡا

بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾
[سورۂ انبیاء]

(41) तर्जुमाः क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा और माबूद बनाए हैं? उन से कह दीजिए कि तुम अपनी दलील लाओ, यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझ से पहले हुए, बल्कि उन में से अकसर हक़ को नहीं जानते। पस वह मुंह मोड़ रहे हैं।

﴿۴۲﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ
اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿۲۵﴾ [سورۂ انبیاء]

(42) तर्जुमाः और हम ने आप से पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिस की तरफ़ हम ने यह वह्ई न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो।

﴿۴۳﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَ لَا هُمْ مِّنَّا
يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾ [سورۂ انبیاء]

(43) तर्जुमाः क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद हैं जो उन को बचा लेते हैं, वह ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की क़ुदरत नहीं रखते और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है।

﴿٤٤﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ
شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ [سورۂ انبیاء]

(44) तर्जुमाः इब्राहीम ने कहाः क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुम को न फ़ायदा पहुंचा सकें और न कोई नुक़सान?

﴿٤٥﴾ وَ ذَاالنُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ
عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ
اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ [سورۂ انبیاء]

(45) तर्जुमाः और मछली वाले (यूनुस) जब कि वह अपनी क़ौम से नाराज़ हो कर चले गए फिर उसने यह समझा कि हम उस को न पकड़ेंगे फिर उस ने अंधेरे में पुकारा कि आप के सिवा कोई माबूद नहीं, आप पाक हैं, बेशक मैं कुसूरवार हूं।

﴿٤٦﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ
اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾ [سورۂ انبیاء]

(46) तर्जुमाः कह दीजिए कि मेरे पास वह्ई आती है वह ये है कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअत गुज़ार बनते हो।

﴿٤٧﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ

عَلٰی مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾ [سورۂ حج]

(47) तर्जुमाः और हम ने हर उम्मत के लिए कुरबानी करना मुक़र्रर किया ताकि वह उन चैपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उस ने उनको अता किए हैं, पस तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है तो तुम उसी के हो कर रहो और आजिज़ी करने वालों को बशारत दे दीजिए।

﴿۴۸﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰی قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲﴾
[سورۂ مومنون]

(48) तर्जुमाः और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं।

﴿۴۹﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا
لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰی بَعْضٍ ؕ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۹۱﴾ [سورۂ مومنون]

(49) तर्जुमाः अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद नहीं, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक़ को ले कर अलग हो जाता और एक दूसरे पर चढ़ाई करता अल्लाह पाक है उस से जो वह

बयान करते हैं।

﴿٥٠﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ
الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ [سورۂ مومنون]

(50) तर्जुमाः पस बहुत बरतर है अल्लाह जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मालिक है अर्शे अज़ीम का।

﴿٥١﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ
فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾
[سورۂ مومنون]

(51) तर्जुमाः और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे जिस के हक़ में उस के पास कोई दलील नहीं तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को कामयाबी नहीं मिलेगी।

﴿٥٢﴾ اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ اَنْزَلَ لَكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ
مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ
هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ [سورۂ نمل]

(52) तर्जुमाः भला वह कौन है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा, और फिर हम ने उस से

रौनक़ वाले बाग़ उगाए, तुम्हारे बस में न था कि तुम उन के दरख़्तों को उगा सकते, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? बल्कि वह राह से हट जाने वाले लोग हैं।

﴿۵۳﴾ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ جَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا
وَّ جَعَلَ لَهَا رَوَاسِیَ وَ جَعَلَ بَیْنَ الْبَحْرَیْنِ حَاجِزًا ؕ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ؕ﴿۶۱﴾ [سورۂ نمل]

(53) तर्जुमाः भला किस ने ज़मीन को ठहरने के लायक़ बनाया और उसके दरमियान नदियां जारी कीं और उस के लिए उस ने पहाड़ बनाए और दो समुंदरों के दरमियान पर्दा डाल दिया, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? बल्कि उनके अकसर लोग नहीं जानते।

﴿۵۴﴾ اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ یَكْشِفُ
السُّوْٓءَ وَ یَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ
قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ﴿۶۲﴾ [سورۂ نمل]

(54) तर्जुमाः कौन है जो बेबस की पुकार सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है और तुम को ज़मीन का जानशीन बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो।

﴿۵۵﴾ اَمَّنْ یَّهْدِیْكُمْ فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ مَنْ

يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَیْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ [سورۂ نمل]

(55) तर्जुमाः कौन है जो तुम को ख़ुश्की और समुंदर के अंधेरों में रास्ता दिखाता है और कौन है अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुश ख़बरी लाने वाला बना कर भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? अल्लाह बहुत बरतर है उस से जिन को वह शरीक ठहराते हैं।

﴿٥٦﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾ [سورۂ نمل]

(56) तर्जुमाः कौन है जो पैदाइश की इब्तिदा करता है और फिर उसे दोबारा लौटाता है और कौन है तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? कह दीजिए कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

﴿٥٧﴾ وَ هُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاُوْلٰى وَ
الْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ [سورۂ قصص]

(57) तर्जुमाः और वही अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हम्द है दुनिया में और आख़िरत में और उसी के लिए फ़ैसला है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

﴿۵۸﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ
سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ
بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾ [سورۂ قصص]

(58) तर्जुमाः कह दीजिए कि बताओ अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिस में तुम सुकून हासिल करते हो, क्या तुम लोग देखते नहीं।

﴿۵۹﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ
شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾
[سورۂ قصص]

(59) तर्जुमाः और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारें, नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के, हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए उसकी ज़ात के, फ़ैसला उसी के लिए है और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

﴿۶۰﴾ وَلَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖۗ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ
اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ

لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ [سورۂ عنکبوت]

(60) तर्जुमाः और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीक़े पर जो बेहतर है मगर जो उन में बेइन्साफ़ हैं और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ भेजी गई और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है, और हम उसी की फ़रमां बरदारी करने वाले हैं।

﴿۶۱﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳﴾ [سورۂ فاطر]

(61) तर्जुमाः ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है जो तुम को आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो? उसके सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां से धोका खा रहे हो।

﴿۶۲﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ ﴿۴﴾ [سورۂ صفّٰت]

(62) तर्जुमाः कि तुम्हारा माबूद एक ही है।

﴿۶۳﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۙ ﴿۳۵﴾ [سورۂ صفّٰت]

(63) तर्जुमाः ये वह लोग थे कि जब उन से कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं तो वह तकब्बुर करते थे।

﴿٦٤﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝٥ [سورۂ ص]

(64) तर्जुमाः क्या उस ने इतने माबूदों की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है।

﴿٦٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٦٥ [سورۂ ص]

(65) तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ एक डराने वाला हूं और कोई माबूद नहीं मगर अल्लाह, यकता और ग़ालिब।

﴿٦٦﴾ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ [سورۂ زمر]

(66) तर्जुमाः अगर अल्ल्लाह चाहता कि बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, और वह अल्लाह है, अकेला सब पर ग़ालिब।

﴿٦٧﴾ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا

زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ
يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ
ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٦﴾ [سورۂ زمر]

(67) तर्जुमाः अल्लाह ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर उस ने उसी से उसका जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चैपायों की आठ क़िस्में उतारी, वह तुम को तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक मरहले के बाद दूसरे मरहले में तीन तारीकियों के अंदर, यही अल्लाह तुम्हारा रब है, बादशाहत उसी की है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां से फेरे जाते हो।

﴿٦٨﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ
ذِى الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ [سورۂ مؤمن]

(68) तर्जुमाः गुनाहों को मुआफ़ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़ी कुदरत वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी की तरफ़ लौटना है।

﴿٦٩﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ [سورۂ مؤمن]

(69) तर्जुमाः यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां से बहकाए जाते हो।

﴿٧٠﴾ هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ [سورۂ مؤمن]

(70) तर्जुमाः वही ज़िन्दा है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम उसको पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए, सरी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का।

﴿٧١﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَ اسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَ وَيْلٌ
لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾ [سورۂ حم سجدہ]

(71) तर्जुमाः कह दीजिएः मैं तो एक बशर हूं तुम जैसा, मेरे पास यह वह्ई आती है कि तुम्हारा माबूद बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसकी तरफ़ और उसी से मआफ़ी चाहो और ख़राबी है मुशरिकों के लिए।

﴿٧٢﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ مِنْ
خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا
لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾
[سورۂ حم سجدہ]

(72) तर्जुमाः जब कि उनके पास रसूल आए उनके आगे से और उन के पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो, उन्होंने कहा कि अगर हमारा रब चाहता तो वह फ़रिश्ते उतारता, पस हम उस चीज़ के मुंकिर हैं जिस को देख कर तुम भेजे गए हो।

﴿٧٣﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ؕ﴿١٥﴾ [سورۂ شوریٰ]

(73) तर्जुमाः पस आप उसी की तरफ़ बुलाइए और उस पर जमे रहिए जिस तरह आप को हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न कीजिए और कहिए कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ करूं, अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा भी रब है हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं, अल्लाह हम सब को जमा करेगा और उसी के पास जाना है।

﴿٧٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ [سورۂ زخرف]

(74) तर्जुमाः और जिन को हम ने आप से पहले भेजा है हमारे रसूलों में से,

उन से पूछ लीजिए कि क्या हम ने रहमान के सिवा दूसरे माबूद ठहराए थे कि उन की इबादत की जाए।

﴿٧٥﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۞ [سورۂ دخان]

(75) तर्जुमाः आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।

﴿٧٦﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ [سورۂ دخان]

(76) तर्जुमाः उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब ।

﴿٧٧﴾ وَ اذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَ قَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۞ [سورۂ احقاف]

(77) तर्जुमाः और आद के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को याद करो जब कि उस ने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में डराया और डराने वाले उस से पहले

भी गुज़र चुके थे और उस के बाद भी आएंगे, अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो, मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डराता हूं।

﴿٧٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَ مَثْوٰىكُمْ ﴿۱۹﴾ [سورۂ محمد]

(78) तर्जुमाः पस जान लीजिए कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और मआफ़ी मांगें अपने कुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को।

﴿٧٩﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۱﴾ [سورۂ ذٰریت]

(79) तर्जुमाः अल्लाह के साथ और कोई माबूद न बनाओ, मैं उस की तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूं।

﴿٨٠﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ [سورۂ حشر]

(80) तर्जुमाः वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह

सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोर आवर, अज़मत वाला, अल्लाह उसके शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं।

﴿٨١﴾ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ وَ
الَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَ
مِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا
بَیْنَنَا وَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰی
تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ
لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ
رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ۝۴

[سورۂ ممتحنه]

(81) तर्जुमाः तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम अलग हैं तुम से और उन चीज़ों से जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दरमियान हमेशा के लिए अदावत और बे ज़ारी ज़ाहिर हो गई है यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ, मगर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अपने वालिद से यह कहना कि मैं आप के लिए मआफ़ी मागूंगा और मैं आप के लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और हम तेरी तरफ़ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है।

﴿٨٢﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ [سورۂ تغابن]

(82) तर्जुमाः अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

﴿٨٣﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ
وَكِيْلًا ﴿٩﴾ [سورۂ مزمل]

(83) तर्जुमाः वही मश्रिक़ व मग़रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, तो उसी को अपना वक़ील बना लीजिए।

﴿٨٤﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ
اَعْبُدُ ﴿٣﴾ [سورۂ کافرون]

(84) तर्जुमाः न मैं इबादत करता हूं उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिस की मैं इबादत करता हूं।

﴿٨٥﴾ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿١﴾ [سورۂ اخلاص]

(85) तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है।

(43) सूरह अलिफ़ लाममीम तनज़ील अस्सजदा पढ़ लीजिए

(एक बार पढ़ लीजिए)

(44) सूरह मुल्क पढ़ लीजिए (एक बार पढ़ लीजिए)

फ़ज़ाइल :

1. हदीस में ब-रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० हुज़ूर ﷺ से मनकूल है कि कुरआन शरीफ़ में एक सूरत तीस आयात की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करती रहती है, यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत करा दे वह "सूरह तबारकल्लज़ी" है।

2. फ़रमाने नबवी ﷺ है कि यह सूरह हर मामिन के दिल में हो।

3. हदीस में है कि जिस ने "सूरह मुल्क" व "सजदा" को मग़रिब व इशा के दरमियान पढ़ा, गोया उस ने लैलतुल क़द्र में क़याम किया।

4. रिवायत में है कि यह दोनों सूरतों के पढ़ने वाले के लिए सत्तर नेकियां लिखी जाती हैं और सत्त बुराइयां दूर की जाती हैं।

5. रिवायत में है कि इन दोनों सूरतों को पढ़ने वाले के लिए लैलतुल क़द्र की इबादत के बराबर सवाब लिखा जाता है।
(फ़ज़ाइले कुरआनः पेज 53)

6. जो यह सूरत रोज़ाना पढ़ने का आदी हो वह अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है। (हाकिम)

7. हुज़ूर ﷺ का सोने से पहले इन दोनों सूरतों के पढ़ने का मामूल था।
(तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीनः पेज 62)

(45) सूरह वाक़िआ पढ़ लीजिए, फ़ाक़ा नहीं आएगा

(एक बार पढ़ लीजिए)

फ़ज़ाइल :

1. ब-रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हुज़ूर ﷺ का यह

इरशान मनकूल है कि जो शख़्स हर रात को सूरह वाक़िआ पढ़े, उसको कभी फ़ाक़ा नहीं होगा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० अपनी बेटियों को हुक्म फ़रमाया करते थे कि हर शब में इस सूरह को पढ़ें।

2. सूरह हदीद, सूरह वाक़िआ, सूरह रहमन पढ़ने वाला जन्नतुल फ़िरदौस के रहने वालों में से पुकारा जाता है।

3. रिवायत में है कि सूरह वाक़िआ सूरह ग़िना है, उसको पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ।

4. रिवायत में है कि अपनी बीबियों को सिखाओ।

5. हज़रत आयशा रज़ि० से भी इसके पढ़ने की ताकीद मनक़ूल है।

(फ़ज़ाइले कुरआनः पेज 53)

नीचे लिखी हुई दुआएं किसी भी वक़्त पढ़ लीजिए

(मुस्ताजाबुद्दुआ होने का नबवी नुस्ख़ा)

(25 या 27 मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरी और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की मग़फ़िरत फ़रमा।

फ़ज़ीलतः हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स दिन में 27 या 25 मतरबा तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए मग़फ़िरत की दुआ मांगेगा वह अल्लाह तआला के नज़दीक उन मुस्तजाबुद्दावात

(जिन की दुआएं अल्लाह के यहां मक़बूल होती हैं) लोगों में शामिल हो जाएगा जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है। (हिस्ने हसीनः पेज 79)

आसमान के दरवाज़े खुलवाने का नबवी नुस्ख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

नोटः ख़ुशख़बरी की बात यह है कि आं हज़रत ﷺ की ज़बान मुबारक से सब से पहले निकलने वाला कलाम यह है। (नशरुत्तय्यबः पेज 23)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا.

तर्जुमाः अल्लाह बड़ा है, सब से बड़ा और तारीफ़ अल्लाह की है बहुत ज़्यादा और हम सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं।

फ़ज़ीलतः इमाम मुस्लिम रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से बयान किया है कि एक दफ़ा हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने मज़कूरा कलिमात कहे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः फ़ुलां फुलां कलिमात कहने वाला कौन है? हाज़िरीन में से एक आदमी ने कहाः या रसूलल्लाह! मैं हूं। आप ﷺ ने फ़रमायाः मुझे इन कलिमात से तअज्जुब हुआ कि इन के लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। (हिस्नुल मुस्लिमः पेज 60)

शैतान के शर से बचने का नबवी नुस्ख़ा

(दस मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं मर्दूद शैतान से।

फ़ज़ीलतः हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से दिन में दस मर्तबा शैतान से पनाह मांगेगा अल्लाह तआला उसको शैतान से बचाने के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देंगे।
(हिस्ने हसीन पेज 79)

माल व मनाल में इज़ाफ़ा का एक नुस्ख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! रहमतें नाज़िल फ़रमा, अपने बंदे और अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर तमाम ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों पर और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स अपने माल व मनाल में इज़ाफ़ा और ज़्यादती चाहे तो यह दरूद पढ़े। (हिस्ने हसीन पेज 220)

हम्द व दुरूद बेहतरीन अंदाज़ में

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَافْعَلْ بِنَا مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَاِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही हम्द है जो तेरी शान के मुनासिब है, पस तू

सय्यदना मुहम्मद ﷺ पर रहमत व सलामती भेज जो तेरी शायाने शान हो, बेशक तू ही उसका मुस्तहिक़ है कि तुझ से डरा जाए और तू ही मग़फ़िरत करने वाला है।

फ़ज़ीलतः अल्लामा इब्ने अल-मुश्तहिर रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ये चाहता हो कि अल्लाह जल्ला शानुहू की ऐसी हम्द करे जो सब से ज़्यादा अफ़ज़ल हो, जो उसकी मख़्लूक़ में से किसी ने न की हो अव्वलीन व आख़िरीन और मलाइका मुक़र्रिबीन आसमान वालों और ज़मीन वालों में से भी अफ़ज़ल हो और इसी तरह यह चाहे कि हुज़ूर अक़्दस ﷺ पर ऐसा दुरूद पढ़े जो उन सब से अफ़ज़ल हो जितने दुरूद किसी ने पढ़े हैं और इसी तरह यह भी चाहता हो कि वह अल्लाह जल्ला शानुहू से कोई दुआ मांगे जो उन सब से अफ़ज़ल हो जो किसी ने मांगी हो तो वह यह दुआ पढ़ा करे। (फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़)

आप के सारे गुनाह मुआफ़

मुन्दर्जा ज़ैल दुआ तीन मर्तबा पढ़ लीजिए

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी मग़फ़िरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और मुझे अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है।

फ़ज़ीलतः एक आदमी ने हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दो या तीन मर्तबा कहाः हाय मेरे गुनाह! हाय मेरे गुनाह! हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः यह कहो (ऊपर ज़िक्र की गई दुआ)

उस ने यह कलिमात कहे, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः दोबारा कहो, उस ने

दोबारा वही कलिमात कहे, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः फिर कहो। उस ने फिर वही कलिमात कहे, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः उठ जा, अल्लाह ने तेरी मग़फ़िरत कर दी है। (हयातुस्सहाबाः जिल्द 3 पेज 250)

बीमारी और तंगदस्ती दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا.

तर्जुमाः मैं उस ज़िन्दा हस्ती पर भरोसा करता हूं जिस पर कभी मौत तारी नहीं होगी। तमाम ख़ूबियां उसी अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न उस का कोई सलतनत में शरीक है और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है और उसकी ख़ूब बड़ाइयां बयान कीजिए।

फ़ज़ीलतः हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बाहर निकला, इस तरह कि मेरा हाथ आप के हाथ में था। आप ﷺ का गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था। आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने पूछाः तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि बीमारी और तंगदस्ती ने मेरा यह हाल कर दिया। आप ﷺ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें चंद कलिमात बताता हूं वह पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी (वह कलिमात मज़कूरा कलिमात हैं) चुनांचे कुछ अर्सा के बाद फिर आप ﷺ उस तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया, आप ﷺ ने ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया, उस ने अर्ज़ किया कि जब से

आप ﷺ ने मुझे यह कलिमात बतलाए थे मैं पाबंदी से इन कलिमात को पढ़ता हूं। (मआरिफ़ुल क़ुरआनः जिल्द 5 पेज 531, बिखरे मोतीः जिल्द1 पेज 89, 90)

सारा दिन गुनाहों से बचने का अहम नुस्ख़ा

(दस मर्तबा पढ़ लीजिए)

जन्नत में महल भी बना लीजिए

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝۱ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝۲ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝۳ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝۴

तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है ﴾1﴿ वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है﴾2﴿ न किसी का बाप है और न किसी का बेटा﴾3﴿ और न उसके बराबर कोई है﴾4﴿

फ़ज़ीलतः रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरह इख़्लास को 10 मर्तबा पढ़ेगा, उसके लिए अल्लाह तआला जन्नत में महल बनाएंगे। (मुस्नद अहमद 1560)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि जो सुबह की नमाज़ के बाद दस मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़ेगा वह सारा दिन गुनाहों से महफ़ूज़ रहेगा चाहे शैतान कितना ही ज़ोर लगाए। (बिखरे मोतीः जिल्द 3 पेज 50)

अपनी औलाद की इस्लाह के लिए क़ुरआनी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى

وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَ اَصْلِحْ لِیْ فِیْ
ذُرِّیَّتِیْ ؕ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۵﴾
[سورۂ احقاف]

तर्जुमाः कहने लगा कि ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं आप के एहसान का शुक्र करूं जो आप ने मुझ पर किया और मेरे मां बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिस से आप राज़ी हों, और मेरी औलाद में भी मुझ को नेक औलाद दे, मैंने आप की तरफ़ रुजूअ किया और मैं फ़रमां बरदारों में से हूं।

मरते दम तक सहीह सलामत रहने का क़ुरआनी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّیْنِ حَنِیْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ
النَّاسَ عَلَیْهَا ؕ لَا تَبْدِیْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ
الْقَیِّمُ ۙ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ۙ [سورۂ روم]

तर्जुमाः पस आप यकसू हो कर अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ रखो अल्लाह की फ़ितरत जिस पर उस ने लोगों को बनाया है, उसके बनाए हुए को बदलना नहीं, यही सीधा दीन है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते।

(बिखरे मोती जिल्द 2)

शहादत का मर्तबा हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

(25 मर्तबा दिन रात में किसी भी वक़्त पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِیْ فِی الْمَوْتِ وَفِیْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे मौत में बरकत अता फ़रमा और मौत के बाद जो होना है इस में भी बरकत अता फ़रमा।

फ़ज़ीलतः हज़रत आयशा रज़ि० ने हुज़ूर ﷺ से दरियाफ़्त किया कि कोई शख़्स बग़ैर शहादत के भी शहीदों के साथ हो सकता है? हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि जो शख़्स दिन रात में 20 मर्तबा मौत को याद करे वह शहीदों के साथ हो सकता है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स 25 मर्तबा اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِيْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ पढ़े वह शहादत के दर्जा में हो सकता है।
(मिर्क़ात जिल्द 5 पेज 270)

नोटः बंदा की राय है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अगर पांच मर्तबा मज़कूरा दुआ पढ़ लें तो चैबीस घंटे में पचीस मर्तबा का अदद पूरा हो जाएगा और आसानी भी रहेगी।

ग़मों से निजात का क़ुरआनी और नबवी नुस्ख़ा

(एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

[سورۂ انبیاء]

तर्जुमाः आप के सिवा कोई माबूद नहीं, आप पाक हैं, बेशक मैं कुसूरवार हूं।

फ़ज़ीलतः

1. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने फ़रमाया कि आप को इसकी ख़बर देता हूं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमारे सामने अव्वल दुआ का ज़िक्र किया ही था कि अचानक एक आराबी आ गया और आप ﷺ को अपनी बातों में मशगूल कर लिया, बहुत वक़्त गुज़र

गया। अब हुज़ूर ﷺ वहां से उठे और मकान की तरफ़ तशरीफ़ ले चले, मैं भी आप ﷺ के पीछे हो लिया, जब आप ﷺ घर के क़रीब पहुंच गए, मुझे डर हुआ कि कहीं आप ﷺ अंदर न चले जाएं और मैं रह जाऊँ तो मैंने ज़ोर ज़ोर से ज़मीन पर पांव मार कर चलना शुरू किया, मेरी जूतियों की आहट सुन कर आप ﷺ ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमायाः कौन? अबू इसहाक़? मैंने कहाः जी हां, या रसूलल्लाह! मैं हूं। आप ﷺ ने फ़रमाया क्या बात है? मैंने कहाः हुज़ूर! आप ने अव्वल दुआ का ज़िक्र किया, फिर वह आराबी आ गया और आप को मशगूल कर लिया। आप ﷺ ने फ़रमायाः हां हां वह दुआ हज़रत ज़ुन्नून अलैहिस्सलाम की है, जो उन्होंने मछली के पेट में की थी। यानी :

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

सुनो! जो भी मुसलमान किसी मुआमला में जब कभी अपने रब से यह दुआ करे, अल्लाह तआला ज़रूर उसे क़ुबूल फ़रमाता है।

2. इब्ने अबी हातिम में है कि जो शख़्स भी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की इस दुआ के साथ दुआ करे, उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल की जाएगी।

3. अबू सईद रह० फ़रमाते हैं कि इसी आयत में इस के बाद ही फ़रमान है कि हम इसी तरह मोमिनों को निजात देते हैं।

4. इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं : अल्लाह का वह नाम जिस से वह पुकारा जाए तो कुबूल फ़रमा ले और जो मांगा जाए वह अता फ़रमाए, वह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ में है।

5. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कहाः या

रसूलल्लाह! वह दुआ हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के लिए ही ख़ास थी या तमाम मुसलमानों के लिए आम थी? आप ﷺ ने फ़रमायाः क्या तूने कुरआन में नहीं पढ़ा कि हम ने उसे ग़म से निजात दी और इसी तरह हम मोमिनों को निजात देते हैं। पस जो भी उस दुआ को करे उस से अल्लाह की तरफ़ से कुबूलियत का वादा हो चुका है।

6. इब्ने अबी हातिम में है कि कसीर बिन सईद फ़रमाते हैं : मैंने इमाम हसन बसरी रह० से पूछा कि अबू सईद! अल्लाह का वह इस्मे आज़म कि जब उसके साथ उस से सवाल किया जाए तो अल्लाह तआला कुबूल फ़रमा ले और जब उसके साथ उस से सवाल किया जाए तो अता फ़रमाए, क्या है? आप ने जवाब दिया कि भतीजे! क्या तुम ने कुरआने करीम में अल्लाह का यह फ़रमान नहीं पढ़ता? फिर आप ने यही दो आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमायाः भतीजे! यही अल्लाह का वह इस्मे आज़म है कि जब उसके साथ दुआ की जाए कुबूल फ़रमाता है और जब उसके साथ उस से मांगा जाए वह अता फ़रमाता है। (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द-3 पेज 395, 396)

7. हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस मुसलमान ने अपनी बीमारी की हालत में चालीस मर्तबा मज़कूरा बाला आयते करीमा पढ़ ली तो अगर उस बीमारी में वफ़ात पा गया तो चालीस शहीदों का अज्र पाएगा और अगर तंदुरुस्त हो गया तो उस के तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएंगे। (हिस्ने हसीनः पेज 241)

अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद हरगिज़ न हों

1. किताबुल्लाह में बीमारी की शिफ़ा के लिए आयात मौजूद हैं
2. बीमारी में कुरआन मजीद की आयात का सहारा हासिल कीजिए।
3. तंदुरुस्ती हासिल करने में अल्लाह की आयात पर यक़ीन रखिए।

4. कलामुल्लाह की आयात से बीमार सेहत पाते हैं।
5. अल्लाह के कलाम में शिफ़ा है।
6. अल्लाह की रहमत से ना-उम्मीद हरगिज़ न हों।
7. मर्ज़ से पहले तंदुरुस्ती की क़दर करनी चाहिए।
8. बीमारी की निस्बत हमारी तरफ़ है और शिफ़ा की निस्बत अल्लाह की तरफ़।
9. ज़ाहिर और बातिन सब बीमारियों की किताबे मुबीन में शिफ़ा है।
10. अल्लाह तआला आप को शिफ़ाए कामिला, आजिला, मुस्तक़िल्ला नसीब फ़रमाए। आमीन!

हज़रत मुहम्मद ﷺ के 99 नाम मअ तर्जुमा

पढ़ने का तरीक़ाः आंहज़रत ﷺ के नामों को पढ़ने का तरीक़ा यह है कि हर नाम के आगे "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" पढ़िए। मसलन मुस्तफ़ा ﷺ, मुज़्ज़म्मिलु ﷺ वग़ैरा, इन्शा अल्लाह बहुत फ़ायदा होगा।

1. बहुत तारीफ़ किया हुआ, और तारीफ़ वाला, अल्लाह तआला के बाद अपनी ज़ात व सिफ़ात में सब से ज़्यादा तारीफ़ वाला।	مُحَمَّدٌ ﷺ
2. अल्लाह तआला की बहुत तारीफ़ और हम्द व सना करने वाला।	اَحْمَدُ ﷺ
3. अल्लाह की तारीफ़ करने वाले।	حَامِدٌ ﷺ
4. तारीफ़ किया गया, सराहा गया।	مَحْمُوْدٌ ﷺ
5. तक़सीम करने वाला, देने वाला, लुटाने वाला।	قَاسِمٌ ﷺ
6. आख़िरी पीछे आने वाले, ख़ातिमुन्नबीयीन।	عَاقِبٌ ﷺ
7. खोलने वाला, फ़त्ह करने वाला।	فَاتِحٌ ﷺ
8. आख़िरी नबी।	خَاتِمٌ ﷺ
9. मिटाने वाला	مَاحٍ ﷺ
10. इकट्ठा करने वाला।	حَاشِرٌ ﷺ
11. बुलाने और दावत देने वाल।	دَاعٍ ﷺ
12. चराग़ रौशनी।	سِرَاجٌ ﷺ
13. रौशन, नूर वाला।	مُنِيْرٌ ﷺ
14. ख़ुशख़बरी देने वाला।	بَشِيْرٌ ﷺ
15. डराने वाला।	نَذِيْرٌ ﷺ

16. राह दिखाने वाला।	هَادٍ ﷺ
17. सरापा हिदायत, हिदायत याफ़ता।	مَهْدِيٌّ ﷺ
18. जो नबी साहबे किताब भी हो उसे रसूल कहते हैं।	رَسُوْلٌ ﷺ
19. ख़बर देने वाला,शरीयते इस्लामी के मुताबिक़ वह हस्ती जिसे अल्लाह तआला अपने बंदों की हिदायत के लिए चुने और जिस पर वह्ई आती हो उसे नबी कहते हैं।	نَبِيٌّ ﷺ
20. ताहा।	طٰهٰ ﷺ
21. यासीन	يٰسٓ ﷺ
22. कपड़ों में लिपटा हुआ।	مُزَّمِّلٌ ﷺ
23. कमली (चादर) ओढ़ने वाला।	مُدَّثِّرٌ ﷺ
24. शफ़ाअत करवाने वाला। बख़्शवाने वाला।	شَفِيْعٌ ﷺ
25. सच्चा दोस्त, अल्लाह के प्यारे।	خَلِيْلٌ ﷺ
26. बात करने वाला, अल्लाह से बात करने वाला।	كَلِيْمٌ ﷺ
27. दोस्त, अल्लाह के महबूब।	حَبِيْبٌ ﷺ
28. बरगुज़ीदा, इन्तिख़ाब किया हुआ, पसंदीदा।	مُصْطَفٰى ﷺ
29. महबूब और पसंद किया गया।	مُرْتَضٰى ﷺ
30. बरगुज़ीदा, मुन्तख़ब किया हुआ, चुनिन्दा।	مُجْتَبٰى ﷺ
31. इख़्तियार वाला, पसंदीदा।	مُخْتَارٌ ﷺ
32. मदद करने वाला।	نَاصِرٌ ﷺ
33. मदद किया हुआ, फ़तहमन्द, कामयाब।	مَنْصُوْرٌ ﷺ
34. मुस्तहकम, मौजूद, सीधा।	قَائِمٌ ﷺ
35. हिफ़ाज़त करने वाला।	حَافِظٌ ﷺ
36. गवाही देने वाला।	شَاهِدٌ ﷺ

37. इन्साफ़ करने वाला।	عَادِلٌ ﷺ
38. दाना, ज़ीरक, हिकमत वाला।	حَكِيْمٌ ﷺ
39. अमान में आया हुआ, मोतबर।	مَامُوْنٌ ﷺ
40. हर एतिबार से मुकम्मल इन्सान।	كَامِلٌ ﷺ
41. दलील, हुज्जत, सुबूत।	بُرْهَانٌ ﷺ
42. कुव्वत व ताक़त वाला, मज़बूत।	قَوِيٌّ ﷺ
43. ईमान वाला।	مُؤْمِنٌ ﷺ
44. इताअत करने वाला।	مُطِيْعٌ ﷺ
45. नसीहत करने वाला।	مُذَكِّرٌ ﷺ
46. वाज़ करने वाला।	وَاعِظٌ ﷺ
47. अमानतदार, मोतबर।	اَمِيْنٌ ﷺ
48. सच्चा।	صَادِقٌ ﷺ
49. तस्दीक़ करने वाला।	مُصَدِّقٌ ﷺ
50. बहुत शुक्रगुज़ार।	مَشْكُوْرٌ ﷺ
51. साथी, हर नेक मुत्तक़ी मोमिन के साथी।	صَاحِبٌ ﷺ
52. मक्के में रहने वाला।	مَكِّيٌّ ﷺ
53. मदीना में रहने वाला।	مَدَنِيٌّ ﷺ
54. अरब वाला।	عَرَبِيٌّ ﷺ
55. क़बीला बनू हाशिम की तरफ़ निस्बत।	هَاشِمِيٌّ ﷺ
56. तहामा (मक्का) का रहने वाला।	تِهَامِيٌّ ﷺ
57. सर ज़मीने हिजाज़ का रहने वाला।	حِجَازِيٌّ ﷺ
58. मुज़िर बिन नज़्ज़ार की औलाद से।	نَزَارِيٌّ ﷺ
59. क़बीला कुरैश से निस्बत।	قُرَيْشِيٌّ ﷺ

60. बरकत वाला।	مُبَارَكٌ ﷺ
61. आप ﷺ किसी मकतब में पढ़े हुए नहीं थे।	اُمِّیٌّ ﷺ
62. ग़ालिब, इज़्ज़त वाला।	عَزِيْزٌ ﷺ
63. हिर्स करने वाला (लोगों के ईमान के लिए)	حَرِيْصٌ ﷺ
64. शफ़ीक़, रहम दिल, एहसान करने वाला।	رَؤُوْفٌ ﷺ
65. रहमत करने वाला, मेहरबान।	رَحِيْمٌ ﷺ
66. बाप से महरूम (यतीम)	يَتِيْمٌ ﷺ
67. दौलत मन्द, मगर सख़ी और बेनियाज़, बेपरवा।	غَنِيٌّ ﷺ
68. अता करने वाला, सख़ी।	جَوَادٌ ﷺ
69. फ़ैसला करने वाला, खोलने वाले, फ़तह याफ़्ता।	فَتَّاحٌ ﷺ
70. जानने वाला।	عَالِمٌ ﷺ
71. पाक, नेक।	طَيِّبٌ ﷺ
72. पाक और पाक करने वाला।	طَاهِرٌ ﷺ
73. हर क़िस्म की बुराइयों और शैतानी वसवसों से पाक गिए गए।	مُطَهَّرٌ ﷺ
74. ख़िताबत करने वाला।	خَطِيْبٌ ﷺ
75. साफ़ सुथरी ज़बान वाला, ख़ुश बयां।	فَصِيْحٌ ﷺ
76. सरदार।	سَيِّدٌ ﷺ
77. सरपरस्त, मुक़र्रबि इलाही।	وَلِيٌّ ﷺ
78. पेश्वा।	اِمَامٌ ﷺ
79. नेकोकार।	بَارٌّ ﷺ
80. शिफ़ा का सबब, कामयाब दवा।	شَافٍ ﷺ
81. मिटाने वाला।	مَاحٍ ﷺ
82. नेकी में सब से आगे।	سَابِقٌ ﷺ

83. मियानरवी रखने वाला, दरमियानी चाल वाला।	مُقْتَصِدٌ ﷺ
84. अल्लाह की जानिब से राहे हक़ पाया हुआ।	مَهْدِیٌّ ﷺ
85. मुजस्समे हक़ व सच।	حَقٌّ ﷺ
86. दीन को वाज़ेह करने वाला।	مُبِیْنٌ ﷺ
87. आप की पैदाइश सब से पहले।	اَوَّلٌ ﷺ
88. सब से आख़िरी नबी।	اٰخِرٌ ﷺ
89. मेहरबान।	حَفِیٌّ ﷺ
90. अंदुरून, छुपा हुआ।	بَاطِنٌ ﷺ
91. सरापा रहमत।	رَحْمَةٌ ﷺ
92. हलाल करने वाला।	مُحَلِّلٌ ﷺ
93. हराम करने वाला।	مُحَرِّمٌ ﷺ
94. मना करने वाला।	نَاهٍ ﷺ
95. हक़ की तरफ़ फेरने वाला।	مُنِیْبٌ ﷺ
96. क़ुबूल करने वाला।	مُجِیْبٌ ﷺ
97. दीने हक़ की तबलीग़ करने वाला।	مُبَلِّغٌ ﷺ
98. बेहतर हस्ब नसब वाला।	حَسِیْبٌ ﷺ
99. लायक़ तर, अफ़ज़ल, बेहतर।	اَوْلٰی ﷺ

फ़ज़ीलतः इन असमाए मुबारक के पढ़ने से दुआएं कुबूल होती हैं और हाजतें पूरी होंगी, इन्शा अल्लाह तआला। क़ारईन असमाउन्नबी ﷺ की यह बरकात ख़ुद महसूस करेंगे, मैंने ख़ुद कई मुश्किलात के लिए निहायत मुफ़ीद व मोअ़स्सिर [असरदार] पाया।

असमाए असहाबे बदरिईन रज़ि०

इस्लाम में बदरी सहाबा रज़ि० का बड़ा मक़ाम व मर्तबा है। अइम्माए हदीस और उलमाए सियर ने अपनी अपनी तसानीफ़ में असमाए बदरिईन के ज़िक्र का ख़ास एहतिमाम फ़रमाया है मगर हुरूफ़े तहज्जी के लिहाज़ से सब से पहले इमाम बुख़ारी रह० ने असमाए बदरिईन को मुरत्तब फ़रमाया। अल्लामा दवानी रह० फ़रमाते हैं कि हम ने मशाइख़े हदीस से सुना है कि सहीह बुख़ारी में असमाए बदरिईन के ज़िक्र के वक़्त दुआ क़ुबूल होती है और बारहा इस का तजरबा हो चुका है।

(माख़ूज़ अज़ सीरतुल मुस्तफ़ाः 2/ 137,145)

سَيِّدُ الْمُهَاجِرِيْنَ وَاِمَامِ الْبَدْرِيِّيْنَ وَاَشْرَفِ الْخَلَائِقِ اَجْمَعِيْنَ خَاتَمِ
الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَشَرَّفَ وَكَرَّمَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ.

बदरी मुहाजिर सहाबा रज़ि०:

1. अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०
2. अबू हफ़सा उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०
3. अबू अब्दुल्लाह बिन उसमान रज़ि०
4. अबुल हसन अली बिन अबी तालिब रज़ि०
5. अरक़म बिन अबी अरक़म रज़ि०
6. इयास बिन बुकैर रज़ि०
7. अनसह् रज़ि० (हबशी, मौला रसूलुल्लाह ﷺ)
8. अबू कबशा रज़ि० (फ़ारसी, मौला रसूलुल्लाह ﷺ)

9. अबू उबैदा आमिर बिन अल-जर्राह़ रज़ि०
10. अबू मरसद कन्नाज़ बिन हुसैन रज़ि०
11. अबू हुज़ैफ़ा बिन उतबा रज़ि०
12. अबू सिनान बिन मिहसन रज़ि०
13. अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ि०
14. अबू सबरा बिन रह्म रज़ि०
15. बिलाल बिन रबाह रज़ि० (मौला अबूबक्र रज़ि0)
16. सक़्फ़ बिन अम्र रज़ि०
17. मालिक बिन अम्र रज़ि०
18. हातिब बिन अम्र रज़ि०
19. हातिब बिन अबी बल्तआ रज़ि०
20. हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०
21. हुसैन बिन अलहारिस रज़ि०
22. ख़ब्बाब बिन अरत रज़ि०
23. ख़ालिद बिन बुकैर रज़ि०
24. ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ि०
25. ख़ौला बिन अबी ख़ौला रज़ि०
26. जुश्शिमालैन बिन अब्दे अम्र रज़ि०
27. रबीआ बिन अकसम रज़ि०
28. ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि०
29. ज़ैद बिन हारिसा रज़ि०
30. ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि०
31. साद बिन ख़ौला रज़ि०

32. सालिम रज़ि० (मौला अबी हुज़ैफ़ा)
33. सिनान बिन अबी सिनान रज़ि०
34. सुवैद बिन मख़्शी रज़ि०
35. साद रज़ि० (कलबी मौला हातिब बिन अबी बल्तआ)
36. सुवैबित बिन साद रज़ि०
37. साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०
38. सईद बिन ज़ैद रज़ि०
39. साइब बिन उसमान रज़ि०
40. सुहैल बिन वहब रज़ि०
41. शुजा बिन वहब रज़ि०
42. शम्मास बिन उसमान रज़ि०
43. सबीह रज़ि० (मौला अबिल आस उमैया)
44. सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ि०
45. सफ़वान बिन वहब रज़ि०
46. तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि०
47. तुफ़ैल बिन हारिस रज़ि०
48. अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ि०
49. उबैदा बिन हारिस
50. अब्दुल्लाह बिन जहश असदी रज़ि०
51. उकाशा बिन मिहसन रज़ि०
52. उक़बा बिन वहब रज़ि०
53. उतबा बिन गज़वान रज़ि०
54. अयाज़ बिन ज़ुहैर रज़ि०

55. उमैर बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०
56. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०
57. आमिर बिन फ़ुहैरा अज़दी रज़ि०
58. अम्मार बिन यासिर रज़ि०
59. अम्र बिन सुराक़ा रज़ि०
60. अब्दुल्लाह बिन सुराक़ा रज़ि०
61. आमिर बिन रबीआ रज़ि०
62. आमिर बिन बुकैर रज़ि०
63. आक़िल बिन बुकैर रज़ि०
64. उसमान बिन मज़ऊन रज़ि०
65. अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि०
66. अब्दुल्लाह बिन मख़रमा रज़ि०
67. अब्दुल्लाह बिन सुहैल बिन अमर रज़ि०
68. उमैर बिन औफ़ रज़ि०
69. अम्र बिन हारिस रज़ि०
70. अम्र बिन अबी सरह रज़ि०
71. औफ़ बिन असासा रज़ि०
72. क़ुदामा बिन मज़ऊन रज़ि०
73. मामर बिन हारिस रज़ि०
74. मरसद बिन अबी मरसद रज़ि०
75. मुहरिज़ बिन नज़ला रज़ि०
76. मालिक बिन अमर रज़ि०
77. मिदलज बिन अमर रज़ि०

78. मुसअब बिन उमैर रज़ि०
79. मिक़दाद बिन अमर रज़ि०
80. मसऊद बिन रबीआ रज़ि०
81. मुअत्तिब बिन औफ़ रज़ि०
82. मिहजा रज़ि० (मौला उमर बिन ख़त्ताब)
83. मालिक बिन अबी खौला रज़ि०
84. वाक़िद बिन अब्दुल्लाह रज़ि०
85. वहब बिन साद रज़ि०
86. यज़ीद बिन रुक़ैश रज़ि०

बदरी अन्सारी सहाबा रज़ि०

87. अबू उसैद मालिक बिन रबीआ रज़ि०
88. अबू बुरदा हानी बिन नियार रज़ि०
89. अबू अहवर बिन हारिस रज़ि०
90. अबुल हमज़ा रज़ि० (मौला हारिस बिन अफ़रा)
91. अबू हन्ता बिन साबित रज़ि०
92. अबू ख़ुज़ैमा बिन औस रज़ि०
93. अबू दाऊद उमैर बिन आमिर रज़ि०
94. अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ि०
95. अबू ज़ैद क़ैस बिन सकन रज़ि०
96. अबू सलीत बिन अमर रज़ि०
97. अबू शैख़ बिन साबित रज़ि०
98. अबू ज़ैयाह बिन साबित रज़ि०

99. अबू तलहा ज़ैद बिन सहल रज़ि०
100. अबू अबस बिन जब्र रज़ि०
101. अबू अक़ील बिन अब्दुल्लाह रज़ि०
102. अबू लुबाबा उबैइ बिन अब्दिल मुन्ज़िर रज़ि०
103. अबू मुंज़िर यज़ीद बिन आमिर रज़ि०
104. अबुल हसीम बिन तैहान रज़ि०
105. अबुल यसर काब बिन अमर रज़ि०
106. उबै बिन काब रज़ि०
107. असअद बिन यज़ीद रज़ि०
108. अनस बिन मआज़ रज़ि०
109. उनैस बिन क़तादा रज़ि०
110. अवस बिन साबित रज़ि०
111. अवस बिन ख़ौला रज़ि०
112. अवस बिन सामित रज़ि०
113. बसबस बिन अमर रज़ि०
114. बशीर बिन साद रज़ि०
115. बशर बिन यरा रज़ि०
116. बुजैर बिन अबी बुजैर रज़ि०
117. बिलाल बिन मोअल्लाह रज़ि०
118. तमीम रज़ि० (मौला ख़िराश)
119. तमीम रज़ि० (मौला साद बिन ख़ैसमा)
120. तमीम बिन युआ़र रज़ि०
121. साबित बिन अक़रम रज़ि०

122. साबित बिन सालबा रज़ि०
123. साबित ख़नसा रज़ि०
124. साबित बिन हज़्ज़ाल रज़ि०
125. सालबा बिन हातिब रज़ि०
126. सालबा बिन अमर रज़ि०
127. सालबा बिन ग़नमा रज़ि०
128. जाबिर बिन ख़ालिद रज़ि०
129. जाबिर बिन अतीक रज़ि०
130. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०
131. जब्बार बिन सख़र रज़ि०
132. ज़ुबैर बिन अयास रज़ि०
133. जबला बिन सालबा रज़ि०
134. हारिस बिन अवस बिन मुआज़ रज़ि०
135. हारिस बिन अनस रज़ि०
136. हारिस बिन हातिब रज़ि०
137. हारिस बिन ख़ज़मा रज़ि०
138. हारिस बिन क़ैस रज़ि०
139. हारिस बिन सम्मा रज़ि०
140. हारिस बिन अरफ़ज़ा रज़ि०
141. हारिस बिन नुमान रज़ि०
142. हारिस बिन सुराक़ा रज़ि०
143. हुरैस बिन ज़ैद बिन सालबा रज़ि०
144. हातिब बिन अमर रज़ि०

145. हब्बाब बिन मुंज़िर रज़ि०
146. हबीब बिन असवद रज़ि०
147. हराम बिन मलहान रज़ि०
148. हम्माक बिन अब्द अमर रज़ि०
149. ख़ारिजा बिन हिमयर रज़ि०
150. ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ि0
151. ख़ालिद बिन क़ैस रज़ि०
152. ख़ुबैब बिन इसाफ़ रज़ि०
153. ख़ल्लाद बिन राफ़े रज़ि०
154. ख़ल्लाद बिन सुवैद
155. ख़ल्लाद बिन अमर बिन जमूह रज़ि०
156. ख़ुलैद बिन क़ैस रज़ि०
157. ख़लीफ़ा बिन अदी रज़ि०
158. ख़व्वात बिन जुबैर बिन नुमान रज़ि०
159. ज़कवान बिन अब्दे क़ैस रज़ि०
160. राफ़े बिन हारिस रज़ि०
161. राफ़े बिन अनजदा रज़ि०
162. राफ़े बिन यज़ीद रज़ि०
163. रबई बिन राफे़ रज़ि०
164. रबीअ बिन अयास रज़ि०
165. रिफ़ाआ बिन राफे़ रज़ि०
166. रिफ़ा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ि०
167. रिफ़ाआ बिन अमर रज़ि०

168. ज़ैद बिन असलम रज़ि०
169. ज़ैद बिन मिज़यन रज़ि०
170. ज़ैद बिन वदीआ रज़ि०
171. ज़ैद बिन अमर रज़ि०
172. ज़ियाद बिन लबीद रज़ि०
173. सालिम बिन उमैर रज़ि०
174. सुबीअ बिन क़ैस रज़ि०
175. सुराक़ा बिन अमर रज़ि०
176. सुराक़ा बिन काब रज़ि०
177. सुआद बिन ज़ुरैक़ रज़ि०
178. साद बिन ज़ैद रज़ि०
179. साद बिन सुहैल रज़ि०
180. साद बिन मुआज़ रज़ि०
181. साद बिन उबैद बिन नुमान रज़ि०
182. साद बिन उसमान रज़ि०
183. साद बिन ख़ैसमा रज़ि०
184. साद बिन रबीअ रज़ि०
185. सुफ़यान बिन बिश्र रज़ि०
186. सलमा बिन असलम रज़ि०
187. सलमा बिन साबित रज़ि०
188. सलमा बिन सलामा रज़ि०
189. सलीत बिन क़ैस रज़ि०
190. सुलैम बिन हारिस रज़ि०

191. सुलैम बिन अमर रज़ि०
192. सुलैम बिन क़ैस रज़ि०
193. सुलैम बिन मलहान रज़ि०
194. सम्माक बिन साद रज़ि०
195. सिनान बिन सैफ़ी रज़ि०
196. सहल बिन क़ैस रज़ि०
197. सहल बिन हनीफ़ रज़ि०
198. सुहैल बिन क़ैस रज़ि०
199. सुहैल बिन अतीक रज़ि०
200. सवाद बिन ग़ज़ीया रज़ि०
201. ज़मरा बिन अमर रज़ि०
202. ज़ह्हाक बिन हारिसा रज़ि०
203. तुफ़ैल बिन मालिक रज़ि०
204. तुफ़ैल बिन नुमान रज़ि०
205. आइज़ बिन माइस रज़ि०
206. आसिम बिन साबित रज़ि०
207. आसिम बिन अदी रज़ि०
208. आसिम बिन क़ैस रज़ि०
209. आमिर बिन अब्द अमर रज़ि०
210. आमिर बिन बुकैर रज़ि०
211. आमिर बिन सलमा रज़ि०
212. आमिर बिन मख़्लद रज़ि०
213. आमिर बिन उमैया रज़ि०

214. अब्बाद बिन बिश्र बिन दक़श रज़ि०
215. अब्बाद बिन ख़श्ख़ाश रज़ि०
216. अब्बाद बिन क़ैस रज़ि०
217. उबादा बिन सामित रज़ि०
218. उबादा बिन क़ैस रज़ि०
219. अब्दु रब्बिही बिन हक़्क़ रज़ि०
220. अब्दुल्लाह बिन सालबा रज़ि०
221. अब्दुल्लाह बिन जद्दे बिन क़ैस रज़ि०
222. अब्दुल्लाह बिन जबीर रज़ि०
223. अब्दुल्लाह बिन हिमयर रज़ि०
224. अब्दुल्लाह बिन रबीअ रज़ि०
225. अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि०
226. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन सालबा रज़ि०
227. अब्दुल्लाह बिन सलमा रज़ि०
228. अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ि०
229. अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ि०
230. अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि०
231. अब्दुल्लाह बिन अबस रज़ि०
232. अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबै रज़ि०
233. अब्दुल्लाह बिन उरफ़ता रज़ि०
234. अब्दुल्लाह बिन अमर बिन हराम रज़ि०
235. अब्दुल्लाह बिन उमैर रज़ि०
236. अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि०

237. अब्दुल्ला बिन काब रज़ि०
238. अब्दुल्लाह बिन मुनाफ़ रज़ि०
239. अब्दुल्लाह बिन नुमान रज़ि०
240. अबस बिन आमिर रज़ि०
241. उबैद बिन औस रज़ि०
242. उबैद बिन अबी उबैद रज़ि०
243. उबैद बिन तैहान रज़ि०
244. उबैद बिन ज़ैद रज़ि०
245. इतबान बिन मालिक रज़ि०
246. उतबा बिन रबीआ रज़ि०
247. उतबा बिन अब्दुल्लाह रज़ि०
248. अदी बिन ज़ग़बा रज़ि०
249. असमा बिन हुसैन रज़ि०
250. उसैमा असदी रज़ि०
251. उसैमा अशजई रज़ि०
252. अतिया बिन नुवैरा रज़ि०
253. उक़बा बिन आमिर रज़ि०
254. उक़बा बिन उसमान रज़ि०
255. उक़बा बिन वहब रज़ि०
256. अमर बिन अयास रज़ि०
257. अमर बिन सालबा रज़ि०
258. अमर बिन तलक़ रज़ि०
259. अमर बिन माबद रज़ि०

260. उमैर बिन हारिस रज़ि०
261. अमर बिन मुआज़ रज़ि०
262. उमैर बिन हम्माम रज़ि०
263. अंतरा रज़ि० (मौला सुलैम बिन अमर)
264. उवैम बिन साइदा रज़ि०
265. औफ़ बिन हारिस रज़ि०
266. ग़म्मारा बिन ख़रम रज़ि०
267. फ़ाकिहा बिन बिशर रज़ि०
268. फ़रवा बिन अमर रज़ि०
269. क़तादा बिन नुमान रज़ि०
270. क़ुतबा बिन आमिर रज़ि०
271. क़ैस बिन अबी सासआ रज़ि०
272. क़ैस बिन मिहसन रज़ि०
273. क़ैस बिन मख़्लद रज़ि०
274. काब बिन ज़ैद रज़ि०
275. काब बिन जम्माज़ रज़ि०
276. मालिक बिन दख़्शम रज़ि०
277. मालिक बिन कुदामा रज़ि०
278. मालिक बिन मसऊद रज़ि०
279. मालिक बिन नुमैला रज़ि०
280. मुबश्शिर बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ि०
281. मुजज्जिर बिन ज़ियाद रज़ि०
282. मुहरिज़ बिन आमिर रज़ि०

283. मुहम्मद बिन मसलमा रज़ि०
284. मसऊद बिन औस रज़ि०
285. मसऊद बिन ख़लदा रज़ि०
286. मसऊद बिन साद रज़ि०
287. मुआज़ बिन जबल रज़ि०
288. मुआज़ बिन हारिस रज़ि०
289. मुआज़ बिन अमर बिन जमूह रज़ि०
290. मुआज़ बिन माइस रज़ि०
291. माबद बिन क़ैस रज़ि०
292. माबद बिन अब्बाद रज़ि०
293. मुअत्तिब बिन कुशैर रज़ि०
294. मुअत्तिब बिन उबैद रज़ि0
295. माक़िल बिन मुंज़िर रज़ि०
296. मान बिन अदी रज़ि०
297. मुअव्विज़ बिन हारिस रज़ि०
298. मुअव्विज़ बिन अमर बिन जमूह रज़ि०
299. मुलैल बिन वबरा रज़ि०
300. मुंज़िर बिन कुदामा रज़ि०
301. मुंज़िर बिन अमर रज़ि०
302. मुंज़िर बिन मुहम्मद रज़ि०
303. नुहात बिन सालबा रज़ि०
304. नस्र बिन हारिस रज़ि०
305. नुमान बिन अस्त्र रज़ि०

306. नुमान बिन उमर रज़ि०
307. नुमान बिन अब्दे अमर रज़ि०
308. नुमान बिन मालिक रज़ि०
309. नुमान बिन सिनान रज़ि०
310. नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह रज़ि०
311. वदीक़ा बिन अम्र रज़ि०
312. वरक़ा बिन अयास रज़ि०
313. हिलाल बिन मुअल्ला रज़ि०
314. यज़ीद बिन हारिस रज़ि०
315. यज़ीद बिन मुंज़िर रज़ि०

(ब-हवालाः सीरते मुस्तफ़ा ﷺ अज़ मुअल्लिफ़हू हज़रत मौलाना इदरीस साहब कांधलवी रह०)

क़त्ल और दीगर हवादिस व आफ़ात और ज़ालिम से महफ़ूज़ रहने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० की दुआ

(सुबह शाम एक एक मर्तबा पढ़ लीजिए)

जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ेगा, कोई उसको तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकेगा।

हदीसः उमर बिन अब्बान से रिवायत की गई है, उन्होंने फ़रमाया कि हज्जाज ने मुझे हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० को लाने के लिए भेजा और मेरे साथ कुछ घोड़े सवार और कुछ प्यादे थे, चुनांचे मैंने उन के पास आया और आगे बढ़ा तो मैंने देखा वह अपने (घर के) दरवाज़े पर पांव फैला कर बैठे हुए थे, मैंने उन से अर्ज़ कियाः "अमीर का हुक्म मान लें, अमीर ने आप को बुलाया है।"

फ़रमायाः "अमीर कौन है?"

मैंने अर्ज़ कियाः "हज्जाज बिन यूसुफ़"।

फ़रमायाः "अल्लाह तआला उसको ज़लील करे, तुम्हारे अमीर ने सरकशी, बग़ावत और किताब व सुन्नत की मुख़ालिफ़त की है, लिहाज़ा अल्लाह तआला उस से इन्तिक़ाम लेगा।"

मैंने कहाः "बात मुख़्तसर कीजिए और अमीर के हुक्म का जवाब दीजिए।" चुनांचे वह हमारे साथ चले आए,

जब हज्जाज के पास आए तो हज्जाज ने पूछाः "क्या तू अनस बिन मालिक है?"

फ़रमायाः "जी हां"।

हज्जाज ने कहाः "क्या तू वह शख़्स है जो हमें बुरा भला कहता है और बद-दुआएं देता है?"

फ़रमायाः "जी हां! ये तो मेरे और तमाम मुसलमानों पर वाजिब है, क्योंकि तू इस्लाम का दुश्मन है, तूने अल्लाह के दुश्मनों की इज़्ज़त अफ़ज़ाई की है और अल्लाह तआला के दोस्तों को ज़लील किया है।"

हज्जाज ने कहाः "मालूम है कि मैंने तुझे किस लिए बुलाया है?"

फ़रमायाः "नहीं मालूम"।

हज्जाज ने कहाः "मैं तुझे बुरी तरह क़त्ल करना चाहता हूं।"

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० ने फ़रमायाः "अगर मैं तेरी बात के सहीह होने का यक़ीन रखता तो अल्लाह को छोड़ कर तेरी इबादत करता और रसूलुल्लाह ﷺ के फ़रमान में शक करता कि उन्होंने मुझे एक दुआ सिखाई थी और फ़रमाया थाः "जो भी सुबह के वक़्त यह

दुआ करेगा, उसको कोई शख़्स तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकेगा और न किसी को उस पर कुदरत हासिल हो सकती है और मैं आज सुबह यह दुआ पढ़ चुका हूं।"

हज्जाज ने कहाः "मैं चाहता हूं कि तू मुझे वह दुआ सिखा दे।"

फ़रमायाः "तू इसका अहल नहीं।"

हज्जाज ने कहाः "इनका रास्ता छोड़ दो, यानी उनको जाने दो।"

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० वहां से निकले तो दरबान ने हज्जाज से कहाः "अल्लाह तआला अमीर की इस्लाह करे, आप तो कई दिनों से इनकी तलाश में थे, जब आप ने इन को पा लिया तो इनको क्यों छोड़ दिया?"

हज्जाज कहने लगाः "अल्लाह की क़सम मैंने उनके कंधे पर दो शेर देखे, जब भी मैं उन से गुफ़तुगू करता था वह मेरी तरफ़ लपकते थे जैसे (मेरे ऊपर हमला करना चाहते हों) तो अगर मैं उन के साथ कुछ करता तो मेरा क्या हाल होता?"

फिर जब हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने वह दुआ अपने बेटे को सिखाई, जो दर्जे ज़ैल हैः

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ، بِسْمِ اللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَاءِ، بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ	तर्जुमाः अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है, अल्लाह के नाम से अल्लाह की मदद से, अल्लाह के नाम से जो सब नामों से बेहतर है, आसमान व

الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ، بِسْمِ اللّٰهِ افْتَتَحْتُ، وَ بِاللّٰهِ اخْتَتَمْتُ، وَبِهٖ اٰمَنْتُ، بِسْمِ اللّٰهِ اَصْبَحْتُ، وَ عَلَی اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی قَلْبِیْ وَ نَفْسِیْ ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی عَقْلِیْ وَ ذِهْنِیْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی اَهْلِیْ وَمَالِیْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی مَا اَعْطَانِیْ رَبِّیْ، بِسْمِ اللّٰهِ الشَّافِیْ، بِسْمِ اللّٰهِ الْمُعَافِیْ، بِسْمِ اللّٰهِ

ज़मीन के रब के नाम से, अल्लाह के नाम से जिस के नाम की बरकत से आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, अल्लाह के नाम से मैंने शुरू किया अल्लाह ही के नाम से मैंने ख़त्म किया और उसी पर मैं ईमान लाया, अल्लाह तआला के नाम की बरकत मेरे ज़ेहन व अक़्ल पर, अल्लाह तआला के नाम से हिफ़ाज़त मेरे अहल व अयाल की और मेरे माल की, अल्लाह तआला के नाम की बरकत मेरे रब की हर उस चीज़ पर जो मेरे परवरदिगार ने मुझे दी है। अल्लाह के नाम से कि वह शिफ़ा बख़्श है, अल्लाह के नाम से कि वह आफ़ियत बख़्शने वाला है। अल्लाह के नाम से कि वह मेरे हर काम के लिए काफ़ी है, अल्लाह के नाम से जिस की बरकत से

الْوَاقِ ، بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا
يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی
الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَهُوَ
السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ، هُوَ اللّٰهُ،
اَللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا،
اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَ
كْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، وَ اَعَزُّ وَ
اَجَلُّ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ .
اَسْئَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِخَيْرِكَ مِنْ
خَيْرِكَ الَّذِیْ لَا يُعْطِيْهِ
غَيْرُكَ، عَزَّ جَارُكَ، وَ جَلَّ
ثَنَاؤُكَ، وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ .
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ
شَرِّ نَفْسِیْ ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ

ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है, वह अल्लाह है, अल्लाह मेरा रब है, मैं उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं करता, और न करूंगा, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, और वह सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला है और वह सब से ज़्यादा बड़ी शान वाला है हर उस चीज़ के मुक़ाबले में जिस से मैं डरता हूं और जिस के नुक़सान से मैं बचता हूं।

ऐ अल्लाह! मैं आप की ख़ैर के वास्ते और वसीले से आप की उन तमाम भलाइयों का सवाल करता हूं जो आप के सिवा कोई भी नहीं अता कर सकता, तेरी तारीफ़ बुलन्द व बाला है, तेरे अलावा कोई माबूद नहीं,

سُلْطَانٍ ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ
شَيْطَانٍ مَرِيْدٍ، وَ مِنْ شَرِّ
كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ، وَ مِنْ شَرِّ
كُلِّ قَضَاءِ سُوْءٍ، وَمِنْ شَرِّ
كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ
بِنَاصِيَتِهَا، اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ، وَ اَنْتَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ، اِنَّ
وَلِيِّيَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ
الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصَّالِحِيْنَ.

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَجِيْرُكَ،
وَاَحْتَجِبُ بِكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
خَلَقْتَهٗ، وَ اَحْتَرِسُ بِكَ مِنْ

ऐ अल्लाह! मैं अपने नफ़्स के शर से आप की पनाह चाहता हूं और हर हाकिम व सुलतान के शर से, और हर सरकश शैतान के शर से, और हर ज़ालिम सरकश के शर से, और हर बुरे फैसले के शर से और हर जानवर के शर से, जिस की पेशानी तेरे क़ब्ज़ा कुदरत में है, यक़ीनन मेरा रब बिल्कुल सीधी राह पर है और आप की ज़ात हर चीज़ की मुहाफ़िज़ है, मेरा निगहबान अल्लाह है जिस ने किताब उतारी है और वही नेक बंदों की निगहबानी करते हैं, ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह लेता हूं, आप की हिफ़ाज़त में आता हूं, हर उस चीज़ से जिसे आप ने पैदा किया और आप की मख़्लूक़ से आप का बचाव और आप की पनाह लेता हूं और हर उस चीज़ से जिसे तूने ठीक ठीक पैदा किया है

جَمِيْعِ خَلْقِكَ، وَ كُلِّ مَا ذَرَأْتَ وَبَرَأْتَ، وَاَحْتَرِسُ بِكَ مِنْهُمْ، وَاُفَوِّضُ اَمْرِىْ اِلَيْكَ. وَاُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَىَّ فِىْ يَوْمِىْ هٰذَا، وَلَيْلَتِىْ هٰذِهٖ، وَ سَاعَتِىْ هٰذِهٖ وَ شَهْرِىْ هٰذَا.

और फैलाया है और उन तमाम चीज़ों से तेरी हिफ़ाज़त में आता हूं, और मैं ने मेरा मुआमला तेरे हवाले किया और आज के इस दिन में इस रात में और इस घड़ी में इस महीने में आप के हुज़ूर में यह पेश करता हूं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है﴾1﴿ वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है﴾2﴿ न किसी का बाप है और न किसी का बेटा﴾3﴿ और न उसके बराबर कोई है﴾4﴿

عَنْ اَمَامِىْ: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ऊपर से, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ
الصَّمَدُ ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا
اَحَدٌ ﴿۴﴾

जिस का नाम अल्लाह है, एक है(1) वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है(2) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा(3) और न उसके बराबर कोई है(4)

مِنْ فَوْقِيْ : بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ
الصَّمَدُ ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا
اَحَدٌ ﴿۴﴾

नीचे से, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है(1) वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है(2) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा(3) और न उसके बराबर कोई है(4)

عَنْ يَمِيْنِيْ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ

दाएं से, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है(1) वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़

الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا
اَحَدٌ ۝٤

है(2) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा(3) और न उसके बराबर कोई है(4)

عَنْ شِمَالِيْ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ
الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا
اَحَدٌ ۝٤

बाएं से, अल्लाह के नाम से शुरु करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है(1) वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है(2) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा(3) और न उसके बराबर कोई है(4)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ
الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ
لَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
مَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ

अल्लाह के नाम से शुरु करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है और न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास

يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ
بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا
شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا
يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ
وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ
قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

(سات مرتبہ پڑھ لیجیے)

उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह किसी चीज़ को जान नहीं सकते उसके इल्म में से मगर जो वह चाहे, उसकी हुकूमत छाई हुई है आसमानों और ज़मीन पर, और उस पर भारी नहीं है ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त करना, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला (255)

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।

अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले इल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह क़ायम रखने वाला है इन्साफ़ का, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (18)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَنَحْنُ عَلٰى مَا قَالَ رَبُّنَا مِنَ الشَّاهِدِيْنَ، فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝١٢٩ (سات مرتبہ پڑھ لیجیے).	अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हर बात पर शाहिद और गवाह हैं, अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही अर्शे अज़ीम का मालिक है। (कन्ज़ुल उम्माल: जिल्द-2 पेज 254)

जन्नत में जाने, क़ब्र में नूर हासिल करने और पुलसिरात पर नूर हासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

(तीन मर्तबा पढ़ लीजिए)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الطَّيِّبَاتِ الْمُبَارَكَاتِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ.

तर्जुमाः अल्लाह तआला की ज़ात बहुत ही बड़ी है, अल्लाह तआला के लिए बड़ाई है अल्लाह तआला के पाकीज़ा, मुबारक और कामिल व मुकम्मल कलिमात के बराबर। अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। उस की माबूदियत का ज़िक्र उसकी सारी मौजूदात तादाद के बराबर है।

फ़ज़ीलतः अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से मरवी है कि जो शख़्स हर फ़र्ज़

नमाज़ के बाद और बिस्तर पर जाने के वक़्त यह दुआ तीन मर्तबा पढ़े तो उसके लिए क़ब्र में नूर होगा, पुलसिरात पर नूर होगा, यहां तक कि वह जन्नत में दाख़िल हो जाए या यह कलिमात उसे जन्नत में दाख़िल कर दे।

नोटः اَلْوَتْرِ को وَ के फ़तहा [ज़बर] के साथ भी पढ़ सकते हैं और इसी तरह وِ के कसरा [ज़ेर] के साथ वित्र भी पढ़ सकते हैं, दोनों तरह सहीह है लेकिन चूंकि कुरआन में सूरह फ़जर में "वश्शफ़इ वल-वत्र" फ़त्हा है, इस लिए वही औला और कुरआन के ज़्यादा क़रीब है। (हिस्ने हसीन पेज 79)

फ़क़्र और तंगदस्ती दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

(सौ मर्तबा पढ़ लीजिए)

हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० अपने साथियों को फ़जर की सुन्नत और फ़र्ज़ के दरमियान पढ़ने की तरग़ीब देते थे। (बहुत ही मुजर्रब यह नुस्ख़ा है)

हज़रत इमाम मालिक रह० ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत किया है कि एक रोज़ एक आदमी बारगाहे रिसालत ﷺ में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया اَلدُّنْيَا اَدْبَرَتْ عَنِّىْ "दुनिया ने मेरी तरफ़ से पीठ फेर ली है और मुंह भी फेर लिया है" सरवरे कायनात ﷺ ने उस आदमी को कहा कि मलाइका की जो नमाज़ और अल्लाह की मख़्लूक़ की जो तस्बीह है, उस से तू क्यों ग़ाफ़िल हो गया है? उसी के सदक़े उन सब को रिज़्क़ दिया जाता है। जब सुबह सादिक़ तुलूअ हो तो यह तस्बीह एक सौ बार पढ़ा करो।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ.

सरवरे दो आलम ﷺ ने फ़रमायाः تَأْتِيْكَ الدُّنْيَا صَاغِرَةً (दुनिया तेरे पास ज़लील हो कर आएगी) अपने आक़ा का यह इरशाद हिरज़े जान बनाने के बाद वह आदमी वापस चला आया, कुछ मुद्दत ठहरा रहा, फिर हाज़िर हुआ, अर्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरे पास इतनी दौलत आ गई है कि मुझे उसके रखने की जगह नहीं मिलती।

(लिसानुल मीज़ानः इब्ने हजर अस्क़लानी, इब्ने हिब्बान, इब्ने जौज़ी, अलकामिल)

हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह अज़कार पढ़ लीजिए

1. एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ، أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ، أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह तआला से अपने गुनाहों पर मआफ़ी चाहता हूं, मैं अल्लाह तआला से अपने गुनाहों पर मआफ़ी चाहता हूं, मैं अल्लाह तआला से अपने गुनाहों पर मआफ़ी चाहता हूं। (अबू दाऊद)

2. एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ

يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप की ज़ात सरापा सलामती है और सलामती आप ही की तरफ़ से अता होती है (लिहाज़ा हम पर सलामती नाज़िल फ़रमइए)। बड़ा नाम है आप का ऐ हमारे अज़मत वाले और करम वाले परवरदिगार। (अबू दाऊद)

3. एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَ لَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَ لَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाहत और हुकूमत उसी के लिए है तमाम तारीफ़ उसी के लिए है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ अल्लाह! तेरी अता (दिए हुए) को कोई रोकने वाला नहीं है और तेरी रोकी हुई चीज़ को कोई देने वाला नहीं है और मालदार का माल तेरे पास कुछ काम न आएगा।
(बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई)

4. एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरा ज़िक्र करने और तेरा शुक्र अदा करने और तेरी अच्छी इबादत करने पर मेरी मदद फ़रमा। (अबू दाऊद, नसई, इब्ने हिब्बान)

5. आयतुल कुर्सी एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ

يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

तर्जुमाः अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सब का थामने वाला है, उसे न ओंघ आती है और न ही नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसके पास उसकी एजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वह किसी चीज़ को जान नहीं सकते उसके इल्म में से मगर जो वह चाहे, उसकी हुकूमत छाई हुई है आसमानों और ज़मीन पर, और उस पर भारी नहीं है, ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त करना, और वही है बुलन्द मर्तबा वाला, अज़मत वाला (255)

फ़ज़ीलतः (1) मरते ही जन्नत में दाख़िला होगा। इन्शा अल्लाह। (2) दूसरी नमाज़ तक आप अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेंगे।

(हिस्ने हसीनः पेज 216, कन्ज़ुल उम्मालः2/300, अत्तरग़ीबः 2/299)

6. सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़, सूरह नास

बाद नमाज़ फज्र (3) मर्तबा | बाद नमाज़ ज़ोहर (1) मर्तबा
बाद नमाज़ असर (1) मर्तबा | बाद नमाज़ मग़रिब (3) मर्तबा
बाद नमाज़ ईशा (1) मर्तबा

(अबू दाऊदः 2/86, सहीह तिर्मिज़ीः 2/8, फ़तहुल बारीः 9/62, अज़कारे नववीः पेज 68)

सूरह इख़्लास

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ
یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ٪﴿۴﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिस का नाम अल्लाह है, एक है (1) वह माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है (2) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा (3) और न उसके बराबर कोई है (4)

सूरह फ़लक़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ
شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾
وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ٪﴿۵﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं (1) उस की मख़्लूक़ के शर से (2) और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए (3) और गिरहों में दम करने वालियों के शर से (4) और हसद करने वाले के शर से जब हसद करे (5)

सूरह नास

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ
النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِىۡ
یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की﴾1﴿ लोगों के बादशाह की﴾2﴿ लोगों के माबूद की﴾3﴿ उसके शर से जो वस्वसा डाले और छुप जाए﴾4﴿ जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है﴾5﴿ जिन्नात में से और इन्सान में से﴾6﴿

7. سُبۡحَانَ اللّٰهِ **सुब्हानल्लाह** 33 मर्तबा, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ **अल्हम्दु लिल्लाह** 33 मर्तबा, اَللّٰهُ اَكۡبَرُ **अल्लाहु अकबर** 33 मर्तबा पढ़ लीजिए।

एक मर्तबा यह पढ़ लीजिए :

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ، لَهُ الۡمُلۡكُ، وَلَهُ
الۡحَمۡدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ.

तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

फ़ज़ीलतः जो शख़्स नमाज़ के बाद यह ज़िक्र करे, उसके गुनाह समुंदर की झाक के बराबर हों तो भी मुआफ़ हो जाते हैं। (मुस्लिमः 1/418)

8. दस मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़ लीजिए

फ़ज़ीलतः (1) जिस दरवाज़े से चाहिए जन्नत में दाख़िल हो जाइए। (2) जिस हूर से चाहिए शादी कर लीजिए। (इब्ने कसीरः जिल्द 5 पेज 616)

9. यह दुआ एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ، وَلَهُ الْفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْكَرِهَ الْكَافِرُوْنَ. [مسلم ،ابوداؤد]

तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, तमाम तारीफ़ उसी के लिए है वह हर चीज़ पर क़ादिर है, नेक काम करने की ताक़त और गुनाहों से बचने की कुदरत अल्लाह ही की तरफ़ से अता होती है, तमाम नेमतें उसी के लिए हैं, बुज़ुर्गी के लायक़ वही है, उसी के लिए अच्छी अच्छी तारीफ़ है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, लिहाज़ा हम अल्लाह को इस तरह पुकारते हैं कि ताबे दारी ख़ालिस उसी के लिए है चाहे काफ़िरों को कितना बुरा लगे।

10. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ
الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ
فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ. [بخاری وترمذی]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं बुज़दिली से आप की पनाह चाहता हूं, और मैं बख़ीली से आप की पनाह चाहता हूं, और मैं लाचारी वाली उम्र से आप की पनाह चाहता हूं, और मैं दुनिया के फ़िले और आख़िरत के अज़ाब से आप की पनाह चाहता हूं।

11. दाहिने हाथ को माथे पर रख कर यह दुआ एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ،
اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ.

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से दुआ करता हूं जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, ऐ अल्लाह! हर तरह का ग़म व फ़िक्र मुझ से दूर फ़रमा दीजिए।

12. एक मर्तबा पढ़ लीजिए :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे घर में वुसअत अता फ़रमाइए और मेरी रोज़ी में बरकत अता फ़रमाइए।

नोटः मज़कूरा दुआ वज़ू के दौरान, वज़ू के बाद और नमाज़ के बाद पढ़ने का एहतिमाम करें।

यह दुआ वज़ू के दौरान और वज़ू के बाद पढ़ना भी साबित है और नमाज़ के बाद पढ़ना भी साबित है।

(हयातुस्सहाबाः जिल्द-3 पेज 386, अमलिल यौम वल्लैलति लिन्नसईः पेज 80, इब्ने सुन्नीः पेज 30, माख़ूज़ अज़ बिखरे मोतीः जिल्द 6, मामूली अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ यह हिस्ने हसीन 222 पर भी मौजूद है।)

जादू से हिफ़ाज़त का बहुत ही मुजर्रब नुस्ख़ा

1. ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए।
2. सूरह फ़ातिहा तीन मर्तबा पढ़ लीजिए।
3. चारों कुल तीन तीन मर्तबा पढ़ लीजिए।
4. आयतुल कुर्सी तीन मर्तबा पढ़ लीजिए।
5. وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ 9 मर्तबा पढ़ लीजिए।
6. तीन मर्तबा सूरह तौबा की आयत पढ़ लीजिए :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾ [سورۂ توبہ]

7. सूरह यासीन की आयत न० 58 सात मर्तबा पढ़ लीजिए :

سَلَٰمٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

8. ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए।

नोटः अपने बदन पर और बच्चों के बदन पर दम कर लीजिए और पानी पर दम करके पी लीजिए या पिला दीजिए।

आप की किताब "मोमिन का हथियार" पढ़ती हूं मगर कभी कभी?

सवालः हज़रत मौलाना यूनुस साहब, मैं और मेरे बच्चे आप की किताब "मोमिन का हथियार" बिला नाग़ा सुबह व शाम पढ़ते हैं, मगर कभी कभी किसी मशगूली की वजह से नहीं पढ़ पाते, तो क्या उसको दूसरे वक़्त में पढ़ सकते हैं?

जवाबः इमाम नववी अपनी किताब "अल-अज़कार" पेज 40 पर फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स का रात या दिन के किसी वक़्त में या नमाज़ के बाद या किसी और वक़्त में ज़िक्र का वज़ीफ़ा मुतय्यन हो और उस से उस वक़्त में वह वज़ीफ़ा फ़ौत हो जाए तो मुनासिब है कि उसको जब भी वक़्त मिले उस का तदारुक कर ले, तर्क न करे, इस लिए कि जब वज़ीफ़ा की आदत बन जाएगी तो वह वज़ीफ़ा उस से न छूटेगा लेकिन अगर वह उस वज़ीफ़ा को पूरा करने में ग़फ़लत करेगा तो फिर वज़ीफ़ा का उस वक़्त में ज़ाए होना भी आसान हो जाता है। चुनांचे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की रिवायत है कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी अपने कुल वज़ीफ़ा या उस में से कुछ पूरा किए बग़ैर सो गया फिर सुबह उस को फ़जर की नमाज़ से लेकर ज़ुहर की नमाज़ तक किसी वक़्त में पूरा कर लिया तो उस के लिए ऐसा ही लिखा जाएगा कि गोया उस ने उसको रात ही में पढ़ लिया है।

(सहीह मुस्लिम शरीफ़: 256)

लिहाज़ा बंदा की राय है कि सुबह व शाम पढ़ने का एहतिमाम फ़रमाइए।

अल्लाह की रज़ा का तालिब :

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

औराद व वज़ाइफ़ से मुतअल्लिक़ फ़तावा

हालते हैज़ में दुआओं की किताब ..... ?

सवालः (1) हालते हैज़ में दुआओं की ऐसी किताब पढ़ना (जिस में कुरआनी आयतें हों सूरतें हों) जायज़ या नहीं?

मसलन मोमिन का हथियार, मुनाजाते मक़बूल या अल-हिज़्बुल आज़म या मंज़िल इन किताबों में आयतुल कुर्सी, सूरह फ़ातिहा, चार कुल वग़ैरा बहुत सी कुरआनी दुआएं होती हैं। क्या इन को औरतें हालते हैज़ में पढ़ सकती हैं?

जवाबः *हामिदवं व मुसल्लियवं व मुस्लिमन,* दुआ की नीयत से इन आयात व सूरतों को हालते हैज़ में पढ़ना जायज़ है, किसी क़िस्म की कराहत नहीं है, तिलावते कुरआन की नीयत से इन को पढ़ना जायज़ नहीं है। और ज़ाहिर है कि इन किताबों को वज़ाइफ़ व औराद के तौर पर ही पढ़ा जाता है। तिलावते कुरआन के तौर पर नहीं पढ़ा जाता। हां! छब्बीस सूरतें बतौर तिलावत के पढ़ी जाती हैं इस लिए इन को हालते हैज़ में पढ़ना जायज़ नहीं है। (इमदादुल फ़तावा 2/17)

सवालः **(2)** दुआओं की इन किताबों को बग़ैर वज़ू या हैज़ की हालत में पकड़ना जायज़ है या नहीं?

जवाबः इन किताबों को बग़ैर वज़ू या हैज़ की हालत में पकड़ना जायज़ है। अलबत्ता ख़ास उस जगह जहां कुरआन की आयत को हाथ लगाना जायज़ नहीं है। बाक़ी दूसरे हिस्सों को हाथ लगाना जायज़ है। (इमदादुल फ़तावाः 1/93)

फ़क़त वस्सलाम
वल्लाहु आलमु
(मुफ़्ती) आदम साहब पालनपुरी
6 शव्वाल 1430 हिजरी

नोटः मज़कूरा फ़तवा सहीह है मैं इसकी तस्दीक़ करता हूं।

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

यह किताब मदीना मुनव्वरा, अमेरिका, कनाडा के सफ़र अप्रैल 2019 हवाई जहाज़ वग़ैरा में मुकम्मल हुई।

नोट

नोट

नोट

بسم الله الرحمن الرحیم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ [سورۂ هود]

तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी, उसी पर मैंने भरोसा किया है
और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं।

अल्लाह की पनाह

यानी आने वाली मुसीबतों, बीमारियों और बलाओं से बचाव के लिए
हुज़ूर ﷺ के बताए हुए तावीज़ात

मोमिन का क़िला

अहादीसे मुबारका की रौशनी में, तर्जुमा और हवालों के साथ

محمد یونس
ابن حضرت مولانا
محمد عمر صاحب
پالنپوری

اداره امپیکس
idara impex
इदारा
Publishers | Distributors | Exporters
www.idara.com

- हर दुआ यक़ीन और इस्तिहज़ार के साथ पढ़ें।
- दुआओं का फ़ायदा फ़राइज़ के एहतिमाम पर मौक़ूफ़ है, कोई भी नफ़ल अमल फ़राइज़ का बदल नहीं हो सकता, इस लिए तमाम फ़राइज़ का एहतिमाम निहायत ही ज़रूरी है।

ऐ अल्लाह! इस किताब की इशाअत में जिन लोगों ने जिस एतिबार से भी हिस्सा लिया हो, उन सब को कुबूल फ़रमा, और उनकी जायज़ मुरादें पूरी फ़रमा। आमीन!

एक अहम नसीहत

रोज़ाना इस दुआ को पढ़ने का एहतिमाम कीजिए। तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों की तादाद के बराबर नेकियां मिलेंगी, इन्शाअल्लाह। यह हदीस सहीह है। इस दुआ का प्रिंट निकाल कर अपने पास रख लीजिए और मुसलमानों में इसे तक़सीम भी कर दीजिए। हमें नेकियां मिलेंगी और मां बाप के लिए दुआ भी हो जाएगी।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ
الْحِسَابُ - اٰمِيْن

ऐ हमारे परवर्दिगार! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और
मूमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा।

अर्ज़े मुरत्तिब

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ. اَمَّا بَعْدُ!

रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में हम देखते हैं कि कितनी ही बातें हर रोज़ हमारी मर्ज़ी व मंशा के मवाफ़िक़ हो जातीं हैं, मसलन किसी शख़्स से मिलने जाने का इरादा किया था वह रास्ते ही में मिल गया, प्यास लग रही थी, फिरीज़ खोला तो पानी की ठंडी बोतल मिल गई, ऐसी सब बातें ख़ुशी का बाइस होती हैं। इन पर अल्लाह का शुक्र अदा करने की आदत डालना चाहिए। शुक्र का कलिमा "अल्हम्दु लिल्लाह" है जिसे अल्लाह के रसूल ﷺ ने अफ़ज़ल तरीन दुआ क़रार दिया है।

इसी तरह कितनी ही बातें हमारी मरज़ी और पसंद के ख़िलाफ़ हो जाती हैं जिन से हमें रंज होता है, जैसे कि गर्मी लग रही थी, पंखे या कूलर का स्वीच खोला तो मालूम हुआ कि बिजली का करंट ही नहीं है! या बस पकड़ने गए और वह हमारे पहुंचते पहुंचते ही नज़रों के सामने छूट गई! ऐसी तमाम बातों पर सब्र की आदत डालना है और सब्र का कलिमा है "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

शुक्र अदा करने पर नेमतों में इज़ाफ़ा का वादा है और सब्र करने पर ख़ुद अल्लाह तआला के साथ हो जाने की ख़ुशख़बरी है।

फिर रोज़ाना कोई न कोई ख़ता ऐसी सर्ज़द हो जाती है जो अल्लाह तआला की मरज़ी और पसंद के ख़िलाफ़ होती है। वह चाहे फ़राइज़ व

वाजिबात में कोताही हो या तर्के सुन्नत हो या कोई सग़ीरा या कबीरा गुनाह हो, ऐसे हर अमल पर तौबा व इस्तिग़फ़ार और अल्लाह तआला से मआफ़ी मांगने की आदत डालना है और इस का कलिमा "अस्तग़फ़िरुल्लाह" है। यह इस्तिग़फ़ार जहां गुनाहों की मआफ़ी का ज़रिया बनता है, वहीं अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल होने का बाइस भी है और इस के नतीजे में दुनियवी बरकात भी शामिल हैं, और मुश्किलात का आसान होना और मुसीबतों का दूर हो जाना भी शामिल है। यह तीन चीज़ें तो वह हैं जो हो चुकी होती हैं यानी नेमत व मुसीबत और मासियत जिन के लिए शुक्र, सब्र और इस्तिग़फ़ार दिया गया है।

चैथी चीज़ आइन्दा पेश आने वाली बातें हैं जो अब से लेकर जन्नत में दाख़िल होने तक तवील ज़माना पर फैली हुई हैं। इन से बचाव और हिफ़ाज़त के लिए हुज़ूर ﷺ ने अपनी उम्मत को "इस्तिआज़ा" की दुआओं का तोहफ़ा दिया है, जिन में दुनिया व आख़िरत की हर छोटी बड़ी बुराई से अल्लाह तआला की पनाह मांगी गई है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने जिन बातों से पनाह मांगी हो वह कोई मामूली चीज़ नहीं, बल्कि उनकी बहुत बड़ी अहमियत है।

लिहाज़ा हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह इसे अपनी आदत बना ले कि हर ख़ुशी पर "अल्हम्दु लिल्लाह" और हर रंज पर "इन्ना लिल्लाह" और हर ग़लती पर इस्तिग़फ़ार के साथ साथ "इस्तिआज़ा" की दुआओं के ज़रिए अल्लाह तआला की पनाह हासिल करता रहे।

बहुत अहम नसीहत

पढ़ने वालों की सुहूलत की ख़ातिर इन दुआओं को सात मंज़िलों पर तक़्सीम कर दिया गया है ताकि जो शख़्स रोज़ाना तमाम दुआएं न पढ़ सकता हो वह रोज़ाना थोड़ा थोड़ा पढ़ कर एक हफ़्ता में इन्हें ख़त्म कर ले।

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

वारिदे हाल मक्का मुकर्रमा ज़ादहल्लाहु तशरीफ़न व ताज़ीमान व तकरीमन

8ज़िलहिज्जा 1440हि0 अगस्त 2019

पहली मंज़िल | जुमा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

1. जिहालत से अल्लाह की पनाह

اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ اَنۡ اَکُوۡنَ مِنَ الۡجٰہِلِیۡنَ ﴿۶۷﴾ [سورۂ بقرہ]

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसा नादान बनूं।

2. बेतुकी दुआओं से अल्लाह की पनाह

رَبِّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِکَ اَنۡ اَسۡـَٔلَکَ مَا لَیۡسَ لِیۡ بِہٖ عِلۡمٌ ؕ وَ
اِلَّا تَغۡفِرۡ لِیۡ وَ تَرۡحَمۡنِیۡۤ اَکُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ﴿۴۷﴾
[سورۂ ھود]

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मैं आप की पनाह चाहता हूं कि आप से वह चीज़ मांगू जिस का मुझे इल्म नहीं, और अगर आप मुझे मुआफ़ न करें और मुझ पर रहम न फ़रमाएं तो मैं बरबाद हो जाऊँगा।

3. शयातीन और उनके वसाविस से अल्लाह की पनाह

رَّبِّ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ ہَمَزٰتِ الشَّیٰطِیۡنِ ﴿۹۷﴾ۙ وَ اَعُوۡذُ بِکَ رَبِّ
اَنۡ یَّحۡضُرُوۡنِ ﴿۹۸﴾ [سورۂ مؤمنون]

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मैं पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब! मैं आप से पनाह मांगता हूं कि वह मेरे पास आएं।

4. मुतकब्बिर के शर से अल्लाह की पनाह

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ [سورهٔ مؤمن]

तर्जुमाः और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि मैंने अपने रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता।

5. तमाम मख़्लूक़ की बुराई से अल्लाह की पनाह

सूरह फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं (1) उस की मख़्लूक़ के शर से (2) और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए (3) और गिरहों में दम करने वालियों के शर से (4) और हसद करने वाले के शर से जब हसद करे (5)

6. शैतान ख़न्नास के शर से अल्लाह की पनाह

सूरह नास

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِۙ ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِۙ ﴿۲﴾ اِلٰهِ
النَّاسِۙ ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِۙ ﴿۴﴾ الَّذِىۡ
يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِۙ ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

तर्जुमाः कह दीजिए कि मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की (1) लोगों के बादशाह की (2) लोगों के माबूद की (3) उसके शर से जो वस्वसा डाले और छुप जाए (4) जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है (5) जिन्नात में से और इन्सान में से (6)

7. अचानक की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنۡ فُجَاءَةِ الشَّرِّ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं अचानक की बुराई से आप की पनाह मांगता हूं।

(किताबुल अज़्कारः पेज 104)

8. कुफ्र व फ़क्र व अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡكُفۡرِ وَالۡفَقۡرِ وَاَعُوۡذُبِكَ
مِنۡ عَذَابِ الۡقَبۡرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنۡتَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं कुफ्र और मोहताजगी से आप की पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से मैं आप की पनाह मांगता हूं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है। (अबू दाऊद, सहीह इब्ने माजाः 3/142)

9. अपने नफ़्स की शरारत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ الشَّیْطَانِ وَشِرْکِهٖ وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰی نَفْسِیْ سُوْءًا اَوْاَجُرَّهٗ اِلٰی مُسْلِمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप के ज़रिए मेरे नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से पनाह मांगता हूं और इस से पनाह मांगता हूं कि कोई बुराई करूं जिस का वबाल मेरे नफ़्स पर पड़े, या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचाऊँ। (अबू दाऊद, सहीह तिर्मिज़ी 3/142)

10. किए हुए बुरे आमाल के वबाल से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَاصَنَعْتُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह चाहता हूं उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो मैंने किए हैं। (बुख़ारीः 1/97, 98)

11. नीचे की सम्त से हलाक होने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूं इस से कि हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से। (सहीह इब्ने माजाः 2/332)

12. ग़म, इज्ज़, सुस्ती, बुख़्ल, क़र्ज़ और लोगों के दबाव से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं फ़िक्र और रंज से और मैं आप की पनाह मांगता हूं कम हिम्मती और सुस्ती से और मैं आप की पनाह मांगता हूं बुज़दिली और बख़ीली से और मैं आप की पनाह मांगता हूं क़र्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से। (अबू दाऊद)

13. नफ़्स और हर जानवर की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं मेरे नफ़्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज़े में है,

बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है। (रवाहू इब्ने सुन्नी व अबू दाऊद)

14. शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो ख़ूब सुनने वाला बड़ा जानने वाला है मर्दूद शैतान से। (तिर्मिज़ी)

15. रात, दिन और ज़मीन व आसमान के फ़ितनों से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ
اللّٰتِىْ لَايُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَايَنْزِلُ مِنَ
السَّمَاءِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَشَرِّ مَا ذَرَاَ فِى
الْاَرْضِ وَشَرِمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ فِتَنِ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَمِنْ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا
يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह की करीम ज़ात की और अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं जिन कलिमात से आगे नहीं बढ़ता कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो

आसमान से उतरती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो आसमान में चढ़ती हैं और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन में फैलती हैं, और उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो ज़मीन से निकलती हैं, और रात और दिन के फ़ित्नों से और रात और दिन में खटखटाने वालों से, मगर वह खटखटाने वाला जो ख़ैर के साथ खटखटाता हो, ऐ बेहद मेहरबान!।

(मुअत्ता इमाम मालिक)

16. शैतान के शर और उसके शिर्क से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِیْ یُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ ذَرَاَ وَمِنْ شَرِّ الشَّیْطَانِ وَشِرْكِهٖ.

तर्जुमाः मैं पनाह लेता हूं अल्लाह की, जिसने आसमान को रोके रखा है कि वह ज़मीन पर गिरे मगर उसकी एजाज़त से। मख़्लूक़ की बुराई से और जो फैली है और शैतान के शर और उसके शिर्क से।

(अद्दुआः 954, इब्ने सुन्नीः 66, मजमाः 119/1)

17. तमाम मख़्लूक़ की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ الَّذِیْ لَیْسَ شَیْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِیْ لَا یُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ وَّبِاَسْمَاءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا

وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِّنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की अज़ीम ज़ात की पनाह मांगता हूं कि जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है, (और पनाह मांगता हूं) अल्लाह के उन कामिलुत्तासीर कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और न कोई बुरा शख़्स, (और मैं पनाह मांगता हूं) अल्लाह के तमाम अच्छे नामों की जो मुझे मालूम हैं और जो मुझे मालूम नहीं हैं उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फैलाई। (मुअत्ता इमाम मालिक रह०)

दूसरी मंज़िल | सनीचर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. दिन के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं पनाह मांगता हूं उस दिन और उसके बाद के शर से। (हिस्ने हसीन पेज 32)

2. तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह के कामिलुत्तासीर कलिमात की पनाह मांगता हूं तमाम मख़्लूक़ात की बुराई से। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने माजाः 2/ 232)

3. शैतान के शर से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं मर्दूद शैतान से। (हिस्ने हसीन पेज 79)

4. डर और ख़ौफ़ से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ.

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं उस से जिस से मैं डर रहा हूं और ख़ौफ़ ज़दा हो रहा हूं। (शमाइले कुबरा बहवाला मुस्तज़र्फ़ः जिल्द 2 पेज 280)

5. तक़दीर की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ وَّشَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَّمِنْ شَرِّ قَضَاءِ السُّوْءِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह लेता हूं हर ज़िद्दी सख़्त इन्सान से और आप की पनाह मांगता हूं सरकश शैतान से और आप की पनाह मांगता हूं बुराई लाने वाले फ़ैसला की बुराई से और अप की पनाह मांगता हूं ऐसे ज़मीन पर चलने वाले से जिस की पेशानी आप पकड़े हुए हैं। यक़ीनन मेरा रब सीधे रासते पर है। (सीधा रास्ता दिखाने वाला है।)

(शमाइले कुबरा बहवाला मुस्तज़र्फ़ः जिल्द 2 पेज 280)

6. रज़ाइल के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ

فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह मांगता हूं बुज़दिली से और मैं आप की पनाह मांगता हूं कंजूसी से और मैं आप की पनाह मांगता हूं निकम्मी उम्र से (यानी उम्र का नाकारा हिस्सा) और मैं आप की पनाह मांगता हूं दुनिया के फ़िल्ने और अज़ाबे क़ब्र से। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

7. हर दिन के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ
وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो बुराई इस दिन में है और जो इसके बाद है इन सब से तेरी पनाह लेता हूं। (सहीह मुस्लिम)

8. सुस्ती और सख़्त बुढ़ापे से अल्लाह की पनाह

رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوْءِ الْكِبَرِ.

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह लेता हूं सुस्ती से और सख़्त बुढ़ापे से। (सहीह मुस्लिम)

9. अज़ाबे जहन्नम और अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह

رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابٍ فِی النَّارِ وَعَذَابٍ فِی الْقَبْرِ.

तर्जुमाः ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तेरी पनाह लेता हूं दोज़ख़ के अज़ाब से और क़ब्र के अज़ाब से। (सहीह मुस्लिम)

10. ज़ालिम और मज़लूम बनने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَعْتَدِیَ اَوْ يُعْتَدٰی عَلَیَّ اَوْ اَكْسِبَ خَطِيْئَةً اَوْ ذَنْبًا لَّا تَغْفِرُهٗ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं कि ख़ुद किसी पर ज़ुल्म करूं या मुझ पर कोई ज़ुल्म करे या किसी पर ख़ुद ज़ियादती करूं या कोई मेरे ऊपर ज़ियादती करे या क़सदन किसी ग़लती में मुब्तला हूं या किसी ऐसे गुनाह में जिस को तू न बख़्शे। (मुस्नद इमाम अहमद, हाकिम)

11. तमाम मख़्लूक़ की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَبِكَلِمَاتِكَ التَّآمَّةِ مِنْ شَرِّ مَآ اَنْتَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं तेरी ज़ात बा बरकात और तेरे पूरे पूरे कलिमात के वसीला से तेरी पनाह लेता हूं हर उस चीज़ की बुराई से जो तेरे क़ब्ज़ा में है। (अबू दाऊद)

12. हर चीज़ की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَیْءٍ اَنْتَ

اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं हर उस चीज़ की बुराई से जो तेरे क़ब्ज़ा में है। (सहीह मुस्लिम)

13. अल्लाह के ग़ुस्सा से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ामन्दी की तेरे गुस्से से पनाह लेता हूं (तेरी सिफ़ाते जलालिया से तेरी ही जमाली सिफ़ात की पनाह लेता हूं) और तेरी मुआफ़ी की तेरे अज़ाब से पनाह लेता हूं (ग़र्ज़ यह कि) तुझ से तेरी ज़ात ही की पनाह लेता हूं, मैं तेरी पूरी तारीफ़ नहीं कर सकता बस तू ऐसा ही है जैसा ख़ुद तूने अपनी तारीफ़ फ़रमाई। (सहीह मुस्लिम)

14. जहन्नम से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَئِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ وَمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ.

तर्जुमाः ऐ जिबरईल अलैहिस्सलाम व मीकाईल अलैहिस्सलाम व इसराफ़ील अलैहिस्सलाम और मुहम्मद ﷺ के रब! मैं तुझ से अज़ाबे दोज़ख़

से पनाह का तालिब हूं। (इब्ने सुन्नीः 103)

15. लग़ज़िश से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَزِلَّ اَوْ
اُزَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَیَّ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं कि मैं किसी को बहकाऊँ या मुझे कोई बहकाए या मैं ख़ुद लग़ज़िश खाऊँ या किसी दूसरे को लग़ज़िश दूं, ख़ुद किसी पर ज़ुल्म करूं या मुझ पर कोई ज़ुल्म करे और ख़ुद किसी के साथ नादानी की बात करूं या कोई दूसरा मेरे साथ करे।

(अबू दाऊद, इब्ने माजा)

16. हर बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ مَا عَلِمْتُ
مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं हर बुराई से जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता। (हिस्ने हसीन)

17. अल्लाह की अजीब पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ
عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जिन जिन बुराइयों से तेरे नेक बंदों ने पनाह ली है मैं भी उन सब से पनाह लेता हूं। (हिस्ने हसीन)

18. ज़िन्दगी और मौत के फ़िल्ने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं जहन्नम के अज़ाब से और तेरी पनाह लेता हूं क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह लेता हूं उस दज्जाल से जिस की एक आँख ख़राब होगी और तेरी पनाह लेता हूं ज़िन्दगी और मौत के वक़्त के फ़िल्ने से और तेरी पनाह लेता हूं गुनाह से और तावान उठाने से। (बुख़ारी, मुस्लिम)

19. मुआमलात की परेशानी से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّسَاوِسِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं दिल के वसवसों से और मुआमलात की परेशानी और क़ब्र के फ़िल्ने से। (बैहक़ी, इब्ने अबी शैबा)

तीसरी मंज़िल | इतवार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. रात, दिन और हवाओं के साथ आने वाली आफ़तों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَمِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيَاحُ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं हर उस आफ़त की बुराई से जो रात में आए और हर उस आफ़त की बुराई से जो दिन में आए और हर उस आफ़त की बुराई से जो हवाओं के साथ उड़ती है (जैसे आदमी उड़ जाते हैं, दरख़्त टूट जाते हैं, झोंपड़ियां बरबाद हो जाती हैं।) (बैहक़ी, इब्ने अबी शैबा)

2. अल्लाह की दी हुई और रोकी हुई चीज़ों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَائِذٌ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اَعْطَيْتَنَا وَمِنْ شَرِّ مَا مَنَعْتَنَا .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो तूने हम को दिया है मैं उस के शर से तेरी पनाह लेता हूं और जो हम को नहीं दिया उस शर से भी तेरी पनाह लेता हूं।
(मजमउज्जवाइद, अल-अदबुल मुफ़रद)

3. दुश्मनों के मक्र व फ़रेब से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम उनके मक्र से तेरी पनाह लेते हैं।
(अबू दाऊद, नसई, मुस्तदरक)

4. नाजायज़ टैक्स और मुफ़्त का तावान भरने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَاْثَمِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इज्ज़ और काहिली और सख़्त बुढ़ापे और मुफ़्त का तावान भरने और गुनाह से। (बुख़ारी व मुस्लिम)

5. मालदारी और फ़क़ीरी की आज़माइशों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं दोज़ख़ के अज़ाब से और उसकी आज़माइश से और क़ब्र की आज़ामइश और उसके अज़ाब से और मालदारी की आज़माइश के शर से और फ़क़ीरी की आज़माइश के शर से (यानी मैं माल की आज़माइश में पडूं और न तंगदस्ती की)। (बुख़ारी व मुस्लिम)

6. ख़तरनाक रूहानी और जिस्मानी बीमारियों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَالْعَيْلَةِ
وَالذِّلَّةِ وَالْمَسْكَنَةِ وَاَعُوۡذُبِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْكُفْرِ
وَالْفُسُوۡقِ وَالشِّقَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَاءِ وَاَعُوۡذُبِكَ
مِنَ الصَّمَمِ وَالْبَكَمِ وَالْبَرَصِ وَالْجُنُوۡنِ وَالْجُذَامِ
وَسَيِّءِ الْاَسْقَامِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं सख़्त दिली से और ग़फ़लत से और हद दर्जा एहतियाज और ज़िल्लत व ख़्वारी से और तेरी पनाह लेता हूं मोहताजी से, कुफ्र, नाफ़रमानी और हट धर्मी से और शोहरत और दिखावे के लिए अमल करने से और तेरी पनाह लेता हूं बहरे और गूंगे होने से, जिस्म पर सफ़ेद दाग़ पड़ने से, दीवानगी और कोढ़ से और बक़िया जितनी ख़राब ख़राब बीमारियां हैं सब से। (अबू दाऊद, इब्ने हिब्बा, मुस्तदरक हाकिम)

7. गुमराही से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَعُوۡذُبِكَ بِعِزَّتِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَنْ
تُضِلَّنِىۡ، اَنْتَ الْحَيُّ الَّذِىۡ لَا يَمُوۡتُ وَالْجِنُّ وَالْاِنْسُ
يَمُوۡتُوۡنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ तेरी इज्ज़त के सदक़ा में, माबूद

कोई नहीं सिर्फ़ तू है, इस बात से कि तू मुझ को गुमराह कर दे। तू हमेशा हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, कभी फ़ना होने वाला नहीं और (तेरे सिवा) जिन्नात हों या इन्सान सब एक दिन मरने वाले हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

8. आज़माइश की सख़्ती और बद बख़्ती की गिरफ़्त और दुश्मनों के हंसने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرْكِ الشَّقَاءِ

وَسُوْءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं आज़माइश की सख़्ती और बद बख़्ती की गिरिफ़्त से और इस बात से कि मुक़द्दरात के फ़ैसलों से मेरे दिल में तंगी पैदा हो और दुश्मनों की हंसी उड़ाने से। (बुख़ारी)

9. इल्म और जहल के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَلِمْتُ وَمِنْ شَرِّ

مَا لَمْ اَعْلَمْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं उन चीज़ों की बुराई से जिन को मैं जानता हूं और उनकी बुराई से भी जिन को मैं नहीं जानता। (नसई)

10. आमाल के बुरे नतीजा से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا

لَمْ اَعْمَلْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं उस अमल के बुरे नतीजा से जो मैंने किया है और उस से भी जो मैंने नहीं किया। (मुस्लिम, अबू दाऊद, नसई)

11. ज़वाले नेमत और आफ़ियत के रुख़ फेरने और नागहानी अज़ाब और ग़ज़बे इलाही से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفُجَائَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि तेरी मौजूदा नेमत जाती रहे और तेरी आफ़ियत मुझ से अपना रुख़ फेर ले और तेरे नागहानी अज़ाब से (कि उसके आने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ न मिले) और तेरे तमाम गुस्से के असबाब से। (मुस्लिम, अबू दाऊद)

12. कान, आँख, ज़बान, दिल और मनी के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِىْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِىْ وَمِنْ شَرِّ لِسَانِىْ وَمِنْ شَرِّ قَلْبِىْ وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّىْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं अपने कान की बुराई से, आँख की बुराई से, ज़बान की बुराई से, दिल की बुराई से (यानी ग़ीबत सुनने, बदनज़री, नाजायज़ गुफ़्तुगू और कीना वग़ैरा से) और अपनी मनी की

बुराई से (कि उसके जोश से गुनाह की रग़बत हो)। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई)

13. बुरी अमवात से अल्लाह की पनाह

बहुत ध्यान से ये दुआ पढ़िए

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ وَاَعُوْذُبِكَ اَنْ یَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّیْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِكَ مُدْبِرًا وَّ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِیْغًا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि मेरे ऊपर मकान वग़ैरा आ गिरे या मैं मकान वग़ैरा से नीचे आ गिरूं। और तेरी पनाह लेता हूं पानी में डूब जाने या आग वग़ैरा में जल जाने और सख़्त बुढ़ापे से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि मरते वक़्त शैतान मुझ को वरग़लाए और बहकाए और तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि जिहाद में पीठ मोड़ कर मरूं। और तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि ज़हरीले जानवरों के डसने से मरूं। (अबू दाऊद, नसई)

14. नापसंदीदा अख़्लाक़, बुरे आमाल, नफ़्सानी ख़्वाहिशात से और तमाम बीमारियों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُّنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ

وَالْاَعْمَالِ وَالْاَهْوَاءِ وَالْاَدْوَاءِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह लेता हूं ना पसंदीदा अख़्लाक़ से, बुरे आमाल से, नफ़्सानी ख़्वाहिशात से और तमाम बीमारियों से।

(तिर्मिज़ी, इब्ने हिब्बान)

15. हर बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَااسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं उन तमाम बुरी बुरी बातों के शर से जिन से तेरे नबी मुहम्मद ﷺ ने तेरी पनाह ली है। (तिर्मिज़ी)

16. बुरे पड़ोसी के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ فَاِنَّ جَارَالْبَادِيَةِ يَتَحَوَّلُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं बुरे पड़ोस से अपने रहने के घर में क्योंकि जंगल (यानी सफ़र) का पड़ोसी तो चला भी जाता है (और रहने के घर वाला देर पा होता है)। (इब्ने हिब्बान, मुस्तदरक हाकिम)

17. भूक की शिद्दत और ख़्यानत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِيْعُ
وَمِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं भूक की शिद्दत से क्योंकि वो बुरी रफ़ीक़ है और ख़्यानत से क्योंकि वह इन्सान की अंदुरून की बुरी ख़स्लत है। (अबू दाऊद)

चौथी मंज़िल | पीर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. चार रज़ाइल के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَقَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَدُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ وَنَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ هٰؤُلَاءِ الْاَرْبَعِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं पनाह लेता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे और ऐसे दिल से जो तुझ से न डरे और ऐसी दुआ से जो न सुनी जाए और ऐसे लालची नफ़्स से जिस की नीयत न भरे, ग़र्ज़ इन चारों बातों से।

(तिर्मिज़ी, मुस्तदरक हाकिम)

2. दीन के काम में मुख़ालिफ़त करने वालों की शरारत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ اَنْ نَّرْجِعَ عَلٰى اَعْقَابِنَا اَوْ نُفْتَنَ عَنْ دِيْنِنَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह लेते हैं इस बात से कि ख़ुद हम फिर कुफ्र की तरफ़ उलटे पाँव वापस हों या अपने दीन में मुख़ालिफ़ीन की

जानिब से फ़ित्ना में डाले जाएं। (बुख़ारी: 6593, बाब फ़िल हौज़)

3. बुरा वक़्त बौर बुरे साथी से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ يَّوْمِ السُّوْءِ وَمِنْ لَّيْلَةِ السُّوْءِ وَمِنْ سَاعَةِ السُّوْءِ وَمِنْ صَاحِبِ السُّوْءِ وَمِنْ جَارِ السُّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं बुरे दिन से, बुरी रात से और हर बुरी घड़ी से और बुरे साथी और अपनी सुकूनत के घर के बुरे पड़ोसी से।

(मजमउल कबीर तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद)

4. ज़िद और निफ़ाक़ और तमाम बुरे अख़्लाक़ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं ज़िद से, निफ़ाक़ से और तमाम बुरे अख़्लाक़ से। (अबू दाऊद, नसई)

5. नफ़्स की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझ को अपने नफ़्स की बदी से अपनी पनाह में ले ले। (हाकिम, तिर्मिज़ी)

6. अल्लाह के इल्म में जो बुराइयां हैं उन से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا تَعْلَمُ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं इन तमाम बातों की बुराई से जिन को तू जानता है। (तिर्मिज़ी, मुस्तदरक हाकिम)

7. नुक़सान पहुंचाने वाले मसाइब और गुमराह करने वाले फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّفِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं ऐसी मुसीबत से जो नुक़सान रसां हो और ऐसे फ़ित्ने से जो गुमराह कर दे। (इब्ने हिब्बान, नसई, मुस्तदरक हाकिम)

8. हर आने वाली मुसीबत से अल्लाह की पनाह

मुंदर्जा ज़ैल दुआ हुज़ूर ﷺ ने हज़रत आयशा रज़ि० को सिखाई थी :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ

مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तुझ से तमाम बुराइयों से पनाह चाहता हूं जो जल्दी मिलने वाली हैं और जो देर में मिलने वाली हैं जिस को मैं जानता हूं और

जिस को नहीं जानता। (इब्ने माजा, मुस्तदरक हाकिम, इब्ने हिब्बान)

9. क़ौल व अमल की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَیْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْعَمَلٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं दोज़ख़ के अज़ाब से और हर उस क़ोल व अमल से जो मुझ को इस से क़रीब कर दे।

(इब्ने माजा, मुस्तदरक हाकिम, इब्ने हिब्बान)

10. अल्लाह के पास बुराई के मौजूदा ख़ज़ाने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ شَرٍّ خَزَائِنُهٗ بِيَدِكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं तमाम बुराइयों से जिस के ख़ज़ाने तेरे हाथ में हैं। (हाकिम)

11. तमाम मख़्लूक़ की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह लेता हूं उस चीज़ के शर से जिस की पेशानी को तूने पकड़ रखा है। (मुस्तदरक हाकिम)

12. अल्लाह के ग़ज़ब से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الْكَرِیْمِ الَّذِیْ اَضَاءَتْ لَهُ السَّمٰوَاتُ وَ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَ صَلُحَ عَلَیْهِ اَمْرُ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ اَنْ تُحِلَّ عَلَیَّ غَضَبَكَ اَوْ تُنْزِلَ عَلَیَّ سَخَطَكَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी उस करीम ज़ात के नूर के वसीले से तेरी पनाह लेता हूं जिस से सब आसमान जगमगा रहे हैं और सब तारीकियां रौशन और जिस की वजह से दुनिया व आख़िरत के काम दुरुस्त हैं, इस बात से कि तू मुझ पर ग़ुस्सा हो या मुझ से ख़फ़ा हो।

(कन्ज़ुल उम्माल, अलजामिउस्सग़ीर)

13. मक्र देने वाले साथी के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ خَلِیْلٍ مَّاكِرٍ عَیْنَاهُ تَرَیَانِیْ وَقَلْبُهٗ یَرْعَانِیْ اِنْ رَّاٰی حَسَنَةً دَفَنَهَا وَ اِنْ رَّاٰی سَیِّئَةً اَذَاعَهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं ऐसे मक्कार दोस्त से जिस की आँखें मुझ को देखें और उसका दिल मेरी टोह में लगा रहे, अगर कोई नेकी देखे तो उसको छुपा ले और बुराई देखे तो उसको फैलाता फिरे।

(अलजामिउस्सग़ीर? कन्ज़ुल उम्माल)

14. तंगदस्ती की मुसीबत और हद से गुज़री हुई तंगदस्ती से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُؤْسِ وَالتَّبَاؤُسِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं तंगदस्ती की मुसीबत से और हद से गुज़री हुई तंगदस्ती से। (कुनूज़ुल हक़ाइक़)

15. मुआमलात की उलझनों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ وَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं क़ब्र के अज़ाब से और सीना के वसवसों से और अपने मुआमलात की परागंदगी से। (तिर्मिज़ी)

16. हवाओं के साथ जो बुराइयां आती हैं उस से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا تَجِیْءُ بِهِ الرِّیَاحُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं, उन बुराइयों से जो हवाएं ले कर आती हैं। (तिर्मिज़ी)

17. दो अंधी चीज़ों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ الْاَعْمَیَیْنِ السَّیْلِ

وَالْبَعِيْرِ الصَّئُوْلِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं, दो अंधों के शर से, एक सैलाब का पानी, दूसरा हमला-आवर ऊँट (दोनों का रुख़ जिधर हो जाए अंधा धुंद होता है)। (अलजामिउस्सग़ीर, मजमउज़्ज़वाइद)

18. क़र्ज़ की ज़्यादती और दुश्मन के ग़लबे और बेवा औरत की बरबादी और मसीहे दज्जाल के फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَغَلبَةِ الْعَدُوِّ وَمِنْ بَوَارِ الْاَيِّمِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं क़र्ज़ की ज़्यादती और दुश्मन के ग़लबे से और बेवा औरत की बरबादी से, मसीह दज्जाल के फ़ित्ना से।
(अलजामिउस्सग़ीर, मज़मउल कबीर)

19. औरतों के फ़ित्नों और क़ब्र के फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ النِّسَاءِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं औरतों के फ़ित्ना से और तेरी पनाह लेता हूं क़ब्र के फ़ित्ना से। (अलजामिउस्सग़ीर)

20. शैतान और उस के लश्कर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اِبْلِيْسَ وَجُنُوْدِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं शैतान से और उसके लश्कर से। (अमलुल यौम वल्लैलह इब्ने सुन्नी, किताबुल अज़कार लिन-नववी)

21. आख़िरत की ज़िल्लत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ تَصُدَّ عَنِّیْ وَجْهَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बात से कि तू क़ियामत में अपना रुख़ मुझ से फेर ले। (अमलुल यौम वल्लैलह लिस्सुयूती)

22. सारी बुराइयों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं हर शर से।

(क़िस्मुल अक़वाल, जमउल जवामे लिस्सुयूती)

पाँचवीं मंज़िल | मंगल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. गुनाहों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اقْتَرَفْتُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَمِنْ عَذَابِ الْاٰخِرَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं उन सब करतूत से जो मेरे हैं, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं आज़माइश की सख़्ती से और आख़िरत के अज़ाब से। (अल-फ़िरदौस मासूरुल ख़िताब लिद्दैलमी)

2. पांच रज़ाइल से अल्लाह की पनाह

बहुत बहुत ताकीदन दरख़्वास्त है कि ये दुआ ध्यान से पढ़िए

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ عَمَلٍ يُّخْزِيْنِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ صَاحِبٍ يُّؤْذِيْنِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ اَمَلٍ يُّلْهِيْنِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ فَقْرٍ يُّنْسِيْنِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ غِنًى يُّطْغِيْنِيْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह का तालिब हूं हर ऐसे अमल से जो मुझे रुस्वा कर दे और तेरी पनाह लेता हूं हर ऐसे दोस्त से जो मुझे तकलीफ़ दे और तेरी पनाह लेता हूं हर ऐसी उम्मीद से जो मुझ को ग़ाफ़िल बना दे और तेरी पनाह लेता हूं हर ऐसी एहतियाज से जो मुझे निसयान में डाल दे और तेरी पनाह लेता हूं हर ऐसे ग़िना से जो मुझे सरकश कर दे। (जमउल जवामे लिस्सुयूती, क़िस्मुल अक़्वाल)

3. दुनिया और क़ियामत की तंगियों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ ضِيْقِ الدُّنْيَا وَضِيْقِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं दुनिया की तंगी से और क़ियामत के दिन की तंगी से। (इब्ने माजा, नेसई)

4. हसरत वाली मौत और हसरत वाली ज़िन्दगी से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مَّوْتِ الْهَمِّ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ مَّوْتِ الْغَمِّ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِيْعُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं फ़िक्र की मौत से और तेरी पनाह लेता हूं ग़म की मौत से और तेरी पनाह लेता हूं भूक से क्योंकि इन्सान के

साथ बहुत बुरी रफ़ीक़ है और तेरी पनाह लेता हूं ख़यानत से क्योंकि यह अंदुरूनी बुरी ख़स्लत है। (कन्ज़ुल उम्माल)

5. शिर्क से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّ اَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं, इस बात से कि तेरे साथ किसी को शरीक ठहराऊँ और मैं यह जानता भी हूं और तुझ से इस्तिग़फ़ार करता हूं उसकी जिस को मैं नहीं जानता हूं। (अहमद, बुख़ारी फ़ी अदबुल मुफ़रद)

6. कुफ्र और फ़क्र से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَبِاسْمِكَ الْعَظِيْمِ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरे बुज़ुर्गी वाले चेहरे और तेरी बड़ाई वाले नाम के सदक़ा में कुफ्र और मोहताजगी से पनाह मांगता हूं। (अल-जामिउस्सग़ीर लिस्सुयूती)

7. क़ता रहमी की बद दुआ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ يَّدْعُوَ عَلَيَّ رَحِمٌ قَطَعْتُهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं रिश्ते नाते की बद दुआ से जिस

को मैंने काट डाला हो। (तबरानी)

8. जानवरों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی بَطْنِهٖ وَمِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی رِجْلَیْنِ وَمِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی اَرْبَعٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं उन जानवरों के शर से जो पेट के बल चलते हैं और उनके शर से जो दो पैरों पर चलते हैं और उनके शर से जो चार पैरों पर चलते हैं। (कन्ज़ुल उम्माल)

9. थका देने वाली औरत, नाफ़रमान औलाद, हराम माल और धोका देने वाले साथी से अल्लाह की पनाह

नीचे लिखी हुई दुआ मअ़ तर्जुमा ख़ूब ग़ौर से पढ़िएः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنِ امْرَاَةٍ تُشَیِّبُنِیْ قَبْلَ الْمَشِیْبِ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّلَدٍ یَّكُوْنُ عَلَیَّ وَبَالًا وَّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مَّالٍ یَّكُوْنُ عَلَیَّ عَذَابًا وَّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ صَاحِبِ خَدِیْعَةٍ اِنْ رَّاٰی حَسَنَةً دَفَنَهَا وَ اِنْ رَّاٰی

سَيِّئَةً اَفْشَاهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं ऐसी औरत से जो बुढ़ापे से पहले मुझ को बूढ़ा बना दे और तेरी पनाह लेता हूं ऐसी औलाद से जो मेरे लिए वबाले जान बन जाए और तेरी पनाह लेता हूं ऐसे माल से जो मेरे लिए अज़ाब का सबब बने और तेरी पनाह लेता हूं उस दग़ाबाज़ दोस्त से जो नेकी देखे तो उसको दबा दे और बुराई देखे तो उसको लोगों में कहता फिरे। (अस्सुयूती)

10. मालदारी पर अकड़ने से और फ़क़ीरी की ज़िल्लत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ بَطَرِ الْغِنٰى وَمَذَلَّةِ الْفَقْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं मालदारी पर अकड़ से और फ़क़ीरी की ज़िल्लत से। (दैलमी)

11. हक़ के बाद शक से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ فِى الْحَقِّ بَعْدِ الْيَقِيْنِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّ يَوْمِ الدِّيْنِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं यक़ीन कर लेने के बाद हक़ में शक करने से और तेरी पनाह लेता हूं शैताने मर्दूद से और तेरी पनाह लेता हूं

क़ियामत के दिन के शर से। (कन्ज़ुल उम्माल, जुज़वी फ़र्क़ के साथ)

12. ज़िल्लत व रुस्वाई से अल्लाह की पनाह

ऐ अल्लाह! हम को ऐसी इज़्ज़त दे जिस के बाद ज़िल्लन न हो।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह लेते हैं इस बात से कि हम ज़लील और रुस्वा हों। (कन्ज़ुल उम्माल)

13. अचानक की मौत, साँप का डसना और दरन्दिों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مَّوْتِ الْفُجَائَةِ وَمِنْ لَّدْغَةِ
الْحَيَّةِ وَمِنَ السَّبُعِ وَمِنَ الْغَرَقِ وَمِنَ الْحَرَقِ وَمِنْ
اَنْ اَخِرَّ عَلٰى شَیْءٍ وَّمِنَ الْقَتْلِ عِنْدَ فِرَارِ الزَّحْفِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं अचानक की मौत से और साँप के काटने से और दरिन्दों से और डूब जाने से और जल जाने से और इस बात से कि मैं किसी चीज़ पर गिर पड़ूं और लश्कर के भागने के वक़्त क़त्ल होने से। (कन्ज़ुल उम्माल)

14. क़ब्र के अज़ाब और क़ब्र के फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ

فِتْنَةِ الْقَبْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से और क़ब्र की आज़माइश से तेरी पनाह चाहता हूं। (अहमदः जिल्द 10, पेज 115, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 387)

15. अल्लाह के ग़ुस्सा से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ. اَللّٰهُمَّ لَا اَسْتَطِيْعُ ثَنَاءً عَلَيْكَ وَلَوْ حَرَصْتُ وَلٰكِنْ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ.

तुर्जुमाः ऐ अल्लाह! में तेरी सज़ा से तेरे अफ़्व दरगुज़र की पनाह चाहता हूं और तेरे ग़ुस्सा से तेरी रज़ा की पनाह चाहता हूं और तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूं और चाहे मुझे कितना शौक़ हो और मैं कितना ज़ोर लगाऊँ, तेरी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं कर सकता। तू वैसा है जैसे तूने अपनी तारीफ़ की। (तबरानी जिल्द 10 पेज 124, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 393)

16 मर्दूद शैतान से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ وَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

तुर्जुमाः मैं मर्दूद शैतान से अज़मत वाले अल्लाह, उसकी करीम ज़ात की और उसकी क़दीम सलतनत की पनाह चाहता हूं।

(अबू दाऊद, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 394)

17. सफ़र की मुशक़्क़तों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنۡ وَّعۡثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الۡمَنۡظَرِ وَسُوۡءِ الۡمُنۡقَلَبِ فِی الۡاَهۡلِ وَالۡمَالِ.

तुर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की मुशक़्क़त से और तकलीफ़ देह मंजर और अहलो अयाल और माल व दौलत में बुरी वापसी से तेरी पनाह चाहता हूं।

(अख़्रजहू मुस्लिम व अबू दाऊद कज़ा फ़िल जमउल फ़वायद जिल्द 2 पेज 261, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 395)

18. जहन्नम की आग से अल्लाह की पनाह

سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمۡدِ اللّٰهِ وَحُسۡنِ بَلَائِهٖ عَلَيۡنَا رَبَّنَا صَاحِبۡنَا وَاَفۡضِلۡ عَلَيۡنَا عَائِذًا بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ.

तुर्जुमाः सुनने वाले ने हम से अल्लाह की हम्द व सना और अल्लाह के हमें अच्छी तरह आज़माने को सुना, ऐ हमारे रब! तू हमारा साथी हो जा और हम पर फ़ज़्ल फ़रमा, मैं जहन्नम की आग से पनाह लेते हुए यह कह रहा हूं।

(अख़्रजहू मुस्लिम व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी कज़ा फ़िल जमउल फ़वायद जिल्द 2 पेज 261, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 396)

छठी मंज़िल | बुध

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. बस्ती और बस्ती वालों के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह लेते हैं इस बस्ती के शर से और बस्ती वालों के और जो कुछ इस बस्ती में है उसके शर से।

(अख़्रजहू तबरानी, क़ालल हैशमी जिल्द 10 पेज 135, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 396)

2. कपड़े, कुर्ता, अमामा, चादर वग़ैरा के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस कपड़े के शर से और जिस मक़सद के लिए इसे बनाया गया है उस के शर से।

(अख़्रजहू तिर्मिज़ी व अबू दाऊद कज़ा फ़िल जमउल फ़वायद जिल्द 2 पेज 264, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 398)

3. हर माह के शर और तक़दीर के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هٰذَا الشَّهْرِ وَشَرِّ الْقَدْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस महीना की बुराई से और तक़्दीर की बुराई से।

(अख़्रजहू तबरानी व इस्नादुहू कमा क़ालल हैशमी जिल्द 10 पेज 139, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 399)

4. हवा की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हवा के शर से और जो कुछ इस में है उसके शर से और जो कुछ दे कर यह हवा भेजी गई है उसके शर से पनाह मांगता हूं। (अख़्रजहू शैख़ान व तिर्मिज़ी, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 399)

5. बादल की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اُرْسِلَ بِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम इस चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहते हैं जिसे दे कर इस बादल को भेजा गया है।

(अख़्रजहू इब्ने अबी शैबा कज़ा फ़िल कन्ज़ जिल्द 4 पेज 29, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 399)

6. रद कर दी जाने वाली दुआ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस दुआ से जो कुबूल न हो।

(हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 406)

7. बहुत ज़्यादा बूढ़ा हो जाने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَفِتْنَةِ
الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَسُوْءِ الْعُمُرِ.

ऐ अल्लाह! में तेरी पनाल लेता हूं कंजूसी और बुज़दिली से, सीने के फ़ित्ना से, अज़ाबे क़ब्र और बुरी उम्र यानी बहुत ज़्यादा बूढ़ा हो जाने से।

(अख़्रजहू अहमद व इब्ने अबी शैबा व अबू दाऊद व नसई वग़ैरहुम, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 408)

8. बुरी नज़र से अल्लाह की पनाह

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ि० को इन कलिमात से अल्लाह की पनाह में दिया करते थे।

اِنِّیْ اُعِیْذُ کُمَا بِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ کُلِّ شَیْطَانٍ
وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ کُلِّ عَیْنٍ لَّامَّةٍ.

तर्जुमाः मैं तुम दोनों को हर शैतान से, मोज़ी ज़हरीले जानवरों से और हर लगने वाली बुरी नज़र से अल्लाह के इन कलिमात की पनाह में देता हूं जो पूरे हैं।

(इन्दा अबी नईम फ़िल हुलियह कज़ा फ़िल कन्ज़ जिल्द 1 पेज 212, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 408)

9. जिन्न व इन्स की शरारतों से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ

عِبَادِهٖ وَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह के ग़ुस्सा और उसकी सज़ा से और उस के बंदों के शर से और शयातीन के वसाविस से और शयातीन के मेरे पास आने से उसके कामिल कलिमात की पनाह चाहता हूं।

(अख़्रजहू तबरानी फ़िल औसत कज़ा फ़िल तर्ग़ीब जिल्द 3 पेज 116, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 410)

10. ग़फ़लत के अज़ाब से अल्लाह की पनाह

ऐ अल्लाह! हमें ऐसा ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ दे जिस के बाद ग़फ़लत न हो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ تَاْخُذَنِيْ عَلٰى غِرَّةٍ اَوْ تَذَرَنِيْ فِيْ غَفْلَةٍ اَوْ تَجْعَلَنِيْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि तू अचानक बेख़बरी में मेरी पकड़ करे या मुझे ग़फ़लत में पड़ा रहने दे या मुझे ग़ाफ़िल लोगों में से बना दे।

(अख़्रजहू इब्ने अबी शैबा व अबू नईम फ़िल हुलियी, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 419)

11. जेल और पुलिस के डंडों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ السِّجْنِ وَالْقَيْدِ وَالسَّوْطِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं जेल से और बेड़ी और कोड़े से।

(इन्दल बैहक़ी कज़ा फ़िल कन्ज़ जिल्द 8 पेज 119, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 421)

12. हर महीने की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هٰذَا الشَّهْرِ وَشَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस महीने के शर से और जो कुछ इस में है उसके शर से और जो कुछ इसके बाद है।

(अख़रजहू इब्नुन्नज्जार कज़ा फ़िल कन्ज़ जिल्द 4 पेज 326, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 422)

13. बाज़ार और बाज़ार वालों की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ السُّوْقِ وَشَرِّ اَهْلِهَا .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बाज़ार के शर से और बाज़ार वालों के शर से।

(इन्दा तबरानी ऐज़न क़ालल हैशमी जिल्द 10 पेज 129, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 425)

14. दिल के बिखर जाने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ تَفْرِقَةِ الْقَلْبِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं दिल के बिखर जाने से तेरी पनाह चाहता हूं।

(अख़्रजहू अबू नईम फ़िल हुलियह जिल्द 1 पेज 219, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 426)

15. गंदगी और गंदी चीज़ों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं गंदगी और गंदी चीज़ों से पनाह मांगता हूं (उस में नापाक जिन्न व शयातीन भी दाख़िल हैं) (अद्दुआ अलमसनून पेज 157)

16. नापाक चीज़ों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الرِّجْسِ النَّجِسِ الْخَبِيْثِ
الْمُخْبِثِ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं नापाक अश्या, गंदगी चीज़ों और ख़बासत में डालने वाले मर्दूद शैतान से तेरी पनाह मांगता हूं।

(अज़कार पेज 21, अद्दुआ पेज 964/2 बसनदे ज़ईफ़, अद्दुआ अलमसनून पेज 158)

17. जहन्नम से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَتُدْخِلَنِیَ
الْجَنَّةَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से सवाल करता हूं कि मुझे जहन्नम से पनाह दीजिए और जन्नत में दाख़िल कीजिए।

(इब्ने सुन्नी पेज 84, अज़कार पेज 25, अद्दुआ अलमसनून पेज 164)

18. इब्लीस और उसके लश्कर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اِبْلِیْسَ وَجُنُوْدِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह लेता हूं इबलीस और उसके लश्कर से। (इब्ने सुन्नी अज़कार पेज 73, अद्दुआ अलमसनून पेज 167)

19. परागंदा और बेहूदा ख़्यालात से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ وَهَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं मर्दूद शैतान से यानी उसके "पैदा कर्दा" तकब्बुर से और उसके फूंके हुए परागंदा और बेहूदा ख़्यालात और उसके कचोकों (वसवसों) से।

(हाकिम जिल्द 1 पेज 207 बसनदे सहीह, अद्दुआ अलमसनून पेज 174)

20. बदफ़ाली और हलाकत से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشُّؤْمِ وَالْهَلَكَةِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं बद-फ़ाली और हलाकत से।

(अहयाउल क़ुलूब, अवारिफ़ुल मुआरिफ़ः पेज 454, अद्दुआ अलमसनून पेज 177)

21. जंजीरों और तौक़ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاَغْلَالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह लेता हूं जंजीरों और तौक़ से।

(फ़िरदौस, इत्तिहाफ़ः पेज 365, जल्दी 2, अद्दुआ अलमसनून पेज 180)

22. जहन्नम के अहवाल से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُبِكَ رَبِّیْ مِنْ حَالِ النَّارِ.

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! आप की जहन्नम के अहवाल से पनाह मांगता हूं।

(इब्ने माजा 272, बैहक़ी फ़िश्शुअबि 91, अद्दुआ अलमसनून पेज 537)

23. रिज़्क़ को रोकने वाले और दुआ की क़ुबूलियत को रोकने वाले गुनाहों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الذُّنُوْبِ تَمْنَعُ اِجَابَتَكَ،
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الذُّنُوْبِ الَّتِیْ تَمْنَعُ رِزْقَكَ،
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الذُّنُوْبِ الَّتِیْ تُحِلُّ النِّقَمَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं उस गुनाह से जो कुबूले दुआ से माने हो जाए तेरी पनाह मांगता हूं। ऐ अल्लाह! मैं पनाह मांगता हूं उस गुनाह से जो तेरे रिज़्क़ को रोक दे। ऐ अल्लाह! मैं उस गुनाह से पनाह मांगता हूं जो सज़ा को हलाल कर दे। (अद्दुआ 1448/3 बसनदे ज़ईफ़, अद्दुआ अलमसनून पेज 573)

24. तिजारत में नुक़सान से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُصِیْبَ فِیْهَا یَمِیْنًا فَاجِرَةً اَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह चाहता हूं कि किसी झूठी क़िस्म या घाटे के मुआमले में पड़ जाऊँ।

(हाकिम 539/1, अज़कार 259, बसनदे ज़ईफ़, अद्दुआ अलमसनून पेज 503)

25. जानवर की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَاجُبِلَ عَلَیْهِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं उस जानवर के शर से और जिस शर पर यह पैदा किया गया है आप की पनाह चाहता हूं।

(अबू दाऊद, अज़कार 242, अद्दुआ अलमसनून पेज 478)

सातवीं मंज़िल | जुमेरात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. ज़माने के हवादिस से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह लेता हूं ज़माने के हवादिस से।

(बैहक़ी 117/5, सुबुल 871/8, अद्दुआ अलमसनून पेज 456)

2. ज़ालिम हाकिम की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ فِیْ عِيَاذِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ سُلْطَانٍ وَّمِنَ
الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَحْتَرِسُ بِكَ مِنْ شَرِّ
جَمِيْعِ كُلِّ ذِیْ شَرٍّ خَلَقْتَهٗ وَاَحْتَرِزُ بِكَ مِنْهُمْ وَاُقَدِّمُ
بَيْنَ يَدَیَّ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، قُلْ هُوَ اللّٰهُ
اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾ وَمِنْ خَلْفِیْ مِثْلَ ذٰلِكَ وَعَنْ يَّمِيْنِیْ مِثْلَ

ذٰلِكَ وَعَنْ يَّسَارِىْ مِثْلَ ذٰلِكَ وَمِنْ فَوْقِىْ مِثْلَ ذٰلِكَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे अपनी पनाह में ले ले हर ज़ालिम बादशाह की बुराई से और मर्दूद शैतान की बुराई से, ऐ अल्लाह! मैं आप की हिफ़ाज़त ढूंढता हूं हर ज़ी शर की बुराई से जिसे पैदा किया उस से मैं आप की पनाह में आता हूं और उसे मैं आप के सामने करता हूं, अल्लाह के नाम से जो मेहरबान रहम करने वाला है, कहिए वो अल्लाह यकता है, अल्लाह बेनियाज़ है, न उस ने जना और न जना गया, न कोई उस का हमसर व साझी है। इसी तरह पीछे से, इसी तरह दाएं से, इसी तरह बाएं से और इसी तरह ऊपर से।

(ख़साइसे कुबरा 176/2, इब्ने सुन्नी 308, बसनदे फ़ीह रवाहू मतरूक, अद्दुआ अलमसनून पेज 427)

3. ज़िद्दी ज़ालिम से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيْمٍ وَّمِنْ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हिफ़ाज़त फ़रमा मेरी शैतान मर्दूद और ज़िद्दी ज़ालिम से। (अद्दुआ 1294/2 बसनदे ज़ईफ़, अद्दुआ अलमसनून पेज 426)

4. शैतान के छट भैयों से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الْمُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ اَنْ يَّقَعْنَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ

عَبْدِكَ فُلَانٍ وَّ جُنُوْدِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَاءُكَ وَعَزَّ جَارُكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ.

तर्जुमाः मैं उस अल्लाह की पनाह ले रहा हूं जिस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस ने रोक रखा है सात आसमानों को ज़मीन पर गिरने से मगर जब उसका हुक्म हो जाए मैं पनाह लेता हूं तेरे फ़ुलां बंदे और उसके लश्कर से और उसके ख़िदमतगार और मददगार जिन्न व इन्स के शर से, ऐ अल्लाह! तू उनकी शरारत से मेरा मुहाफ़िज़ बन जा, तेरी तारीफ़ बड़ी है, तेरी पनाह लेने वाला ग़ालिब है, बाबरकत है तेरा नाम, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

(अदबुल मुफ़रदः 708, अद्दुआ तबरानीः 1295, हिस्ने हसीनः 223 बसनदे सहीह, अद्दुआ अलमसनून पेज 423)

5. शेर के हमले से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِرَبِّ دَانِيَالَ وَالْجُبِّ مِنْ شَرِّ الْاَسَدِ.

तर्जुमाः मैं पनाह चाहता हूं दानियाल और उस मक़ाम के रब की शेर के हमला से।

(कन्जुल उम्मालः 417, इब्ने सुन्नीः 308, अज़कारिमे खराइतीः 959/2, अद्दुआ अलमसनून पेज 420)

6. गाँव वालों की शरारतों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جُمِعَتْ فِيْهَا،

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَاَعِذْنَا مِنْ وَّبَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِیْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं इस बस्ती के शर से और जो इस में जमा की गई है उसकी बुराई से इस बस्ती के फ़वायद से हमें नवाज़ और इसकी बुराई से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा। और हमें बस्ती वालों का महबूब बना और उसके नेक लोगों को हमारा महबूब बना।

(अज़कारः 545, नज़लः 336, इब्ने सुन्नीः 527, अद्दुआ अलमसनून पेज 401)

7. मज़लूम की बद दुआ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِی الْاَهْلِ وَالْمَالِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं पनाह मांगता हूं आप की सफ़र की परेशानियों और बुरे हालत के आने से और गुनाहों की तरफ़ लौटने से और मज़लूम की बद दुआ से और अहल व माल पर बुरा मंज़र देखने से।

(मुस्लिमः 434, इब्ने माजा, इब्ने सुन्नीः 441, अद्दुआ अलमसनून पेज 383)

8. जहन्नम की तेज़ ठंडक से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنْ زَمْهَرِيْرِ جَهَنَّمَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे जहन्नम की तेज़ ठंडक से पनाह दीजिए।
(इब्ने सुन्नीः 265, बैहक़ी फ़िल असमाइ, अद्दुआ अलमसनून पेज 379)

9. अंधेरी रात की बुराई से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ هٰذَا الْغَاسِقِ اِذَا وَقَبَ .

तर्जुमाः मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं अंधेरी रात की बुराई से जब कि वह आ जाए। (तिर्मिज़ी, हिस्ने हसीनः 344, अद्दुआ अलमसनून पेज 370)

10. बीमारी से अल्लाह की पनाह

اُعِيْذُكَ بِاللّٰهِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ
يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ مِّنْ شَرِّ مَاتَجِدُ .

तर्जुमाः तुम्हारी (बीमार आदमी की) हिफ़ाज़त तलब करता हूं उस अल्लाह से जो यक्ता है, बेनियाज़ है, न उस ने जना, न वह जना गया। न उसका कोई हमसर है। उस बुराई से जो तुम महसूस करते हो।
(अद्दुआः 1324/3, अलफ़ुतूहातः 72/4, अबू याअ़ला, अद्दुआ अलमसनून पेज 346)

11. जोश मारने वाली रग की बुराई से अल्लाह की पनाह

نَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ
شَرِّ حَرِّ النَّارِ .

तर्जुमाः बुज़ुर्ग अल्लाह की जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग व

दोज़ख़ की बुराई से हम पनाह लेते हैं।

(इब्ने माजाः 3526, इब्ने सुन्नी, हाकिमः 414, अद्दुआ अलमसनून पेज 342)

12. बुराई की तकलीफ़ और डर से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ.

तर्जुमाः अल्लाह की कुदरत व इज़्ज़त के वासते से उस बुराई से पनाह मांगता हूं जिस की तकलीफ़ और जिस से डर महसूस करता हूं।

(मुस्लिमः 224, अज़कारः 114, अद्दुआ अलमसनून पेज 236)

13. गुनहगार दुल्हन के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جُبِلَتْ عَلَيْهِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं उसकी बुराई से और उस बुराई से जिस पर यह पैदा की गई है।

(अबू दाऊदः पेज 293, इब्ने सुन्नीः पेज 553, अद्दुआ अलमसनून पेज 326)

14. गुनहगार मर्दों औरतों की शरारतों से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ وَنَدْرَاُبِكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम इन की शरारतों से तेरी पनाह लेते हैं और तुझे इनके मुक़ाबले में सीना सिपर करते हैं।

(मुसनद अबू अवाना, हिस्ने हसीनः 322, अद्दुआ अलमसनून पेज 236)

15. उलमा की बद दुआ से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ تَلْعَنَنِیْ قُلُوْبُ الْعُلَمَاءِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि उलमा के दिल मुझ पर लानत करें।

(इन्दा अबी नईम ऐज़न जिल्द 1 पेज 223, हयातुस्सहाबाः जिल्द 3 पेज 427)

16. ख़ालिस शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ لَا يَخْلِطُهٗ شَیْءٌ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं इस शर से तेरी पनाह मांगता हूं जिस के साथ कुछ भी ख़ैर मिला हुआ न हो यानी ख़ालिस शर हो।

(अख़रजहुल बुख़ारी फ़िल अदबिल मुफ़रदः पेज 99, हयातुस्सहाबा जिल्द 3 पेज 427)

17. बुरे ख़्वाबों से और अपने साथ शैतान के खेलने से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ سَیِّءِ الْاَحْلَامِ وَاَسْتَجِيْرُكَ

مِنْ تَلَاعُبِ الشَّيْطَانِ فِی الْيَقْظَةِ وَالْمَنَامِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप की बुरे ख़्वाब से पनाह मांगता हूं और नींद और बैदारी की हालत में शैतान के खेलने से पनाह मांगता हूं।

(अलफ़ुतूहातुर रब्बानियाः 192/20, अद्दुआ अलमसनून पेज 292)

18. बेतुके ख़्वाबों से अल्लाह की पनाह

اَعُوْذُ بِمَا عَاذَتْ بِهٖ مَلَائِكَةُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ شَرِّ رُؤْيَا
هٰذِهٖ اَنْ يُّصِيْبَنِيْ فِيْهَا مَا اَكْرَهُ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ .

तर्जुमाः मैं ख़्वाब की तकलीफ़ देह बातों से जिस का तअल्लुक़ दीन और दुनिया से हो पनाह मांगता हूं जिस से अल्लाह के फ़रिश्तों और रसूल ने पनाह मांगी है। (अद्दुआ अलमसनून पेज 292)

19. शैतान वाले आमाल से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ
وَسَيِّاٰتِ الْاَحْلَامِ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं शैतान की हरकतों से और बुरे ख़्वाबों से तेरी पनाह चाहता हूं। (इब्ने सुन्नीः 770, अद्दुआ अलमसनून पेज 291)

20. सारी मख़्लूक़ के शर से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيْعًا اَنْ
يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ اَوْ اَنْ يَّبْغِيَ عَلَيَّ، عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ
ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ وَلَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूं तमाम मख़्लूक़ की बुराई से कोई

मुझ पर हमला करे या मुझ पर ज़्यादती करे, तुझ से पनाह लेने वाला ग़ालिब है, तेरी तारीफ़ बुलन्द है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, कोई क़ाबिले इबादत नहीं सिवाए तेरे। (नज़लुल अबरारः 122, अज़कारः 82, अद्दुआ अलमसनून पेज 282)

21. रात में बुराई के साथ खटखटाने वाले से अल्लाह की पनाह

اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ طَوَارِقِ هٰذَا اللَّيْلِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं पनाह मांगता हूं रात के आने वाले से मगर यह कि रात को भलाई से आए।

(मजमउज़्ज़वाइदः 124/10, रहमते इलाही, अद्दुआ अलमसनून पेज 276)

अल्हम्दु लि ल्लाह ये किताब बउनवान "अल्लाह की पनाह" 23 रबीउस्सानी 1429 हिज0 मुताबिक़ 28 अप्रैल 2008 ई0 बरोज़ पीर। अकोला इज्तिमा से वापसी पर बादे नमाज़े असर ट्रेन में मुकम्मल हुई। अल्लाह तआला महज़ अपने फ़ज़ल व करम से इस किताब को कुबूलियत बख़्शे। आमीन!

अल्लाह की रज़ा का तालिबः

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

कैन्सर का बहुत ही मुजर्रब इलाज

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ .

मज़कूरा आयत 2022 मर्तबा पढ़ कर मरीज़ पर दम कीजिए, पानी और दवा पर दम करके पिलाइए, इन्शा अल्लाह बहुत फ़ायदा होगा, आगे पीछे 11 मर्तबा दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिए। (बिखरे मोतीः जिल्द 9)

नोट

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ [سورۂ ہود]

तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी, उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं।

सिर्फ़ हिंदी ज़बान में

आसान दुआएं

अल्लाह से मुनाजात कीजिए
अल्लाह से बातें कीजिए

محمد یونس
ابن حضرت مولانا
محمد عمر صاحب
پالنپوریؒ

اداره امپیکس
idara impex
Publishers | Distributors | Exporters
www.idara.com

- हर दुआ यक़ीन और इस्तिहज़ार के साथ पढ़ें।
- दुआओं का फ़ायदा फ़राइज़ के एहतिमाम पर मौक़ूफ़ है, कोई भी नफ़ल अमल फ़राइज़ का बदल नहीं हो सकता, इस लिए तमाम फ़राइज़ का एहतिमाम निहायत ही ज़रूरी है।

ऐ अल्लाह! इस किताब की इशाअत में जिन लोगों ने जिस एतिबार से भी हिस्सा लिया हो, उन सब को कुबूल फ़रमा, और उनकी जायज़ मुरादें पूरी फ़रमा। आमीन!

एक अहम नसीहत

रोज़ाना इस दुआ को पढ़ने का एहतिमाम कीजिए। तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों की तादाद के बराबर नेकियां मिलेंगी, इन्शाअल्लाह। यह हदीस सहीह है। इस दुआ का प्रिंट निकाल कर अपने पास रख लीजिए और मुसलमानों में इसे तक़सीम भी कर दीजिए। हमें नेकियां मिलेंगी और मां बाप के लिए दुआ भी हो जाएगी।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ۔ اٰمِيْن

ऐ हमारे परवर्दिगार! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और मूमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा।

अर्ज़े मुरत्तिब

जो लोग अरबी अल्फ़ाज़ में मसनून दुआएं न पढ़ सकते हों, ऐसे लोगों के लिए मसनून दुआओं का तर्जुमा पढ़ कर दुआ मांगना यक़ीनन अल्लाह तआला के कुर्ब का सबब होगा और उन को इन्शा अल्लाह अज्र व सवाब ज़रूर मिलेगा। इस लिए कि वह अल्लाह तआला के हुक्म "उदऊनी" (यानी मुझ से मांगो) पर अमल कर रहे हैं और दुआ का मज़मून रसूलुल्लाह ﷺ से साबित होने की वजह से जामे भी है और बेअदबी से पाक भी है। इस लिए जो लोग अरबी पढ़ सकते हों, लेकिन मआनी न जानते हों उनको भी तर्जुमा कभी कभी ज़रूर पढ़ लेना चाहिए ताकि उनको मालूम हो जाएगा कि वह क्या मांग रहे हैं फिर यह दुआ हक़ीक़ी दुआ मांगना बनेगी।

वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

﴿١﴾ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَلِيِّ الْاَعْلَى الْوَهَّابِ.

﴿٢﴾ اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ
اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ○

﴿٣﴾ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ فَصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَافْعَلْ بِنَا مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ اَنْتَ
اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ.

﴿٤﴾ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ .

﴿٥﴾ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

﴿٦﴾ الٓمّٓ ○ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ○

﴿٧﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ .

﴿٨﴾ يَا اَوَّلَ الْاَوَّلِيْنَ وَيَا اٰخِرَ الْاٰخِرِيْنَ وَيَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِيْنَ وَ
يَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنِ وَيَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ .

﴿٩﴾ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ .

﴿١٠﴾ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ .

﴿١١﴾ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ .

﴿١٢﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ .

﴿١٣﴾ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ .

﴿١٤﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَدْعُوْكَ اللّٰهَ وَاَدْعُوْكَ الرَّحْمٰنَ وَاَدْعُوْكَ الْبَرَّ

الرَّحِيْمَ وَ اَدْعُوْكَ بِاَسْمَائِكَ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا
لَمْ اَعْلَمْ اَنْ تَغْفِرَ لِىْ وَتَرْحَمَنِىْ.

﴿١٥﴾ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا
عَذَابَ النَّارِ.

﴿١٦﴾ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ.

﴿١٧﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِىْ رِضَاكَ ضُعْفِىْ وَخُذْ اِلَى الْخَيْرِ
بِنَاصِيَتِىْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰى رِضَائِىْ ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ
ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِىْ وَ اِنِّىْ ذَلِيْلٌ فَاَعِزَّنِىْ وَ اِنِّىْ فَقِيْرٌ فَاَغْنِنِىْ يَا
اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

﴿١٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى سَابِغِ نِعَمِ اللّٰهِ.

﴿١٩﴾ يَارَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِىْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ
سُلْطَانِكَ .

﴿٢٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ
الْحِسَابُ .

﴿٢١﴾ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِیْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ
عَلَیْنَآ اِصْرًا کَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا
تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ
اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ۝

1. ऐ अल्लाह! हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा।

2. ऐ अल्लाह! हमारे गुनाहों को नेकियों से बदल दे।

3. ऐ अल्लाह! आप ने अगर हमारा नाम सईदों और नेक बख़्तों में लिखा हो तो उन्हीं में लिखे रखियो और अगर आप ने हमारा नाम शक़ियों अैर बद बख़्तों में लिखा हो तो हमारा नाम उनकी फ़ेहरिस्त से मिटा दीजियो और नेक लोगों की फ़ेहरिस्त में लिख दीजियो, इस लिए कि लिखना भी आप का काम है और मिटाना भी आप का काम है। और लौह व क़लम भी आप के पास हैं।

(हज़रत उमर रज़ि० तवाफ़ करते करते ये दुआ मांगा करते थे। इब्ने कसीर)

4. ऐ अल्लाह! वह चीज़ें जिन के लेने का हम इरादा करते हैं मगर आप हमें देना नहीं चाहते तो उनकी मोहब्बत हमारे दिलों से निकाल दे और उसका ख़्याल भी निकाल दे और उस गली में आना जाना भी ख़त्म फ़रमा दे।

ऐ अल्लाह! वह चीज़ें जिन के लेने का हम इरादा नहीं करते मगर आप हमें देना चाहते हैं उन की मोहब्बत हमारे दिलों में डाल दे और उस गली में आना जाना हमारे लिए आसान फ़रमा दे और उस में हमारे लिए ख़ैर मुक़द्दर फ़रमा।

5. ऐ अल्लाह! कुरआन तेरा दस्तरख़्वान है। तेंरे दस्तरख़्वान से फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे। (इब्ने मसऊद)

6. ऐ अल्लाह! हमें वह काम करने की तौफ़ीक़ दे जिस से तेंरे दीन को फ़ायदा पहूंचे।

7. ऐ अल्लाह! हमें वह तिजारत करने की तौफ़ीक़ दे जिस से तेंरे दीन

को फ़ायदा पहुंचे।

8. ऐ अल्लाह! उम्मत की इज्तिमाई और इन्फ़िरादी परेशानियों को दूर फ़रमा।

9. ऐ अल्लाह! हर फ़र्दे उम्मत को दीन का दाई बना दे।

10. ऐ अल्लाह! उम्मत के मर्दों और औरतों के लिए हलाल बिस्तरों का इन्तिज़ाम फ़रमा।

11. ऐ अल्लाह! उम्मत के मर्दों और औरतों की हराम बस्तिरों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

12. ऐ अल्लाह! हमारी और हमारी औलादों की जड़ों में हलाल रोज़ी दाख़िल फ़रमा।

13. ऐ अल्लाह! हमारी और हमारी औलादों की जड़ों की हराम और मुश्तबा रोज़ी से हिफ़ाज़त फ़रमा।

14. ऐ अल्लाह! अचानक का ख़ैर अता फ़रमा और अचानक के शर से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

15. ऐ अल्लाह! हवाओं के साथ जो ख़ैर आती है वह हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमा और हवाओं के साथ जो शर आता है उस शर से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

16. ऐ अल्लाह! किसी फ़ासिक़ व फ़ाजिर का एहसान हम पर न रखना।

17. ऐ अल्लाह! अमन की चादरों को अपने बंदों पर फैला दे।

18. ऐ अल्लाह! तेरी सख़ावत की कहानियां मशहूर हैं, हमारे ऊपर करम फ़रमा।

19. ऐ अल्लाह! नफ़्स व शैतान का छुट भैय्या बनने से हमें बचा ले।

20. ऐ अल्लाह! तेरे ख़ज़ाना में जितना तेरा रहम है, वह सारा का सारा मुसलमान मर्दों और औरतों पर बर सा दे।

21. ऐ अल्लाह! तेरे ख़ज़ाना में जितना तेरा क़हर व अज़ाब है, ऐसे लोगों पर बर सा दे जिन के दिलों पर तूने गुमराही की मोहर लगा दी है।

22. ऐ अल्लाह! हमें मांगना नहीं आता मगर तुझे देना तो आता है, अपने करम से तू हमें अता फ़रमा।

23. ऐ अल्लाह! तू ही मुरब्बीए हक़ीक़ी है, तू हमारी बेहतरीन तरबियत फ़रमा।

24. ऐ अल्लाह! अपने अज़ाब के कोड़े से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

25. ऐ अल्लाह! हम ने अपनी ज़िन्दगी को गुनाहों में डुबू दिया है, किसी जगह सफ़ेद नुक़्ता नहीं है, तू हम को मुआफ़ फ़रमा दे।

26. ऐ अल्लाह! अगर फ़ज़ल करे तो छुट्टियां और अदल करें तो लुटियां, तू हम पर फ़ज़ल का मुआमला फ़रमा।

27. ऐ अल्लाह! तू जिसे क़रीब कर दे उसे कोई दूर नहीं कर सकता और तू जिसे दूर कर दे उसे कोई क़रीब नहीं कर सकता, तू हमें अपनी रहमत से क़रीब कर दे।

28. ऐ अल्लाह! तू जिसे हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और तू जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, ऐ अल्लाह! तू हमें हिदायत अता फ़रमा दे।

29. ऐ अल्लाह! तेरी रहमत तक पहुंचने के लिए हमें बहुत वास्तों की ज़रूरत है, मगर तेरी रहमत को हम तक पहुंचने के लिए किसी वास्ता की ज़रूरत नहीं है, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत की चादर में हमें ढांप ले। (हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ये दुआ मांगा करते थे)

30. ऐ अल्लाह! हमारा दीन संवार दे जिस में हमारे हर काम की हिफ़ज़त है।

31. ऐ अल्लाह! हमें मायूस न कर, तेरा करम मश्हूर है।

32. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को ख़ुशी के दिन और ख़ुशी की रातें दिखा दे।

33. ऐ अल्लाह! सारी मख़्लूक़ तेरा कुन्बा है, अपने कुन्बा पर रहम व करम फ़रमा।

34. ऐ अल्लाह! जिस तरीक़ा से आप ने हमारी पेशानियों की हिफ़ाज़त की है कि हमारी पेशानियां तेरे अलावा किसी के सामने नहीं झुकतीं, उसी तरीक़ा से हमारे बदन के एक एक हिस्सा की हिफ़ाज़त फ़रमा।

35. ऐ अल्लाह! तेरे हुकूक़ हम ने ज़ाए किए हैं, और तेरे बंदे और बंदियों के हुक़ूक़ हम ने ज़ाए किए हैं, ऐ अल्लाह! अपने हुकूक़ तो मुआफ़ फ़रमा दे और तेरे बंदे और बंदियों के हुकूक़ अदा करने की तू हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमा और अगर कमज़ोरी की वजह से या सुस्ती की वजह से या ग़फ़लत की वजह से तेरे बंदे और बंदियों के हुक़ूक़ हम अदा न कर सकें तो तू हमारी तरफ़ से अदा फ़रमा दे और हमें उनके हुकूक़ से बरी फ़रमा दे।

36. ऐ अल्लाह! हमारा खोया हुआ दीन हमें वापस दे दे।

37. ऐ अल्लाह! हमारी खोई हुई इज़्ज़तें हमें वापस दे दे।

38. ऐ अल्लाह! हमारा खोया हुआ दावत का काम हमें वापस दे दे।

39. ऐ अल्लाह! जिन्नातों की हिदयत के फ़ैसले फ़रमा।

40. ऐ अल्लाह! अक़वामे आलम की हिदायत के फ़ैसले फ़रमा।

41. ऐ अल्लाह! हमारी गर्दनों को हर ज़िम्मेदारी से आज़ाद फ़रमा।

42. ऐ अल्लाह! हम को आला मजलिस वालों में शामिल फ़रमा।

43. ऐ अल्लाह! मुसलमानों की सलाहियतों को दीन पर लगा दे।

44. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को बातिल के नरग़ों से निजात दे।

45. ऐ अल्लाह! मौत के बाद की हलाकतों से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

46. ऐ अल्लाह! हमारे अक़दाम और अक़लाम को क़ुबूल फ़रमा।

47. ऐ पहाड़ों के वज़नों को जानने वाले!

48. ऐ समुन्दरों के पैमानों को जानने वाले!

49. ऐ हवाओं के रुख़ों को मुतय्यन करने वाले!

50. ऐ कौव्वे के बच्चे को उसके घोंसले में रोज़ी पहुंचाने वाले!

51. ऐ टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने वाले!

52. ऐ दिलों के ख़्यालात को पढ़ने वाले!

53. ऐ बारिश के क़त्रों की तादाद को जानने वाले!

54. ऐ दरख़्तों के पत्तों की तादाद को जानने वाले!

55. ऐ वह पाक ज़ात कि रात का अंधेरा भी तेरी तारीफ़ बयान करता है।

56. ऐ वह पाक ज़ात कि दिन का उजाला भी तेरी तस्बीह बयान करता है।

57. ऐ वह पाक ज़ात कि चाँद, सूरज और सितारे भी तेरी तारीफ़ बयान करते हैं।

58. ऐ वह पाक ज़ात कि चियूंटियां भी तेरी तारीफ़ बयान करती हैं।

59. ऐ वह पाक ज़ात कि समुन्दरों की तह में आप ने जो मख़्लूक़ पैदा की है वह भी तेरी तस्बीह बयान करती है।

60. ऐ वह पाक ज़ात कि वादियों और घाटियों में जो ज़र्रात हैं वह भी तेरी तारीफ बयान करते हैं।

61. ऐ वह पाक ज़ात कि आप के मुल्क में आप का कोई शरीक नहीं।

62. ऐ वाह पाक ज़ात कि आप को किसी का दरवाज़ा खटखटाने की ज़रूरत नहीं है।

63. ऐ सब की दुआओं को सुनने वाले!

64. आप सब से पहले हैं, आप से पहले कोई चीज़ नहीं।

65. आप सब से आख़िर हैं, आप के बाद कोई चीज़ नहीं है।

66. आप दलायल के एतिबार से इतने ज़ाहिर हैं कि आप से ज़्यादा ज़ाहिर कोई चीज़ नहीं।

67. आप अपनी ज़ात के एतिबार से इतने छुपे हुए हैं कि आप से ज़्यादा कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।

68. ऐ अल्लाह! हम को तक़्वा का तोशा अता फ़रमा।

69. ऐ अल्लाह! हमारे दिलों को बुग्ज़ व इनाद और कुदूरतों के ग़ुबार से पाक व साफ़ फ़रमा दे।

70. ऐ अल्लाह! हंसी मज़ाक़ में भी जो गुनाह किए हों, उन्हें मुआफ़ फ़रमा दे।

71. ऐ अल्लाह! जो मर्द व औरत नाजायज़ इश्क़ में मुब्तला हो, उसे इस

नाजायज़ इश्क़ से निजात दे।

72. ऐ दिलों को पलटने वाले! हमारे दिलों को दीन पर जमा दे।

73. ऐ अल्लाह! हम सब को तू सहीह समझ अता फ़रमा।

74. ऐ अल्लाह! हमारी सूरत तूने अच्छी बनाई, हमारी सीरत भी अच्छी बना दे।

75. ऐ अल्लाह! हमारी तहरीर व तक़रीर को कुबूल फ़रमा।

76. ऐ अल्लाह! हमारे आपस के तअल्लुक़ात को ख़ुशगवार बना दे।

77. ऐ अल्लाह! हम को पाकीज़ा रोज़ी दे और पाकीज़ा चीज़ों में इस्तेमाल फ़रमा। (ये दुआ हज़रत जिबरईल ने हज़रत मुहम्मद ﷺ को सिखाई थी) (अलजामिउस्सग़ीर लिस्सुयूती: 11833)

78. ऐ अल्लाह! हर ख़ैर को हमारी तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा।

79. ऐ अल्लाह! हमारी ज़िन्दगी का बेहतरीन दिन वह दिन हो जिस दिन तेरी मुलाक़ात हो।

80. ऐ अल्लाह! हमारे गुनाह तुझे कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और अगर तू हमें मुआफ़ कर देगा तो तेरे दरियाए मग़फ़िरत में से कमी वाक़े नहीं होगी, तो हम को मुआफ़ फ़रमा दे।

81. ऐ अल्लाह! हम तो तेरे फ़ज़्ल के आदी हो चुके हैं, अब हम किसी इम्तिहान के लायक़ नहीं हैं, बग़ैर इम्तिहान के हमारे बेड़ों को पार फ़रमा दे।

82. ऐ अल्लाह! बुढ़ापे के वक़्त में हमारी रोज़ी को वसीअ फ़रमा दे।

(अलमुस्तदरक लिहाकिमः 1923)

83. ऐ अल्लाह! हमारे दिलों को अपनी इताअत की तरफ़ मुतवज्जह कर दे।

84. ऐ अल्लाह! जिन के लड़के लड़कियां ग़ैर शादी शुदा हूं, उनके रिश्तों का बेहतरीन इन्तिज़ाम फ़रमा।

85. ऐ अल्लाह! हम जैसा गुनाहगार तेरी ज़मीनों ने नहीं देखा और तेरे आसमानों ने नहीं देखा और तेरे फ़रिश्तों ने नहीं देखा और हम ने तुझ जैसा करीम आक़ा भी नहीं देखा कि हम गुनाह करते रहे तो हमें रोज़ी देता रहा, हम गुनाह करते रहे तो हमें सेहत देता रहा, जहां इतना करम फ़रमाया है, एक करम और फ़रमा दे, हम सब के लिए जन्नतुल फ़िरदौस का फ़ैसला फ़रमा दे।

86. ऐ अल्लाह! हक़ को कहने की और हक़ को सुनने की और हक़ को लेकर आलम में फिरने की तू हम को तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

87. ऐ अल्लाह! हमारे जवानों की जवानियों को पाकीज़ा कर दे।

88. ऐ अल्लाह! जिस वक़्त में जो काम करने से तू ख़ुश होता हो, उसके करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और जिस वक़्त में जो काम करने से तू नाराज़ होता हो, उस से तू हमें बचा ले।

89. ऐ अल्लाह! जब हम तेरे पास आएं, हमारे हंसने से पहले आप हंस कर मुलाक़ात कर रहे हों, तू उसकी ग़ैब से शक्लें और सूरतें पैदा फ़रमा।

90. ऐ अल्लाह! कुरआन का नूर हमें अता फ़रमा।

91. ऐ अल्लाह! तू अपने नेक व भले बंदों को जो दिया करता है वह हमें अता फ़रमा।

92. ऐ अल्लाह! इस मजमा में जो परेशान हाल हों उनकी परेशानियों को तेरे अलावा कोई नहीं जानता और यह कहना भी नहीं चाहते, आफ़ियत से उनकी परेशानियों को दूर फ़रमा।

93. ऐ अल्लाह! हर फ़र्दे उम्मत को सुन्नत वाली ज़िन्दगी पर क़ायम फ़रमा।

94. ऐ अल्लाह! हेरा फेरी वाली ज़िन्दगी से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

95. ऐ अल्लाह! हमारे इस मजमा में जो तमाशाई बन कर आया हो, उसे भी क़ुबूल फ़रमा।

96. ऐ अल्लाह! हमारे दिल की खिड़कियों को खोल दे।

97. ऐ अल्लाह! हमारे दीन के सूरज को उरूज अता फ़रमा।

98. ऐ अल्लाह! सारे दरवाज़े बंद हो चुके हैं, सिर्फ़ आप का दरवाज़ा खुला हुआ है, हम पर रहम फ़रमा, करम फ़रमा।

99. ऐ अल्लाह! इस मजमा में सफ़ेद बाल वाले बूढ़े भी हैं और नौजवान इबादत गुज़ार भी हैं और बच्चे भी हैं जिन के सीनों में तेरा कुरआन महफ़ूज़ है, अगर यही मजमा इस इलाक़ा के किसी करीम के दरवाज़े पर चला जाए और सिर्फ़ एक रुपये की भीक मांगे, उस करीम के लिए रुपया देना जितना आसान हे, उस से ज़्यादा आप के लिए हिदायत का देना आसान है। ऐ अल्लाह! तू हमें हिदायत नसीब फ़रमा।

100. ऐ अल्लाह! जितने मुसलमान जेलों में महबूस हैं, उन की रिहाई के फ़ैसले फ़रमा।

101. ऐ अल्लाह! हमारी खोटी पोंजी को क़ुबूल फ़रमा।

102. ऐ अल्लाह! हमें वह बदबख़्त इन्सान न बना कि रमज़ान गुज़र जाए और हमारी मग़फ़िरत न हो।

103. ऐ अल्लाह! हमारे मां बाप की मग़फ़िरत फ़रमा।

104. ऐ अल्लाह! जितने मुसलमान मर्द औरतें इस्लाम की हालत में दुनिया से रुख़्सत हुए हैं उनकी क़बरों को नूर से मुनव्वर फ़रमा दे, उनको ग़रीक़े रहमत फ़रमा दे, उनकी हड्डी हड्डी को जन्नत नसीब फ़रमा, उन को करवट करवट आराम नसीब फ़रमा।

105. ऐ अल्लाह! आप के वह मुबारक आठ नाम जो आप ने सूरज पर लिखे हैं और आप के वह मुबारक नाम जो आप ने लौहे महफ़ूज़ पर लिखे हैं और आप के वह मुबारक नाम जो आप ने बैते मामूर पर लिखे हैं और आप के वह मुबारक नाम जो आप ने अर्श व कुर्सी पर लिखे हैं, और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने तौरात में नाज़िल किए और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने इन्जील में नाज़िल किए और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने ज़बूर में नाज़िल किए और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने सुहुफ़े इब्राहीम व मूसा अलैहिमस्सलाम में नाज़िल किए और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने कुरआन में नाज़िल किए और आप के वह असमाए हुसना जो हमारे नबी ﷺ ने हमें बताए और आप के वह असमाए हुसना जो आप ने पहाड़ों पर लिखे हैं और आप का वह एक मुबारक नाम जिस से तूने अपने अर्श को मुज़य्यन किया है। ऐ अल्लाह! आप के वह मुबारक नाम जिसे हम जानते हैं या नहीं जानते। ऐ अल्लाह! तेरे सारे मुबारक नामों के तुफ़ैल दुआ करते हैं, इस उम्मत की इज्तिमाई और इन्फ़िरादी परेशानियों को दूर फ़रमा। (बिखरे मोती: जिल्द 1, पेज 157)

106. ऐ अल्लाह! ख़ूबसूरत पर्दे वाले, ऐ ख़ूबसूरत चादर वाले, हमारे ऐबों पर वह डाल दे।

107. ऐ अल्लाह! तूने अपने करम से अपना घर दिखाया और अपने करम से अपने नबी का घर दिखाया, उसी करम से अपना चेहरा भी दिखा दे।

108. ऐ अल्लाह! हमारे दिल की तख़्तियों को नूरानी बना दे।

109. ऐ अल्लाह! हमारे दिल की मेहराबों में अपनी मारिफ़त का नूर कूट कूट कर भर दे।

110. ऐ अल्लाह! हमारी आँखों में अपनी मोहब्बत का सुर्मा लगा दे।

111. ऐ अल्लाह! हमें मांगना नहीं आता मगर तुझे देना तो आता है, अपने करम से हमें अता फ़रमा।

112. ऐ अल्लाह! लोग मरने के बाद ग़ुसल देंगे, उस ग़ुसल से पहले ग़ुसले तौबा की तौफ़ीक़ दे।

113. ऐ अल्लाह! लोग हमें कफ़न का लिबास पहनाएंगे, उस से पहले तक़वा का लिबास हम को पहना दे।

114. ऐ अल्लाह! हमारी सय्यात को हसनात से मुबद्दल फ़रमा दे।

115. ऐ अल्लाह! ईमान की हक़ीक़त हमारे दिलों में रासिख़ फ़रमा दे।

116. ऐ अल्लाह! अपने रज़ा वाले कामों पर साबित क़दम फ़रमा।

117. ऐ अल्लाह! उम्मत के तमाम तबक़ात को दीनके काम पर मुजतमा फ़रमा दे।

118. ऐ अल्लाह! उम्मत की सलाहियतों को दीन के लिए क़ुबूल फ़रमा।

119. ऐ अल्लाह! हमारी जमातों की नक़ल व हरकत को कुबूल फ़रमा।

120. ऐ अल्लाह! हम सब की और पूरी उम्मत की बेहतरीन तरबियत फ़रमा।

121. ऐ अल्लाह! मुराशिदे उमूर इलहाम फ़रमा।

122. ऐ अल्लाह! मुहिम्माते उमूर पर हमारी एआनत फ़रमा।

123. ऐ अल्लाह! ज़ाहिरी और बातिनी कुव्वतें अता फ़रमा।

124. ऐ अल्लाह! बीमारों को शिफ़ा अता फ़रमा।

125. ऐ अल्लाह! उम्मत के आमाल की, ईमान की, अख़्लाक़ की, मुआशरे की और जान व माल की हिफ़ाज़त फ़रमा।

126. ऐ अल्लाह! तेरी मग़फ़िरत हमारे गुनाहों से ज़्यादा वुसअत वाली है और हमें अपने अमल से ज़्यादा तेरी रहमत की उम्मीद है, हमारे सारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा।

127. ऐ अल्लाह! हमारी और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की मग़फ़िरत फ़रमा दे।

128. ऐ अल्लाह! आप ही ने हमें पैदा किया और आप ही हमें हिदायत देने वाले हैं और आप ही हमें खिलाते हैं और आप ही हमें पिलाते हैं और आप ही हमें मारेंगे और आप ही हमें ज़िन्दा करेंगे, मौला! हमारी सारी हाजतों का तकफ़्फ़ुल फ़रमा।

129. ऐ अल्लाह! हम आप की पनाह मांगते हैं फ़िक्र व रंज से, और हम आप की पनाह मांगते हैं कम हिम्मती और सुस्ती से और हम आप की पनाह मांगते हैं बुज़दिली और बख़ीली से, और हम आप की

पनाह मांगते हैं, क़र्ज़ के बोझ और लोगों के दबाने से।

130. ऐ अल्लाह! हम आप से आफ़ियत मांगते हैं दुनिया और आख़िरत में, ऐ अल्लाह! हम आप से मआफ़ी और सलामती मांगते हैं, हमारे दीन में और हमारी दुनिया में और हमारे घर वालों में और हमारे माल में।

131. ऐ अल्लाह! ढांप ले हमारे ऐब और ख़ौफ़ की चीज़ों से हमें बेफ़िक्र कर दे।

132. ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूं उस से कि हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

133. ऐ अल्लाह! आप ही हमारे पालनहार हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, आप ही ने मुझे पैदा किया और हम आप के हक़ीक़ी ग़ुलाम हैं और जहां तक हमारे बस में है हम आप से किए हुए अहद और वादे पर क़ायम हैं, आप की पनाह चाहते हैं, उन तमाम बुरे कामों के वबाल से जो हम ने किए हैं। हम आप के सामने आप की उन नेमतों का इक़रार करते हैं, जो हम पर हैं और हमें एतेराफ़ है अपने गुनाहों का, इस लिए हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए, क्योंकि आप के सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्शता।

134. ऐ अल्लाह! हमारे बदन को दुरुस्त रखिए।

135. ऐ अल्लाह! हमारे कान आफ़ियत से रखिए।

136. ऐ अल्लाह! हमारी आँख आफ़ियत से रखिए, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

137. ऐ अल्लाह! हम कुफ्र और मोहताजगी से आप की पनाह मांगते हैं, और क़ब्र के अज़ाब से हम आप की पनाह मांगते हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

138. ऐ अल्लाह! हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, ऐ मख़्लूक़ात को क़ायम रखने वाले, हम आप से आप की रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करते हैं, आप हमारे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और हमें एक बार आँख झपकने के बराबर हमारे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए।

139. ऐ अल्लाह! रात के अंधेरे में गुनाह किए, दिन के उजाले में किए, जान कर किए, अंजाने में किए, सग़ीरा कबीरा तमाम गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा।

140. ऐ अल्लाह! ज़मीन के जिस हिस्से पर गुनाह हुए ज़मीन को भुला दे और फ़रिश्तों को भी भुला दे और रजिस्टर में से भी मिटा दे।

141. ऐ अल्लाह! अपनी रज़ा मन्दी वाली ज़िन्दगी हमें अता फ़रमा।

142. ऐ अल्लाह! अपनी नाराज़गी वाली ज़िन्दगी से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

143. ऐ अल्लाह! तक़वा और तहारत वाली ज़िन्दगी अता फ़रमा।

144. ऐ अल्लाह! हमारे ख़्यालात को पाकीज़ा फ़रमा।

145. ऐ अल्लाह! दोनों जहां की इज़्ज़तों का फ़ैसला फ़रमा।

146. ऐ अल्लाह! दोनों जहां की ज़िल्लत व रुस्वाई से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

147. ऐ अल्लाह! नफ़ा देने वाला इल्म अता फ़रमा।

148. ऐ अल्लाह! गुमराह करने वाले इल्म से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

149. ऐ अल्लाह! जन्नत में अपने नबी ﷺ का पड़ोस अता फ़रमा।

150. ऐ अल्लाह! मुसलमानों के दिलों को अपने दीन के लिए नरम फ़रमा दे।

151. ऐ अल्लाह! हमें ईमान पर साबित क़दम फ़रमा।

152. ऐ अल्लाह! ईमान पर हमारा ख़ात्मा फ़रमा।

153. ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में ईमान की चादरों को फैला दे।

154. ऐ अल्लाह! तमाम उमूर में हमारे अंजाम को ख़ैर फ़रमा।

155. ऐ अल्लाह! हमें दीन की मेहनत के लिए इख़्लास से कुबूल फ़रमा।

156. ऐ अल्लाह! हमें दुआ मांगने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

157. ऐ अल्लाह! हमारे घरों में नूरानी आमाल ज़िन्दा फ़रमा।

158. ऐ अल्लाह! हमारे मिज़ाजों को दीनी मिज़ाज बना दे।

159. ऐ अल्लाह! अपने शुक्रगुज़ार बंदों में दाख़िल फ़रमा दे।

160. ऐ अल्लाह! बेऔलादों को औलाद अता फ़रमा।

161. ऐ अल्लाह! तेरा नाम सलाम है, सलामती तेरे यहां से चलती है, हम तुझ से इस उम्मत की सलामती का सवाल करते हैं, इस उम्मत को ज़ालिमों के हवाले न फ़रमा।

162. ऐ अल्लाह! दोनों जहां की आफ़ित और भलाई मुक़द्दर फ़रमा।

163. ऐ अल्लाह! बेदेनी की नफ़रत दिलों में पैदा फ़रमा कर बेदेनी को ख़त्म फ़रमा।

164. ऐ अल्लाह! अक़्वामे आलम को दीन से सरफ़राज़ फ़रमा।

165. ऐ अल्लाह! दोनों जहां की हाजतों को पूरा फ़रमा।

166. ऐ अल्लाह! अपने हुक्मों वाली ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ दे।

167. ऐ अल्लाह! सुन्नत वाली ज़िन्दगी अता फ़रमा।

168. ऐ अल्लाह! जहां जहां तेरी हवाएं पहुंचती हैं, वहां दीन की हवाएं पहुंचा दे।

169. ऐ अल्लाह! सूरज की रौशनी जहां जहां पहुंचती है वहां वहां अपने दीन की रौशनी पहुंचा दे।

170. ऐ अल्लाह! अपनी ख़ुसूसी इनायत हमारी तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा।

171. ऐ अल्लाह! हुब्बे जाह और हुब्बे माल से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

172. ऐ अल्लाह! कुरआन की मोहब्बत और अपनी मो हब्बत अता फ़रमा।

173. ऐ अल्लाह! हमारे दिल और निगाह को मुसलमान बना दे।

174. ऐ अल्लाह! हुज़ूर ﷺ ने जितनी ख़ैर की दुआएं मांगी हैं उन में हमारा हिस्सा शामिल फ़रमा और जिन शुरूर से पनाह चाही है, उन शुरूर से हम को पनाह नसीब फ़रमा।

175. ऐ अल्लाह! इस उम्मत की शाम को सुबह से बदल दे।

176. ऐ अल्लाह! तक़्वा हमारा तोशा बना दे।

177. ऐ अल्लाह! तेरे दरबार में अरमानों की दुनिया ले कर आए हैं, हमारे जायज़ अरमानों के सूरज को उरूज नसीब फ़रमा।

178. ऐ अल्लाह! हमारी सदा और निदा को कुबूल फ़रमा।

179. ऐ अल्लाह! दोनों चौखटों (मक्का व मदीना) का नूर हमें नसीब फ़रमा।

180. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को बरबादियों के मेलों से बचा दे।

181. ऐ अल्लाह! हम ने ख़्वाहिशात के मैदान में बहुत घोड़े दौड़ाए हैं, हम को मुआफ़ फ़रमा दे।

182. ऐ अल्लाह! इताअत के मैदान में घोड़े दौड़ाने वाला बना दे।

183. ऐ अल्लाह! हमारी फ़जर के नमाज़ियों की तादाद जुमा के नमाज़ियों की तादाद के बराबर कर दे।

184. ऐ अल्लाह! तक़दीर की बुराई से बचा ले।

185. ऐ अल्लाह! दुनिया को सुकून का सांस दिला दे।

186. ऐ अल्लाह! ईमान की लहरों को हरकत दे दे।

187. ऐ अल्लाह! हमारा खोया हुआ दीन हमें वापस दे दे।

188. ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में इश्क़े मिजाज़ी के ख़ेमे लगे हुए हैं, इन ख़ेमों को उखाड़ कर फेंक दे।

189. ऐ अल्लाह! मुसलमान बहू बेटियों को सुखी संसार अता फ़रमा।

190. ऐ अल्लाह! ख़ामोश फ़ित्नों से उम्मत की हिफ़ाज़त फ़रमा।

191. ऐ अल्लाह! हमारी आँखों को पाकीज़ा बना दे।

192. ऐ अल्लाह! तुझ से मांगने की लज़्ज़त अता फ़रमा।

193. ऐ अल्लाह! हमारे ख़्यालात को पाकीज़ा बना दे।

194. ऐ अल्लाह! दुनिया की गहराइयों में तैरने से बचा ले।

195. ऐ अल्लाह! इल्म व तक़्वा की गहराइयों में तैरने वाला बना दे।

196. ऐ अल्लाह! हम को हलाल माल व मनाल अता फ़रमा।

197. ऐ अल्लाह! हम तो ख़ानदानी फ़क़ीर हैं, हमारी मदद फ़रमा।

198. ऐ अल्लाह! क़ल्बे सलीम अता फ़रमा।

199. ऐ अल्लाह! नाजायज़ इश्क़ और फ़िस्क़ से बचा ले।

200. ऐ अल्लाह! हमारा दीन संवार दे, जिस से हमारे हर काम की हिफ़ाज़त हो।

201. ऐ अल्लाह! बुरी मौत से हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमा।

202. ऐ अल्लाह! बाही जाही गुनाहों से बचा ले।

203. ऐ अल्लाह! हमारी उम्र का सब से बेहतरीन हिस्सा वह बना जो उसका अख़ीर हो और हमारा सब से बेहतरीन अमल वह बना जो ख़ात्मा वाला हो, हमारा सब से बेहतरीन दिन वह बना जो तेरी मुलाक़ात का दिन हो।

204. ऐ अल्लाह! हमारे गुनाह तेरा कोई नुक़सान नहीं कर सकते और अगर आप हम पर रहम फ़रमा दें तो तेरे ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं आएगी।

205. ऐ अल्लाह! हमारे आपस के तअल्लुक़ात को ख़ुशगवार बना दे और हमें इस्लाम के रास्ते दिखा।

206. ऐ अल्लाह! अब तक तू जितने अपने नेक बंदों का ख़लीफ़ा बना है, उन सब से ज़्यादा अच्छी तरह हमारे अहलो अयाल का

ख़लीफ़ा बन जा।

207. ऐ अल्लाह! हमारे दिलों को अपनी इताअत की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमाया।

208. ऐ अल्लाह! मैं तुझे अल्लाह कह कर पुकारता हूं, तुझे रहमान कह कर पुकारता हूं, तुझे नेकूकार रहीम कह कर पुकारता हूं, और तुझे तेरे उन तमाम अच्छे नामों से पुकारता हूं, जिनको मैं जानता हूं और जिन को नहीं जानता हूं और ये सवाल करता हूं कि मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा दे।

209. ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और मेरे अख़्लाक़ वसीअ फ़रमा और मेरी कमाई को पाक फ़रमा और जो रोज़ी तूने मुझे अता फ़रमाई है, उस पर मुझे क़नाअत नसीब फ़रमा और जो चीज़ तू मुझ से हटा ले, उसकी तलब मुझ में बाक़ी न रहने दे।

210. पाक है, वह अल्लाह जिस का अर्श आसमान में है।

211. पाक है, वह अल्लाह जिस का फ़र्श ज़मीन में है।

212. पाक है, वह अल्लाह जिस की राह समुंदर में है।

213. पाक है, वह अल्लाह जिस की रहमत जन्नत में है।

214. पाक है, वह अल्लाह जिस की सलतनत दोज़ख़ में है।

215. पाक है, वह अल्लाह जिस की रहमत फ़िज़ा में है।

216. पाक है, वह अल्लाह जिस का फ़ैसला क़बरों में है।

217. पाक है, वह अल्लाह जिस ने आसमान को बुलन्द किया।

218. पाक है, वह अल्लाह जिस ने ज़मीन को बिछाया।

219. पाक है, वह अल्लाह जिस के सिवा कोई जाए निजात नहीं।

220. पाकी है, उस ज़ात के लिए जो हमेशा से हमेशा तक है।

221. पाकी है, उस ज़ात के लिए जो एक और यकता है।

222. पाकी है, उस ज़ात के लिए जो तन्हा और बेनियाज़ है।

223. पाकी है, उस ज़ात के लिए, जो आसमान को बग़ैर सुतून के बुलन्द करने वाला है।

224. पाकी है, उस ज़ात के लिए जिस ने बिछाया ज़मीन को।

225. पाकी है, उस ज़ात के लिए, जिस ने पैदा किया मख़्लूक़ को, और ख़ूब जान लिया उनको गिन कर।

226. पाकी है, उस ज़ात के लिए, जिस ने रोज़ी तक़सीम फ़रमाई, और किसी को न भूला।

227. पाकी है, उस ज़ात के लिए जिस ने न बीवी अपनाई, न बच्चे।

228. पाकी है, उस ज़ात के लिए जिस की न कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है, और न ही उसका जोड़ है।

229. ऐ अल्लाह! मैं उन नेमतों में से मांगता हूं, जो तेरे पास हैं, और अपने फ़ज़्ल की मुझ पर बारिश कर, और अपनी रहमत मुझ पर फैला दे, और अपनी बरकत मुझ पर नाज़िल कर दे।

230. ऐ अल्लाह! आप हम को काफ़ी हैं, हमारे दीन के लिए।

231. ऐ अल्लाह! आप हम को काफ़ी हैं, हमारी कुल फ़िक्रों के लिए।

232. ऐ अल्लाह! आप हम को काफ़ी हैं, उस शख़्स के लिए जो हम पर ज़्यादती करे।

233. ऐ अल्लाह! आप हम को काफ़ी हैं, उस शख़्स के लिए जो हम से हसद करे।

234. ऐ अल्लाह! आप हम को काफ़ी हैं, उस शख़्स के लिए जो धोका और फ़रेब दे हमें बुराई के साथ।

235. ऐ अल्लाह! आप हमें काफ़ी हैं, मौत के वक़्त।

236. ऐ अल्लाह! आप हमें काफ़ी हैं, क़ब्र में सवाल के वक़्त।

237. ऐ अल्लाह! आप हमें काफ़ी हैं, मीज़ान के पास।

238. ऐ अल्लाह! आप हमें काफ़ी हैं, पुलसिरात के पास।

239. ऐ अल्लाह! आप हमें काफ़ी हैं, आप के सिवा कोई माबूद नहीं, हम ने आप ही पर भरोसा किया, और हम आप ही की तरफ़ लौटने वाले हैं।

240. ऐ अल्लाह! आप ही ने हमें पैदा किया।

241. ऐ अल्लाह! आप ही हमें हिदायत देने वाले हैं।

242. ऐ अल्लाह! आप ही हमें खिलाते हैं।

243. ऐ अल्लाह! आप ही हमें पिलाते हैं।

244. ऐ अल्लाह! आप ही हमें मारंगे।

245. ऐ अल्लाह! आप ही हमें ज़िन्दा करेंगे।

246. ऐ अल्लाह! हम आप को गवाह बनाते हैं और हम गवाह बनाते हैं आप के अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को और आप के तमाम फ़रिश्तों को और आप की तमाम मख़्लूक़ को यक़ीनन आप ही इबादत के लायक़ हैं, आप के सिवा कोई माबूद नहीं है, आप

तन्हा हैं आप का कोई साझी नहीं और ये बात यक़ीनी है कि मुहम्मद ﷺ आप के बंदे और रसूल हैं।

247. ऐ हमेशा हमेश ज़िन्दा रहने वाले, ऐ मख़्लूक़ात को क़ायम रखने वाले! हम आप से आप की रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करते हैं, आप हमारे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और हमें आँख झपकने के बराबर हमारे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए।

248. ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाले! हर चीज़ के परवरदिगार और हक़ीक़ी मालिक, हम इस बात की गवाही देते हैं कि आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है। हम आप के ज़रिए अपने नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से पनाह मांगते हैं और उस से पनाह मांगते हैं कि कोई बुराई करें जिस का वबाल हमारे नुफ़ूस पर पड़े या किसी मुसलमान को कोई बुराई पहुंचा दें।

249. ऐ अल्लाह! मैं आप से नफ़ा देने वाला इल्म और पाक रोज़ी और कुबूल होने वाला अमल मांगता हूं।

250. ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ीक़ी तारीफ़ आप ही के लिए है, जैसी तारीफ़ आप की ज़ात की बुज़ुर्गी और आप की अज़ीम सलतनत के लायक़ हो।

251. ऐ अल्लाह! आप ही हमारे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और आप ही पर हमने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताक़त अल्लाह की

मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला अज़मत वाला है, हम यक़ीन करते हैं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर पुरी कुदरत रखने वाला है, और यह कि अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, ऐ अल्लाह! हम आप की पनाह मांगते हैं, अपने नफ़्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज़े में है। बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

252. ऐ अल्लाह! हमें हक़ को हक़ दिखा और उस की ताबेदारी नसीब फ़रमा और बातिल को बातिल दिखा और उस से बचा, ऐसा न हो कि हक़ व बातिल में हम तमीज़ न कर सकें। ख़ुदाया! हमें नेकोकार, परहेज़गार लोगों का इमाम बना।

253. ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गए हों या ख़ता की हो तो हमें न पकड़ना।

254. ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था।

255. ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिस की हमें ताक़त न हो और हम से दर गुज़र फ़रमा और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर। तू ही हमारा मालिक है हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़लबा अता फ़रमा।

257. ऐ हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिल टेढ़े न कर दे और हमें अपने पास से रहमत अता फ़रमा, यक़ीनन तू ही बड़ी अता देने वाला है। (कुरआन)

258. ऐ हमारे रब! हम ईमान ला चुके, इस लिए हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और हमें आग के अज़ाब से बचा। (कुरआन)

259. ऐ अल्लाह! ऐ तमाम जहां के मालिक! तू जिसे चाहे बादशाही दे और जिस से चाहे सलतनत छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, तेरे ही हाथ में सब भलाइयां हैं। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है, तू ही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में ले जाता है, तू ही बेजान से जानदार पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान पैदा करता है, तू ही है जिसे चाहता है बेशुमार रोज़ी देता है।

260. ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा, बेशक तू दुआ का सुनने वाला है। (कुरआन)

261. ऐ अल्लाह! हमारे पालने वाले माबूद! हम तेरी उतारी हुई वह्ई पर ईमान लाए और हम ने तेरे रसूल की इत्तिबा की, पस तू हमें गवाहों में लिख ले। (कुरआन)

262. ऐ हमारे रब! हम ने सुना कि मुनादी करने वाला बा-आवाज़ बुलन्द ईमान की तरफ बुला रहा है कि लोगो! अपने रब पर ईमान लाओ पस हम ईमान लाए, या इलाही अब तू हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और हमारी बुराईयां हम से दूर कर दे और हमारी मौत नेकों के साथ कर। (कुरआन)

263. ऐ हमारे पालने वाले माबूद! हमें वह दे जिस का वादा तूने हम से अपने रसूलों की ज़बानी किया है और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर, यक़ीनन तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। (कुरआन)

264. ऐ परवरदिगार! हमारी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं और सर बुढ़ापे की वजह से भड़क उठा है, लेकिन हम कभी तुझ से दुआ करके महरूम नहीं रहे। (कुरआन)

265. ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे मां बाप पर वैसा ही रहम कर जैसा

उन्होंने हमारे बचपन में हमारी परवरिश की है। (कुरआन)

266. ऐ मेरे पालने वाले! मुझे नमाज़ का पाबंद रख और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा। (कुरआन)

267. ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को भी बख़्श और दीगर मोमिनों को भी बख़्श दे, जिस दिन हिसाब होने लगे। (कुरआन)

568. ऐ हमारे परवरदिगार! मेरा इल्म बढ़ा दे। (कुरआन)

269. ऐ हमारे परवरदिगार! हम से दोज़ख़ का अज़ाब परे ही रख, क्योंकि उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है।

270. ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना। (कुरआन)

271. ऐ हमारे रब! हम ने गुनाह करके अपना बड़ा नुक़सान किया और अगर तू हमारी मग़फ़िरत न करेगा और हम पर रहम न करेगा तो वाक़ई हम नुक़सान पाने वालों में से हो जाएंगे। (कुरआन)

272. ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र बजा लाऊँ जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर इनआम की है और यह कि मैं ऐसे नेक अमल करूं जिन से तू ख़ुश हो जाए और तू मेरी औलाद को भी सालेह बना। मैं तेरी तरफ़ रुजू करता हूं और मैं मुसलमानों में से हूं। (कुरआन)

273. ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दे और तू सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है। (कुरआन)

274. ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा वली (दोस्त) और कारसाज़ है, तू मुझे इस्लाम की हालत में फ़ौत कर और नेकों में मिला दे। (दुआए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम)

275. ऐ मेरे परवरदिगार! हमें अपने पास से रहमत अता फ़रमा और हमारे काम में हमारे लिए राहयाबी को आसान कर दे। (अहले कहफ़)

276. ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे जहां ले जा, अच्छी तरह ले जा और जहां से निकाल, अच्छी तरह निकाल और मेरे लिए अपने पास से ग़लबा और इमदाद मुक़र्रर फ़रमा दे। (कुरआन)

277. ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे। (दुआए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम)

278. ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी ज़बान की गिरह भी खोल दे ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें। (दुआए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम)

279. ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे काम को मुझ पर आसान कर दे। (दुआए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम)

280. ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे बीमारी लग गई है और तू रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वा ला है। (दुआए हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम)

281. ऐ वह पाक ज़ात कि जिस को आँखें देख नहीं सकतीं।

282. ऐ वह पाक ज़ात कि किसी का ख़्याल व गुमान उस तक नहीं पहुंच सकता।

283. ऐ वह पाक ज़ात कि औसाफ़ बयान करने वाले उसके औसाफ़ बयान नहीं कर सकते।

284. ऐ अल्लाह! हमारी झोलियों को हिदायत से भर दे।

285. ऐ वह पाक ज़ात कि हवादिसे ज़माना उस पर असर अंदाज़ नहीं हो सकते।

286. ऐ वह पाक ज़ात जो पहाड़ों के वज़नों को जानती है।

287. ऐ वह पाक ज़ात जो समुंदरों के पैमानों को जानती है।

288. ऐ वह पाक ज़ात जो बारिश के क़त्रों की तादाद को जानती है।

289. ऐ वह पाक ज़ात जो दरख़्तों के पत्तों की तादाद को जानती है।

290. ऐ वह पाक ज़ात जो उन तमाम चीज़ों को जानती है जिन पर रात की तारीकी छाती है और जिन को दिन रौशन करता है।

291. ऐ वह पाक ज़ात जिस को आसमान दूसरे आसमान से छुपा नहीं सकता।

292. ऐ वह पाक ज़ात जिस को ज़मीन दूसरी ज़मीन से छुपा नहीं सकती।

293. ऐ वह पाक ज़ात कि समुंदर के पेट में क्या है वह भी तुझे मालूम है।

294. ऐ वह पाक ज़ात कि चट्टानों में क्या छुपा है वह भी तू जानता है। तू मेरी उम्र के आख़िरी हिस्सा को सब से बेहतर बना दे। और मेरे आख़िरी अमल को ज़िन्दगी का सब से बेहतर अमल बना दे।

295. ऐ अल्लाह! हम को आप का और आप के नबी हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पड़ोसी बना दे।

296. ऐ अल्लाह! हमें तेरे उन थोड़े बंदों में शामिल फ़रमा जो तुझे पसंद हैं। तूने फ़रमायाः

قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِیَ الشَّكُوْرُ

297. ऐ अल्लाह! रब्बानी उलमा ने जो किताबें लिखी हैं उन की हर हर सतर को दुनिया में आम व ताम फ़रमा।

298. ऐ अल्लाह! जो केंसर जैसी बड़ी बीमारी में मुब्तला हूं, उनको शिफ़ा अता फ़रमा।

299. ऐ अल्लाह! तेरे अव्वाब बंदों में शामिल फ़रमा।

300. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को बातिल के ग़ुबार से बचा ले।

301. ऐ अल्लाह! इस मजमा में फ़रिश्ते भी आमीन कह रहे हें, उनकी आमीन को हमारे लिए क़ुबूल फ़रमा।

302. ऐ अल्लाह! भूक और ख़ौफ़ के लिबास से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

303. ऐ गिरे पड़े लोगों को ऊँचा करने वाले आफ़ियत से हम को तरक़्क़ी नसीब फ़रमा।

304. ऐ अल्लाह! तहज्जुद के वक़्त में तेरा ख़ास लश्कर ज़मीन पर उतरता है, उस वक़्त हमें जागने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

305. ऐ अल्लाह! हम को तेरा ख़ैरख़्वाह बनने की तौफ़ीक़ दे।

(इब्ने कसीरः जिल्द 2 पेज 393)

297. ऐ अल्लाह! यह माहे मुबारक तेरी रहमत का चमन है तूने हमारे लिए उतारा है, क़द्र करने की तौफ़ीक़ दे।

306. ऐ अल्लाह इस उम्मत को ज़िन्दगी के सारे लुत्फ़ अता फ़रमा।

307. ऐ अल्लाह! हमें हलाक न फ़रमा, हमारे कम अक़्ल लोगों की बद आमालियों की वजह से।

308. ऐ सलाम! हम को दारुस्सलाम में दाख़िल फ़रमा।

309. ऐ अल्लाह! तेरे ख़ुफ़िया ख़ज़ानों से महरूम मत फ़रमा।

310. ऐ अल्लाह! तेरे दोनों हाथों में बैठा कर हम को जन्नत में दाख़िल फ़रमा। (हदीस बिखरे मोतीः जिल्द 1 पेज 147)

311. ऐ अल्लाह! तेरे दोनों हाथ रहमत के ख़ज़ाने में डाल कर लपें भर कर हमारी झोली में डाल दे।

312. हम को वह ख़ुश नसीब इन्सान बना कि आप ﷺ हमारा हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करा दें। (मोमिन का हथियार)

313. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को दुनिया में जन्नत का साया अता फ़रमा और जहन्नम के साया से हिफ़ाज़त फ़रमा यानी नेमतें अता फ़रमा और परेशानियां दूर फ़रमा।

314. ऐ अल्लाह! मुसलमानों की मोहब्बत से हमको महरूम न फ़रमा।

315. ऐ अल्लाह! गुनाहों के तसव्वुर से हमारे रोंगटेखड़े हो जाएं, हमें ऐसा बना दे।

316. ऐ अल्लाह! हमारे घरों में बड़े बड़े गुनाहों की बड़ी बड़ी खिड़कियां खुली हुई हैं, उन खिड़कियों को बंद कर दे।

317. ऐ अल्लाह! हर एक की लैला अलग होती है, किसी की लैला कुर्सी है, किसी की लैला माल है, किसी की लैला हुब्बे जाह है, किसी की लैला मकान है, ऐ अल्लाह! इस उम्मत को इन लैलाओं के

चक्करों से बचा ले।

318. ऐ अल्लाह! हुज़ूर ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को ताकीदन एक दुआ पढ़ने की वसियत की थी, वह दुआ हमें पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाः

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ، اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ
كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

तर्जुमाः ऐ हमेशा हमेंश ज़िन्दा रहने वाले! ऐ मख़्लूक़ात को क़ायम रखने वाले! मैं आप से आप की रहमत ही के ज़रिए मदद तलब करता हूं, आप मेरे तमाम अहवाल दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक बार आँख झपकने के बराबर मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए। (मोमिन का हथियारः पेज 20)

319. ऐ अल्लाह! इस उम्मत के मर्दों को सहाबा के रूहानी बेटे बना दे और औरतों को सहाबियात की रूहानी बेटियां बना दे।

320. किसी ज़माने में करीम था जो खोटे सिक्के ले लेता था। ऐ अल्लाह! आप हमारे खोटे आमाल क़ुबूल फ़रमा लीजिए।

321. ऐ अल्लाह! हुज़ूर ﷺ ने हज़रत बुरैदा असलमी रज़ि० को जो दुआ सिखाई थी, वह हमें भी पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِيْ رِضَاكَ ضُعْفِيْ وَخُذْ اِلَى
الْخَيْرِ بِنَا صِيَتِيْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰى رِضَائِيْ،
اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِيْ وَ اِنِّيْ ذَلِيْلٌ فَاَعِزَّنِيْ وَ اِنِّيْ

فَقِيْرٌ فَاَغْنِنِیْ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं कमज़ोर हूं अपनी इताअत व फ़रमां बरदारी में लगा कर मेरी कमज़ोरी को दूर फ़रमा और ख़ैर के कामों की तरफ़ मुझे मुतवज्जेह कर दीजिए। और दीने इस्लाम को मेरी आख़िरी तमन्ना बना दीजिए। ऐ अल्लाह! मैं कमज़ोर हूं मुझे ताक़त व कुव्वत बख़्श दीजिए। और ऐ अल्लाह! मैं ज़लील हूं, मु झे इज़्ज़त अता फ़रमाइए, और ऐ अल्लाह! मैं फ़क़ीर हूं, आप मुझे ग़नी कर दीजिए, ऐ अरहमुर्राहिमीन।

(बिखरे मोतीः जिल्द 1 अहयाउल उलूम जिल्द 1, पेज 277)

322. ऐ अल्लाह! ऐसा ईमान दे जिस के बाद कुफ़्र न हो।

323. ऐ अल्लाह! ऐसी हिदायत दे जिस के बाद गुमराही न हो।

324. ऐ अल्लाह! ऐसा इल्म दे जिस के बाद जिहालत न हो।

325. ऐ अल्लाह! ऐसा ज़िक्र दे जिस के बाद ग़फ़लत न हो।

326. ऐ अल्लाह! ऐसी रौशनी दे जिस के बाद अंधेरा न हो।

327. ऐ अल्लाह! ऐसी इज़्ज़त दे जिसके बाद ज़िल्लत न हो।

328. ऐ अल्लाह! ऐसी रज़ा दे जिस के बाद नाराज़गी न हो।

329. ऐ अल्लाह! ऐसी रहमत दे जिस के बाद अज़ाब न हो।

330. ऐ अल्लाह! ऐसी कामयाबी दे जिस के बाद नाकामी न हो।

331. ऐ अल्लाह! मुझे दुनिया व आख़िरत की ज़िल्लत से बचा।

332. ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना कि तुझ को पसंद आ जाऊँ।

333. ऐ मेरे परवरदिगार! अगर मेरे गुनाह बढ़ गए (तो क्या हुआ) मैं

जानता हूं कि आप की मआफ़ी मेरे गुनाहों से भी बढ़ी हुई है।

334. अगर आप की रहमत के उम्मीदवार सिर्फ़ नेक ही हैं तो गुनाहगार किसे पुकारें और किस से तवक़्क़ो रखें?

335. ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तेरे हुक्म के मुताबिक़ तुझे ज़ारी व आजिज़ी से पुकारता हूं। तू अगर मेरा हाथ नाकाम वापस लौटा देगा (यानी मुझे मायूस कर देगा) तू कौन है रहम करने वाला?

336. मेरे पास तो सिर्फ़ आप के बेहतरीन दर गुज़र की उम्मीद के सिवा कोई सहारा नहीं फिर बात यह है कि मुसलमान भी हूं।

(बिखरे मोतीः जिल्द 1 पेज 68)

337. ऐ अल्लाह! तूने निगाहे करम हज़रत उमर रज़ि० पर डाली, उन्हें हिदायत मिल गई, वही निगाहे करम हम पर भी डाल दे।

338. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को ज़माना की ज़ालिम नज़रों से बचा ले।

339. ऐ अल्लाह! मुझे अपना राज़दार (क़रीबी दोस्त) बना लीजिए।

340. ऐ अल्लाह! तेरे नबी पर रहमतें नाज़िल फ़रमा जब तक क़दम और क़लम चलते रहें।

341. ऐ अल्लाह! इस उम्मत को ज़ालिम और मज़लूम बनने से बचा लीजिए।

342. ऐ अल्लाह! मेरे बातिन को मेरे ज़ाहिर से ज़्यादा बेहतरबना दीजिए और मेरे ज़ाहिर को सालेह और नेक बना दीजिए।

(यह दुआ हज़रत मुहम्मद ﷺ ने हज़रत उमर रज़ि० को सिखाई थी। देखिए फ़ज़ाइले ज़िक्र पेज 420)

अल्हम्दुलिल्लाह! यह किताब पालीज ब-मुक़ाम इक्खड़
जोड़ में जाते हुए ट्रेन में मुकम्मल हुई।

बतारीख़ 24-5-2009, 29 जमादिउल अव्वल 1430

अल्लाह तआला क़ुबूल फरमाए। आमीन!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ [سورۂ ہود]

तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी, उसी पर मैंने भरोसा किया है
और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूं।

हज व उमरा की दुआएं

हज व उमरा करने वाले लोगों के लिए बेहतरीन तोहफा

محمد یونس
ابن حضرت مولانا
محمد عمر صاحب
پالنپوری

اداره امپیکس
idara impex
Publishers | Distributors | Exporters
www.idara.com

दुआ

तेरी अज़्मतों से हूं बेख़बर
यह मेरी नज़र का क़ुसूर है

तेरी रहगुज़र में क़दम क़दम
कहीं अर्श है कहीं तूर है

यह बजा है मालिके बंदगी
मेरी बंदगी में क़ुसूर है

यह ख़ता है मेरी ख़ता मगर
तेरा नाम भी तो ग़फ़ूर है

यह बता कि तुझ से मिलूं कहां
मुझे तुझ से मिलना ज़रूर है

कहीं दिल की शर्त न डालना
अभी दिल निगाहों से दूर है

- हर दुआ यक़ीन और इस्तिहज़ार के साथ पढ़ें।
- दुआओं का फ़ायदा फ़राइज़ के एहतिमाम पर मौक़ूफ़ है, कोई भी नफ़ल अमल फ़राइज़ का बदल नहीं हो सकता, इस लिए तमाम फ़राइज़ का एहतिमाम निहायत ही ज़रूरी है।

ऐ अल्लाह! इस किताब की इशाअत में जिन लोगों ने जिस एतिबार से भी हिस्सा लिया हो, उन सब को कुबूल फ़रमा, और उनकी जायज़ मुरादें पूरी फ़रमा। आमीन!

एक अहम नसीहत

रोज़ाना इस दुआ को पढ़ने का एहतिमाम कीजिए। तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों की तादाद के बराबर नेकियां मिलेंगी, इन्शाअल्लाह। यह हदीस सहीह है। इस दुआ का प्रिंट निकाल कर अपने पास रख लीजिए और मुसलमानों में इसे तक़सीम भी कर दीजिए। हमें नेकियां मिलेंगी और मां बाप के लिए दुआ भी हो जाएगी।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۔ اٰمِيْن

ऐ हमारे परवर्दिगार! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए और मेरे वालिदैन को और मूमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा।

अर्ज़े मुरत्तिब

जो लोग अरबी अल्फ़ाज़ में मसनून दुआएं न पढ़ सकते हों, ऐसे लोगों के लिए मसनून दुआओं का तर्जुमा पढ़ कर दुआ मांगना यक़ीनन अल्लाह तआला के कुर्ब का सबब होगा और उन को इन्शा अल्लाह अज्र व सवाब ज़रूर मिलेगा। इस लिए कि वह अल्लाह तआला के हुक्म "उदऊनी" (यानी मुझ से मांगो) पर अमल कर रहे हैं और दुआ का मज़मून रसूलुल्लाह ﷺ से साबित होने की वजह से जामे भी है और बेअदबी से पाक भी है। इस लिए जो लोग अरबी पढ़ सकते हों, लेकिन मआनी न जानते हों उनको भी तर्जुमा कभी कभी ज़रूर पढ़ लेना चाहिए ताकि उनको मालूम हो जाए कि वह क्या मांग रहे हैं फिर यह दुआ हक़ीक़ी दुआ मांगना बनेगी।

वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۚ﴿۵۵﴾ [سورۃ الاعراف]

तर्जुमाः अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا

عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّ

سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا

दुआओं की क़ुबूलियत की अहम हिदायात

1. अल्लाह तआला के नज़दीक दुआओं से ज़्यादा पसंदीदा कोई चीज़ नहीं और दुआ इबादत का मग्ज़ है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द 2 पेज 175)

2. दुआओं की इब्तिदा व इन्तिहा में अल्लाह तआला की हम्द व सना और सरकारे दो आलम ﷺ पर दुरूद भेजना मसनून है।
(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द 2 पेज 197)

दुआओं के बीच में भी दरूद शरीफ पढ़ना मसनून है

3. क़ुबूलियत के यक़ीन और निहायत यक्सोई और इन्तिहाई तवज्जोह के सास दुआ करनी चाहिए।

4. दुआ में ख़ाकसारी और इन्किसारी और मज़लूमियत का मुज़ाहिरा करना चाहिए।

5. बेतवज्जोही और ग़फ़लत और उकताहट के सथ दुआ कुबूल नहीं होती, इस लिए दुआ मुख़्तसर और जामे होनी चाहिए।

6. हरमैन शरीफ़ैन और वहां के मख़्सूस मक़ामात में दुआएं ज़्यादा कुबूल होती हैं।

7. हुज्जाजे किराम और उमरा करने वालों की दुआएं इन्दल्लाह ज़्यादा क़ुबूल होती हैं। हदीस में आया है कि हाजियों की मग़फ़िरत की जाती है, और उन लोगों की भी मग़फ़िरत की जाती है जिन के लिए हुज्जाजे किराम मग़फ़िरत की दुआ करते हैं।
(मजमउज्जवाइद जिल्द 3 पेज 311)

8. अरबी अल्फ़ाज़ की मंकूल दुआएं ज़बानी याद न हों तो मख़्सूस मक़ामात में किताब देख कर भी पढ़ी जा सकती हैं।

9. अगर अरबी अल्फ़ाज़ की मंकूल दुआएं ज़बयानी या देख कर पढ़ना भी दुश्वार हो तो अपनी मादरी ज़बान में अपनी दिली मुरादें मांगी जाएं।

يَارَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

मक्का और मदीना में दुआएं क़ुबूल होने के तीस (30) मक़ामात

मक्का मुअज़्ज़मा में इक्कीस (21) मक़ामात ऐसे हैं जिन में दुआएं क़ुबूल होना कुतुबे फ़िक़्हा और सलफ़े सालिहीन से साबित है और मदीना मुनव्वरा में भी बहुत से मक़ामात ऐसे हैं जिन में दुआएं क़ुबूल होती हैं। उन में से 9 मक़ामात अहक़र ने यहां पर ज़िक्र कर दिए हैं। उन मक़ामात में दुआओं का बहुत ज़्यादा एहतिमाम रखा जाए, वह मक़ामात हस्बे ज़ैल हैं :

1. दौराने तवाफ़
2. मुल्तज़िम पर।
3. मीज़ाबे रहमत के नीचे।
4. बैतुल्लाह के अंदर।
5. ज़मज़म का पानी पीते वक़्त।
6. मक़ामे इब्राहीम के पास।
7. सफ़ा पहाड़ी पर।
8. मरवा पहाड़ी पर।
9. सफ़ा व मरवा के दरमियान सई के दौरान।
10. मैदाने अरफ़ात में।

11. मैदाने मुज़दल्फ़ा में
12. मैदाने मिना में।
13. रमी (शैतान को कंकरियां मारने) के बाद जमरात के पास।
14. बैतुल्लाह शरीफ़ को देखते वक़्त।
15. हतीम के अंदर। (फ़तहुल क़दीर जिल्द 2 पेज 508)
16. रुकने यमानी के पास।
17. ग़ारे सौर में।
18. ग़ारे हिरा में।
19. जिस जगह पर दारे अरक़म था।
20. जिस जगह पर हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि० का मकान था।
21. मक़ामे मदआ में। यह मस्जिदे हराम से जन्नतुल मुअल्लाह की तरफ़ जाते हुए रास्ता में वाक़े है। (ग़ुनयतुल मनासिक पेज 65)

मदीना मुनव्वरा के मुतबर्रक मक़ामात

22. मस्जिदे नबवी में, रियाज़ुल जन्नह में।
23. उस्तुवाना आयशा रज़ि० के पास।
24. उस्तुवाना अबू लुबाबा रज़ि० के पास।
25. मेहराबे नबवी ﷺ में।
26. सुफ़्फ़ा में।
27. मस्जिदे फ़त्ह में।
28. मस्जिदे कुबा में।
29. मस्जिदे क़िबलतैन में।
30. मस्जिदे इजाबा में।

इन मक़ामात में अल्लाह तआला से एहतिमाम के साथ दुनिया व आख़िरत की मुरादें मांगनी चाहिए। और ग़फ़लत से काम न लेना चाहिए और उन में से अकसर मक़ामात की मख़्सूस दुआएं, इस किताब में नक़ल कर दी गई हैं।

सफ़र शुरू करने की दुआ

जो शख़्स सफ़र के लिए घर से रवाना होते वक़्त यह दुआ पढ़ेगा, शैतान और दुश्मनों से महफ़ूज़ रहेगा और हर मुश्किल आसान हो जाएगी।

بِسْمِ اللّٰهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से सफ़र शुरू करता हूं, अल्लाह तआला ही पर तवक्कुल करता हूं, मासियत से हिफ़ाज़त और इताअत पर क़ुदरत अल्लाह तआला की मदद के बग़ैर नहीं हो सकती। (तिर्मिज़ी जिल्द 2 पेज 181)

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही की मदद से हौसला और हिम्मत करके पहुंचने का इरादा करता हूं, आप ही की मदद से मासियत से बचता हूं, आप ही की मदद से सफ़र में चलता हूं। (हिस्ने हसीन मुतरज्जमः 179)

हवाई जहाज़ या दीगर सवारी पर सवार होने की दुआ

जब जहाज़ की सीढ़ियों पर चढ़ने लगे या हवाई जहाज़ या गाड़ी या किसी और सवारी पर सवार होने लगे तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर यह दुआ पढ़ेः

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَ اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ.

तर्जुमाः अल्लाह की ज़ात पाक है जिस ने उस को हमारे इख़्तियार में दिया

है, और हम उस को अपने क़ाबू में करने के अहल नहीं थे और हम सिर्फ़ अपने रब के पास लौटने वाले हैं।

(मुस्लिम शरीफ़ जिल्द 1 पेज 434, तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द 2 पेज 183)

किसी मंज़िल पर उतरने की दुआ

जब दौराने सफ़र किसी जगह ठहरना चाहिए तो यह दुआ पढ़ कर ठहर जाए:

رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ.

[سورۂمؤمنون:۲۹؛بحوالہالحزاب الاعظم:صفحہ۹]

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! आप मुझे उतारिए बरकत का उतारना और आप ही बेहतर उतारने वाले हैं।

समुंदर के ऊपर से गुज़रते हुए हवाइ जहाज़ में पढ़ने की दुआ

जब हवाई जहाज़ परवाज़ कर जाए और परवाज़ के दौरान जब समुंदर के ऊपर से गुज़रे तो यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ، وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ.

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से इस का चलना है और इस का ठहरना भी,

बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है। और लोगों ने अल्लाह की क़दर न की जैसा कि उसकी क़दर करने का हक़ है, और ज़मीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी, क़ियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में, वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो यह लोग करते हैं। (सूरह हूदः 41, सूरह ज़ुम्रः 67, ब-हवाला हिस्ने हसीन पेज 174)

दौराने सफ़र पढ़ते रहने की दुआ

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को हम पर आसान कर दीजिए। और इसकी दराज़ी को हम पर समेट दीजिए। ऐ अल्लाह! आप ही सफ़र में हमारे रफ़ीक़ हैं। और आप ही हमारे अहल व अयाल की देख भाल करने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मैं आप के दरबार में सफ़र की मुशक़्क़त से पनाह चाहता हूं। और पनाह चाहता हूं बुरी हालत देखने से और वापस आ कर घर में बच्चों और माल में बुरी हालत देखने से।

(मुस्लिमः जिल्द 1 पेज 434, हिस्ने हसीनः पेज 173, मिश्कात जिल्द 1 पेज 213, तिर्मिज़ी जिल्द 2 पेज 182)

सिर्फ़ हज का एहराम बंधते वक़्त पढ़ने की दुआ

जब सिर्फ़ हज्ज का एहराम बांधने का इरादा हो तो दो रकात नमाज़

एहराम की पढ़ें, और पहली रकात में सूरह काफ़िरून और दूसरी रकात में सूरह इख़्लास पढ़ें। नमाज़ से फ़राग़त के बाद अगर याद हो तो यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اُرِيۡدُ الۡحَجَّ فَيَسِّرۡهُ لِیۡ وَتَقَبَّلۡهُ مِنِّیۡ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं हज्ज का इरादा करता हूं, इसको मेरे लिए आसान फ़रमा और मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा।

उमरा या हज्जे तमत्तुअ के एहराम की दुआ

जब उमरा का एहराम बांधना हो या हज्जे तमत्तुअ करने का इरादा हो तो इस तरह दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اُرِيۡدُ الۡعُمۡرَةَ فَيَسِّرۡهَا لِیۡ وَتَقَبَّلۡهَا مِنِّیۡ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं उमरा करने का इरादा करता हूं, इसको मेरे लिए आसान फ़रमा और इसको मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा।

(मराक़ी अलफ़लाहः पेज 402)

नोटः जब मुतमत्ते 8 ज़िलहिज्जा को हज्ज का एहराम बांध लेगा तो हज्ज की दुआ पढ़े, जो ऊपर ज़िक्र की गई है।

हज्जे क़िरान के एहराम की दुआ

जब हज्जे क़िरान करने का इरादा हो यानी हज्जे और उमरा दोनों एक साथ करने का इरादा हो तो इन अल्फ़ाज़ में दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اُرِيۡدُ الۡحَجَّ وَالۡعُمۡرَةَ فَيَسِّرۡهُمَا لِیۡ وَ

تَقَبَّلْهُمَا مِنِّىْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं हज्ज व उमरा का इरादा करता हूं, दोनों को मेरे लिए आसान फ़रमा और मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा।

(हिदाया रशीदियाः जिल्द 1 पेज 237)

नोटः एहराम की नमाज़ के बाद मुत्तसिलन मज़कूरा दुआ पढ़ कर एहराम की नीयत करके तलबिया पढ़ लें और तलबिया पढ़ने के बाद एहराम की तकमील हो जाती है। और उसी वक़्त से वह तमाम उमूर हराम हो जाते हैं, जिन का एहराम से पहले करना जायज़ था।

तलबिया के अल्फ़ाज़

لَبَّيْكَ، اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ.

तर्जुमाः मैं तेरे दरबार में हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह! मैं तेरी बारगाह में बार बार हाज़िर होता हूं, तेरा कोई हमसर नहीं, मैं तेरी बारगाह में हाज़िर होता हूं। बेशक हर तारीफ़ और हर क़िस्म की नेमत और बादशाहत तेरे ही लिए है, तेरा कोई हमसर नहीं है।

हुदूदे हरम में दाख़िल होने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا حَرَمُكَ وَحَرَمُ رَسُوْلِكَ فَحَرِّمْ لَحْمِىْ وَدَمِىْ وَعَظْمِىْ وَبَشَرِىْ عَلَى النَّارِ، اَللّٰهُمَّ اٰمِنِّىْ مِنْ

عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ.

[بالمعنی تبیین الحقائق: جلد ۲ صفحہ ۱۴ ؛ قاضی خان: جلد ۱، صفحہ ۳۱۵ ؛ غنیۃ جدید: صفحہ ۹۲ ؛ قدیم: صفحہ ۵۰]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक यह तेरा और तेरे रसूले पाक ﷺ का हरम है। पस तू मेरा गोश्त, ख़ून, हड्डी और खाल को जहन्नम पर हमरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! उस दिन के अज़ाब से मेरी हिफ़ज़त फ़रमा जिस दिन तू अपने बंदों को उठाएगा।

मस्जिदे हराम में दाख़िल होने की दुआ

जब मस्जिदे हराम में दाख़िल होने लगे तो दाहिना पाँव आगे रखे और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर ये दुआ पढे :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ،
اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

[ترمذی: جلد ۱، صفحہ ۷۱، قاضی خان: جلد ۱، صفحہ ۳۱۵، حصن حصین: صفحہ ۱۱۳، غنیہ جدید: صفحہ ۹۷، قدیم: صفحہ ۵۱]

तर्जमाः मैं अल्लाह के नाम से दाख़िल होता हूं। दुरूद व सलाम अल्लाह के रसूल ﷺ पर नाज़िल हो। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।

बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र की दुआ

जब मस्जिदे हराम में दाख़िल होने के बाद बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़े तो यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَ مِنْكَ السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا

بِالسَّلَامِ، اَللّٰهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هٰذَا تَعْظِيْمًا وَّ تَشْرِيْفًا وَّ تَكْرِيْمًا وَّ مَهَابَةً وَّ زِدْ مَنْ حَجَّهٗ اَوِاعْتَمَرَهٗ تَشْرِيْفًا وَّتَكْرِيْمًا وَّتَعْظِيْمًا وَبِرًّا.

[ہکذاقاضی خاں:جلد ۱، صفحہ ۳۱۵؛احکام الحج:صفحہ ۴۳]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप सलाम हैं और आप ही की तरफ़ से सलामती है। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें सलामती के साथ ज़िन्दा रख। ऐ अल्लाह! अपने इस घर की ताज़ीम व तकरीम और शर्फ़ व हैबत को ज़्यादा कर दीजिए। और जो शख़्स इसका हज या उमरा करे, उसकी ताज़ीम व तकरीम और शर्फ़ और सवाब ज़्यादा कर दीजिए।

नोट : अगर याद हो तो यह दुआ पढ़े, वर्ना अपनी मादरी ज़बान में इसका मफ़हूम अदा करके मुरादें मांगे।

सब से पहला कामः तवाफ़

बाहर से आने वाले के लिए मस्जिदे हराम में दाख़िल होने के बाद सब से पहला काम तवाफ़ करना है। तवाफ़ शुरू करते वक़्त यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ، اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَ تَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَ وَفَاءً بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ. [بالمعنی قاضی خاں: جلد۱ صفحہ ۳۱۶]

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से मैं तवाफ़ शुरू करता हूं। अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह ही के लिए हर तारीफ़ है। और दुरूद व सलाम अल्लाह के रसूल ﷺ पर नाज़िल हो, ऐ अल्लाह! तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तसदीक़ करते हुए और तेरे अहद के ईफ़ा और तेरे नबी ﷺ की सुन्नत की इत्तिबा के लिए हजरे असवद को चूमता और छूता हूं।

नोटः अगर यह दुआ न पढ़ सके तो सिर्फ़ **बिस्मिल्लाहि, अल्लहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द** पढ़ लेना काफ़ी है।

तवाफ़ के सातों फेरों की अलग अलग दुआएं

तवाफ़ शुरु करने के बाद हर फेरे के लिए अलग अलग दुआएं पढ़ी जाती हैं। और हम यहां हर फेरे की दुआ अलग अलग पेश करते हैं ताकि पढ़ने वालों को सुहूलत हो। मगर यह बात याद रहनी चाहिए कि यह सब दुआएं हुज़ूर ﷺ से ग़ैर मुतय्यन तौर पर साबित तो हैं लेकिन इस तरतीब से मंकूल नहीं, इस लिए इनके अलावा दूसरी दुआएं भी पढ़ी जा सकती हैं। अलबत्ता रुक्ने यमानी और हजरे असवद के दरमियान की दुआ उसी तरीक़ा से साबित है जिस तरह लिखी जा रही है।

पहले चक्कर की दुआ

तवाफ़ के पहले चक्कर में यह दुआ पढ़ें :

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ (1) وَالصَّلَاةُ وَ

---

(1) जो शख़्स तवाफ़ में यह दुआ पढ़ेगा उसके दस गुनाह मुआफ़ और उसके लिए दस नेकियां और दस दर्जे बुलंद किये जायेंगे। (इब्ने माजा)

السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ، اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا ۢبِكَ وَ تَصْدِيْقًاۢ بِكَلِمَاتِكَ وَ وَفَاءً ۢبِعَهْدِكَ وَ اتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ وَ حَبِيْبِكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ. [قاضی خان: جلد ۱، صفحہ ۳۱۶]

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ وَ الْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِى الدِّيْنِ وَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ. [حصن حصین: صفحہ ۲۲۲، منتخب شدہ]

तर्जुमाः अल्लाह की ज़ात तमाम उयूब से पाक है। और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, अल्लाह बहुत बड़ा है, उसकी मदद के बग़ैर गुनाहों से बचा नहीं जा सकता, और अल्लाह ही की मदद से इताअत पर कुदरत होती है। अल्लाह तआला बहुत बड़ा और बड़ी अज़मत वाला है। हुज़ूर ﷺ पर दुरूद व सलाम नाज़िल हो। ऐ अल्लाह! हम तुझ पर ईमान लाने की हालत में और तेरे कलिमात की तसदीक़ करने और तेरे अहद का ईफ़ा करने और तेरे नबी और हबीब सय्यदना मुहम्मद ﷺ की सुन्नत की इत्तिबा करते हुए हम तवाफ़ करते हैं।

ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से अफ़्व और सलामती का सवाल करता हूं। और दीन और दुनिया व आख़िरत में दाइमी दरगुज़र और हुसूले जन्नत और जहन्नम से निजात के साथ कामयाबी की इल्तिजा करता हूं।

हिदायातः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें।

इस लिए कि रुक्ने यमानी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، یَاعَزِیْزُ یَا غَفَّارُ یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुमरे में हमको दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

दूसरे चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ،

“बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द” कह कर दूसरा चक्कर शुरू कर दें और दूसरे चक्कर में यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَیْتَ بَیْتُكَ وَالْحَرَمَ حَرَمُكَ وَالْاَ مْنَ اَمْنُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَاَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ

وَ هٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِبِكَ مِنَ النَّا رِ فَحَرِّمْ لُحُوْمَنَا وَبَشَرَ تَنَا عَلَى النَّارِ. اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْاِيْمَانَ وَ زَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا وَ كَرِّهْ اِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَ الْعِصْيَانَ وَ اجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ. اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ. اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ. (حصن حصین مترجم : ۱۹۳،۸۷)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! यह तेरा ही घर है। यह हरम तेरा ही हरमे-मोहतरम है। और यहां का अमन व अमान तेरा ही क़ायम किया हुआ है, और हर बंदा तेरा ही बंदा है। और मैं आजिज़ भी तेरा ही बंदा हूं और तेरा ही बंदा ज़ादा हूं, और यह मक़ाम तेरी मदद से जहन्नम की आग से पनाह और हिफ़ाज़त का है। पस हमारे गोश्त और खाल को जहन्नम पर हराम फ़रमा दीजिए। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की मोहब्बत अता फ़रमा, और हमारे दिलों को ईमान के नूर से मुनव्वर कर दे। और कुफ्ऱ व फ़िस्क़ और मासियत से हमें नफ़रत अता फ़रमा। और हम को हिदायत याफ़्ता लोगों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! मुझ को क़ियामत के दिन के अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बंदों को दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा, ऐ अल्लाह! हम को बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत अता फ़रमा।

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमनी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، یَاعَزِیْزُ یَاغَفَّارُ یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ.

(ابن ماجہ: ۲۱۲، مکتبہ تھانوی)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

तीसरे चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ،

“बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द” कह कर तीसरा चक्कर शुरू कर दें। और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَھْلِ وَالْوَلَدِ، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ

الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ . ابن ماجہ شریف: صفحہ ۲۱۳، مکتبہ تھانوی، تبیین الحقائق: ۱۸/۲

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरे दीन और अहकाम में शक करने से पनाह मांगता हूं और पनाह मांगता हूं किसी को तेरा हमसर बनाने से और तेरे अहकाम की मुख़ालिफ़त करने से और निफ़ाक़ से, सूए अख़्लाक़ से, बुरी चीज़ के देखने से और पनाह मांगता हूं माल, अहल व अयान और औलाद की तबदीली से। ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के फ़ितना से तेरे दरबार में पनाह मांगता हूं, और ज़िन्दगी और सकराते मौत की सख़्तियों से पनाह मांगता हूं और दुनिया और आख़िरत की रुस्वाई से तेरी पनाह चाहता हूं।

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमनी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ
الْاَبْرَارِ، يَاعَزِيْزُ يَاغَفَّارُ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत

में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

चौथे चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

"बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द" कह कर चौथा चक्कर शुरू कर दें। और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّ سَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّ ذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّ عَمَلًا صَالِحًا مَّقْبُوْلًا وَّ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ يَا عَالِمَ مَافِي الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِيْ يَا اَللّٰهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَ عَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَ السَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّ الْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ، رَبِّ قَنِّعْنِيْ بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَعْطَيْتَنِيْ وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَائِبَةٍ لِّيْ مِنْكَ بِخَيْرٍ ۔ [ترمذی:۱/۱۰۹۔ کتاب المناسک:۳۹]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे इस हज को हज्जे मबरूर और हज्जे मक़्बूल बना दे। और मेरी इस कोशिश को ठिकाने पर लगा दे और मेरे गुनाहों की

बख़्शिश फ़रमा दे और मेरे इस अमल को मक़बूल तरीन अमले सालेह बना दे और इसको ऐसी तिजारत बना दे जिस में कोई घाटा न हो। ऐ दिलों की बातों को जानने वाले। ऐ अल्लाह! मुझ को तारीकी से निकाल कर उजाले में दाख़िल फ़रमा। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी रहमत के हुसूल के ज़राए और तेरी बख़्शिश के रास्ते और हर गुनाह से सलामती की इल्तिमास करता हूं और हर नेकी पर क़ायम रहने और जन्नत की कामयाबी और जहन्नम से निजात की इल्तिमास करता हूं। ऐ मेरे रब! मुझे इस रोज़ी पर क़नाअत अता फ़रमा जो तूने मुझे दी है और मुझे बरकत अता फ़रमा, उन चीज़ों में जो तूने मुझे अता फ़रमाई हैं। और तू ख़ैर के साथ मेरी हर उस चीज़ का निगहबान बन जा जो मुझ से ग़ायब है।

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमानी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، یَاعَزِیْزُ یَاغَفَّارُ یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

पांचवें चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

“बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द” कह कर पांचवां चक्कर शुरू कर दें। और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِىْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِىَ اِلَّا وَجْهُكَ وَ اسْقِنِىْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ شَرْبَةً هَنِيْئَةً مَّرِيْئَةً لَّا نَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَاَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ وَ اَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَ عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَ نَعِيْمَهَا وَ مَا يُقَرِّبُنِىْ

اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْعَمَلٍ وَّ اَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ
وَمَا يُقَرِّبُنِىْ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْعَمَلٍ.

(زیلعی: ۲/ ۱۷- ترمذی: ۲/ ۱۹۲- وبعضہ فی الحزب الاعظم، ۶۰، حصن حصین: ۳۲۰)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जिस दिन तेरे अर्श के साया के अलावा कोई साया न होगा, उस दिन मुझे अर्श के साया के नीचे जगह अता फ़रमा और तेरी ज़ात के अलावा कोई बाक़ी रहने वाला नहीं है और मुझ को अपने नबी सय्यदना मुहम्मद ﷺ के हौज़ से सैराब करा दे। ऐसा ख़ुश ज़ायक़ा पानी पिला दे कि जिस से फिर अबदल आबाद तक प्यास न लगे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हर उस ख़ैर का सवाल करता हूं जिस का तेरे नबी सय्यदना मुहम्मद ﷺ ने सवाल किया था। और मैं हर उस चीज़ के शर से तेरे दरबार में पनाह मांगता हूं जिस से तेरे नबी सय्यदना मुहम्मद ﷺ ने पनाह मांगी है। और तू ही मददगार और तू ही काफ़ी है। और अल्लाह की मदद के बग़ैर मासियत से हिफ़ाज़त और ताअत पर कुदरत नहीं हो सकती। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से जन्नत और उसकी नेमतों का सवाल करता हूं और उस चीज़ का सवाल करता हूं जो क़ौल व फ़ेल व अमल में मुझ को जन्नत तक पहुंचा दे और मैं जहन्नम के अज़ाब से पनाह मांगता हूं। और क़ौल, फ़ेल, अमल में से हर उस चीज़ से पनाह मांगता हूं जो मुझ को जहन्नम से क़रीब कर सकती है।

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमानी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ

حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، يَاعَزِيْزُ يَاغَفَّارُ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ .

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

छठे चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللهِ، اَللهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

"बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द" कह कर छठा चक्कर शुरू कर दें। और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ وَ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَلْقِكَ، اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا فَاغْفِرْهُ لِيْ وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلْهُ عَنِّيْ وَ اَغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِطَاعَتِكَ عَنْ مَّعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ ،

اَللّٰهُمَّ اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ وَّ وَجْهَكَ كَرِيْمٌ وَّ اَنْتَ يَا اَللّٰهُ حَلِيْمٌ كَرِيْمٌ عَظِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक तेरे मेरे ऊपर बेशुमार हुकूक़ हैं जो तेरे और मेरे दरमियान में हैं। और बेशुमार हुकूक़ मेरे और तेरी मख़्लूक़ के दरमियान में हैं। ऐ अल्लाह! इन में से जो हुकूक़ तेरे हैं जो मुझ से अदा होने से रह गए हैं तू उन्हें मुआफ़ फ़रमा दे और जो तेरी मख़्लूक़ के हैं उन को अपनी मख़्लूक़ से बख़्शवाने की ज़िम्मेदारी ले ले। और मुझ को हलाल कमाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हराम से हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी ताअत के ज़रिए से मासियत से हिफ़ाज़त फ़रमा और अपने फ़ज़्ल के ज़रिए से ग़ैरों के दस्ते-निगर बनने और एहसान मन्द होने से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ बहुत ज़्यादा बख़्शने वाले, ऐ अल्लाह! बेशक तेरा घर बड़ी अज़मत वाला है और तेरी ज़ात करम वाली है। ऐ अल्लाह! तू बड़ा बुर्दबार और करम वाला और अज़मत वाला है, दरगुज़र करने को तू पसंद फ़रमाता है, लिहाज़ा मेरी ख़ताओं को दरगुज़र फ़रमा दे। [كتاب المناسك:٣٥]

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमनी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

सातवें चक्कर की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

"बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द" कह कर सातवां चक्कर शुरू कर दें। और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا وَّ يَقِيْنًا صَادِقًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا وَّ قَلْبًا خَاشِعًا وَّ لِسَانًا ذَاكِرًا وَّحَلَالًا طَيِّبًا وَّ تَوْبَةً نَّصُوْحًا وَّ تَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَ رَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ وَ مَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَ الْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ، رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصَّالِحِيْنَ. [كتاب المناسك:٣٩]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं आप से ईमाने कामिल और सच्चा यक़ीन और वसीअ तरीन रिज़्क़ का सवाल करता हूं और ख़ुशूअ करने वाला दिल और ज़िक्र करने वाली ज़बान और पाक हलाल कमाई और सच्ची तौबा और मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ और मौत के वक़्त सकराते मौत की आसानी और मरने के बाद मग़फ़िरत और रहमत और हिसाब व किताब के वक़्त अफ़्व व दरगुज़र और मआफ़ी और हुसूले जन्नत के साथ कामयाबी और तेरी रहमत से जहन्नम से निजात चाहता हूं। ऐ बड़े ग़ालिब और बड़ी बख़्शिश करने वाले, ऐ मेरे रब! मुझ को इल्मे नाफ़े की ज़्यादती अता फ़रमा और मुझ को आख़िरत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में शामिल फ़रमा।

हिदायतः यह दुआ रुक्ने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले ख़त्म कर दें। इस लिए कि रुक्ने यमनी और हजरे असवद के दरमियान पढ़ने के लिए अलग से दुआ हदीस से साबित है, जिस के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ. رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ، وَ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ، يَاعَزِيْزُ يَاغَفَّارُ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से दुनिया और आख़िरत की भलाई और मआफ़ी चाहता हूं। ऐ हमारे रब! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाई अता फ़रमा। और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा लीजिए। और जन्नत में नेक लोगों के ज़ुम्रे में हम को दाख़िल फ़रमाइए। तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़्शिश करने वाला दोनों जहानों का पालनहार है।

मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नमाज़

तवाफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद मक़ामे इब्राहीम पर पहुंचे। और वहां पहुंच कर यह आयत पढ़ेः

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِمَ مُصَلًّى.

तर्जुमाः और हुक्म दिया कि मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो।

यह आयत पढ़ कर फिर मक़ामे-इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास दो रकअ़त सलाते-तवाफ़ पढ़े। बर्शेकि वहां पर जगह ख़ाली हो और तवाफ़ करने वालों के दर्मियान और लोगों की भीड़ में वहां पर नमाज़ की नियत जायज़ नहीं। बजाए सवाब के गुनाह का ख़तरा है।

सलाते तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर दुआए आदम अलैहिस्सलाम

शुक्राना दो रकात सलाते तवाफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर जा कर दुआए आदम अलैहिस्सलाम पढ़े और दुआए आदम अलैहिस्सलाम के अल्फ़ाज़ यह हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّىْ وَعَلَانِيَتِىْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِىْ وَ تَعْلَمُ حَاجَتِىْ فَاَعْطِنِىْ سُؤْلِىْ وَ تَعْلَمُ مَافِىْ نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَاشِرُ قَلْبِىْ وَ يَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَايُصِيْبُنِىْ اِلَّا مَا

كَتَبْتَ لِيْ وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِيْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

[کچھ فرق کے ساتھ حوالے؛ تبیین الحقائق: ۲/۲۰، فتح القدیر: ۲/۵۷م، فتح القدیر زکریا: ۲/۶۸م، شامی کراچی: ۲/۹۹م، تقریرات رافعی: ۲/۱۶۰]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू मेरे ज़ाहिरी और बातनी हालात को ख़ूब जानता है, मेरा उज़्र क़ुबूल फ़रमा और तू मेरी हाजत को जानता है, लिहाज़ा मेरी तलब पूरी फ़रमा, और तू मेरे दिल की बात जानता है, मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से ईमाने रासिख़ और यक़ीने सादिक़ का सवाल करता हूं जो मेरे क़ल्ब में पैवस्त हो जाए हत्ता कि मैं जान लूं कि मुझ को सिर्फ़ इतनी मिक़्दार पहुंच सकती है जितना तूने मेरे लिए लिख दिया है और मैं तुझ से उस चीज़ पर रज़ामन्दी तलब करता हूं जितना तूने मेरे लिए मुक़द्दर कर रखा है।

नोटः जो शख़्स सलाते तवाफ़ के बाद मज़कूरा दुआ करेगा। अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह मुआफ़ कर देगा और उसकी तमाम परेशानी दूर कर देगा और उस पर कभी फ़क्र व फ़ाक़ा की नौबत नहीं आएगी। और दुनिया ज़लील हो कर उसके पास आएगी।

(तबईनुल हक़ाइक़ जिल्द 2 पेज 20)

मुल्तज़िम पर पढ़ने की दुआ

मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर मज़कूरा दुआ से फ़ारिग़ होने के बाद मुल्तज़िम पर आए। और मुल्तज़िम ख़ाना काबा के दरवाज़ा और हजरे असवद का दरमियानी हिस्सा है। और इस जगह दुआएं बहुत कुबूल होती हैं और मुल्तज़िम पर इन अल्फ़ाज़ से दुआ मांगेः

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا بَيْتُكَ الَّذِيْ جَعَلْتَهٗ مُبَارَكًا وَّ هُدًى

لِّلْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ كَمَا هَدَيْتَنِيْ لَهٗ فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ وَ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِكَ وَ ارْزُقْنِي الْعَوْدَ اِلَيْهِ حَتّٰى تَرْضٰى عَنِّيْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

[مراقی الفلاح: ۴۰۱، تبیین الحقائق: ۳۷/۲]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक यह तेरा वह घर है, जिस को तूने तमाम आलम के लिए मुबारक और हिदायत का ज़रिया बनाया है। ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने मुझे इसके हज के लिए हिदायत दी है, इसी तरह मेरी तरफ़ से कुबूल फ़रमा। और मेरे लिए सफ़र को मोहतरम घर का आख़िरी सफ़र न बना और दोबारा लौट कर आना नसीब फ़रमा, यहां तक कि तू मुझ से राज़ी हो जाए। या अरहमर राहिमीन! अपनी रहमत से मेरी दुआ कुबूल फ़रमा।

मीज़ाबे रहमत के नीचे पढ़ने की दुआ

मीज़ाबे रहमत यानी बैतुल्लाह शरीफ़ के परनाले के नीचे दुआएं बहुत ज़्यादा कुबूल होती हैं, मगर इसका ख़्याल रखना ज़रूरी है कि धक्का मुक्की से बचता रहे। अगर वहां दुआ करना मुमकिन हो तो वहां खड़े हो कर यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا لَّا يَزُوْلُ وَ يَقِيْنًا لَّا يَنْفَدُ وَ مُرَافَقَةَ نَبِيِّكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ. اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِيْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَ

اَسْقِنِیْ بِكَاْسِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ شَرْبَةً لَّا اَظْمَاُ بَعْدَهَا اَبَدًا۔ [تبیین الحقائق:۲/۱۷]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ऐसे ईमान का तालिब हूं, जो कभी ज़ायल न हो, और ऐसे यक़ीन का तालिब हूं जो कभी ख़त्म न हो, और तेरे नबी मुहम्मद ﷺ की मुराफ़क़त और मईयत का तालिब हूं। ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन अपने अर्श का साया अता फ़रमा, जिस दिन अर्श के साया के अलावा कोई साया न होगा। और मुहम्मद ﷺ के प्याला से ऐसा शरबत पिला दे कि उसके बाद कभी प्यासा न हूं।

आबे ज़म ज़म पीने की दुआ

मुल्तज़िम से फ़ारिग़ होने के बाद ज़म ज़म के कुएँ पर पहुंचे और आबे ज़म ज़म पीते वक़्त इन अल्फ़ाज़ से दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ۔ [حصن حصین مترجم:۱۸۹، قاضی خان:۱/۳۱۹، زیلعی:۲/۳۷]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इल्मे नाफ़े और रिज़्क़ वासे और हर मर्ज़ से शिफ़ा का सवाल करता हूं।

सफा व मर्वा की सई के लिए मस्जिदे हराम से निकलने की दुआ

ज़म ज़म से फ़राग़त के बाद हजरे असवद का इस्तिलाम करे, उसके बाद सई बैनस्सफ़ा वलमरवा के लिए सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ रवाना हो जाए और मस्जिदे हराम से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ.

[غنیۃ الناسک:۶۸، بالمعنی ترمذی:۷۱/۱]

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से मस्जिदे हराम से निकलता हूं और हुज़ूर अकरम ﷺ पर दुरूद व सलाम भेजता हूं। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिए और मेरे लिए अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दीजिए।

सफ़ा पर चढ़ने की दुआ

मस्जिदे हराम से निकलने के बाद सफ़ा की चढ़ाई पर चढ़ते वक़्त यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ، اَبْدَاُ بِمَا بَدَاَ اللّٰهُ بِهٖ، اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ. [غنیۃ الناسک:۶۸، مسلم شریف بالمعنی:۳۹۵/۱]

तर्जुमाः मैं अल्लाह का नाम ले कर वहां से शुरू करता हूं, जहां से अल्लाह तआला ने शुरू फ़रमाया है। बेशक सफ़ा व मरवा दोनों अल्लाह की निशानियों में से हैं।

सफ़ा पर खड़े हो कर पढ़ने की दुआ

जब सफ़ा पहाड़ी पर खड़े हो जाएं तो बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जह हो कर तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ कर अल्लाह से दुआ मांगें:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، لَا شَرِیْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ، يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ. [مسلم شریف: ۱/۳۹۵، غنیۃ الناسک: ۷۹]

तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह तन्हा है उसका कोई हमसर नहीं, उसी के लिए मुल्क है, उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं, वही ज़िन्दा करता है, वही मौत देता है, वही हर शय पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह तन्हा है, उस ने अपना वादा पूरा फ़रमाया और अपने बंदे की मदद फ़रमाई। तन्हा उस ने हुजूम के साथ आने वाले लश्करों को शिकस्त दी है।

नोटः यही दुआ मरवा पर भी उसी तरीक़ा से पढ़े जिस तरह सफ़ा पर पढ़ी गई थी। और यह दुआ मीलैने-अख़्ज़रैन से पहले पहले ख़त्म कर दे।

मीलैने-अख़्ज़रैन के दरमियान पढ़ने की दुआ

जब सई करते हुए मीलैने-अख़्ज़रैन यानी हरे सुतूनों के पास पहुंचे तो यह दुआ पढ़ेः

رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ، اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ. [هكذا قاضی خان: ۱/۳۱۷، زیلعی: ۲/۲۰]

तर्जुमाः ऐ मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मेरे उन गुनाहों को दरगुज़र फ़रमा जो तेरे इल्म में हैं, बेशक तू ही सब पर

ग़ालिब और ज़्यादा करम करने वाला है।

मीलैने-अख़्ज़रैन के बाद मरवा की तरफ़ चलते हुए पढ़ने की दुआ

मीलैने-अख़्ज़रैन से तजावुज़ करके जब मरवा की तरफ़ आगे बढ़े तो यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِىْ بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ وَ تَوَفَّنِىْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَ اَعِذْنِىْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

[تبیین الحقائق: ۲۰/۲، قاضی خان: ۳۱۷/۱]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझ को मुहम्मद ﷺ की सुन्नत का पाबंद बना दे। और मुझे उन्हीं के दीन पर मौत अता फ़रमा। और हर गुमराह कुन फ़ित्नों से अपनी रहमत के ज़रिए से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले! मुझे अपनी रहमत से नवाज़।

नोटः फिर मीलैने-अख़्ज़रैन के बाद मरवा तक आने जाने में यही पढ़ता रहे। और अगर किसी को कोई भी दुआ याद नहीं है तो वह अपनी मादरी ज़बान में जो भी दुआएं याद हों, उनके ज़रिए अल्लाह तआला से मुरादें मांगता रहे। नीज़ मज़कूरा दुआएं जिस तरह सफ़ा पर पढ़ी गई थीं, उसी तरह मरवा पर भी पढ़ें।

मसलाः मीलैने-अख़्ज़रैन (हरे रंग की लाइट) के दरमियान दौड़ कर चलें, मगर सफ़ा से अपनी रफ़्तार पर चलते हुए उतरें। और फिर मीलैने-अख़्ज़रैन के बाद मरवा तक अपनी हैयत पर चलें और मीलैने-अख़्ज़रैन के दरमियान हर चक्कर में मर्दों को दौड़ने का हुक्म है,

औरतों को नहीं।

9 ज़िल-हिज्जा को मिना से अरफ़ात के लिए रवानगी की दुआ

9 ज़िल-हिज्जा की सुबह को मिना में फ़जर की नमाज़ पढ़ कर जब सूरज तुलूअ हो जाए तो अरफ़ात के लिए रवाना हो जाए। और रवाना होते हुए यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰھُمَّ اِلَیْكَ تَوَجَّھْتُ وَ عَلَیْكَ تَوَكَّلْتُ وَ وَجْھَكَ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْ ذَنْبِیْ مَغْفُوْرًا وَّحَجِّیْ مَبْرُوْرًا وَّارْحَمْنِیْ وَلَا تُخَیِّبْنِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ سَفَرِیْ وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِیْ، اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. [زیلعی:۲/۲۳]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। और तुझ पर भरोसा करता हूं। तेरी ज़ात का इरादा रखता हूं, लिहाज़ा मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और मेरे हज को कुबूल फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझ को नामुराद न बना और मेरे सफ़र में बरकत अता फ़रमा। और मैदाने अरफ़ात में मेरी हाजत पूरी फ़रमा। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

नोटः इस दुआ को पढ़ कर रवाना हो जाए और रास्ता में तलबिया कसरत से पढ़े और तकबीर, तहलील, तस्बीह, तहमीद और दुरूद व सलाम पढ़ते हुए अरफ़ात पहुंच जाएं और और दरमियान में बार बार तलबिया पढ़ता रहे।

अरफ़ात में दाख़िल होने की दुआ

जब मैदाने अरफ़ात के क़रीब पहुंच जाए और जबले रहमत पर नज़र पढ़े तो यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ وَجْهَكَ اَرَدْتُّ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَ تُبْ عَلَىَّ وَ اَعْطِنِىْ سُؤَالِىْ وَ وَجِّهْ لِىَ الْخَيْرَ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ. [زيلعى:٢/٢٣]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। और तुझ पर ही तक्कुल करता हूं और तेरी ज़ात का इरादा करता हूं। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा और मेरी तलब और मेरी मुराद मुझे अता फ़रमा। हर क़िस्म की ख़ैर मेरे लिए इस तरफ़ मुतवज्जह फ़रमा दे जिधर मैं मुतवज्जह होता हूं, अल्लाह की ज़ात पाक है, हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है।

अरफ़ात में सब से अफ़ज़ल तरीन दुआ

मैदाने अरफ़ात में सब से अफ़ज़ल और बेहतर दुआ, दुआए तौहीद है। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने और मुझ से पहले नबियों ने मैदाने अरफ़ात में दुआएं की हैं इन में सब से अफ़ज़ल तरीन दुआ, दुआए तौहीद है। और दुआए तौहीद के अल्फ़ाज़ यह हैं:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. [حصن حصين:۱۸۴، ترمذی:۱۹۹/۲]

तर्जुमाः अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह तन्हा है उसका कोई हमसर नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं, उसी के हाथ में तमाम भलाई है। वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

नोटः इस दुआ को पढ़ कर अल्लाह से जो भी मुरादें मांगी जाएं, इन्शा अल्लाह क़ुबूल हो जाएंगी। और मैदाने अरफ़ात में ज़िक्र और दुआओं के दरमियान में तलबिया भी पढ़ते रहें। अगर मुमकिन हो तो मज़कूरा दुआ को अरफ़ात में सौ (100) मर्तबा पढ़े।

मैदाने अरफ़ात में बकसरत पढ़ने की दुआ

मैदाने अरफ़ात में दुआएं बहुत कसरत से करनी चाहिए। क्योंकि अरफ़ात की दुआ बहुत मक़बूल और अफ़ज़ल होती है। और मैदाने अरफ़ात में हुज़ूर ﷺ का हस्बे ज़ैल दुआ भी कसरत के साथ पढ़ना साबित हैः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّ فِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَ يَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّسَاوِسِ الصَّدْرِ وَ شَتَاتِ الْاَمْرِ وَ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيْحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ. [غنية الناسك:۸۳، حصن حصين:۱۸۳]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे दिल को नूर से भर दे, और मेरे कानों को नूर से भर दे। और मेरी आँखों को नूर से भर दे। ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और दुनिया व आख़िरत में मेरे हर काम को आसान फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दिल के वसवसों से पनाह मांगता हूं और काम की परागंदगी और परेशानी से पनाह मांगता हूं। और क़ब्र के फ़ित्ने और आज़माइश से पनाह मांगता हूं, ऐ अल्लाह! मैं तेरे दरबार में हर उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूं जो रात में दाख़िल हो और हर उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूं जिस को हवा अपने साथ ले आती हो और ज़माने की हलाकत के शर से पनाह चाहता हूं।

अरफ़ात में ज़ोहर व असर की नमाज़ के बाद वक़ूफ़ के शुरू में पढ़ने की दुआ

और अरफ़ात में ज़ोहर व असर दोनों नमाज़ों को ज़ोहर के वक़्त में एक साथ पढ़ा जाता है। और इन दोंनों नमाज़ों के बाद नफ़ल पढ़ना मकरूह है। बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद फ़ौरन ज़िक्र व तिलावत, दुआ वग़ैरा में मशग़ूल होने के लिए वक़ूफ़ करें। और वकूफ़ की इब्तिदा में यह दुआ पढ़ें :

لَبَّيْكَ، اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْخَيْرَ خَيْرُ الْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ بِالْهُدٰى وَ نَقِّنِىْ بِالتَّقْوٰى وَاغْفِرْلِىْ فِى الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى.

[غنية:۸۳،حصن حصين:۱۸۴]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरे दरबार में हाज़िर होता हूं, बेशक असली भलाई आख़िरत की भलाई है। और ज़िन्दगी नहीं है मगर आख़िरत की ज़िन्दगी

असली ज़िन्दगी है। ऐ अल्लाह! तू अपनी हिदायत से मुझे हिदायत अता फ़रमा। और अपनी परहेज़गारी से मुझे पाक व साफ़ फ़रमा। और दुनिया व आख़िरत में मेरी मग़फ़िरत फ़रमा।

अरफ़ात में शाम को पढ़ने की दुआ

हज्जतुल विदा के मोक़े पर हुज़ूर ﷺ ने अरफ़ात की शाम को कसरत के साथ जो दुआ पढ़ी है वह हस्बे ज़ैल है:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَالَّذِىْ تَقُوْلُ وَخَيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ، اَللّٰهُمَّ لَكَ صَلَوَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ وَاِلَيْكَ مَاٰبِىْ وَ لَكَ رَبِّ تُرَاثِىْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَوَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ. [غنية:٨٣]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हर तारीफ़ तेरे लिए ऐसी है जैसी तूने की है। और भलाई तेरे लिए है उन चीज़ों में से जो हम कहते हैं। ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी व मनासिक और मेरी ज़िन्दगी और मौत तेरे वास्ते है, और तेरे ही पास मेरी पनाह गाह है। और तेरे लिए है, ऐ मेरे रब! मेरा परागंदा होना। ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं और दिल के वसवसा से पनाह चाहता हूं और काम के इन्तिशार और परागंदगी की परेशानी से पनाह चाहता हूं।

नोटः अरफ़ात में दुआ मांगने के लिए जितनी दुआएं मनकूल हैं, वह बहुत कसीर तादाद में हैं। और बहुत लम्बी लम्बी दुआएं हैं, उन में से छांट छांट कर मज़कूरा चार दुआएं हम ने यहां लिख दी हैं। और यह दुआ मुख़्तसर भी हैं और जामे भी हैं। इन दुआओं के साथ दुआ करने से

इन्शा अल्लाह बहुत जल्द क़ुबूल हो जाएगी।

अरफ़ात से वापसी में मुज़दल्फ़ा के रास्ता की दुआ

अरफ़ात से वापसी में मुज़दल्फ़ा के रास्ता में बार बार तलबिया पढ़ते रहें, और कसरत के साथ इस्तिग़फ़ार करें और अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह यह कसरत के साथ पढ़ते रहें और इसके साथ यह दुआ भी पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَفَضْتُ وَ مِنْ عَذَابِكَ اَشْفَقْتُ وَ اِلَيْكَ رَغِبْتُ وَ مِنْ سَخَطِكَ رَهِبْتُ فَاقْبَلْ نُسُكِىْ وَ اَعْظِمْ اَجْرِىْ وَ تَقَبَّلْ تَوْبَتِىْ وَ ارْحَمْ تَضَرُّعِىْ وَ اسْتَجِبْ دُعَائِىْ وَاَعْطِنِىْ سُؤَالِىْ، يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

[هكذا زيلعى: ٢/٣٠، ومعنا فى قاضى خان: ١/٢١٨]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं तेरे दरबार में हाज़िर होता हूं। और तेरी तरफ़ चलता हूं और तेरे अज़ाब से ख़ौफ़ ज़दा हूं और तेरी ही तरफ़ रुजूअ करता हूं और तेरे ग़ज़ब से डरता हूं। ऐ अल्लाह! तू मेरे मनासिके हज को कुबूल फ़रमा और अज़ीम तरीन सवाब अता फ़रमा और मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा। और मेरी गिर्या व ज़ारी पर रहम फ़रमा। और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा और मेरी मुराद और तलब अता फ़रमा। ऐ अरहमुर-राहिमीन!

मुज़दल्फ़ा की दुआ

नवीं और दसवीं जिल-हिज्जा की दरमियानी रात मुज़दल्फ़ा की रात है। इस रात की फ़ज़ीलत शबे क़दर से कम नहीं है। तमाम रात जागते

रहना, नमाज़, तिलावत और दुआ में मसरूफ़ रहना बड़ी ख़ुश क़िस्मती है। और मुज़दल्फ़ा की रात में यह दुआ भी कसरत के साथ पढ़ते रहें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَرْزُقَنِیْ فِیْ هٰذَا الْمَكَانِ جَوَامِعَ الْخَیْرِ كُلِّهٖ وَ اَنْ تَصْرِفَ عَنِّیْ السُّوْءَ كُلَّهٗ فَاِنَّهٗ لَا یَفْعَلُ ذٰلِكَ غَیْرُكَ وَلَا یَجُوْدُ بِهٖ اِلَّا اَنْتَ.

[هكذا زيلعی اختصارًا: ٢/٢٧]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से इस बात का सवाल करता हूं कि मुझ को इस मुक़द्दस मक़ाम में तमाम नेकियों और भलाइयों का मजमूआ अता फ़रमा। और मुझ से हर क़िस्म की बुराइयों को दूर फ़रमा, बेशक तेरे अलावा यह काम कोई नहीं कर सकता और न तेरे सिवा कोई दूसरा इस भलाई की बख़्शिश कर सकता है।

नोटः मुज़दल्फ़ा में रात गुज़ारने के बाद फ़जर की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ कर वकूफ़ शुरु कर दें। और इस में अल्लाह से दुआएं मांगें। और गिर्या व ज़ारी करते रहें। और सूरज तुलूअ होने से ज़रा पहले मिना को रवाना हो जाएं।

मुज़दल्फ़ा में वक़ूफ़ की दुआ

जब मुज़दल्फ़ा में फ़जर की नमाज़ के बाद तुलूअ ए शम्स से पहले वकूफ़ किया जाए तो दौराने वकूफ़ यह दुआ पढ़ना बहुत बड़े अज्र का बाइस है :

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَالْبَیْتِ الْحَرَامِ

وَالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالرُّكْنِ وَالْمَقَامِ بَلِّغْ رُوْحَ مُحَمَّدٍ مِّنَّا التَّحِيَّةَ وَالسَّلَامَ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ، يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

[مفہومہ قاضی خاں: ۱/۳۱۸، وہکذا زیلعی: ۲/۲۷، اختصارًا]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मशअरे हराम के तुफ़ैल से और बैते हराम के तुफ़ैल से और हुर्मत वाले महीनों के तुफ़ैल से और रुक्ने असवद और मक़ामे इब्राहीम के तुफ़ैल से हज़रत मुहम्मद ﷺ की रूह को हमारी तरफ़ से दुरूद व सलाम का तोहफ़ा पहुंचा दे। और हम को सलामती के घर में दाख़िल फ़रमा। यानी जन्नत का आला मक़ाम हम को अता फ़रमा। ऐ अज़मत वाले और करम वाले! हमारी मुरादें पूरी फ़रमा।

नोटः मुज़दल्फ़ा से सत्तर (70) कंकरियां लेकर चलें, जो मिना में जमरात की रमी करने में काम आएंगी। और सत्तर (70) इस लिए लेना हे कि अगर तेरहवीं तारीख़ को भी रमी करना पड़े तो कुल 70 कंकरियां हो जाएंगी।

बत्ने मुहस्सर से गुज़रने की दुआ

जब मुज़दल्फ़ा से मिना के लिए रवाना हो जाए तो रास्ता में वादीए मुहस्सर पड़ेगी। यह मिना और मुज़दल्फ़ा के दरमियान कुछ नशेबी इलाक़ा है, यहां असहाबे फ़ील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था, यहां से इस्तिग़फ़ार पढ़ते हुए और यह दुआ पढ़ते हुए गुज़रना चाहिएः

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَ

عَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ. [کتاب المناسک:۲۱، مسنون ومقبول دُعائیں:۱۲۲]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हम को अपने ग़ज़ब के ज़रिए से हलाक न फ़रमा। और न अपने अज़ाब के ज़रिए हलाक फ़रमा। और इस से पहले हम को मुआफ़ फ़रमा।

मिना पहुंचने के बाद पढ़ने की दुआ

जब मुज़दल्फ़ा से मिना को पहुंच जाएं तो जमरात तक पहुंचने से पहले पहले बार बार तलबिया पढ़ते रहें। और तकबीर व तहलील और इस्तिग़फ़ार भी करते रहें :

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ مِنٰى قَدْ اَتَيْتُهَا وَاَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ. اَسْئَلُكَ اَنْ تَمُنَّ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى اَوْلِيَائِكَ. يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

[کتاب الحج:۱۳۷، بالمعنی قاضی خان:۱/۳۱۷]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! यह मक़ामे मिना है जिस में मैं हाज़िर हुआ हूं और मैं तेरा बंदा हूं और तेरा बंदाज़ादा हूं। मैं तुझ से इस बात का सवाल करता हूं कि तू मेरे ऊपर ऐसा एहसान फ़रमा जैसा कि तूने अपने औलिया और नेक बंदों पर फ़रमाया है। ऐ सब से बढ़ कर रहम वाले!

जमरात पर कंकरियां मारने की दुआ

यौमुन्नहर में जमरा उक़्बा की रमी करते वक़्त पहली कंकरी के साथ तलबिया ख़त्म कर देना चाहिए। और हर कंकरी के साथ यह दुआ पढ़ते

रहें :

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، رَغْمًا لِّلشَّيْطَانِ وَرِضًى لِّلرَّحْمٰنِ. [معلم الحجاج:١٧٠]

तर्जुमाः मैं अल्लाह के नाम से शैतान को कंकरी मरता हूं। अल्लाह बहुत बड़ा है। यह कंकरियां मैं शैतान का मुंह काला करने और अल्लाह को राज़ी करने के लिए मार रहा हूं।

नोटः इसी तरह तीनों दिन की रमी में हर कंकरी के साथ यह दुआ पढ़ते जाएं।

जमरात के रमी के बाद दुआ

हर जमरा के बाद दुआ मांगना बहुत मक़बूल है, जिन मक़ामात में दुआएं क़ुबूल होती हैं, उन में से एक यह भी है कि जमरात की रमी के बाद हाथ उठा कर दुआ मांगी जाए और यह दुआ भी पढ़ी जाएः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّ ذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّ سَعْيًا مَّشْكُوْرًا. [قاضی خان علی الهندیه: ١/٣١٨، ہکذا زیلعی: ٢/٣٠]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इसको मेरे लिए हज्जे मबरूर बना दे और मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा। और मेरी कोशिश को क़ुबूल फ़रमा।

क़ुरबानी की दुआ

पहले बड़े शैतान को कंकरी मारने के बाद यानी रमीए-जम्मार में ख़ुदा के हुक्म की तामील के बाद कुरबान गाह पहुंच जाए। और कुरबानी

करने के लिए सिर्फ़ "बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर" कहना काफ़ी है। लेकिन अगर किसी को याद हो तो जानवर को लिटाते वक़्त यह दुआ पढ़े:

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَ جْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَ رْضَ حَنِیْفًا وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ، اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُکِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، لَاشَرِیْکَ لَهٗ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ.

[قاضی خان علی الهندیہ: ۳۱۹/۱، مشکوٰۃ شریف: ۱۲۸/۱]

तर्जुमाः मैंने अपना रुख़ यक्सू हो कर उस की तरफ़ कर लिया, जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं, मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के ख़ातिर है, जो सारे जहानों का रब है। कोई उसका शरीक नहीं और मुझे उसी का हुक्म मिला है और मैं सब से पहला फ़रमां बरदार हूं।

हलक़ की दुआ

कुरबानी से फ़ारिग़ होने के बाद सर मुंडा कर एहराम खोल देना है और सर मुंडवाते वक़्त यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِیْ نَفْسِیْ وَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَ اجْعَلْ بِکُلِّ شَعْرَةٍ مِّنْهَا نُوْرًا یَّوْمَ الْقِیَامَةِ. [قاضی خان: ۳۱۹/۱]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे अंदर बरकत अता फ़रमा और मेरे गुनाह मुआफ़

फ़रमा। और सर के इन बालों में से हर बाल के एवज़ में मेरे लिए क़ियामत के दिन एक नूर अता फ़रमा।

मक्का मुअज़्ज़मा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल मुअल्ला की ज़ियारत की दुआ

मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ के बाद दुनिया के तमाम क़ब्रिस्तानों में सब से अफ़ज़ल तरीन क़ब्रिस्तान मक्का मुअज़्ज़मा में जन्नतुल मुअल्ला का क़ब्रिस्तान है। इस क़ब्रिस्तान में हज़ारों नुफ़ूसे कुदसिया मदफ़ून हैं। सय्यदतुन्निसा हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि० उसी क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। जब उस की ज़ियारत के लिए पहुंचे तो इन अल्फ़ाज़ से सलाम पेश करेः

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ.

[حصن حصین: ۲۵۴، ابوداؤد شریف: ۲/۲۱۲؛ مسند احمد بن حنبل: ۲/۳۷۵، حدیث: ۸۸۶۵]

तर्जुमाः ऐ मोमिन क़ौम की बस्ती के रहने वालो! तुम पर सलाम हो। और बेशक हम भी इन्शा अल्लाह तआला तुम से मिलने वाले हैं।

नोटः इसके बाद सूरह फ़ातिहा, सूरह बक़रा के शुरू की आयात और आयतुल कुर्सी वग़ैरा जो भी याद हो उसके ज़रिए से ईसाले सवाब कर दें।

हर मुतबर्रक मक़ाम पर पढ़ने की दुआ

दौराने सफ़र जब भी किसी मुतबर्रक मक़ाम पर पहुंचे तो इस दुआ का पढ़ना बहुत मफ़ीद है। और अल्लाह तआला उसकी मुरादें पूरी

फ़रमाएंगे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا وَ عَافِنَا وَ اعْفُ عَنَّا، اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَ اَحْيِنَا مُسْلِمِيْنَ وَ اَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हमारी इबादत क़ुबूल फ़रमा और हम को बुराई से आफ़ियत अता फ़रमा। और हमारी ख़ताएं मुआफ़ फ़रमा। हम को मुसलमान होने की हालत में दुनिया से उठा लीजिए और इस्लाम की हालत में दुनिया में ज़िन्दा रखिए और हम को अपने नेक बंदों के साथ मिला दीजिए।

सुबह व शाम की दुआ

रोज़ाना सुबह व शाम जो शख़्स हस्बे ज़ेल दुआ पढ़ेगा वह हर क़िस्म की नुक़सान से महफ़ूज़ रहेगा। अगर सुबह को तीन मर्तबा पढ़ेगा तो दिन भर के लिए महफ़ूज़ रहेगा। और अगर शाम को तीन मर्तबा पढ़ेगा तो पूरी रात के लिए महफ़ूज़ रहेगा। दुआ के अल्फ़ाज़ यह हैं :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَ لَا فِى السَّمَاءِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ. [ترمذی: ١٧٦/٢]

तर्जुमाः उस अल्लाह के नाम से (मैं सुबह करता हूं या शाम करता हूं) जिस के नाम के साथ रुए ज़मीन में काई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और न आसमान में कोई चीज़ नुक़सान पहुंचा सकती है। वह सुनने वाला

जानने वाला है।

दुश्मन या ख़तरात से हिफ़ाज़त की दुआ

जब किसी वक़्त दुश्मन से नागहानी हमला या नुक़सान का ख़तरा हो तो यह दुआ पढ़िए तो अल्लाह तआला हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे। इन्शा अल्लाहु तआला,

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ. [حصن حصين مترجم:١٩٢]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! बेशक हम आप को उन के मुक़ाबिले में सपुर्द करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह लेते हैं।

दिन और रात में पढ़ने की दुआ "सय्यदुल इस्तिग़फ़ार"

जो शख़्स "सय्यदुल इस्तिग़फ़ार" को एक मर्तबा दिन में या रात में कामिल यक़ीन के साथ पढ़ेगा तो अगर वह उस दिन में या रात में वफ़ात पा जाएगा तो ज़रूर जन्नती होगा। दुआ की इस फ़ज़ीलत की वजह से हुज़ूर पाक ﷺ ने ख़ुद इस का नाम "सय्यदुल इस्तिग़फ़ार" रखा है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 2 पेज 133)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِىْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ اَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَ وَعْدِكَ مَااسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَ

اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. [بخاری شریف:ج۲/۹۳۳]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है। तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। तूने मुझ को पैदा किया। मैं तेरा बंदा हूं और मैं तेरे अहद और तेरे वादा पर अपनी कोशिश व इस्तिताअत के मुताबिक़ क़ायम हूं। और मैं तुझ से पनाह लेता हूं। उन तमाम उमूर के शर से जो मैंने किए हैं, मैं तेरी उन नेमतों का एतेराफ़ करता हूं जो तूने मुझ पर नाज़िल फ़रमाई हैं। और मैं अपने गुनाहों का इक़रार करता हूं, तू मेरे गुनाह बख़्श दे, इस लिए कि गुनाहों का बख़्शने वाला तेरे सिवा कोई नहीं।

मक्का मुअज़्ज़मा से वापसी की दुआ

आफ़ाक़ी हाजी पर मक्का मुअज़्ज़मा से वापसी के वक़्त ऐ अल-वदाई तवाफ़ करना वाजिब है। और तवाफ़ की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हजरे असवद को बोसा दे। उसके बाद कबातुल्लाह की जुदाई पर अफ़सोस व हसरत के साथ जिस तरह हो सके ख़ूब गिड़गिड़ा कर रोए। और अगर रोना न आए तो रोने की सूरत बनाए और हसरत की निगाह से बैतुल्लाह की तरफ़ देखता हुआ और रोता हुआ मस्जिदे हराम से बाहर निकले और दरवाज़ा पर खड़े हो कर यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ مِن بَيْتِكَ وَ ارْزُقْنِى الْعَوْدَ اِلَيْهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَ نَصَرَ عَبْدَهٗ وَ هَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ. [مسلم شریف: ۱/۴۳۵، المسالک فی مناسک: ۱/۲۳۰]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे इस सफ़र को अपने मोहतरम घर का आख़िरी सफ़र न बना। और मेरे लिए दोबारा लौट कर आना मुक़द्दर फ़रमा। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह तनहा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, उसी के लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, वही हर शय पर क़ादिर है। हम सफ़र से लौटने वाले हैं, तोबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं। उसकी रहमत का क़स्द करने वाले हैं, अल्लाह ने अपने वादे को सच्चा कर के दिखाया और अपने बंदे की नुसरत फ़रमाई और उस ने तने तन्हा मुहम्मद ﷺ के उन दुश्मनों को शिकस्त दी जो हुजूम के साथ लश्कर ले कर आए थे।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا
وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا.

ज़ियारते मदीना मुनव्वरा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَ دِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى
الدِّیْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ﴿۲۸﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ
مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا
یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ۫ الاٰیة [سورهٔ فتح]

तर्जुमाः और अल्लाह ही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि वह उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और (उसकी) गवाही देने के लिए अल्लाह काफ़ी है। मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त हैं और आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं, तुम उन्हें देखोगे कि कभी रुकूअ में हैं, कभी सजदे में हैं, (ग़र्ज़) अल्लाह के फ़ज़ल और ख़ुशनूदी की तलाश में लगे हुए हैं। (रियाज़ुल क़ुरआन)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

रौज़ए अतहर की ज़ियारत की फ़ज़ीलत

हज से फ़राग़त के बाद सब से अफ़ज़ल और बड़ी सआदत सय्यदुल मुरसलीन ख़ातिमुन्नबिय्यीन रहमतुल लिलआलमीन रसूले अकरम ﷺ के रौज़ए अतहर की ज़ियारत है। कोई भी साहिबे ईमान ऐसा नहीं कर सकता कि दियारे अक़दस में पहुंचने के बाद रौज़ए अक़दस की ज़ियारत से महरूम वापस आ जाए। हदीस में आया है कि इरशाद फ़रमायाः जो शख़्स मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा उसके वास्ते मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जाएगी।

और एक हदीस में आया है कि इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स हज को जाए और फिर मेरी मौत के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की तो उसकी फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की है।

(मिश्कात शरीफ़: 1/241)

मदीना मनुव्वरा का सफ़र

जब मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हो जाए तो रास्ता में कसरत के साथ दुरूद व सलाम पढ़ता जाए। और जहां तक मुमकिन हो उसी में मुस्तग़रक़ और मुनहमिक हो जाए और रास्ता में मस्जिदे हराम से सोलह किलो मीटर के फ़ासला पर मक़ामे-सरिफ़ पड़ेगा, उसी में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि० की क़ब्र है, मुमकिन हो तो वहां खड़ा हो कर ईसाले सवाब करे। और जूं जूं मदीना मुनव्वरा से क़रीब होता जाए ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ और दुरूद व सलाम में इज़ाफ़ा करता जाए। (मुस्तफ़ादे ग़ुनिया क़दीमः 1/202, जदीदः 375)

मदीना मुनव्वरा के क़रीब पहुंचने की दुआ

जब मदीना मुनव्वरा के सफर का इरादा करे, तो अपने ख़्यालात और

तवज्जुहात को सरवरे कायनात ﷺ की तरफ़ यक्सू कर ले, और जितना मदीना मुनव्वरा से क़रीब होता जाए, दुरूद शरीफ़ की कसरत करता जाए, और जब मदीना मुनव्वरा के क़रीब पहुंच जाए तो यह दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ رَسُوْلِكَ فَاجْعَلْ دُخُوْلِىْ وِقَايَةً مِّنَ النَّارِ وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! यह तेरे रसूल ﷺ का हरमे-पाक है, इस हरमे-मुक़द्दस को मेरे लिए जहन्नम से ख़लासी का ज़रीया बना दे और इसको मेरे लिए जहन्नम के अज़ाब और बुरे हिसाब व किताब से हिफ़ाज़त का ज़रिया बना दे।

दुख़ूले मदीना मुनव्वरा के आदाब व दुआ

जब मदीना मुनव्वरा पहुंच जाए तो शहर में दाख़िल होने से क़ब्ल अगर मुमकिन हो तो ग़ुस्ल कर ले। और अगर ग़ुस्ल मुमकिन न हो तो वज़ू कर ले और नये कपड़े या धुले हुए कपड़े पहन ले। और मदीना मुनव्वरा में ऐसी गाड़ी का इन्तिज़ाम हो जाए तो बेहतर है जिस में आदाब की रिआयत करने में गाड़ी वाला परेशान न करे। और जब सरवरे कायनात फ़ख़्रे दो आलम ﷺ के शहर में दाख़िल हो जाए तो उस वक़्त यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ، مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، رَبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيْرًا، اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِىْ

اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَارْزُقْنِيْ مِنْ زِيَارَةِ رَسُوْلِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَزَقْتَ اَوْلِيَاءَكَ وَاَهْلَ طَاعَتِكَ وَاَنْقِذْنِيْ مِنَ النَّارِ وَاغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ يَاخَيْرَ مَسْئُوْلٍ. [غنية:٢٠٣، غنية جديد:٣٧٦]

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لَّنَا فِيْهَا قَرَارًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا. [غنية جديد:٣٧٦]

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से दाख़िल होता हूं, जो अल्लाह तआला चाहेंगे वही होगा, उसकी मदद के बग़ैर मासियत से हिफ़ाज़त नहीं और इताअत पर कुदरत नहीं। ऐ मेरे रब! मुझ को सच्चाई के साथ दाख़िल फ़रमा और सच्चाई के साथ निकालिए और अपनी तरफ़ से मेरे लिए एक ताक़तवर मददगार बना दीजिए। ऐ रब! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे और मुझे अपने रसूल ﷺ की ज़ियारत से वह फ़ायदा अता फ़रमा जो तू अपने औलिया और फ़रमां बरदार बंदों को अता फ़रमाता है। और मुझे जहन्नम की आग से बचा, मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा, और तू मांगे जाने वालों में से सब से बेहतर है। ऐ अल्लाह! हमारे लिए इस शहर में बेहतरीन ठिकाना और बेहतरीन रिज़्क़ अता फ़रमा।

मदीना मुनव्वरा की फ़ज़ीलत

पूरी रूए ज़मीन में सब से अफ़ज़ल तरीन ज़मीन का वह हिस्सा है जो हुज़ूर पाक ﷺ के जस्दे अतहर से मिला हुआ है। और यह ख़ुश क़िस्मती मदीना तय्यबा को हासिल है। इसके बाद काबतुल्लाह और हरमे मक्की है। उसके बाद हुदूदे मदीना मुनव्वरा है। (शामी कराचीः 2/626)

हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि हुज़ूर अकरम ﷺ ने अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाईः ऐ अल्लाह! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे बंदे और तेरे ख़लील थे। उन्होंने अहले मक्का के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई थी और मैं तेरा बंदा और तेरा रसूल हूं। मैं अहले मदीना के लिए बरकत की दुआ करता हूं, तू अहले मदीना को अहले मक्का से दुगनी बरकत अता फ़रमा। चुनांचे आज मदीना की बरकत लोगों की नज़रों में है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ः 2/229)

दिल मेरा तस्ख़ीर किया एक अ़रबी ने
मक्की, मदनी, हाशमी व मुत्तलबी ने

हुर्मते मदीना मुनव्वरा

हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया है कि ऐ अल्लाह! जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हुदूदे मक्का मुकर्रमा को मोहतरम क़रार दिया है इसी तरह मैं हुदूदे मदीना मुनव्वरा को मोहतरम क़रार देता हूं।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ः 2/230)

और हज़रत सय्यदुल कौनैन ﷺ ने अहले मदीना के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई, जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अहले मक्का के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई है।

हुदूदे मदीना मुनव्वरा

हुदूदे मदीना मुनव्वरा बड़े बड़े दो पहाड़ों के दरमियान वसीअ व अरीज़ हमवार इलाक़ा है। जिस के एक तरफ़ जबले उहुद और दूसरी तरफ़ जबले ईर है और बाज़ रिवायात में जबले उहुद की जगह जबले सौर आया है। और मदीना मुनव्वरा में जबले सौर के नाम से एक छोटी सी पहाड़ी है। जो जबले उहुद के दामन पर है। और मक्का मुकर्रमा में

जबले सौर है वह काफ़ी बड़ा है।

बहर हाल जब मदीना की हुदूद में दाख़िल हो जाए तो हमेशा इस फ़िक्र में रहना चाहिए कि अर्ज़े मुक़द्दस के एहतेराम के ख़िलाफ़ कोई अम्र सादिर न हो।

रियाज़ुल जन्नह में इबादत की फ़ज़ीलत

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि हुजरे-आयशा रज़ि० और मिम्बरे-रसूलुल्लाह ﷺ का दरमियानी हिस्सा जन्नत के बाग़ात में से एक बाग़ है, जो शख़्स उस मक़ाम पर जा कर नमाज़ पढ़ेगा और ज़िक्र व इबादत में मशग़ूल होगा, उस के लिए जन्नत में जाना बिल्कुल आसान हो जाएगा। (मुस्लिम शरीफ़ः 1/446)

और वहां पर जगह मश्किल से मिलती है, भीड़ काफ़ी होती है, इस लिए नमाज़ से एक आध घंटा क़ब्ल पहुंचने कोशिश की जाए। और अकसर उलमा के नज़दीक ज़मीन का यह टुकड़ा क़ियामत के दिन जन्नत में चला जाएगा। (तारीख़े मदीना मुनव्वराः 122)

मस्जिदे नबवी ﷺ में दाख़िल होने के आदाब

दिल मेरा तसख़ीर किया एक अरबी ने
मक्की, मदनी, हाशमी व मुत्तलबी ने

जब मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हो जाए तो सब से पहले मस्जिदे नबवी ﷺ में दाख़िल हो और मस्जिदे नबवी में दाख़िला से क़ब्ल किसी दूसरे काम में न लग जाए। हां अगर कोई सख़्त ज़रूरत पेश आ जाए तो उस से फ़ारिग़ हो कर फ़ौरन दाख़िल हो। अलबत्ता औरतों का रात में दाख़िल होना बेहतर है।

और मस्जिदे नबवी में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ पढ़ेः

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، رَبِّ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

[غنیۃ الناسک جدید:۹۷، قدیم:۵۱]

तर्जुमाः अल्लाह के नाम से दाख़िल होता हूं और सलात व सलाम अल्लाह के रसूल पर नाज़िल हो, ऐ मेरे रब! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।

इस दुआ को पढ़ते हुए निहायत आजिज़ी व इन्किसारी और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ अगर मुमकिन हो तो बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम से दाख़िल हो तो ज़्यादा बेहतर है। और दाख़िल हो कर अव्वलन रियाज़ुल जन्नह में दो रकात तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ कर दुआ करे। और अगर फ़र्ज़ नमाज़ की जमात खड़ी हो तो उस में शिर्कत कर ले। और यह फ़र्ज़ तहिय्यतुल मस्जिद के क़ायम मक़ाम हो जाएगा।

(फ़तहुल क़दीर बैरूनीः 3/168, कोएटाः 3/95)

रौज़ए-पुरनूर अला साहिबिहा अलफ़ अलफ़ सलात पर सलाम पढ़ने के आदाब व तरीक़ा

रियाज़ुल जन्नता में दो रकात तहिय्यतुल मस्जिद और दुआ से फ़राग़त के बाद निहायत अदब के साथ क़िब्ला की तरफ़ से मवाजा शरीफ़ (क़ब्र शरीफ़) की जाली से कुछ फ़ासला पर इस तरह खड़ा हो जाए कि अपनी पुश्त क़िबला की तरफ़ हो, और चेहरा क़ब्रे मुबारक की दीवार की तरफ़ हो।

उसके बाद हुज़ूरे क़लबी से ग़ायत दर्जा यक्सोई के साथ इन अल्फ़ाज़

में दुरूद व सलाम का नज़राना पेश करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ!

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ!

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيْرَةَ اللهِ مِنْ جَمِيْعِ خَلْقِهٖ!

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ!

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدَ وُلْدِ اٰدَمَ!

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ!

يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّااللهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ، وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَ اَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَ كَشَفْتَ الْغُمَّةَ فَجَزَاكَ اللهُ عَنَّا خَيْرًا، جَازَاكَ اللهُ عَنَّا اَفْضَلَ مَا جَازٰی نَبِيًّا عَنْ اُمَّتِهٖ، اَللّٰهُمَّ اَعْطِ سَيِّدَنَا عَبْدَكَ وَ رَسُوْلَكَ مُحَمَّدَ الْوَ سِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ وَ الدَّرَجَةَ الْعَالِيَةَ

الرَّفِيْعَةَ وَ ابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُودَ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ، وَ
اَنْزِلْهُ الْمَنْزِلَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ، اِنَّكَ سُبْحَانَكَ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيْمُ. [فتح القدير بيروني وديوبند: ۱۶۹/۳، مطبوعه كوئٹه: ۹۵]

ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ आप पर सलाम हो।

ऐ अल्लाह की मख़लूक़ में सब से बरगुज़ीदा बंदे, आप पर सलाम हो।

ऐ अल्लाह के बंदों में सब से बेहतर! आप पर सलाम हो।

ऐ अल्लाह के हबीब! आप पर सलाम हो।

ऐ औलादे-आदम के सरदार! आप पर सलाम हो।

आप ﷺ पर सलाम हो।

ऐ नबी ﷺ ! अल्लाह की रहमत और बरकात आप पर नाज़िल हो।

या रसूलल्लाह ﷺ ! मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई हमसर नहीं, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप ने रिसालत को पहुंचा दिया है और अमानत को अदा कर दिया है। और आप ने उम्मत की ख़ैरख़ाही फ़रमाई है और बेचैनी को दूर कर दिया है। अल्लाह तआला आप को बेहतरीन जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। अल्लाह तआला आप को हमारी तरफ़ से उन जज़ाओं में से बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए जो किसी नबी को उसकी उम्मत की तरफ़ से दी है।

ऐ अल्लाह! तू हमारे सरदार, अपने बंदे और अपने रसूल मुहम्मद ﷺ को वसीला और फज़ीलत और बुलंद व बाला दर्जा अ़ता फरमा और आप ﷺ को उस मक़ामे महमूद पर पहुंचा दे जिस का तूने वादा फ़रमाया है। और आप ﷺ को अपने नज़दीक मुक़र्रब दर्जा अता फ़रमा। बेशक तू पाक ज़ात है। और अज़ीम तरीन एहसान करने वाला है।

इस तरह दुरूद व सलाम से फ़ारिग़ होने के बाद हुज़ूर पाक ﷺ के सामने खड़े हो कर आप के वसीला से अल्लाह तआला से अपनी मुरादें मांगे। और अल्लाह तआला से हुस्ने ख़ा तमा, रज़ाए इलाही और मग़फ़िरत का सवाल करे। फिर उसके बाद हुज़ूर पाक ﷺ से शफ़ाअत की दरख़्वास्त करे और हुज़ूर ﷺ से इन अल्फ़ाज़ के साथ दरख़्वास्त की जाएः

يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ وَاَتَوَسَّلُ بِكَ اِلَى اللهِ فِيْ اَنْ اَمُوْتَ مُسْلِمًا عَلٰى مِلَّتِكَ وَسُنَّتِكَ.

[فتح القدير: ۱۸۱/۳، فتح القدير زكريا ديوبند: ۱۶۹/۳، كوئٹه: ۹۵/۳]

तर्जुमाः या रसूलल्लाह ﷺ! मैं आप से शफ़ाअत का सवाल करता हूं और अल्लाह की तरफ़ आप का वसीला चाहता हूं इस बात के लिए कि मैं इस्लाम और आप ﷺ के दीन और आप ﷺ की सुन्नत पर मरूं।

दूसरे की तरफ़ से सलाम

और अगर किसी ने हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में सलाम के लिए कहा है तो उसका सलाम भी इस तरह अर्ज़ करें :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ يَّسْتَشْفِعُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ. [غنية جديد: ۳۷۹، قديم: ۲۰۴]

तर्जुमाः या रसूलल्लाह ﷺ! आप पर फ़ुलां बिन फुलां की तरफ़ से सलाम है। और आप से अपने रब के पास शफ़ाअत का तालिब है।

इनके अलावा और भी बहुत सी तवील दुआएं बाज़ किताबों में मौजूद

हैं। मगर बहुत ज़्यादा लम्बी दुआओं का इहाता करना और याद करना आम लोगों के लिए परेशानी का बाइस बन जाता है, इस लिए इख़्तिसार से काम लिया गया है, नीज़ अगर किसी दुआ और दुरूद व सलाम के मज़कूरा अल्फ़ाज़ भी याद न हो सकें तो अपनी मादरी ज़ुबान में जिस तरह भी हो सके अदब के साथ रौज़ए अतहर पर सलाम पेश कर दे। और जब तक मदीना मुनव्वरा में क़याम रहे कसरत के साथ मज़कूरा तरीक़ा से रौज़ए अतहर पर हाज़िर हो कर दुरूद व सलाम पेश करता रहे।

सय्यदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० पर सलाम

सरकारे दो आलम ﷺ की ख़िदमत में सलाम पेश करने के बाद एक हाथ बक़दरे दाहिनी तरफ़ को हट कर सय्यदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ि० को इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम पेश करें :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ وَ ثَانِيَهٗ فِي الْغَارِ وَ رَفِيْقَهٗ فِي الْاَسْفَارِ وَ اَمِيْنَهٗ عَلَى الْاَسْرَارِ اَبَابَكْرِ الصِّدِّيْقَ جَزَاكَ اللهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرًا.

[فتح القدير: ۸۱/۳، فتح القدير زكريا ديوبند: ۱۸۰/۳، كوئٹه: ۹۵/۳، غنية الناسك: ۳۰۲]

तर्जुमाः ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ के ख़लीफ़ा और ग़ारे सौर में उनके साथी और सफ़रों में उनके साथी और उन के राज़ों के अमीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० आप पर सलाम हो। अल्लाह तआला आप को उम्मते मुहम्मदिया

ﷺ की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।

सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० पर सलाम

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि० को सलाम पेश करने के बाद एक हाथ मज़ीद दाहिनी तरफ़ को हट कर सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० पर इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम पेश करेः

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَالْمُؤْمِنِيْنَ عُمَرَ الْفَارُوْق الَّذِىْ اَعَزَّاللّٰهُ بِهِ الْاِسْلَامَ اِمَامَ الْمُسْلِمِيْنَ مَرْضِيًّا حَيًّا وَّ مَيِّتًا جَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرًا.

[فتح القدير:٣/٨١، فتح القدير زكريا ديوبند:٣/١٧٠ كوئٹه:٣/٩٥، غنية الناسك:٢٠٥، غنية جديد:٣٨٠]

तर्जुमाः ऐ अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ि०! कि जिन के ज़रिए से अल्लाह तआला ने इस्लाम को इज़्ज़त व शौकत अता फ़रमाई, आप पर सलाम हो। अल्लाह तआला ने आप को मुसलमानों का इमाम बनाया है। अल्लाह तआला ने आप को ज़िन्दगी में और बाद वफ़ात पसंद फ़रमाया है। अल्लाह तआला आप को उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की तरफ़ से बेहतर बदला अता फ़रमाए।

और अगर किसी वक़्त रौज़ए अतहर तक भीड़ की वजह से न पहुंच सके तो मस्जिदे नबवी के किसी भी हिस्सा में खड़ा हो कर सलाम अर्ज़ करे। मगर उसकी वह फ़ज़ीलत नहीं है जो मवाजा शरीफ़ के सामने की होती है। नीज़ मस्जिदे नबवी के बाहर से भी अगर मवाजा शरीफ़ के सामने से गुज़रना हो तो थोड़ी देर ठहर कर सलाम अर्ज़ करता हुआ जाए।

दरबारे रिसालत के सामने हो कर दुआ

दुरूद व सलाम से फ़राग़त के बाद दोबारा सरवरे कायनात ﷺ के सामने हो कर हक़ तबारक व तआला की हम्द व सना और आप ﷺ पर दुरूद पढ़ कर आप ﷺ के वसीला और तवस्सुल से हाथ उठा कर अल्लाह तआला से दुआओं में मुरादें मांगें। और हुज़ूर पुर नूर ﷺ से शफ़ाअत की दरख़्वास्त करे, और अपने लिए और अपने वालिदैन, बच्चों, अज़ीज़ व अक़ारिब और दोस्त व अहबाब और तमाम मोमिनीन और मोमिनात के लिए हुज़ूर ﷺ के तवस्सुल से अल्लाह तआला से दुआएं मांगें। और राक़िमुल हुरूफ़ सियाह कार और उसके मुआविनीन के लिए भी ऐसे मक़बूल तरीन मक़ाम पर दिल से दुआ फ़रमाएं। इस गुनहगार पर बड़ा एहसान होगा। (हिदाया जदीदः 380)

दुरूद व सलाम व दुआ के बाद दो रकात नमाज़

दुरूद व सलाम और दुआओं के बाद फिर उस्तुवाना अबू लुबाबा रज़ि० के पास आ कर दो रकात नमाज़ पढ़ कर अल्लाह तआला से मुरादें मांगें। इसके बाद फिर रियाज़ुल जन्नह में जितनी हो सके नफ़्लें पढ़ कर दुआऐं मांगे, और रियाज़ुल जन्नह में दुआएं बहुत क़ुबूल होती हैं। और जब तक मदीना मुनव्वरा में क़याम रहे, पांचों नमाज़ें मस्जिदे नबवी ही में हाज़िर हो कर अदा करने की कोशिश करे। और हमा वक़्त तिलावत, ज़िक्र, दुआ और नवाफ़िल में मशग़ूल रहे। और कोई वक़्त इधर उधर ज़ाए न होने दे, और इबादत व यक्सुई में रातों को जागता रहे। (फ़तहुल क़दीर ज़करिया देवबंदः 3/170)

राक़िमुल हुरूफ़ भी आप से दुआ की दरख़्वास्त करता है।

रियाज़ुल जन्नह के सात सुतून

मस्जिदे नबवी का वह क़दीम हिस्सा पैग़म्बर अलैहिस्सलाम के मिम्बर और हुजरए आयशा रज़ि० के दरमियान वाके़ है, वही रियाज़ुल जन्नह का हिस्सा है। और इस हिस्सा में सात सुतून हैं और हर एक सुतून पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है। और मस्जिदे नबवी में यह सात सुतून बिल्कुल नुमायां हैं। और यह सातों सुतून हुज़ूर ﷺ के ज़माना के हैं और हर एक पर नाम भी लिखा हुआ है। तफ़सील हसबे ज़ेल हैः

1. उस्तुवानए हन्नानाः उस्तुवानए हन्नाना वह सुतून है जो खजूर के तना का था। मस्जिदे नबवी में मिम्बर बनने से क़ब्ल हुज़ूर ﷺ उसी सुतून पर टेक लगा कर ख़ुत्बा और वाज़ व नसीहत फ़रमाया करते थे। और जब मिम्बर बन गया और सुतून को छोड़ कर मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हो कर ख़ुत्बा देने लगे, तो यह सुतून बाक़ायदा आवाज़ के साथ ज़ोर ज़ोर से रोने लगा तो हुज़ूर ﷺ ने इस को अपने सीना मुबारक से लगा लिया तो रोना बंद हो गया। (तिर्मिज़ी श्रीफ़ः बरिवायत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० 1/112)

खजूर का तना तो वहां मदफ़ून है, लेकिन अब वहां पुख़्ता सुतून है।

2. उस्तुवानए अबू लुबाबा रज़ि० : हज़रत अबू लुबाबा रज़ि० जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। ग़ज़वए तबूक के मोक़ा पर उन से कोई ख़ता सादिर हो गई थी तो उन्होंने ख़ुद अपने आप को मस्जिदे नबवी के उस सुतून से बांध दिया था जो उस्तुवानए अबू लुबाबा रज़ि० के नाम से मशहूर हो गया है और उन्होंने यह अहद किया था कि जब तक हुज़ूर ﷺ ख़ुद नहीं खोलेंगे, बंधा रहूंगा और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया था कि जब तक ख़ुदा की तरफ़ से मुझे हुक्म न होगा, मैं भी नहीं खोलूंगा। चुनांचे पचास दिन तक इस हालत में बंधे रहे, उसके बाद अल्लाह तआला ने कुरआन करीम के अंदर उनकी तौबा की कुबूलियत का एलान फ़रमाया। तो हुज़ूर ﷺ ने ब-नफ़्से नफ़ीस अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया था।

उनकी तौबा का ज़िक्र सूरह तौबा में है। इस जगह पर तौबा की कुबूलियत कुरआन से साबित है इस लिए यहां पर दो रकात नमाज़ पढ़ कर तौबा व इस्तिग़फ़ार और दुआ करनी चाहिए।

(अलमसालिक फ़ी मनासिकः 2/1079)

3. उस्तुवानए वफ़ूद : वफ़ूद वह सुतून है जिस के पास बैठ कर बाहर से आने वाले क़बाइल ने आप ﷺ के दस्ते मुबारक पर इस्लाम की बैअत की है। यह सुतून हुजरए-आयशा रज़ि० और हुजरए-फ़ातिमा रज़ि० की दीवार से मुत्तसिल है। (गुनिया जदीदः 382)

4. उस्तुवानए हरस : उस्तुवानए हरस वह सुतून है जो हुजरा आयशा रज़ि० की दीवार से मुत्तसिल है। हिजरत के बाद शुरु शुरु में हुज़ूर ﷺ के दरवाज़ा पर पहरा दिया जाता था, तो पहरा देने वाला इसी सुतून के पास बैठ जाता था और बाद में अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में एलान फ़रमाया कि आप ﷺ की हिफ़ाज़त अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाएंगे। कुरआनी एलान के बाद पहरा का सिलसिला ख़त्म हो गया था। (गुनिया जदीदः 381)

5. उस्तुवानए जिबईल अलैहिस्सलाम : हज़रत जिबईल अलैहिस्सलाम जब वह्ई लेकर हज़रत दिहया कलबी रज़ि० की शक्ल में तशरीफ़ लाते तो अकसर व बेश्तर उसी सुतून के पास बैठे हुए नज़र आते थे। और उस जगह को मक़ामे जिबईल अलैहिस्सलाम भी कहते हैं। इस जगह भी दुआएं बहुत ज़्यादा कुबूल होती हैं।

6. उस्तुवानए सरीर : उस्तुवानए सरीर वह सुतून है जहां पर हुज़ूर ﷺ एतेकाफ़ फ़रमाया करते थे। और आराम के लिए उसी जगह आप ﷺ का बिस्तर बिछा दिया जाता था। यह चूंकि हुज़ूर ﷺ के एतेकाफ़ की जगह है, इस लिए यहां भी दुआएं बहुत ज़्यादा क़ुबूल होती हैं।

(गुनिया जदीदः 382)

7. उस्तुवानए आयशा रज़ि० : एक दफ़ा हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया था कि मेरी मस्जिद में एक ऐसी जगह है कि इस जगह नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत अगर लोगों को मालूम हो जाएगी तो नम्बर लगाने के लिए कुर्ऱआ अंदाज़ी की नौबत आ जाएगी। उसके बाद से सहाबा किराम रज़ि० उस जगह की जुस्तुजू करते रहे हैं। हुज़ूर ﷺ की वफ़ात के बाद हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने अपने भांजा हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० को जगह बतला दी कि इस जगह जा कर तौबा व इस्तिग़फ़ार और दुआ और नमाज़ों में मश्गूल हो जाएं। इस लिए उस सुतून को उस्तुवानए आयशा रज़ि० कहा जाता है। इस जगह भी दुआएं बहुत ज़्यादा कुबूल होती हैं। (ग़ुनिया जदीदः 381)

लिहाज़ा मज़कूरा मक़ामात में से किसी भी जगह दुआ तर्क न करें।

मस्जिदे नबवी के दरवाज़े

मस्जिदे नबवी ﷺ में दाख़िल होने के लिए जो अबवाब हैं, उनकी इजमाली तफ़सील यूं है। शाह फ़हद की तामीर से क़ब्ल मस्जिद के कुल दस दरवाज़े थे।

(1) बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम (2) बाबुन्निसा। (3) बाबे अब्दुल अज़ीज़। (4) बाबे उमर रज़ि०। (5) बाबे मजीदी। (6) बाबे उसमान रज़ि०। (7) बाबुस्सऊद। (8) बाबे अबू बक्र रज़ि०। (9) बाबुर्रहमा। (10) बाबुस्सलाम। और जानिबे जुनूब क़िबला है। उस तरफ़ उन में से कोई दरवाज़ा नहीं है।

जानिबे मशरिक़ के तीन दरवाज़ेः जानिबे मशरिक़ में तीन दरवाज़े हैं। बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम, बाबुन्निसा, बाबे अब्दुल अज़ीज़। इन में से बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम और बाबुन्निसा क़दीम हैं और बाबे अब्दुल अज़ीज़ सउदी हुकूमत ने बनया है, इन में रौज़ए अतहर से क़रीब

तरीन दरवाज़ा बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम है जब इस दरवाज़ा से दाख़िल होंगे तो बाएं हाथ को हज़रत फ़ातमा रज़ि० का हुजरा होगा और दाएं हाथ को असहाबे सुफ़्फ़ा की क़याम गाह होगी। और थोड़ा आगे बढ़ेंगे तो हुजरा फ़ातमा रज़ि० ख़त्म हो कर बाएं हाथ को रियाज़ुल जन्नह का हिस्सा शुरु हो जाएगा। हज़रत सय्यदना जिबरईल अमीन अलैहिस्सलाम उसी दरवाज़े से तशरीफ़ लाया करते थे। उसके बाद दूसरे नम्बर में बाबुन्निसा और तीसरे नम्बर में बाबे अब्दुल अज़ीज़ है।

जानिबे शुमाल के तीन दरवाज़े: जानिबे शुमाल से जब मस्जिदे नबवी में दाख़िल होंगे तो बड़े बड़े तीन दरवाज़े पड़ेंगे। बाबे उमर रज़ि०, बाबे मजीदी, बाबे उसमान रज़ि०। उन में से दरमियान में बाबे मजीदी पड़ेगा। और बाएं हाथ को बाबे उमर रज़ि० और दाएं हाथ को बाबे उसमान रज़ि० पड़ेगा।

जानिबे मग़रिब के चार दरवाज़े: मग़रिब की जानिब में चार दरवाज़े हैं। उन में शुमाल मग़रिबी जानिब में सब से पहले बाबुस्सऊद, फिर दूसरे नम्बर में बाबे अबू बक्र रज़ि०, तीसरे नम्बर पर बाबुर्रहमा, चौथे नम्बर पर बाबुस्सलाम है। लिहाज़ा बाबुस्सलाम बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम के मद्दे मुक़ाबिल में पड़ेगा। उन दस दरवाज़ों में बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम से दाख़िल होना ज़्यादा अफ़ज़ल है।

नोट: मज़कूरा दरवाज़ों में से कोई भी दरवाज़ा जानिबे जुनूब यानी क़िबला की तरफ़ नहीं है। अलबत्ता तुर्की हुकूमत की तामीर पर जो सऊदी हुकूमत ने दाएं और बाएं यानी जानिबे मग़रिब और जानिबे मशरिक़ में इज़ाफ़ा किया है। इस इज़ाफ़ा में दो बड़े बड़े दरवाज़े सऊदी हुकूमत ने बनाए हैं। एक क़दीम मस्जिद की दाहनी जानिब बाबुस्सलाम से मग़रिब की तरफ़ कुछ फ़ासला पर है। और दूसरा क़दीम मस्जिद के बाएं जानिब बाबे जिबरईल अलैहिस्सलाम से मशरिक़ की तरफ़ कुछ

फ़ासला पर है। यह दोनों दरवाज़े काफ़ी बड़े बड़े हैं। और यह उस इज़ाफ़ा में हैं जो मस्जिदे नबवी के क़दीम हिस्सा से पीछे को हट कर बनाया गया है।

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

जन्नतुल बक़ीअ

जन्नतुल बक़ीअ मदीना मुनव्वरा का वह वसीअ व अरीज़ क़ब्रिस्तान है जिस में हज़ारहा सहाबा रज़ि०, ताबिईन, औलियाअल्लाह और नुफ़ूसे क़ुदसिया रह० मदफ़ून हैं। यह क़ब्रिस्तान मस्जिदे नबवी की जानिब क़िबला में जुनूब मशरक़ी सम्त में वाक़े है। और इस वक़्त मस्जिदे नबवी और जन्नतुल बक़ीअ के दरमियान कोई आबादी या इमारत हाइल नहीं है। और इस क़ब्रिस्तान में हुज़ूर अकरम ﷺ के अहले बैत में से 9 उम्महातुल मोमिनीन मदफ़ून हैं :

(1) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि०। (2) उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ि०। (3) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ि०। (4) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि०। (5) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि०। (6) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सलमा रज़ि०। (7) उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ि०। (8) उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि०। (9) उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ि०।

(अलमनासिक फ़िल मनासिक अलकिरमानीः 2/1086)

और अज़वाजे मुत्तह्हरात में से उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि० मक्कतुल मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल मुअल्ला में

आराम फ़रमा हैं। और उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि० का मज़ार मक़ामे सरफ़ में है, जो मस्जिदे हराम से सोलह (16) किलो मिटर के फ़ासला पर तरीक़े मदीना में वाक़े है। और यह मुसाफ़त मस्जिदे हराम से जन्नतुल मुअल्लाह के रास्ता से मस्जिदे आयशा रज़ि० में पहुंचने की सूरत में है।

और इस क़ब्रिस्तान में हुज़ूर ﷺ की औलाद में से हज़रत फ़ातमतुज़्ज़ुहरा रज़ि० , हज़रत रुक़ैया रज़ि०, हज़रत ज़ैनब रज़ि०, हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० और हज़रत इब्राहीम रज़ि० मदफ़ून हैं। और नवासए रसूल हज़रत हसन बिन अली रज़ि० भी इसी क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। नीज़ हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० और हुज़ूर ﷺ के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० के मज़ार भी इसी क़ब्रिस्तान में हैं और हुज़ूर ﷺ की औलाद में से हज़रत क़ासिम रज़ि० और अब्दुल्लाह रज़ि० मक्कतुल मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल मुअल्ला में आराम फ़रमा हैं। नीज़ इसी क़ब्रिस्तान बक़ीअ में हुज़ूर ﷺ की फूफी हज़रत सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० और आतिका बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० और आप ﷺ के चचा ज़ाद भाई हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० नीज़ हुज़ूर ﷺ की रज़ाई मां दाई हज़रत हलीमा रज़ि० भी इसी क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। और इसी क़ब्रिस्तान में ख़लीफ़ा सालिस हज़रत उसमान ज़ुन्नूरैन रज़ि०, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि०, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०, हज़रत असद बिन ज़ुरारह रज़ि०, हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ि०, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० की वालिदा फ़ातमा बिन्ते असद रज़ि० यह सब इसी कब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। और साहिबे मज़हब हज़रत इमाम मालिक रह० इसी क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हैं। और इस क़ब्रिस्तान में सब से नुमायां हज़रत उसमान रज़ि० का मज़ार है। यह जन्नतुल बक़ीअ में दाख़िल होने के बाद तक़रीबन दो सौ (200) क़दम के फ़ासला पर है,

फिर वहां से सौ (100) क़दम के फ़ासला पर दीवार से मुत्तसिल हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० और हज़रत फ़ातमा बिन्ते असद रज़ि० का मज़ार है और यह भी नुमायां है। नीज़ हमारे अकाबिरीन में से फ़क़ीहुल असर हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब मुहद्दिस सहारनपुरी मुहाजिर मदनी रह० साहबे बज़लुल-मजहूद शरह अबू दाऊद शरीफ़ और शैख़ुल अरब वल-अजम हज़रत मौलाना ज़करिया साहब शैख़ुल हदीस सहारनपुरी नौवरल्लाहु मरक़दहू इसी क़ब्रिस्तान में मदफ़ून हैं और हज़रत मौलाना सईद अहमद ख़ान रह० भी मदफ़ून हैं। बंदा की ख़्वाहिश भी इसी क़ब्रिस्तान में मुकम्मल क़याम हो जाए। आमीन!

जन्नतुल बक़ीअ की फ़ज़ीलत

इस क़ब्रिस्तान को दुनिया के तमाम क़ब्रिस्तानों पर फ़ज़ीलत हासिल है, हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स को मदीना के क़ब्रिस्तान में दफ़न होने का मोक़ा मिले वह शख़्स ज़रूर मदीना में आ कर मरे। इस लिए कि जो मदीना के क़ब्रिस्तान में मदफ़ून होगा ज़रूर मैं उसकी शफ़ाअत करूंगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ः 2/129)

नीज़ बाज़ किताबों में इस का भी ज़िक्र है कि जो शख़्स इस क़ब्रिस्तान में दफ़न होगा वह हमेशा के लिए अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा।

जन्नतुल बक़ीअ की ज़ियारत

हुज्जाजे किराम और उमरा करने वालों को मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत ज़रूर नसीब होती है। बड़ी ख़ुश क़िस्मती की बात है कि उन को इस क़ब्रिस्तान की ज़ियारत का मोक़ा मिलता है। लिहाज़ा मदीना के क़याम के दौरान इस क़ब्रिस्तान की ज़ियारत की भी हत्तल इमकान कोशिश करें और मोक़ा को हाथ से जाने न दें। नीज़ अगर मोक़ा मिले

तो रोज़ाना ज़ियारत करें। वर्ना कम अज़ कम हफ़्ता में एक मर्तबा ज़ियारत के लिए हाज़िरी दिया करें और जुमा का दिन ज़्यादा बेहतर है।

(मुस्तफ़ाद फ़तहुल क़दीरः 3/182, फ़तहुल क़दीर ज़करियाः 3/171)

अहले बक़ीअ पर सलाम

क़ब्रिस्ताने बक़ीअ हर वक़्त खुला नहीं रहता, बल्कि बंद रहता है और जनाज़ा ले जाने के लिए खोला जाता है। और आम तौर से असर की नमाज़ के बाद जनाज़ा के साथ दाख़िल होने में आसानी होती है, इस लिए इस मोक़ा का इन्तिज़ार करके दाख़िल हो जाए। और अहले बक़ीअ पर इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम पढ़ेः

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا اِنْ
شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَلَاحِقُوْنَ. [ابوداؤد شریف: ۲/۴۶۲]

तर्जुमाः ऐ ईमान वाली क़ौम! तुम पर सलाम हो, बेशक हम इन्शा अल्लाह तआला तुम से मिलने वाले हैं।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ الْبَقِيْعِ الْغَرْقَدِ، اَللّٰهُمَّ
اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ.

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! अहले बक़ीअ की मग़फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारी और उन की मग़फ़िरत फ़रमा।

इस तरह अहले बक़ीअ पर उमूमी सलाम के बाद जिन हज़रात के मज़ारात के निशानात बाक़ी हैं फ़र्दान फ़र्दान उन पर सलाम पेश करे।

सय्यदना हज़रत उसमान जुन्नूरैन रज़िo पर सलाम

क़ब्रिस्ताने बक़ीअ में सय्यदना हज़रत उसमान रज़िo का मज़ार नुमायां है, उनको इन अल्फ़ाज़ से सलाम पेश करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اِمَامَ الْمُسْلِمِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَالِثَ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ذَا النُّوْرَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُجَهِّزَ جَيْشِ الْعُسْرَةِ بِالنَّقْدِ وَالْعَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْهِجْرَتَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَامِعَ الْقُرْاٰنِ بَيْنَ الدُّفَّتَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَبُوْرُ عَلَى الْاَكْدَارِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَهِيْدَ الدَّارِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ. [غنیۃجدید:۳۸۴]

तर्जुमाः ऐ मुसलमानों के इमाम! आप पर सलाम हो। ऐ ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से तीसरे नम्बर के ख़लीफ़ा! आप पर सलाम हो। ऐ दो नूर वाले! आप पर सलाम हो। ऐ जैशुल उसरा (ग़ज़वए तबूक) के लश्कर को रुपया और साज़ व सामान दे कर रवाना करने वाले! आप पर सलाम हो। ऐ दो हिजरत वाले! आप पर सलाम हो। ऐ कुरआने करीम को मौजूदा शक्ल में जमा करने वाले! आप पर सलाम हो। ऐ मुसीबतों और परेशानियों पर सब्र करने वाले! आप पर सलाम हो। ऐ अपने घर में शहीद

होने वाले! आप पर सलाम हो। आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत व बरकात नाज़िल हों।

अहले बक़ीअ को ईसाले सवाब

हज़रत सय्यदना उसमान ज़ुन्नूरैन रज़ि० को सलाम पेश करने के बाद सूरह फ़ातिहा और सूरह बक़रा के शुरू से मफ़लिहून तक और आयतुल कुर्सी और आमनर रसूल से आख़िर तक और सूरह यासीन, सूरह तबारकल्लज़ी, सूरह क़द्र, सूरह अलहाकुमुत्तकासुर, सूरह काफ़िरून, सूरह इख़्लास तीन तीन मर्तबा से ग्यारह (11) मर्तबा तक, दरमियान में जितना हो सके पढ़ कर तमाम अहले बक़ीअ और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को सवाब पहुंचा दें। और अगर सब सूरतें न पढ़ सकें तो जितनी भी हो सकें पढ़ कर सवाब पहुंचा दें। (ग़ुनिया क़दीमः 209, जदीदः 388)

सय्यदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा रज़ि० और शुहदाए उहुद की ज़ियारत

मस्जिदे नबवी से तक़रीबन कुछ किलो मिटर के फ़ासले पर वह मुक़द्दस और मशहूर पहाड़ वाक़े है जिस के बारे में सरकारे दो आलम ﷺ ने बार बार यह इरशाद फ़रमाया हैः أُحُدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَ نُحِبُّهُ. **"उहुद वह पहाड़ है जो हम से मोहब्बत रखता है और हम उस से मोहब्बत रखते हैं।"** और यही वह पहाड़ है जिस पर सन् 3 हिजरी में वह मशहूर वाक़िआ पेश आया था जिस को जंगे उहुद कहते हैं। इसी ग़ज़वा में सय्यदना हज़रत हमज़ा रज़ि० का कलेजा हिंदा ने चाब लिया था, मगर हिंदा ने बाद में इस्लाम कुबूल कर लिया। और इसी ग़ज़वा में सत्तर (70) नुफ़ूसे कुदसिया रज़ि० ने जामे शहादत पी लिया था। इसी ग़ज़वा में सरवरे कायनात ﷺ के दंदाने मुबारक शहीद हुए थे। इसी ग़ज़वा में सरे मुबारक पर चोट आई थी, उसी ग़ज़वा में जस्दे अतहर में जगह जगह तीर और नेज़ों के निशानात लग गए थे। पहाड़ के दामन में पत्थर की

वह चट्टान आज भी नुमायां है जिस पर हुज़ूर ﷺ सय्यदना तलहा रज़ि० के मोंढे पर क़दम मुबारक रख कर चढ़े थे और चढ़ कर कुफ़्फ़ार और सहाबा रज़ि० की हालत का मुआइना फ़रमाया था।

और इसी उहुद पहाड़ के दामन में एक हमवार मैदान में सय्यदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा रज़ि० और बाक़ी शुहदाए उहुद की क़बरें हैं और इस क़ब्रिस्तान को चहार दीवारी से घेर दिया गया है। और जालीदार दीवारों से कब्रें अच्छी तरह नज़र आ जाती हैं।

मदीना मुनव्वरा के क़याम के दौरान शुहदाए उहुद की ज़ियारत भी बड़ी ख़ुश नसीबी और बड़ा कारे सवाब और मुसतहब है।

जबले उहुद के दरख़्त की फ़ज़ीलत

हज़ुर ﷺ ने फ़रमाया कि जब तुम उहुद पहाड़ पर पहुंचो तो उसके दरख़्त में से कुछ खा लो। अगरचे उसके दरख़्त ख़ारदारी ही क्यों न हों।

(वफ़ाउल वफ़ा बा अख़बारे दारुल मुस्तफ़ाः 926)

लिहाज़ा जिस को वहां जाने का मोक़ा मयस्सर हो उसका वहां की चीज़ों में से कुछ खा लेना मुस्तहब है।

मस्जिदे नबवी में चालीस नमाज़ें

मस्जिदे नबवी ﷺ में एक नमाज़ पढ़ना ब-रिवायत हज़रत अनस रज़ि० दूसरी मस्जिदों में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है। (इब्ने माजा शरीफ़ः 103)

नीज़ मस्जिदे नबवी में चालीस (40) नमाज़ें बिला नाग़ा पढ़ना अज़ीम तरीन फ़ज़ीलत की बात है। और अज़ाबे क़ब्र और निफ़ाक़ से बरा'त और जहन्नम से ख़लासी नसीब होती है।

(मुस्नद अहमद बिन हंबलः 3/155, हदीसः 11/1261, मुस्तफ़ाद व ईज़ाहुल मसाइलः 128, फ़तावा महमूदियाः 3/186, फ़तावा रहीमियाः 5/222)

मस्जिदे क़ुबा की ज़ियारत और नमाज़

मस्जिदे कुबा वह मस्जिद है जिस की तामीर में सरवरे कायनात ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से पत्थर रखा है। और हिजरत के बाद सब से पहले इस मस्जिद की तामीर हुई है। और यही वह मस्जिद है जिस के बारे में कुरआन करीम में لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى फ़रमाया गया है, अब यह मस्जिद बहुत बड़ी बन गई है। सड़क से मुत्तसिल खुले मैदान में है और यह मस्जिद मस्जिदे नबवी से तक़रीबन चार किलो मीटर के फ़ासला पर है। हदीस में आया है कि इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ने से एक उमरा का सवाब मिलता है। (इब्ने माजा शरीफ़ः 103, बुख़ारी शरीफ़ः 1,159)

हुज़ूर ﷺ हफ़्ता के दिन मस्जिदे कुबा तशरीफ़ ले जाते थे, इसलिए किसी को हफ़्ता के दिन का मोक़ा मिले तो हफ़्ता ही को मस्जिदे कुबा में हाज़िरी देने की कोशिश करे। और कुबा ही के इलाक़ा में बिरे-अरीस है, यानी वह कुआँ है जिस में सरकारे दो आलम ﷺ की अंगूठी सय्यदना हज़रत उसमान रज़ि० के हाथ से गिर गई थी, फिर नहीं मिली थी। (मुस्लिम शरीफ़ः 1/448, मुस्तफ़ाद फ़तहुल क़दीरः 3/183)

मस्जिदे जुमा

मस्जिदे नबवी से कुबा को जाते वक़्त रास्ता में मश्रिक़ी जानिब वादिए ज़ानूना में हुज़ूर ﷺ के ज़माने में क़बीला बनू सालिम रहता था और हुज़ूर ﷺ के ज़माना में इस क़बीला में यह मस्जिद बन गई थी। और हुज़ूर ﷺ ने सब से पहले जुमा उसी मस्जिद में अदा फ़रमाया था, इस लिए इसको मस्जिदे जुमा कहा जाता है। इस जगह भी दुआ क़ुबूल होती है। लिहाज़ा इस मस्जिद में दो रकात नमाज़ पढ़ कर अल्लाह तआला से दुआएं मांगी जाएं।

मस्जिदे इजाबा

यह वह मक़ाम है जहां पर हुज़ूर ﷺ ने बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ कर तीन दुआएं की थीं। एक दुआ यह की थी कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को आम क़हत साली से हलाक न फ़रमा। दूसरी दुआ यह फ़रमाई थी कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को अग़यार के तसल्लुत से नाकाम और हलाक न फ़रमा। यह दोनों दुआएं कुबूल हो गई थी। तीसरी दुआ यह फ़रमाई थी कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत की आपस की ख़ाना जंगी और आपस की ख़ूं रेज़ी से हिफ़ाज़त फ़रमा। यह दुआ क़ुबूल नहीं हुई थी।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ः 2/40, किताबुल फ़ितन)

इस मक़ाम पर इस वक़्त एक मस्जिद है, उसको मस्जिदे इजाबा कहते हैं। यह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ से जानिबे शुमाल में बुस्तान समान के पास है। इस में जा कर भी दो रकात नमाज़ पढ़ कर दुआ करना मुस्तहब है।

मस्जिदे उबै बिन काब रज़ि०

जन्नतुल बक़ीअ से मुत्तसिल हज़रत उबै बिन काब रज़ि० का मकान था। हुज़ूर ﷺ ने बकसरत वहां तशरीफ़ ले जा कर नमाज़ पढ़ कर दुआ फ़रमाई है। इस जगह एक मस्जिद बनी हुई है। जो मस्जिदे उबै बिन काब रज़ि० से मौसूम है, वहां भी दुआ कुबूल होती है। इस वक़्त यह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ के इहाता के अंदर आ गई है।

मदीना तय्यबा से वापसी के आदाब

जब मदीना मुनव्वरा से वापसी का इरादा हो तो रियाज़ुल जन्नह में या मस्जिदे नबवी के किसी भी हिस्सा में दो रकात नफ़्ल पढ़ कर रौज़ए अतहर अला साहिबिहा अलफ़ अलफ़ सलात पर हाज़िर हो कर पहले

की तरह दुरूद व सलाम पढ़े। फिर अल्लाह तआला से दुआ करे।

ऐ अल्लाह! मेरे सफ़र को आसान फ़रमा दे और मुझे सलामती व आफ़ियत के साथ अपने अहल व अयाल में पहुंचा दे। और मुझ को दोनों जहां में आफ़तों से महफ़ूज़ फ़रमा। और मेरा हज और मेरी ज़ियारत को शर्फ़े कुबूलियत अता फ़रमा। और मुझे मदीना मुनव्वरा की दोबारा हाज़िरी नसीब फ़रमा। और यह मेरा आख़िरी सफ़र न बना। उसके बाद अगर याद हो तो ज़ेल में आने वाली दुआ पढ़े।

(मुस्तफ़ाद मुअल्लिमुल हुज्जाजः पेज 326)

मदीना मुनव्वरा से वापसी की दुआ

अगर याद हो तो रौज़ए अतहर के सामने ज़ेल की दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ بِنَبِيِّكَ وَ مَسْجِدِهٖ وَ حَرَمِهٖ وَ يَسِّرْلِىْ الْعَوْدَ اِلَيْهِ وَالْعُكُوْفَ لَدَيْهِ وَ ارْزُقْنِى الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ رُدَّنَا اِلٰى اَهْلِنَا سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ اٰمِنِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ! [غنية جديد: ٣٨٨، قديم: ٢١٠ هكذا قاضى خان: ٣١٩]

तर्जुमाः ऐ मेरे अल्लाह! आप अपने नबी ﷺ और मस्जिदे नबवी ﷺ और हरमे नबवी ﷺ की इस ज़ियारत को आख़िरी ज़ियारत न बना। बल्कि मेरे लिए दोबारा आना और ठहरना आसान फ़रमा और मेरे लिए दुनिया व आख़िरत में सलामती और आफ़ियत नसीब फ़रमा। और मुझे अपने घर

आफ़ियत और सलामती व अज्र व सवाब के साथ पहुंचा दे। ऐ अरहमुर राहिमीन! अपनी रहमत से माला माल फ़रमा।

इस के बाद निहायत हसरत और सदमा के साथ दियारे हबीब ﷺ से रुख़्सत हो जाए।

मदीना मुनव्वरा की खजूर वतन लाना

जब मदीना मुनव्वरा से वापसी का सफ़र हो तो मदीना तैयबा की खजूर भी साथ में लाने का एहतिमाम करें। हदीस पाक में मदीना मुनव्वरा की खजूरों की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत आई है और हज़रत सय्यदुल कौनैन ﷺ ने इसकी फ़ज़ीलत निहायत अहमियत के साथ बयान फ़रमाई है। आप ﷺ ने फ़रमाया कि मदीना की खजूर खाने से ज़हर भी असर नहीं करता। (मुस्लिम शरीफ़ः 2/181)

लिहाज़ा हुज्जाजे किराम का मदीना मुनव्वरा की खजूरों को अपने वतन लाना और ख़ुद खाना और अहबाब और अइज़्ज़ा व अक़रबा को खिलाना बाइसे ख़ैर व बरकत है। और हमारे अकाबिर से साबित है।
(नक्शे हयातः1/85)

वतन से क़रीब पहुंचने की दुआ

जब हुज्जाजे किराम और उमरा करने वाले इस बारौनक़ सफ़र से वापस वतन के क़रीब पहुंच जाएं तो यह दुआ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ...الخ [مسلم شریف: ۱/۴۳۵، غنیۃ جدید: ۳۸۹]

तर्जुमाः हम अल्लाह का नाम ले कर सफ़र से वापस आ रहे हैं, हम सफ़र से तौबा करते हुए लौटने वाले हैं। हम अल्लाह की इबादत करते हुए लौटने वाले हैं। हम अपने रब की हम्द व सना करते हुए सफ़र से आ रहे हैं। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा करके दिखाया और अपने बंदा की मदद फ़रमाई और अहज़ाब के लश्कर को तन्हा शिकस्त दे दी।

वापसी में हाजी का इस्तिक़बाल

जब हुज्जाजे किराम हज से वापस आएं तो उन से मुलाक़ात, सलाम, मुसाफ़हा करना और उन से दुआ कराना बाइसे फ़ज़ीलत है, इस लिए कि हाजी की दुआ क़ुबूल होती है।

मगर हाजी को रवाना करते वक़्त जुलूस की शक्ल इख़्तियार करना या नारा लगाना सख़्त ममनूअ है। और इसी तरह हाजी की वापसी में ज़रूरत से ज़्यादा अफ़राद का हवाई अड्डा पर पहुंच जाना और बिला वजह इतने लोगों का किराया ख़र्च करना क़ाबिले तर्क अम्र है। और इस में रियाकारी भी होती है, जिस से एहतेराज़ करना निहायत ज़रूरी है।

(मुस्तफ़ादे मुअल्लिमुल हुज्जाजः 338)

हाजी के यहां दावत

हुज्जाजे किराम का सफ़र हज को जाने से क़ब्ल या सफ़रे हज से वापसी पर दावत करना हुज़ूर अकरम ﷺ, सहाबा किराम, अइम्मा, मुजतहिदीन और सल्फ़ व ख़ल्फ़ किसी से भी साबित नहीं है।

नीज़ हज एक अहम तरीन इबादत है, और इबादत का नाम व नुमूद और रियाकारी से महफ़ूज़ होना लाज़िम है। और दावते हज में नाम व नुमूद और रियाकारी का होना बहुत वाज़ेह है। इस लिए इस रसमी दावत को तर्क कर देना हर हाजी पर लाज़िम है। लिहाज़ा दुनिया के नाम व नुमूद

के लिए ऐसी अज़ीम इबादत के सवाब को ज़ाए न करें।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّ سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا، اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَ تُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنَا لِاَدَاءِ الْمَنَاسِكِ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى وَ ارْزُقْنَا الْعَوْدَ بَعْدَ الْعَوْدِ مَرَّةً بَعْدَ مَرَّةٍ فِيْ كُلِّ سَنَةٍ وَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ الْبَرِيَّةِ سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا.

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

बैतुल्लाह जाइए
और यह अश्आर पढ़िए

शुक्र है तेरा ख़ुदाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
तूने अपने घर बुलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

अपना दीवाना बनाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
गिर्दे काबा के फिराया, मैं तो इस क़ाबिल न था

मुद्दतों की प्यास को सैराब तू ने कर दिया
जामे ज़म ज़म का पिलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

डाल दी ठंडक मेरे सीने में तूने साक़िया
अपने सीने से लगाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

भा गया मेरी ज़ुबां को ज़िक्र इल्लल्लाह का
यह सबक़ किस ने पढ़ाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

ख़ास अपने दर का रखा तूने ऐ मौला मुझे
यूं नहीं दर दर फिराया, मैं तो इस क़ाबिल न था

मेरी कोताही कि तेरी याद से ग़ाफ़िल रहा
पर नहीं तूने भुलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

मैं तो था बे राह तूने दस्तगीरी आप की
तू ही मुझ को दर पे लाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

अहद जो रोज़े अज़ल मैंने किया था याद है
अहद वह किस ने निभाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

तेरी रहमत तेरी शफ़क़त से हुवा मुझ को नसीब
गुंबदे ख़ज़रा का साया, मैं तो इस क़ाबिल न था

मैंने जो देखा सो देखा बारगाहे क़ुदुस में
और जो पाया सो पाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

बारगाहे सय्यदुल कौनैन ﷺ में आ कर यूनुस
सोचता हूं कैसे आया, मैं तो इस क़ाबिल न था

राक़िमुल हुरूफ़ को मुंदर्जा ज़ेल शेर निहायत पसंद है

बक़ौले शाइर :

करूंगा नाज़ क़ियामत तलक मैं क़िस्मत पर
बक़ीअ में जो मुकम्मल क़याम हो जाए

दिल की फ़रियाद

मेरे दिल की तमाम गंदगियों को धो दे और मेरे दिल की दुनिया बदल दे
मुझे एक नया मोड़ दे कर मुझे नई ज़िन्दगी बख़्श दे

मुझे अकेला भटकता हुआ न छोड़, मुझे सहारा दे दे
मैंने अपनी ज़िन्दगी तुझ से दूर भागते हुए गुज़ार दी

अब मैं तेरी तरफ़ लौट के आया हूं मुझे तेरे सिवा कोई दर न मिला
मैं तेरी तरफ़ भिकारी बन कर आया हूं, ताकि तू मुझे बचा ले

तू मुझे अपना फ़रमां बरदार बंदा और ग़ुलाम बना ले
मेरी तमाम गंदगियों को दूर कर दे, मेरे दिल की दुनिया बदल दे

मैं ज़िन्दगी भर अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करता रहा
और शैतान और नफ़्स की बंदगी करता रहा

लेकिन अब मैं समझ गया कि तेरे दर के सिवा कोई दर नहीं है
मैं तुझ से तेरी मदद की भीक मांगता हूं

मेरे मुर्दा दिल को ज़िन्दगी बख़्श दे
और मुझे एक नया मोड़ दे कर अज़-सरे नौ ज़िन्दगी बख़्श दे

मैं तेरा बड़ा शुक्रगुज़ार रहूंगा अगर तू मेरे दिल को बदल दे
मेरा दिल सियाह हो चुका है और आँखें ख़ुश्क हो गई हैं

अब मैं तेरे दर पे आया हूं
तू मुझे धुतकार न दे और मायूस न फ़रमा

आज तू मेरे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दे और मेरे दिल को बदल दे मुझे आवारा भटकता हुआ न छोड़, मुझे मुआफ़ कर दे और मेरे दिल को बदल दे।

मेरे दिल को संभाल ले
और मुझे नई ज़िन्दगी बख़्श दे

ख़ामोश फ़ितनों का इलाज, रोज़ी में बरकत, जादू और जिन्नात के शर से हिफाज़त का मुजर्रब तावीज़

يَا حَفِيْظُ

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ. اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا، وَاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ. يَا حَيُّ حِيْنَ فِيْ دَيْمُوْمَةِ مُلْكِهٖ وَبَقَآئِهٖ يَا حَيُّ يَا حَيُّ يَا حَيُّ. اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ. فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ. اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

حضور صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم کا خط سرکش جناتوں کے نام

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

هٰذَا كِتَابٌ مِّنْ مُّحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اِلٰى مَنْ يَّطْرُقُ الدَّارَ مِنَ الْعُمَّارِ وَالزُّوَّارِ وَالسَّآئِحِيْنَ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْحَقِّ سِعَةً فَاِنْ تَكُ عَاشِقًا مُّوْلِعًا اَوْ فَاجِرًا مُّقْتَحِمًا اَوْ رَاعِيًا حَقًّا مُّبْطِلًا، هٰذَا كِتَابُ اللّٰهِ يَنْطِقُ عَلَيْنَا وَعَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ اُتْرُكُوْا صَاحِبَ كِتَابِيْ هٰذَا وَانْطَلِقُوْا اِلٰى عَبَدَةِ الْاَوْثَانِ وَالْاَصْنَامِ وَاِلٰى مَنْ يَّزْعُمُ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ حٰمٓ لَا تُنْصَرُوْنَ حٰمٓ عٓسٓقٓ تَفَرَّقَ اَعْدَاءُ اللّٰهِ وَبَلَغَتْ حُجَّةُ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

يَا حَفِيْظُ

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

नोट : इस नक्श का ताल्लुक़ रखने से है, पढ़ने से नहीं है.

एक अल्लाह की बंदी की तरफ़ से उम्मत को हदिया

اداره امپیکس
idara impex
इदारा
Publishers | Distributors | Exporters
www.idara.com